शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–1 : सत्र 1

हिंदी कविता

हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–2 : सत्र 2

हिंदी गद्य साहित्य

(सत्र परीक्षा, श्रेणी तथा एनईपी 2020)

(शैक्षिक वर्ष 2022-23 से)

बी. ए. भाग 1 (हिंदी)

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2019
द्वितीय संस्करण : 2021
सुधारित संस्करण : 2022
बी. ए. भाग 1 (हिंदी : ऐच्छिक)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रेतयाँ : 300

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्रभारी कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-89327-00-7

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी- शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सल्लागार समिती ■

प्रा. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू,
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रा. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २,
११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रा. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्रभारी कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्री. ए. बी. चौगुले
प्रभारी वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) डी. के. मोरे (सदस्य सचिव)
संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ हिंदी अभ्यासमंडळ समन्वयक ■

डॉ. प्रकाश चिकुर्डेकर
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय, वारणानगर

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय की दूर शिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग 1 (ऐच्छिक) हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित स्वयं अध्ययन नियमित रूप से प्रवेश न ले पानेवाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता आधारभूत है तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचितों को सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। सन 2007 से बी. ए. भाग 1 से लेकर एम.ए. 2 तक के छात्र स्वयं अध्ययन सामग्री से दूर शिक्षा योजना के अंतर्गत लाभान्वित हुए हैं उसी तरह अब बी. ए. 1 के छात्र इस पुनर्रचित पाठ्यक्रम की स्वयं अध्ययन सामग्री से लाभान्वित हो, इसका पूरा ध्यान रखा गया है। प्रस्तुत स्रोत सामग्री सामूहिक प्रयास का ही फल है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत अभ्यास सामग्री उक्त छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

– संपादक

इकाई लेखक

लेखक	इकाई
हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–1 : सत्र 1 हिंदी कविता	
★ **डॉ. पी. एन. चौगुले** कस्तुरबाई वालचंद कॉलेज, सांगली	1
★ **डॉ. सरोज पाटील** श्री शहाजी छत्रपती महाविद्यालय, दसरा चौक, कोल्हापुर	2
★ **डॉ. एकनाथ पाटील** राधानगरी महाविद्यालय, राधानगरी	3
★ **डॉ. सुनील बापू बनसोडे** जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर	4
हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–2 : सत्र 2 हिंदी गद्य साहित्य	
★ **डॉ. मोहन सावंत** आण्णासाहेब डांगे आर्टस्, कॉमर्स, सायन्स कॉलेज, हातकणंगले	1
★ **डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाळ** कला व वाणिज्य महाविद्यालय, वडूज	2
★ **डॉ. संजय चिंदगे** देशभक्त ए. बी. नाईक आर्टस अ‍ॅण्ड सायन्स कॉलेज, यशवंतनगर, चिखली, ता. शिराळा	3
★ **डॉ. गजानन चव्हाण** श्रीमती जी. के. जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर	4

■ **सम्पादक** ■

डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाळ
कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
वडूज

डॉ. सुनील बापू बनसोडे
जयसिंगपुर कॉलेज,
जयसिंगपुर

अनुक्रमणिका

इकाई		पृष्ठ
	हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–1 : सत्र 1 हिंदी कविता	
1.	भिक्षुक, बालिका का परिचय, तेरी खोपडी के अंदर, वसंत आ गया	1
2.	एक अजीब सी मुश्किल, पैदल आदमी, बीस सालबाद, घर की याद	35
3.	हो गई है पीर, माँ जब खाना परोसती थी, एकलव्य, बेजगह	62
4.	नया बैंक, सत्ता, स्त्री मुक्ति की मशाल, बाजार	88
	हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–2 : सत्र 2 हिंदी गद्य साहित्य	
1.	जीवन और शिक्षण, सूरदास, विज्ञापन युग	109
2.	भगत की गत, फुटपाथ के कलाकार, गोशाला चारा और सरपंच	134
3.	पंचलाईट, अकेली, चीफ की दावत	157
4.	संस्कार और भावना, रजिया, किसान के घर से	176

हर इकाई की शुरूआत उद्‌देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपतरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्‌वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्‌ध होगी।

इकाई 1 (क)

1. भिक्षुक

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

- 1.3.1 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का परिचय
- 1.3.2 'भिक्षुक' कविता का परिचय
- 1.3.3 'भिक्षुक' कविता का भावार्थ
- 1.3.4 'भिक्षुक' कविता की विशेषताएँ

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस कविता को पढने के बाद आप -

1) छायावादी एवं प्रगतिवादी काव्य के प्रतिनिधिक काव्य-स्वरूप से परिचित होंगे।

2) भिक्षुक की दयनीयता, विवशता एवं उनकी यथार्थ स्थिति को समझ सकेंगे।

3) भिक्षुक की भूख से तिलमिलाती याचना एवं उनके कटु संघर्ष को जान सकेंगे।

4) भिक्षुक के प्रति कवि के संवेदनशील हृदय की कामना को महसूस कर सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना :

हिंदी काव्य-जगत में छायावाद की महत्ता अनन्य साधारण है। छायावादी काव्य ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। एक से बढकर एक यादगार काव्य की सर्जना इस युग में हुई। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एवं महादेवी वर्मा ये छायावाद के मुख्यतम आधारस्तंभ हैं। इस युग में 'कामायनी' जैसे अजरामर काव्यकृति के निर्माण के साथ प्रसाद जी ने भारतीय गौरवशाली परंपरा को लेकर अपने साहित्य का सृजन किया, तो प्रकृति चित्रण के कवि माने जाने वाले पंत जी ने सृष्टि के सौंदर्य को अपने काव्य के माध्यम से मुखरित किया। साथ ही रहस्य एवं वेदना की कवयित्री मानी जाने वाली महादेवी जी ने अपने विरह काव्य-सौंदर्य को बिखेर दिया तो निराला जी ने इस युग में समाज का यथार्थ एवं आम आदमी के पक्ष को लेकर अपनी काव्य-सर्जना की। 'राम की शक्तिपूजा', 'कुकुरमुत्ता', 'वह तोडती पत्थर' जैसी कविताओं का सृजन कर वे हिंदी साहित्य में एक अन्यतम हस्ताक्षर बन कर रह गए हैं। छायावाद के प्रमुख आधारस्तंभों में से एक होने के बावजूद भी अपने समय की माँग के अनुसार प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता और नवगीत जैसी काव्यधाराओं को उन्होंने उन्नत तथा समृद्ध बनाया। प्रस्तुत कविता में उनकी प्रगतिवादी दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। समाज का कटु यथार्थ, विषमताएँ, जनसाधारण के प्रति की आसक्ति, सूक्ष्मतम संवेदनाओं की सक्षमता से प्रस्तुति एवं सहृदयता के कारण वे हिंदी साहित्य के एक अद्वितीय साहित्यकार के रूप में चर्चित रहें और चर्चित रहेंगे।

1.3 विषय-विवरण :

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के क्रांतिकारी एवं महान विद्रोही कवि थे। छायावादी कल्पनालोक से प्रगतिवादी यथार्थ चित्रों तक उनकी काव्ययात्रा निरंतर विकासमान रही है। उन्होंने सामाजिक यथार्थ को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया। समाज में व्याप्त शोषण तथा विसंगति का वास्तव चित्रण उनके काव्य में मिलता है। प्रस्तुत कविता 'भिक्षुक' में भी समाज में अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश एक भिखारी एवं उसके बच्चों की करूण दशा का वास्तव चित्रण करते हुए उनके प्रति कवि अपार सहानुभूति प्रकट करते हैं। भूख से तिलमिलाता भिखारी भीख माँगते हुए कलेजे के टुकडे-टुकडे होने पर भी भीख माँगने के लिए विवश है। उसके बच्चे दोनों हाथों से भीख की याचना कर रहे हैं और किसी से कुछ न मिलने पर आँसूओं के घूँट पीकर रह जाते हैं। पशुओं के लिए भी जो जायज है, उन जूठे पत्तलों के लिए भी भिखारियों को संघर्ष करना पडता है और फिर कवि ऐसे भिखारियों को

संघर्षरत रहने के लिए कहते हुए उनके सारे दु:ख-दर्द एवं पीडा को अपने ह्रदय में समेटने की आकांक्षा जाहीर करते हुए उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं।

1.3.1 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का परिचय :

हिंदी साहित्य-जगत् के श्रेष्ठतम साहित्यकार के रूप में निराला जी का नाम आदर से लिया जाता है। महाकवि निराला जी का पूरा नाम सूर्यकांत रामसहाय त्रिपाठी है। लेकिन हिंदी साहित्य जगत आपको 'निराला' नाम से जानता है। निराला जी हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख चार आधारस्तंभों में से एक हैं। उन्हें प्रगतिशील, दार्शनिक, चिंतनशील, विद्रोही एवं जन-जीवन के प्रति विशेष आस्था रखने वाले कवि के रूप में जाना जाता है। उन्हें 'महाप्राण निराला' भी कहा जाता है। अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त अन्याय एवं शोषण के खिलाफ उन्होंने आवाज उठाई हैं। किसान, मजदूर, श्रमिक, दलित, नारी तथा पिछडे वर्गों को अपने साहित्य-जगत् का विषय बनाने का चुनौतिपूर्ण कार्य निराला जी ने किया। भारतीय संस्कृति, राष्ट्रप्रेम, मानव प्रेम एवं प्रकृति प्रेम आपके काव्य के मूल विषय रहे हैं। उनके समूचे साहित्य में मानवतावाद के दर्शन होते हैं। भाषा और छंद के बंधन तोडकर उन्होंने मौलिक और नवीन काव्य-रचना की। उन्होंने हिंदी में गीतिकाव्य का प्रचलन किया। हिंदी में वे मुक्त छंद के प्रणेता माने जाते हैं।

निराला का जन्म 21 फरवरी, 1896 ई. को बंगाल के मेदिनीपुर परिक्षेत्र के महिषादल नामक स्थान में हुआ। उनका परिवार कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार था। बचपन में ही उनकी माँ का देहावसान हो गया था। इसलिए पिता ने उनका पालन-पोषण किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा बंगाली में हुई और वहाँ से ही मैट्रीक तक की शिक्षा उन्होंने प्राप्त की। कविता के प्रति बचपन से ही उनका अनुराग था पत्नी मनोहरादेवी की प्रेरणा से वे हिंदी की ओर आकृष्ट हुए। प्रतिभाशाली होने के कारण शीघ्र ही वे हिंदी और संस्कृत के अधिकारी विद्वान हो गए। आपका सारा जीवन दु:खों, असफलताओं, संकटों और संघर्षों से भरा हुआ रहा है। बचपन में माँ की मृत्यु, यौवनावस्था में पदार्पण करते समय पिता की मृत्यु, एक पुत्र और पुत्री को जन्म देकर अल्पावधि में ही पत्नी मनोहरादेवी एवं तद्नंतर बेटी सरोज के असामायिक देहावसान होने के कारण उनका सांसारिक जीवन बेहद कष्टप्रद रहा। कवि होने के साथ-साथ वे एक कुशल गायक एवं संगीतज्ञ भी थे। उनके साहित्यिक जीवन की साधना 'समन्वय' नामक के संपादक काल से प्रारंभ हुई। रामकृष्ण मिशन के संपर्क में आने के कारण निराला जी की विचार-धारा पर रामकृष्ण, विवेकानंद का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। आर्थिक कठिनाईयों से जूझनेवाले इस कवि को महिषादल राज्य में नौकरी मिली, परंतु स्वतंत्र स्वभाव के कारण उन्होंने नौकरी छोडी। आप जीवनभर साहित्य-सेवा से जुडे रहे। 'निराला' सब प्रकार के बंधनों से मुक्त एक स्वच्छंद प्रकृति के कलाकार थे। 15 नवम्बर, 1961 ई. को निराला जी का स्वर्गवास हो गया।

प्रमुख रचनाएँ :

निराला जी बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -

काव्य-संग्रह	-	तुलसीदास (प्रबंध), अनामिका, परिमल, गीतिका, अर्चना, आराधना, गीत कुंज, बेला, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते, अणिमा, विनय खंड, कविश्री, सांध्य काकली, सरोजस्मृति आदि।
उपन्यास	-	अलका, अपरा, चमेली, चोटी की पकड, निरूपमा, प्रभावती, उच्छृंखल, काले कारनामे आदि।
कहानी-संग्रह	-	लिली, सुकुल की बीबी, देवी, सखी आदि।
नाटक	-	समाज, शकुंतला, उषा, राजयोग।
रेखाचित्र	-	कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, चतुरी चमार।
जीवनी	-	भीष्म, प्रह्लाद, राणा प्रताप, ध्रुव, शकुंतला।
निबंध	-	प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, प्रबंध परिचय, रवींद्र कानन कुसुम, चाबुक आदि।
अनुवाद	-	महाभारत, देवी चौधुरानी, आनंदमठ, रजनी, दुर्गेशनंदिनी, कृष्णकांत का विल, परिव्राजक स्वामी रामकृष्ण, श्रीरामकृष्ण वचनामृत, विवेकानंद के भाषण आदि।
आलोचना	-	पंत और पल्लव, प्रबंध प्रतिमा।
संपादन	-	'समन्वय' और 'मतवाला' नामक पत्रिकाओं का संपादन।

1.3.2 'भिक्षुक' कविता का परिचय :

कवि निराला जी की 'भिक्षुक' यह कविता उनके चर्चित काव्य-संग्रह 'परिमल' में संग्रहित है। समाज के पीडितों, दुःखी, दीन-दलितों के प्रति निराला जी का हृदय विशेष संवेदनशील था। उसकी ही झलक प्रस्तुत कविता में भी स्पष्टत: दिखाई देती है। इस कविता में कवि ने एक भिखारी और उसके दो बच्चों की दयनीय अवस्था का वर्णन किया है और उनके प्रति सहानुभूति प्रकट की है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने भिक्षुक का यथार्थ वर्णन किया है। कविता में भिखारी मजबूरन भीख माँगने के लिए विवश है। शारीरिक दुर्बलता एवं दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण वह अपना एवं अपने परिवार का पेट भरने में अक्षम है। इसलिए वह अपनी फटी हुई पुरानी झोली समाज-सम्मुख बार-बार फैलाकर दया की याचना करता रहता है। इस भिखारी से भी बदतर जिंदगी जीने के लिए प्रवृत्त हैं उसके बच्चे, जो अपने दोनों हाथों से भूख एवं भिक्षा की याचना को समाज के सामने बार-बार जाहीर कर रहे हैं। लेकिन बेदर्द एवं जालीम समाज से जब कुछ भी नहीं हासिल होता और भाग्य-विधाता से भी वे जब कुछ नहीं पाते तो वे सिर्फ आँसुओं के घूँट पीने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

रास्ते पर पडे जूठे पत्तलों को लेकर भी उन्हें कुत्तों से संघर्ष करना पडता है यानी कवि यहाँ दर्शाना चाहते हैं कि उनका जीवन पशुओं से भी बदतर और गया गुजरा है। कवि के संवेदनशील हृदय में उनके प्रति हमदर्दी है। उनके

दु:ख-दर्द एवं पीडा को अपने अंदर समाने की बात कवि कहते हैं, लेकिन उन्हें भी इसके लिए संघर्षरत रहने की नसिहत कवि देते हैं। भिक्षुक के प्रति अपार सहानुभूति को कवि ने इस कविता के माध्यम से प्रकट किया है।

1.3.3 'भिक्षुक' कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता में कवि दीन-हीन भिक्षुक को रस्ते पर आता देखते हैं, जिसकी अवस्था बेहद ही दर्दनाक एवं दयनीय है। संवेदनशील हृदय के कवि उसकी निर्मम व्यथा को चित्रित करते हुए कहते हैं - भिक्षा की याचना करते हुए उस भिखारी के कलेजे के टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं, उसका कलेजा भीख माँगते-माँगते चूर-चूर हो रहा है। वह अपनी इस अवस्था के लिए पछता रहा है, पर भीख माँगने के लिए वह विवश है। उसकी स्थिति इतनी कृश एवं दुर्बल है कि उसका पेट और पीठ दोनों एक ही दिखाई दे रहे हैं। वह लाठी लेकर चल रहा है, जो उसकी शारीरिक दुर्बलता एवं वृद्धावस्था को भी दर्शाता है। वह अपने पेट की भूख मिटाने के लिए सिर्फ मुट्ठी भर दाने की ही याचना करते हुए अपनी फटी हुई पुरानी झोली को बार-बार फैला रहा है। यह उसकी विवशता बनी हुई है, लेकिन ऐसे करते हुए उसके कलेजे के टुकड़े -टुकड़े हो जाते हैं। वह पछताता है, लेकिन फिर भी रस्ते पर भीख माँगने के लिए प्रवृत्त हो जाता है।

उस भिखारी की दयनीयता और अधिक इसलिए भी है कि उसके साथ दो बच्चे भी हैं, जो सदैव अपने हाथ फैलाए हुए हैं। बाएँ हाथ से वे अपने पेट पर हाथ फेरते रहते हैं, मानों अपनी भूख का इजहार कर रहे हो और दायाँ हाथ आगे की ओर फैला रहता है, इस आशा में कि किसी की दया का पात्र वे बन जाएँ और कोई उन्हें कुछ खाने के लिए दे दें। किसी की भी दया-दृष्टि जब उन पर नहीं पड़ती तो उनके ओंठ भूख के कारण सूख जाते हैं और भाग्य-विधाता-दाता से वे कुछ भी नहीं पाते, तो वे आँसुओं के घूँट पीकर रह जाते हैं। याने भूख मिटाने के लिए जब ये भिखारी रास्ते पर भीख की याचना करते हैं और कोई भी जब इन पर दया नहीं दिखाता तब भूख के कारण इनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं और भाग्य-विधाता भगवान से भी जब कुछ हासिल नहीं होता, तब दर्द और निराशा ही उनके हाथ लगती है।

इन भिखारियों की नजर कभी सड़क पर पड़ी हुई जूठी पत्तलों पर पड़ती है, तो भूख के कारण वे उन्हें ही चाटने लगते हैं, किंतु यहाँ भी उनके प्रतिस्पर्धी के रूप में कुत्ते मौजूद होते हैं, जिन्हें लगता है कि उनकी भूख का हिस्सा इन भिखारियों के द्वारा खाया जा रहा है, इसलिए वे भी उनके हाथों से उन जूठी पत्तलों को हासिल करने के लिए अड़े हुए हैं। जीवन की कैसी विडम्बना है कि जो पशुओं के लिए भोग्य वस्तु है, वह भी उनके नसीब में नहीं है या उसके लिए भी उन्हें संघर्ष करना पड़ रहा है। परंतु कवि का हृदय संवेदनशील है, मानवीयता से ओत-प्रोत है। उन भिखारियों की स्थिति को देखकर उन्हें उनका हृदय कहता है कि मेरे हृदय में संवेदना का अमृत बह रहा है, मैं उस अमृत से तुम्हें सींचकर तृप्त कर दूँगा। लेकिन तुम्हें चक्रव्यूह भेदने गए अभिमन्यु जैसे जुझारू और संघर्षशील होना होगा, तभी इस संसार के गरीबी और अन्य दुश्चक्ररूपी चक्रव्यूह से तुम मुक्त हो सकोगे। तुम्हारे संपूर्ण दु:ख-दर्द को मैं अपने हृदय में समेट लूँगा, तुम्हारे सारे दु:ख-दर्द को बाँटकर उन्हें दूर करूँगा। अत: कवि भिक्षुक की दीनता के प्रति अपनी अपार संवेदनशील सहानुभूति को प्रकट करते हैं। समाज के शोषण, अन्याय एवं दमन के खिलाफ ऐसे शोषित, पीड़ित एवं दलित वर्ग के प्रति कवि की आस्था एवं संवेदनशीलता को प्रस्तुत कविता बयान करती है।

1.3.4 भिक्षुक कविता की विशेषताएँ :

1. भिखारियों का बेहद भावुक एवं हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत कविता में किया गया है।
2. कविता में अभिव्यक्त भिखारियों के माध्यम से समाज में व्याप्त निम्नतम आम आदमी की वास्तव समस्या को अधोरेखित किया गया है।
3. भिखारियों की कटु सच्चाई को समाज-सम्मुख रखा गया है।
4. भिखारी-वर्ग की लाचारी, दयनीयता, उसकी भूख, तडप एवं संघर्ष को यह कविता अभिव्यक्त करती है।
5. अपाहिज, हीन-दीन भिखारियों की सच्चाई को यथार्थता से सामने रखते हुए समाज की आँखें खोलने हेतु ऐसे दीन-हीन अभिशप्त लोगों की मदत के लिए प्रोत्साहित किया गया है।
6. भिखारियों को भी संघर्षरत रहने के लिए प्रेरित कर मानवता की संवेदना को जागृत रखते हुए उनके प्रति अपार सहानुभूति रखने का महत्त्वपूर्ण संदेश इस कविता से मिलता है।

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'भिक्षुक' कविता के कवि .... जी है।

   1) अज्ञेय   2) कुँवर नारायण   3) निराला   4) नागार्जुन

2) 'भिक्षुक' कविता .... काव्य-संग्रह में संग्रहित है।

   1) अनामिका   2) परिमल   3) गीतिका   4) बेला

3) 'भिक्षुक' कविता में भिक्षुक के साथ .... बच्चे भी हैं, जो सदैव अपने हाथ फैलाए हुए हैं।

   1) दो   2) तीन   3) चार   4) पाँच

4) भिखारियों की नजर कभी सड़क पर पड़ी हुई .... पर पड़ती है, तो भूख के कारण वे उन्हें ही चाटने लगते हैं।

   1) जूठे बर्तनों   2) प्लेट्स   3) कागजों   4) जूठी पत्तलों

5) रास्ते पर पड़ी जूठी पत्तलों को भिखारियों से हासिल करने के लिए .... अड़े हुए है।

   1) बंदर   2) लोग   3) कुत्ते   4) सूअर

6) 'भिक्षुक' कविता में कवि भिखारी को .... जैसा होने को कहते हैं।

   1) अर्जुन   2) राम   3) कृष्ण   4) अभिमन्यु

7) कवि निराला जी .... की दीनता के प्रति अपनी अपार संवेदनशील सहानुभूति को प्रकट करते हैं।

1) अपाहिज 2) किसान 3) मजदूर 4) भिक्षुक

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) कलेजा - हृदय

2) कलेजे के दो टूक करना - हृदय अतीव दुःख से भारी हो जाना

3) लकुटिया - लकड़ी

4) अभिमन्यु - महाभारत का एक पात्र। अर्जुन का पुत्र, जो चक्रव्यूह को भेदने जाता है और पाँच महाबलि कौरवों के द्वारा मारा जाता है।

1.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) निराला

2) परिमल

3) दो

4) जूठी पत्तलों

5) कुत्तें

6) अभिमन्यु

7) भिक्षुक

1.7 सारांश :

1) हिंदी साहित्य में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण महाप्राण निराला जी का स्थान सचमुच ही निराला है। हिंदी काव्य-जगत के एक मूर्धन्य एवं अद्वितीय कवि के रूप में वे हमेशा याद किए जाएँगे। प्रगतिवादी विचारों को थामती उनकी प्रस्तुत 'भिक्षुक' कविता उनके चर्चित काव्य-संग्रह 'परिमल' में संकलित है। इस कविता में उन्होंने एक राह चलते भिक्षुक एवं उसके दो बच्चों का बेहद दयनीय, यथार्थ एवं संवेदनशील चित्रण किया है।

2) रास्ते पर भिक्षा माँगते हुए भिखारी के हृदय में क्लेष उत्पन्न हो रहा है, व्यथित मन से वह अपनी इस दशा के लिए पछता रहा है, लेकिन वृद्धावस्था एवं शारीरिक दुर्बलता के कारण वह भीख माँगने के लिए विवश बना हुआ है। वह अपनी फटी झोली को फैलाकर सिर्फ मुट्ठी भर दाने की आशा कर रहा है, जिससे की वह अपनी और अपने बच्चों की भूख मिटा सके। उसके दो बच्चे भी अपने दोनों हाथों को फैलाकर भूख का इजहार करते हुए भीख माँग रहे

हैं। लेकिन किसी से भी कुछ न मिलने पर उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। भूख मिटाने के लिए रस्ते पर पड़ी जूठी पत्तलों के लिए भी उन्हें कुत्तों से संघर्ष करना पड़ता है।

3) कैसी विडम्बना है कि जो चीज पशुओं की अधिकार की है उसके लिए भी इंसान को संघर्ष करना पड़ता हे। उन भिखारियों की इस दीन-हीन अवस्था को देख कवि के संवेदनशील हृदय में उनके प्रति सहानुभूति प्रकट होती है। कवि उन्हें अभिमन्यु सा बनने के लिए कहते हुए उनके दु:ख-दर्द को अपने हृदय में समेटते हुए, उनके दु:ख-दर्द को दूर करना चाहत हैं।

4) अत: समाज के शोषित-पीड़ित वर्ग की व्यथा को प्रस्तुत कविता के माध्यम से सम्मुख रखते हुए तथा उनके प्रति अपार सहानुभूति प्रकट करते हुए समाज को ऐसे वर्ग के प्रति इंसानियत की दृष्टि से देखने की सीख कवि ने दी है।

1.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) कवि निराला जी ने भिखारी का चित्रण किस प्रकार से किया है।
2) 'भिक्षुक' कविता के भिखारी के बच्चों की दीनता पर प्रकाश ड़ालिए।
3) कवि निराला जी किस प्रकार से भिखारियों के दु:ख-दर्द को अपने हृदय में समेटते हुए उनके प्रति संवेदनशील सहानुभूति प्रकट की है?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'भिक्षुक' कविता में निराला जी ने भिक्षुक की दीन-हीन दशा का वर्णन किस प्रकार से किया है?
2) 'भिक्षुक' कविता में कवि ने समाज के शोषित, पीड़ित, उपेक्षित वर्ग के प्रति आस्था एवं संवेदनशील अनुभूति को प्रकट किया हैं, स्पष्ट कीजिए।
3) निराला जी ने अपनी 'भिक्षुक' कविता के माध्यम से समाज में व्याप्त भिखारियों की समस्या को उजागर करते हुए क्या बलताना चाहा है? अपने शब्दों में बयान कीजिए।
4) 'भिक्षुक' कविता के उद्देश्य-पक्ष को विशद कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'भिक्षुक' कविता के आधार पर कहानी लिखने का प्रयास कीजिए।
2) 'भिक्षुक' के समान मराठी की एक कविता को पढ़िए तथा दोनों की तुलना कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'परिमल' काव्यंग्रह - निराला

2) निराला काव्य : पुनर्मूल्यांकन - धनंजय वर्मा

3) निराला : कवि और कथाकार - डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र, प्रा. रा. तु. भगत

4) निराला - डॉ. रामविलास शर्मा

5) क्रांतिकारी कवि निराला - डॉ. बच्चनसिंह

◆◆◆

इकाई 1 (ख)

2. बालिका का परिचय

- सुभद्राकुमारी चौहान

अनुक्रम

2.1 उद्‌देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवरण

- 2.3.1 सुभद्राकुमारी चौहान का परिचय
- 2.3.2 'बालिका का परिचय' कविता का परिचय
- 2.3.3 'बालिका का परिचय' कविता का भावार्थ
- 2.3.4 'बालिका का परिचय' कविता की विशेषताएँ

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्‌देश्य :

1) राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत कवयित्री सुभद्रा जी के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।

2) बालिका के सुनहरे रूप-दर्शन एवं उसके गुणों के सजीव चित्रण से तृप्त हो सकेंगे।

3) इंसान के जीवन में बेटी की अहमियत एवं उसके मोहक लुभावने सौंदर्य को जान सकेंगे।

4) सुभद्रा जी द्‌वारा वर्णित समूचे नारी के गौरव एवं उसकी विशेषताओं को अवगत कर सकेंगे।

2.2 प्रस्तावना :

हिंदी काव्य-क्षेत्र में स्वाधीनता-संग्राम को लेकर बहुत सारे काव्य का सृजन हुआ। स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से क्रांति की मशाल जला दी और जन-जन में मातृभूमि के प्रति के प्रेम को संचरित किया। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर लिखनेवाले कवियों में सुभद्राकुमारी चौहान जी का नाम अग्रक्रम में आ जाता है। उनकी ज्यादातर कविताएँ देशप्रेम से ओत-प्रोत हैं, जिन्होंने समकालीन परिवेश में जन-जन में राष्ट्रीय चेतना को जागृत कर दिया। 'झाँसी की रानी' जैसी अजरामर कविता का सृजन कर उन्होंने उस समय के नौजवानों में देश के प्रति मरमिटने के लिए एक जोश उत्पन्न किया था। प्रस्तुत कविता के माध्यम से भी उन्होंने बेटी के गुणों का सजीव वर्णन करते हुए समाज में नारी के सौंदर्य, उसकी महत्ता एवं उसके मनमोहक रूप को विशद किया है।

2.3 विषय-विवरण :

महान कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान जी हिंदी साहित्य में अपना अनन्यसाधारण महत्त्व रखती हैं। प्रस्तुत कविता में उन्होंने अपनी बेटी का बेहद सुंदरता के साथ वर्णन किया है। उनके लिए बेटी ही सबकुछ है। बेटी ही उनके लिए गोदी की शोभा, सुख-सुहाग की लाली, भिखारिन की शाही शान, मतवाली मनोकामना हैं। उनके लिए बेटी ही अंधरे में दीपक की ज्योति, काले बादलों के बीच उजाला, कमल में कैद भँवरे के मुक्ति का आनंद, पतझड़ के बाद के हरियाली का आनंद बनी हुई है। बेटी में ही वे तपस्वी की तपस्या, अंधे की दृष्टि, ज्ञानी की खुशी को महसूस करती हैं। बेटी में ही उन्हें बचपन की यादें साकार होती नजर आती हैं। वह उनके लिए मंदिर, मस्जिद, काबा एवं काशी है। साथ ही वह कवयित्री की जप-तप एवं ध्यान-धारणा बन गई है। सुभद्रा जी बेटी को पाकर बालक कृष्ण की लीला तथा राम के प्रति कौशल्या माता के ममता भाव को अपने मन में देखती है। अपनी बेटी में ही कवयित्री ईसा के क्षमा भाव, मुहम्मद के विश्वास, जिनवर और गौतम के दयाभाव को देखती है। बालिका के इन सारे गुणों के वर्णन के बावजूद सुभद्रा जी कहती हैं कि बालिका का परिचय वही जान सकता है, जिसके पास माँ का दिल है।

2.3.1 सुभद्राकुमारी चौहान का परिचय :

सुभद्राकुमारी चौहान जी हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका हैं। उनका जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गाँव में रामनाथसिंह के परिवार में 16 अगस्त, 1904 ई. को हुआ। उनके पिता ठाकुर रामनाथसिंह शिक्षा प्रेमी थे और उन्हीं की देख-रेख में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। इनकी प्रारंभिक शिक्षा कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज, प्रयाग में हुई। बाल्यकाल से ही वे कविताएँ रचने लगी थी। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता की

भावना से परिपूर्ण हैं। सन 1919 में खंडवा के ठाकूर लक्ष्मणसिंह के साथ विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थीं। सन 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थीं। स्वाधीनता की लड़ाई में अपने पति का साथ देते हुए वे दो बार जेल भी गई थीं। पति की साहित्य के प्रति गहरी निष्ठा थी, अत: सुभद्रा जी की काव्ययात्रा को प्रोत्साहन ही मिला। माखनलाल चतुर्वेदी जी के संपर्क में आने के बाद आपकी काव्यधारा में राष्ट्रीयता की भावना निखर आई। साहित्यसेवा और देशसेवा ही आपके जीवन का उद्देश्य बन गया। आपका जीवन अत्यंत सीधा, सरल तथा सादगीपूर्ण रहा। आप मध्यप्रदेश विधानसभा की सदस्या भी रहीं दुर्भाग्यवश 15 फरवरी, 1948 ई. को एक मोटर दुर्घटना में आपकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख रचनाएँ :

कविता संग्रह - 'मुकुल', 'नक्षत्र' और 'त्रिधारा'।

कहानी संग्रह - 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी' और 'सीधे सादे चित्र'।

सम्मान :

भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 ई. को सुभद्राकुमारी चौहान जी की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए नए नियुक्त एक तटरक्षक जहाज को सुभद्राकुमारी चौहान जी का नाम दिया। भारतीय ड़ाकघर विभाग ने 6 अगस्त, 1976 ई. को सुभद्राकुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक ड़ाक-टिकट जारी किया है।

2.3.2 'बालिका का परिचय' कविता का परिचय :

सुभद्रा जी ने अपनी काव्य-साधना में एक ओर तो देशप्रेम से ओत-प्रोत क्षत्राणियों की वीरता का वर्णन किया है तो दूसरी ओर नारी के कोमलतम, संवेदनशील, उदात्त एवं भावुक पक्षों का भी उद्घाटन किया है। बेटी के अद्भुत, कोमलतम एवं सौंदर्यात्मक पक्ष को लेकर सुभद्रा जी ने उसके गुण एवं विशेषताओं की चर्चा प्रस्तुत कविता में की है। बालिका के कितने ही सारे गुण एवं उसकी महत्ता पर प्रस्तुत काव्य के माध्यम से प्रकाश ड़ाला गया है। जैसे कि किसी के प्राण किसी में बसे होते हैं उसी तरह से कवयित्री के प्राण उनकी बेटी में बसे हुए हैं, बेटी में ही उन्हें अपना सबकुछ दिखाई देता है, बेटी ही उनके लिए ईश्वर है।

अपनी जिंदगी में बेटी के मायने बताती हुई कवयित्री कहती हैं कि बेटी ही उनकी गोदी की शोभा है, सुहाग की लाली है, भिखारिन को मिली शाही शान है, दीपक की ज्योति हैं, काले बादालों के बीच उजाला है, कमल में कैद भँवरे के मुक्ति का आनंद, पतझड़ के बाद की हरियाली का आनंद है। बेटी के इर्द-गिर्द ही उनका सारा की सारा आल्हाद बिखरा हुआ है। तपस्वी की 1 तपस्या, अंधे की 2 दृष्टि, ज्ञानी की ज्ञानधारणा को तथा अपने बचपन को वे अपनी बेटी में महसूस करती हैं। सुभद्रा जी के लिए उनकी बेटी ही मंदिर, मस्जिद, काबा और काशी हैं। सुभद्रा जी बेटी को पाकर बालक कृष्ण की लीला तथा राम के प्रति कौशल्या माता के ममता भाव को अपने मन में देखती है। सुभद्रा जी बालिका में ईसा के क्षमा भाव, मुहम्मद के विश्वास, जिनवर और गौतम के दयाभाव को देखती हैं। वे बालिका के इन सारे गुणों के वर्णन के बावजूद कहती हैं कि बालिका का परिचय वही जान सकता है, जिसके पास

माँ का दिल है। बालिका के बेहतरीन मोहक, आल्हादक रूप को तथा उसके गुणों को बेहद सजीवता के साथ इस कविता में कवयित्री ने चित्रित किया है और बालिका के अहमियत पर प्रकाश ड़ाला है।

2.3.3 'बालिका का परिचय' कविता का भावार्थ :

'बालिका का परिचय' कविता में कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान जी ने बालिका के गुणों का सजीव चित्रण किया है। कवयित्री के अनुसार बेटी ही उनकी गोदी की शोभा है, सुख और सुहाग की लालिमा है, भिखारिन को मिली शाही शान है तथा मतवाली मनोकामना है। कवयित्री के लिए उनकी बेटी ही अंधरे में दीपक की ज्योति के समान है, काले बादलों के बीच उजाले के समान हैं। सुभद्रा जी के लिए उनकी बटी कमल में कैद भँवरे को सुबह मुक्ति का जो आनंद मिलता हैं, उसके समान है। पतझड़ के बाद आनेवाली हरियाली के आनंद की अनुभूति है।

कवयित्री के सूने जीवन में उनकी बेटी अमृत बनकर उन्हें नवजीवन प्रदान करती है। जैसे तपस्वी अपनी तपस्या में मग्न रहता है, ठीक उसी तरह कवयित्री भी अपनी बेटी के सानिध्य में मग्न रहती हैं। अंधे को दृष्टि पाने के बाद जो आनंद मिलता है और सच्ची लगन से अपने मन को वश में करके ज्ञान प्राप्त करने वाले ज्ञानी को जो ख़ुशी मिलती है, वही ख़ुशी कवयित्री अपनी बेटी के साथ महसूस करती है। बालिका कवयित्री के बीते हुए बचपन को याद दिलाने वाली, खेलकूद का एहसास कराने वाली वाटिका है। बालिका कवयित्री की ही तरह मचलती, किलकती तथा हँसती हुई उनके बचपन की यादों को नाटिका के रूप में प्रस्तुत करती है।

कवयित्री के लिए उनकी बेटी ही मंदिर, मस्जिद, काबा और काशी है, अर्थात लोगों को इन स्थानों में जाकर जिस आनंद और शांति की अनुभूति होती है, वही अनुभूति उन्हें अपनी बेटी के साथ रहकर मिलती है। बेटी ही कवयित्री की ध्यान-धारणा और जप-तप बन गई है। बेटी में ही उन्हें घट-घट-वासी (ईश्वर) के दर्शन होते हैं। हर पल हर जगह कवयित्री को अपनी बेटी का ही खयाल रहता है। अपनी बेटी को पाकर कवयित्री बालक कृष्ण की लीला अपने आँगन में तथा बालक राम के प्रति कौशल्या माता की ममता का भाव अपने मन में देखती हैं।

कवयित्री अपनी बेटी में ही प्रभु ईसा का क्षमा भाव, नबी मुहम्मद का विश्वास, जिनवर और गौतम बुद्ध द्वारा सभी प्राणियों पर किया गया दया भाव देखती हैं। बालिका के इतने गुणों का सजीव चित्रण करने पर भी कवयित्री का कहना है कि बालिका का परिचय सिर्फ वही जान सकता है, जिसके पास माँ का दिल है।

2.3.4 'बालिका का परिचय' कविता की विशेषताएँ :

1. प्रस्तुत कविता के माध्यम से बालिका के गुणों का बेहद मार्मिक एवं सजीव चित्रण करते हुए बेटी के महत्त्व को अंकित किया गया है।
2. बेटी कवयित्री के लिए जेसे अहम मायने रखती है, वैसे ही समाज जीवन में भी बनी उसकी अहमियत को यह कविता अधोरेखित करती है।
3. कवयित्री के लिए बेटी ही उनकी गोदी की शोभा है, सुहाग की लाली है, भिखारिन को मिली शाही शान

है, दीपक की ज्योति है, काले बादलों के बीच उजाला है, कमल में कैद भँवरे के मुक्ति का आनंद, पतझड़ के बाद की हरियाली का आनंद है। कविता के माध्यम से बालिका की इन विशेषताओं से परिचित कराया गया है।

4. कवयित्री के लिए बालिका तपस्वी की तपस्या, अंधे की दृष्टि, ज्ञानी की ज्ञानधारणा है तथा अपने बचपन को वे अपनी बेटी में महसूस करती हैं। उनके लिए उनकी बेटी ही मंदिर, मस्जिद, काबा और काशी है। बेटी को पाकर वे बालक कृष्ण की लीला तथा राम के प्रति कौशल्या माता के ममता भाव को अपने मन में देखती है। साथ ही बालिका में ईसा के क्षमा भाव, मुहम्मद के विश्वास, जिनवर और गौतम के दयाभाव को वे देखती है। इस प्रकार बेटी की सभी विशेषताओं को लेकर मानव जीवन में उसकी महत्ता को कवयित्री ने रेखांकित किया है।

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'बालिका का परिचय' यह कविता .... जी की है।

1) रघुवीर सहाय 2) कीर्ति चौधरी 3) सुभद्राकुमारी चौहान 4) अनामिका

2) सुभद्रा जी के अनुसार बेटी ही उनकी गोदी की .... है।

1) शान 2) सुषमा 3) पहचान 4) शोभा

3) कवयित्री के लिए बेटी .... में कैद भँवरे को सुबह मुक्ति का जो आनंद मिलता है उसके समान है।

1) पत्तों 2) घर 3) कमल 4) फुलों

4) जैसे .... अपनी तपस्या में मग्न रहता है, ठीक उसी तरह कवयित्री भी अपनी बेटी के सानिध्य में मग्न रहती हैं।

1) इंसान 2) महामानव 3) महान व्यक्ति 4) तपस्वी

5) सुभद्रा जी अपने बचपन को .... में महसूस करती हैं।

1) सपनों 2) खयालों 3) किताबों 4) बालिका

6) कवयित्री के लिए उनकी बेटी ही मंदिर, मस्जिद, काबा और .... है।

1) अयोध्या 2) काशी 3) कर्बला 4) गिरजाघर

7) बेटी को पाकर कवयित्री बालक .... के प्रति कौशल्या माता की ममता का भाव अपने म में देखती हैं।

1) अर्जुन 2) कृष्ण 3) राम 4) हनुमान

8) कवयित्री अपनी बेटी में ही जिनवर और गौतम बुद्ध के .... भाव को देखती है।

1) जीव दया 2) महान 3) सुंदर 4) विशाल

9) सुभद्रा जी के अनुसार बालिका का परिचय सिर्फ वही जान सकता है, जिसके पास .... का दिल है।

1) इंसान 2) भगवान 3) माँ 4) ज्ञानी

2.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) लाली - खुशी, प्रसन्नता का प्रतीक।

2) शाही शान - राजसी प्रतिष्ठा।

3) मतवाली - मस्ती भरी, खुशियों भरी।

4) दीप-शिखा - दीपक की ज्योति।

5) घटा - काले बादल।

6) कमल भृंग - कमल के फूल में कैद भँवरा।

7) पतझड - उदासी का मौसम।

8) हरियाली - वसंत ऋतु, ऋतुराज।

9) सुधा-धार - अमृतधारा।

10) मगन - तल्लीन, एकाग्र होना।

11) तपस्वी - साधु, तप करनेवाला।

12) मनस्वी - विद्वान, ज्ञानी।

13) वाटिका - बगीचा, बाग, उपवन।

14) मचलना - रूठना, मस्ती करना।

15) किलकना - बच्चों की हँसी।

16) घट-घट-वासी - सभी जगह मौजूद, भगवान।

17) कृष्णचंद्र - बालक कृष्ण।

18) मातृमोद - मातृत्व का आनंद।

2.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) सुभद्राकुमारी चौहान 2) शोभा 3) कमल

4) तपस्वी	5) बालिका	6) काशी
7) राम	8) जीवदया	9) माँ

2.7 सारांश :

1) सुभद्राकुमारी चौहान जी ने राष्ट्रीय भावना के साथ ही नारी के अनगिनत संवेदनशील पहलुओं को लेकर भी अपनी काव्य-सर्जना की है। प्रस्तुत कविता में बालिका के कोमलतम, लुभावने, बेहद व्यापक एवं महिमामय रूप को वर्णित किया गया है। बालिका के कितने ही सारे गुणों, विशेषताओं एवं उसकी महत्ता पर प्रस्तुत काव्य के माध्यम से प्रकाश ड़ाला गया हैं।

2) कवयित्री के लिए उनकी बेटी ही सबकुछ है, बेटी में ही उन्हें ईश्वर के दर्शन होते हैं। बेटी ही उनकी गोदी की शोभा है, सुहाग की लाली है, भिखारिन को मिली शाही शान है, दीपक की ज्योति है, काले बादलों के बीच उजाला है, कमल में कैद भँवरे के मुक्ति का आनंद, पतझड़ के बाद की हरियाली का आनंद है।

3) अपनी बेटी में ही कवयित्री की जान बसी हुई है। अपनी बेटी में वे तपस्वी की तपस्या, अंधे की दृष्टि, ज्ञान की ज्ञानधारणा को तथा अपने बचपन को महसूस करती हैं। कवयित्री के लिए उनकी बेटी ही मंदिर, मस्जिद, काबा और काशी है और बेटी ही उनकी ध्यान-धारणा और जप-तप बन गई है। सुभद्रा जी बेटी को पाकर बालक कृष्ण की लीला तथा राम के प्रति कौशल्या माता के ममता भाव को अपने मन में देखती है।

4) सुभद्रा जी बालिका में ईसा के क्षमा भाव, मुहम्मद के विश्वास, जिनवर और गौतम के दयाभाव को देखती है। बालिका के इतने गुणों का सजीव चित्रण करने पर भी कवयित्री का कहना है कि बालिका का परिचय सिर्फ वही जान सकता है, जिसके पास माँ का दिल है।

5) अत: प्रस्तुत कविता के माध्यम से बालिका के गुणों एवं विशेषताओं का सजीव चित्रण करते हुए जीवन में निहित उसकी व्यापक महत्ता को सुभद्रा जी ने उजागर किया है।

2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) सुभद्राकुमारी चौहान जी ने बालिका का परिचय किस तरह दिया है?

2) सुभद्रा जी को बालिका में कौन-से गुण दिखाई देते हैं?

3) बालिका कवयित्री के जीवन में किस प्रकार महत्त्व रखती है?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'बालिका का परिचय' कविता में सुभद्राकुमारी चौहान जी ने बालिका का चित्रण किस प्रकार से किया है?

2) 'बालिका का परिचय' इस कविता के द्वारा सुभद्राकुमारी चौहान जी ने बालिका की महत्ता को किस प्रकार से विशद किया है?

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'बालिका का परिचय' जैसी ही बेटी गुण एवं महिमा को अंकित करनेवाली मराठी की कोई कविता का अध्ययन कीजिए।
2) बेटी को लेकर हिंदी में लिखी गई अन्य कविताओं का संकलन कीजिए एवं उन्हें पढिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'झाँसी की रानी' कविता - सुभद्राकुमारी चौहान
2) 'झाँसी की रानी की समाधि पर' कविता - सुभद्राकुमारी चौहान
3) 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता - सुभद्राकुमारी चौहान
4) 'मुकुल' काव्य-संग्रह - सुभद्राकुमारी चौहान
5) 'त्रिधारा' काव्य-संग्रह - सुभद्राकुमारी चौहान

◆◆◆

इकाई 1 (ग)

3. तेरी खोपड़ी के अंदर

- नागार्जुन

अनुक्रम

3.1 उद्‌देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरण

3.3.1 नागार्जुन परिचय

3.3.2 'तेरी खोपडी के अंदर' कविता का परिचय

3.3.3 'तेरी खोपडी के अंदर' कविता का भावार्थ

3.3.3 'तेरी खोपडी के अंदर' कविता की विशेषताएँ

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्‌देश्य :

इस कविता को पढ़ने के बाद आप -

1) प्रगतिवादी काव्य के प्रतिनिधिक काव्य-स्वरूप से परिचित होंगे।

2) सांप्रदायिक द्‌वेष के असर से ग्रस्त आम आदमी की दयनीय दशा को जान सकेंगे।

3) सांप्रदायिक दंगों की भीषणता, उसके परिणाम एवं उसे सहने के लिए विवश इंसान की गहनता से सोचने के लिए बाध्य कर देने वाली भयावह अवस्था को समझ कर सकेंगे।

4) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कविता की प्रासंगिकता को महसूस कर सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना :

हिंदी काव्य-जगत् में प्रगतिवादी सशक्त आंदोलन के श्रेष्ठ हस्ताक्षर के रूप में नागार्जुन को जाना जाता है। प्रगतिवादी कवि नागार्जुन जी ने समाज में फैली बुराईयाँ, कुरीतियाँ, अन्याय, शोषण, सामाजिक विसंगतियाँ, धार्मिक अंध:विश्वास, पाखंड आदि पर निर्भिकता से कठोर प्रहार किया। प्रगतिवादी होने के साथ ही वे प्रयोगवादी भी रहे। सामाजिक यथार्थता को सच्चाई के साथ उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज-सम्मुख रखा। हिंदी काव्य में उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। उनकी सच्चाई, सामाजिक-धार्मिक विसंगतियों पर ड़टकर कटु प्रहार करने की निड़रता के कारण उन्हें 'आधुनिक कबीर' भी कहा जाता है। अपने समूचे साहित्य के माध्यम से उन्होंने आम आदमी केंद्रित समाज का वास्तव चित्रण खिंचकर समाज की आँखे खोलते हुए उसे राह दिखाने का प्रयास किया है।

3.3 विषय-विवरण :

प्रगतिवादी कवि नागार्जुन जी ने आपनी कविताओं में ड़टकर सामाजिक-धार्मिक विसंगतियों का पर्दाफाश किया है। मजहब की दीवारें सामान्य जन को जीने तक नहीं देती, इसकी सच्चाई को बेहद गंभीरता के साथ उन्होंने प्रस्तुत कविता में चित्रित किया है। सांप्रदायिक दंगों के कारण पूरे परिवेश की चिंताजनक स्थिति और इस गहरे असर में जीवनयापन करने के लिए मजबूर किसी भी संप्रदाय के आम आदमी की जद्‌दोजहद को कविता बखूबी ढ़ंग से पेश करती है। ऐसे दंगों के बाद की भीषण अवस्था में कोई कलीमुद्‌दीन प्रेम प्रकाश बनकर ही अपना और अपने परिवार का पेट पाल सकता है। भूख की आग ने उसे कलीमुद्‌दीन से प्रेम प्रकाश बनने के लिए विवश कर दिया हैं। जीने के लिए मजदूरी पाने की कोशिश में वह अपना रहन-सहन, वेश-भूषा, तौर-तरीके तक बदल देता है, फिर भी कई समाजकंटक, विरोधी सांप्रदायिक शक्तियों द्‌वारा रूकावटें पैदा की जाती हैं। प्रस्तुत कविता में प्रेम प्रकाश जैसे आम आदमी की हीन-दीन दशा के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए कवि उसकी वकालत करते हैं तथा समाज को इस दृष्टि से सोचने के लिए प्रेरित करते हुए सीख देते हैं।

3.3.1 वैद्‌यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' का परिचय :

हिंदी साहित्य के अद्‌वितीय साहित्यकार के रूप में नागार्जुन जी को जाना जाता है। उनका असली नाम वैद्‌यनाथ मिश्र है। प्यार से उन्हें लोग 'बाबा नागार्जुन' भी कहते हैं। उनका जन्म बिहार राज्य के दरभंगा प्रमंडल के

अंतर्गत मधुबनी जिले के सतलखा नामक गाँव में 30 जून, 1911 ई. में संस्कारशील ब्राह्मण परिवार में हुआ। हिंदी साहित्य में उन्होंने 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ की। हिंदी और संस्कृत के अलावा पाली में भी उन्होंने कविताएँ लिखी हैं। उनके चार वर्ष की आयु में ही माता के गुजर जाने के बाद उनका पालन-पोषण उनके पिताजी ने किया। नागार्जुन का व्यक्तित्त्व निर्भिक था, वे स्वतंत्र-वृत्ति के तथा संघर्षशील थे। घुमक्कड़ प्रकृति के व्यक्ति होने के कारण वे एक स्थान पर टिक नहीं पाए। काशी और कलकत्ता में उन्होंने संस्कृत का अध्यापन कार्य किया। श्रीलंका में बौद्ध भिक्षु के रूप में यात्रा की। उनकी कविता का ध्येय लोकहित रहा है। इसीलिए उन्होंने सीधी-सादी लोकभाषा को ही अपनाया है। जनसाधारण के प्रति उनके हृदय में आस्था थी। समाज में व्याप्त शोषण, सामाजिक रीतियों एवं धार्मिक रूढ़ियों के प्रति उन्होंने मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाया है, लेकिन मार्क्सवाद का प्रचार-प्रसार नहीं किया। सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, विसंगतियों तथा पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ उन्होंने विद्रोह किया है।

जनता की अदम्य शक्ति पर विश्वास रखने वाले नागार्जुन जी छायावादोत्तर प्रगतिशील हिंदी कविता के प्रथम पंक्ति के जनकवि है। आपका दु:ख समूची पीड़ित मानवता का दु:ख है। उनके काव्य की मुख्य विशेषता और प्रखर सामाजिक दृष्टिकोण तथा जीवंत यथार्थबोध। व्यंग्य उनकी कविता का प्रधान हथियार रहा है। आधुनिक व्यवस्था के खोखलेपन को उन्होंने व्यंग्य के जरिए प्रस्तुत किया हैं। उनके 'पत्रहीन नग्न गाछ' इस मैथिली काव्य-संग्रह को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। नागार्जुन जी को 'आधुनिक कबीर' भी कहा जाता है। अपनी कलम से हिंदी साहित्य को समृद्ध करने वाले नागार्जुन जी का 5 नवम्बर, 1998 को ख्वाजा सराय, दरभंगा, बिहार में देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ :

कविता-संग्रह - युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, भस्मांकुर, हजार हजार बाँहोंवाली, तालाब की मछलियाँ, खून और शोले, प्रेत का बयान, तुमने कहा था, भूमिजा, चना ओर गरम, शपथ, खिचड़ी, विप्लव देखा हमने, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्न-गर्भ, आखिर ऐसा क्या कह दिया हमने, इस गुब्बारे की छाया में आदि।

उपन्यास - रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरूण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ, दु:ख-मोचन, नई पौध, कुंभीपाक, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, हीरक जयंती आदि।

मैथिली रचनाएँ - चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (काव्य), नव तुरिया, पारि (उपन्यास)।

संस्कृत में लिखित कविताएँ - देश दशकम्, कृषक दशकम्, श्रमिक दशकम्।

अनुवाद - मेघदूत, गीत-गोविंद, विद्यापति के गीत।

आलोचना - 'एक व्यक्ति का युग' शीर्ष से निराला का मूल्यांकन।

संपादन - दीपक (अबोहर-पंजाब), विश्वबंधु (लाहौर), कौमी बोली (हैद्राबाद-सिंध)।

3.3.2 तेरी खोपडी के अंदर कविता का परिचय :

प्रगतिवादी जनकवि नागार्जुन जी ने अपनी कविताओं में सामान्य जन को केंद्रित कर उनकी समस्याओं को, विवशताओं को, उसकी पीड़ा को, उसपर होते अन्याय-अत्याचार को तथा उसकी अनगिनत संवेदनाओं को समाज-सम्मुख रखने का प्रयास किया है। साथ ही सामाजिक-धार्मिक-सांप्रदायिक कुरीतियों, विसंगतियों पर भी कठोर प्रहार किया हैं। प्रस्तुत कविता में सांप्रदायिक दंगों के बाद की आम आदमी की भीषण एवं दीन-हीन स्थिति को उजागर किया गया है। यह कविता उनके 'ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या?' इस काव्य-संग्रह में संकलित है। इस कविता में कलीमुद्दीन मुस्लिम रिक्षावाला होने के कारण मेरठ में ज्यादातर हिंदू यात्रियों से अपनी मजदूरी पाने के लिए अपना नाम बदल कर प्रेम प्रकाश रखता है। सिर्फ यही नहीं वह जोगिया रंग का कुर्ता, माथे पर चंदन का टीका, कान में लाल फूल और गले में रूद्राक्ष की माला भी पहनता है। लेकिन कलीमुद्दीन से प्रेम प्रकाश बनकर भी उसे सांप्रदायिक विरोधों एवं द्वेष का सामना करना पड़ता हैं। कवि कल्लू को पहचानते हैं, उनके संवेदनशील हृदय में उसके प्रति गहरी सहानुभूति उत्पन्न होती है और वे उसकी रिक्षा में बैठकर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हैं। मजदूरी न मिलने के कारण कल्लू और उसका लाचार परिवार भूख की समस्या से ग्रस्त है। कई दिनों की भूखमरी के बाद मजबूर कलीमुद्दीन प्रेम प्रकाश बन कर ही अपनी एवं अपने परिवार की भूख मिटा सकता है। कवि कल्लू एवं उसके परिवार की दर्दनाक दशा के प्रति अपार सहानुभूति जताते हैं।

कवि मन ही मन कल्लू के परिवार में स्थित उसकी बूढ़ी दादी, बीमार अब्बाजान के साथ बैठकर चाय पीने की ख्वाहिश जताते हैं, जहाँ कल्लू के नन्हें-मुन्ने बच्चे मेरी दाढ़ी के बाल सहलाएँगे। तभी उनके अंदर से एक गुस्सैल आवाज आती है कि खूसट बुड्ढ़े तेरी खोपड़ी के अंदर यह क्या चल रहा है। कवि ने यहाँ तमाम इंसानी संवेदनाओं पर प्रतीकात्मक ढ़ंग से प्रश्नचिह्न लगाया है। आज भी ऐसी स्थिति के दर्शन होते रहते हैं, जिसमें आम आदमी को ही ज्यादातर उसके गंभीर परिणामों को भुगतना पड़ता है। अत: प्रस्तुत कविता के माध्यम से सांप्रदायिक द्वेष से घिरे आम आदमी की व्यथा को चित्रित करते हुए सांप्रदायिक द्वेष का विरोध कर सांप्रदायिक सद्भाव की कामना करते हैं।

आज भी इस प्रकार के सांप्रदायिक दंगों के कारण कविता में वर्णित भयावह स्थिति के दर्शन होते हैं और फिर आम आदमी को ही सबसे ज्यादा इससे उत्पन्न गंभीर परिणामों से गुजरना पड़ता हैं। अत: जन-सामान्य के पक्षधर कवि नागार्जुन जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से पूरी सच्चाई के साथ सांप्रदायिकता की समस्या से ग्रस्त आम आदमी की व्यथा को उजागर कर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हुए सीख दी है, जो आज के परिवेश में भी प्रासंगिक है।

3.3.3 तेरी खोपडी के अंदर कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता के माध्यम से नागार्जुन जी ने हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक झगड़ों के बाद उसका गहरा असर कितनी हद तक हिंदू और मुस्लिम दोनों मजहबों के आम आदमियों पर होता है, इसे बड़ी ही संवेदनशीलता और

यथार्थता के साथ बयान किया है। उत्तर प्रदेश में एक गंगातटवर्ति जिला है मेरठ, जहाँ हर साल गंगा नहाकर पुण्य कमाने वालों की संख्या लाखों में होती है। जब मेरठ में सांप्रदायिक दंगा हुआ तो सामान्य मजदूर, सामान्य जनता का ही नुकसान सबसे ज्यादा हुआ। कविता की शुरूआत में ही हिंदू-मुस्लिम दंगे से प्रभावित अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए मजबूर रिक्षावाला प्रेम प्रकाश कवि से मिलता है। प्रेम प्रकाश ने जोगिया रंग का कुर्ता, माथे पर चंदन का टीका, कान में लाल फूल और गले में रूद्राक्ष की माला पहनी है। प्रेम प्रकाश अत्यंत गंभीरता से कवि से पूछता है कि उन्हें कहाँ जाना है। गेहूँए रंग के उस दुबले-पतले, बड़ी-बड़ी आँखों वाले, चंदन का टीका लगाए हुए और पीली लुंगी पहने हुए युवक को देखते ही कवि उसे पहचान लेता है। मजदूरी पाने की समस्या से ग्रस्त उसकी चिंता कवि को स्पष्ट दिखाई देती है। प्रेम प्रकाश अर्थात वह कल्लू अर्थात कलीमुद्दीन ही था।

सांप्रदायिक दंगों के कारण प्रेम प्रकाश अर्थात कलीमुद्दीन जैसे लोगों को निर्दोष होते हुए भी रोजी-रोटी के लिए तरसना पड़ता है। मेरठ में गंगास्नानादि के लिए आनेवाले यात्री ज्यादातर हिंदू होते हैं, इसलिए कलीमुद्दीन से प्रेम प्रकाश बनकर रिक्षा चलाते हुए वह अपने परिवार के लिए चार पैसे जुटाने की कोशिश में है। लेकिन जैसे ही कवि प्रेम प्रकाश की रिक्षा में बैठने लगे बाकी रिक्षवालों ने कवि को उसकी रिक्षा में बैठने से रोकना चाहा, क्योंकि भले ही वह हिंदू दिखता है, मगर वह मुसलमान है। जब सांप्रदायिक शक्तियाँ कवि नागार्जुन जी को प्रेम प्रकाश की रिक्षा में बैठने से रोकते हुए सावधान कराते हैं, तब कवि विद्रोह कर कलीमद्दीन उर्फ प्रेम प्रकाश की रिक्षा में बैठकर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हैं।

समाज में व्याप्त जनसाधारण के प्रति दृढ़ आस्था रखनेवाले बाबा नागार्जुन जी कलीमुद्दीन और उसके परिवार के प्रति गहरी संवेदनशीलता बरतते हैं। प्रेम प्रकाश अपनी रिक्षा से कवि और उनके मित्र को ले जाते वक्त उनकी बातें सुनता है। इसलिए वह मेरठ कॉलेज होस्टेल के गेट पर कवि को पहुँचाने पर कहता है कि अब वह चुटैया भी रखेगा, क्योंकि आठ-दस रोज की भूखमरी के बाद उसके अंदर यह अक्ल फूटी है, रूद्राक्ष के मनके अच्छी मजूरी दिला रहे हैं, अब वह चंदन का टीका भी रोज लगाएगा और उसने अपना नाम भी तो बदल दिया था- प्रेम प्रकाश। उसे जाते देख कवि सोचते हे कि भूख की भट्टी में कलीमुद्दीन खाक हो गया है, भूख ने ही उसे कलीमुद्दीन से प्रेम प्रकाश बनाया है। प्रेम प्रकाश बनकर ही वह अपनी रोजी-रोटी पा सकेगा और अपने परिवार को कुछ खिला सकेगा।

कवि कल्लू से दिली ख्वाहिश अदा करते हैं कि मुझे उस नाले के करीब ले जा जहाँ कल्लू का परिवार रहता हैं मुझे उसकी बूढ़ी दादी, बीमार अब्बाजान के साथ बैठकर चाय पीनी है, जहाँ कल्लू के नन्हें-मुन्ने बच्चे मेरी दाढ़ी के बाल सहलाएँगे। और... कवि अपनी इसी सोच में मग्न हैं कि उनके अंदर से एक गुस्सैल आवाज आती है कि खूसट बुड्ढ़े, तेरी खोपड़ी के अंदर यह क्या चल रहा हैं कल्लू तेरा लगता ही कौन है? खबरदार, तुझे मेरठ आने के लिए ही किसने कहा था? जो आवाज कवि को आज भी कभी-कभी सुनाई देती रहेगी। याने यहाँ कवि ने तमाम इंसानी संवेदनाओं पर प्रतीकात्मक ढ़ंग से प्रश्नचिह्न लगाया है। एक इंसान के नाते इस समस्या की ओर अनदेखा कर देना कि कल्लू लगता ही है कौन किसी का? और फिर प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक ढ़ंग से ऐसी स्थितियों में इंसान की

फितरत, मानसिकता एवं संवेदनाओं के प्रति प्रक्षोभ जाहीर करना कवि का लक्ष्य है। आज भी इस प्रकार के सांप्रदायिक दंगों के कारण कविता में वर्णित भयावह स्थिति को दर्शन होते हैं और फिर आम आदमी को ही सबसे ज्यादा इससे उत्पन्न गंभीर परिणामों से गुजरन पड़ता है। अत: जन-सामान्य के पक्षघर कवि नागार्जुन जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से पूरी सच्चाई के साथ सांप्रदायिकता की समस्या से ग्रस्त आम आदमी की व्यथा को उजागर कर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हुए सीख दी है, जो आज के परिवेश में भी प्रासंगिक है।

3.3.4 तेरी खोपडी के अंदर कविता की विशेषताएँ :

1. सांप्रदायिक द्वेष की भीषणता एवं उसके गंभीर परिणामों की भयावहता को कविता विशद करती है।
2. सांप्रदायिक दंगों के बाद आम आदमी की हीन-दीन दशा एवं उसकी लाचारी को समाज-सम्मुख रखा गया है।
3. अपने और अपने परिवार की भूख मिटाने के लिए कलीमुद्दीन जैसे आम रिक्षावाले की प्रेम प्रकाश बनकर हिंदू रहन-सहन, वेश-भूषा धारण करने की विवशता को कविता अभिव्यक्त करती है।
4. सांप्रदायिक वैमनस्य के शिकार कलीमुद्दीन जैसे आम आदमी के तथा भूख सी पीड़ित उसके परिवार के अन्य बूढ़े एवं बच्चों के प्रति सहानुभूति रखने का संदेश कविता देती है।
5. सांप्रदायिक द्वेष का विरोध कर, उसके असर से पीड़ित आम आदमी के प्रति हमदर्दी जताते हुए कवि सांप्रदायिक सद्भाव की हिमायत करते हैं।

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' इस कविता के कवि .... जी हैं।

   1) नागार्जुन 2) निराला 3) चंद्रकांत देवताले 4) धूमिल

2) नागार्जुन का असली नाम .... है।

   1) वैद्नाथ मिश्र 2) दिनानाथ मिश्र 3) वैद्यनाथ शर्मा 4) वैद्यनाथ वर्मा

3) .... ने अपना नाम बदल कर प्रेम प्रकाश रखा था।

   1) मुईनुद्दीन 2) निजामुद्दीन 3) कलीमुद्दीन 4) सिराजुद्दीन

4) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता में हिंदू-मुस्लिम दंगे से प्रभावित अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए मजबूर रिक्षावाला प्रेम प्रकाश कवि से .... में मिलता है।

   1) दिल्ली 2) लखनऊ 3) वाराणसी 4) मेरठ

5) प्रेम प्रकाश ने गले में .... की माला पहनी हुई है।

   1) मोतियों 2) रूद्राक्ष 3) हिरों 4) फूलों

6) भूख की मजबूरी के कारण ही कलीमुद्दीन अपना नाम बदलकर .... रखता है।

1) प्रेम सागर 2) प्रेम प्रकाश 3) जीवन प्रकाश 4) सूर्य प्रकाश

7) कवि कल्लू से दिली ख्वाहिश जताते हैं कि मुझे उस .... के करीब ले जा जहाँ कल्लू का परिवार रहता है।

1) सड़क 2) गली 3) मोहल्ले 4) नाले

3.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) जोगिया - गेरू या जोगिया रंग का।

2) छीपी तालाब - मेरठ का मुहल्ला।

3) बेगमपुल - मेरठ का मुहल्ला।

4) निहायत - अत्यधिक, बहुत अधिक।

5) रूदराछ - रूद्राक्ष।

6) गढ़ - जिला मेरठ में गंगा तटवर्ती एक जगह। यहाँ स्नान के लिए लाखों की भीड़ जुटती है।

7) कुनबा - परिवार।

3.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) नागार्जुन 2) वैद्यनाथ मिश्र 3) कलीमुद्दीन

4) मेरठ 5) रूद्राक्ष 6) प्रेम प्रकाश

7) नाले

3.7 सारांश :

1) हिंदी साहित्य-जगत में प्रगतिवादी जनकवि नागार्जुन जी अपना अनन्यसाधारण स्थान रखते हैं। सामाजिक यथार्थ को लेकर निर्भिकता से काव्य-सृष्टि करते हुए उन्होंने समाज में फैली विसंगतियों, कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया है। आम आदमी की समस्याओं को, विवशताओं को, प्रगतिवादी जनकवि नागार्जुन जी ने अपनी कविताओं में सामान्य जन को केंद्रित कर उनकी समस्याओं को, विवशताओं को, पीड़ाओं को, संवेदनाओं को पूरी सच्चाई कके साथ उन्हें अपने काव्य में उजागर किया है। प्रस्तुत कविता में भी सांप्रदायिक संघर्ष के परिणामों को भुगतते एक निरापराध एवं लाचार आम आदमी की विडम्बना को उन्होंने चित्रित किया है।

2) 'तेरी खोपडी के अंदर' कविता सांप्रदायिक झगड़ों के बाद के भीषण परिवेश में जूझते आम इंसान के दयनीय हालात को बयान करती है। हिंदू-मुस्लिम दंगों के बाद मेरठ में कवि प्रेम प्रकाश रिक्षावाले से मिलते हैं, लेकिन मिलनेपर ही तुरंत वे उसे पहचान लेते हैं। वह कलीमुद्दीन है, जो अपनी रोजी-रोटी को पाने के लिए हिंदुओं

की वेश-भूषा धारण कर प्रेम प्रकाश बना हुआ है। प्रेम प्रकाश ने जोगिया रंग का कुर्ता, माथे पर चंदन का टीका, कान में लाल फूल और गले में रूद्राक्ष की माला पहनी है। जब सांप्रदायिक शक्तियाँ कवि को प्रेम प्रकाश की रिक्षा में बैठने से रोकती हैं, तब कवि विद्रोह कर उसीकी रिक्षा में बैठकर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हैं।

3) बाबा नागार्जुन जी का संवेदनशील हृदय कलीमुद्दीन एवं उसके परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट करता है। मेरठ कॉलेज होस्टेल के गेट पर कवि को पहुँचानेपर कलीमुद्दीन उनसे कहता है कि अब वह हिंदू भेस के साथ चुटैया भी रखेगा, तभी भुखमरी से वह बच सकेगा। उसे वहाँ से जाते देख कवि सोचते हैं कि भूख की भट्टी में कलीमुद्दीन खाक हो गया है, भूख ने ही उसे कलीमुद्दीन से प्रेम प्रकाश बनाया है। प्रेम प्रकाश बनकर ही वह अपना और अपने लाचार परिवार की भूख मिटा सकता है।

4) कवि कल्लू के भुखमरी से ग्रस्त लाचार परिवार से मिलने की दिली तमन्ना जाहीर करते हैं। कवि उसकी बूढ़ी दादी, बीमार अब्बाजान के साथ बैठकर चाय पीना चाहते हैं, जहाँ कल्लू के नन्हें-मुन्ने बच्चे मेरी दाढ़ी के बाल सहलाएँगे। लेकिन इतने में उनके अंदर से एक गुस्सैल आवाज आती है कि खूसट बुड्ढ़े, तेरी खोपड़ी के अंदर यह क्या चल रहा है। कल्लू तेरा लगता ही कौन है? खबरदार, मुझे मेरठ आने के लिए ही किसने कहा था? जो आवाज कवि को आज भी कभी-कभी सुनाई देती रहेगी।

5) कवि ने यहाँ तमाम इंसानी संवेदनाओं पर प्रतीकात्मक ढ़ंग से प्रश्नचिह्न लगाया है। व्यंग्यात्मक ढ़ंग से सांप्रदायिक द्वेष के अनायास ही शिकार कल्लू जैसे आम आदमी के प्रति संवेदनशीलता जताते हुए ऐसे सांप्रदायिक झगड़ों का वे विरोध करते हैं। अत: प्रस्तुत कविता के माध्यम से सांप्रदायिक समस्या से ग्रस्त आम आदमी की व्यथा को समाज-सन्मुख रखते हुए कवि सांप्रदायिक सद्भाव की हिमायत करते हैं, जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

3.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) नागार्जुन जी ने प्रेम प्रकाश का वर्णन किस प्रकार से किया है?

2) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता का प्रेम प्रकाश अपनी रोजी-रोटी के लिए क्या-क्या करता है?

3) प्रेम प्रकाश की भुखमरी का कारण क्या है? / प्रेम प्रकाश किस समस्या से ग्रस्त है?

4) कवि प्रेम प्रकाश से किनसे मिलने की इच्छा व्यक्त करते हैं?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) नागार्जुन जी ने कलीमुद्दीन के माध्यम से आम आदमी की पीड़ा को किस प्रकाश से अभिव्यक्त किया है?

2) नागार्जुन जी ने 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता में सांप्रदायिकता की समस्या को उजागर कर सांप्रदायिक

सद्भाव की वकालत की है, अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

3) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता के कलीमुद्दीन का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

4) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता के उद्देश्य-पक्ष पर प्रकाश ड़ालिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) प्रस्तुत कविता के जैसे ही सांप्रदायिक समस्या को लेकर लिखी अन्य रचाओं को पढ़िए।

2) मराठी में लिखी गई इसी ढ़ंग की कविता को पढ़िए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'युगधारा' (काव्यसंग्रह) - नागार्जुन

2) 'प्यासी पथराई आँखें' (काव्यसंग्रह) - नागार्जुन

3) 'प्रेम का बयान' (काव्यसंग्रह) - नागार्जुन

4) नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण

5) नागार्जुन की कविता - अजय तिवारी

6) एक व्यक्ति का युग - निराला

◆◆◆

इकाई 1 (घ)

4. वसंत आ गया

- अज्ञेय

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय-विवरण

4.3.1 अज्ञेय का परिचय

4.3.2 'वसंत आ गया' कविता का परिचय

4.3.3 'वसंत आ गया' कविता का भावार्थ

4.3.4 'वसंत आ गया' कविता की विशेषताएँ

4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य :

इस कविता को पढ़ने के बाद आप -

1) हिंदी काव्य-जगत के मूर्धन्य कवि अज्ञेय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हो जाएँगे।

2) अज्ञेय जी की प्रयोगवादी काव्य-प्रवृत्ति से परिचित हो जाएँगे।

3) बसंत ऋतु के आगमन से उत्पन्न उल्हासमय, ताजगीभरे, सुंदर एवं सुहाने माहौल की खुबसुरती का आनंद उठा सकेंगे।

4) कवि की आंतरिक प्रवृत्ति एवं प्रकृति के प्रति की उनकी सौंदर्य-दृष्टि को जान सकेंगे।

5) वसंत ऋतु के प्रकृतिगत सौंदर्य के साथ ही नवयौवन, स्नेह एवं उत्साह की चेतना को महसूस कर सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना :

हिंदी काव्य के प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रवर्तक के रूप में अज्ञेय जी का नाम प्रतिष्ठित है। छायावादोत्तर कालीन कवियों में काव्य-शिल्प संबंधी नए प्रयोग करनेवालों में अज्ञेय जी प्रमुख हैं। अज्ञेय एक कुशल कलाकार के रूप में हिंदी साहित्य में अवतरित हुए। दूसरे विश्व-युद्ध के बाद दुनियाभर में घोर निराशा एवं अवसाद की लहर फैल गई, जिसका असर साहित्य पर भी हुआ। अज्ञेय जी के संपादन में 'तार सप्तक' का प्रकाशन हुआ और तब से हिंदी में 'प्रयोगवादी' कविता की शुरूआत हुई। इसी का विकसित रूप 'नई कविता' कहलाता है। जीवन में जो कुरूप, घृणित और कुत्सित है उसकी ये कवि उपेक्षा नहीं करते, उनका अपना सौंदर्य-बोध है। अज्ञेय जी नई कविता के प्रवर्तक ही नहीं, उसके सर्वाधिक समर्थ कवि हैं। अपनी काव्य-भाषा के प्रति अतिरिक्त सजगता उनकी निजी विशेषता है। प्रस्तुत कविता में जीवन के प्रति का उनका सकारात्मक दृष्टिकोण एवं सौंदर्य-बोध अभिव्यंजित हुआ है। वसंत ऋतु के आगमन के बाद उनकी हर्षोल्लासित आंतरिक प्रवृत्ति तथा प्रकृति के प्रति की उनकी सौंदर्य-दृष्टि को कविता बखूबी बयान करती है। प्रकृतिगत सौंदर्य की तरह ही मानव को भी नवचेतना एवं उत्साह को मन में भर कार्यरत रहने की कामना को प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अभिव्यक्त किया है।

4.3 विषय-विवरण :

प्रस्तुत कविता में अज्ञेय जी ने वसंत ऋतु के आगमन से उत्पन्न प्रकृति के सुहाने मौसम को बेहद सुंदरता से चित्रित किया है। इस कविता में उनकी प्रकृति की ओर देखने की अनोखी सौंदर्यात्मक दृष्टि की झलक मिलती है। वसंत ऋतु के आगमन से सृष्टि में एक चेतना सी जाग उठी है और इसी की तरह कवि प्रस्तुत कविता के माध्यम से सोते हुए, निराश एवं निष्क्रिय मनुष्य को जगने का संदेश देते हैं। वसंत के आने की सूचना देते हुए मलय का झोंका खेलता हुआ अपने मधुर स्पर्श से रोम-रोम को रोमांचित कर रहा है, पीपल की सूखी खाल तरोताजा होने लगी है, सिरिस के फूल खिल उठे हैं, नीम के बौर में भी मिठास छाई हुई है और इसे देखकर कचनार की कली हँस उठी है। पलाश के फूलों से आरती सजाते हुए यह वनभूमि वधू जैसे सज गई है। सारा आकाश प्रेम और स्नेह भरे बादलों से छा गया है। सारी सृष्टि में नवचेतना जागृत हो गई है और यौवन एवं प्यार का स्वर गूँज रहा है। अत: प्रकृति के सौंदर्य

एवं ताजगी की तरह ही मनुष्य को भी नवचेतना को अपनाते हुए खुशी एवं उत्साह से जीवन जीने का संदेश प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने दिया है।

4.3.1 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का परिचय :

अज्ञेय जी हिंदी साहित्य-जगत के श्रेष्ठतम हस्ताक्षरों में से एक हैं। उनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन है। हिंदी काव्य एवं कथा जगत को एक नया मोड़ देने का प्रयास उन्होंने किया है। अज्ञेय जी हिंदी काव्यधारा के प्रयोगवाद एवं नई कविता आंदोलन के मुख्य कवि हैं। उनका जन्म 7 मार्च, 1911 ई. को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के देवरिया तहसील के कसया गाँव में हुआ। अज्ञेय के पिताजी पुरातत्त्व विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे। पिताजी के कार्यक्षेत्र के बदलते रहने के कारण अज्ञेय की शिक्षा एक स्थान पर संपन्न न हो सकी। उनकी प्राथमिक शिक्षा उनके पिता जी की देखरेख में हुई। अज्ञेय जी का बाल्य काल लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में व्यतीत हुआ। आपकी विधिवत शिक्षा लाहौर में हुई। सन 1929 को उन्होंने बी. एस्सी. की डिग्री हासिल की और 1929 में ही उन्होंने एम्. ए. अंग्रेजी विषय को लेकर पढ़ाई शुरू की लेकिन क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने के कारण पढ़ाई पूरी न हो सकी। सन 1930 से 1936 तक जेल एवं नजरकैद में बीते। स्वतंत्रता के बाद कुछ समय तक अज्ञेय जी ने भारत सरकार के रेडियो के समाचार विभाग में काम किया। उन्होंने कई सालों तक सैनिक, विशाल भारत, नया प्रतीक आदि पत्रिकाओं के संपादक के रूप में जिम्मेदारी को सँभाला। कॅलिफोर्नियास विश्वविद्यालय से लेकर जोधपुर विश्वविद्यालय तक उन्होंने अध्यापन का कार्य किया। देश-विदेश की यात्राएँ की। दिल्ली वापस लौटने पर दिनमान साप्ताहिक, नवभारत टाईम्स, अंग्रेजी पत्र वाक् और एवरी मैंस जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया।

छायावादोत्तर काल के कवियों में काव्य-शिल्प संबंधी नए प्रयोग करनेवालों में अज्ञेय जी प्रमुख हैं। उनकी कविताओं में उन्होंने पुराने बिम्बों और प्रतीकों को नया अर्थ प्रदान किया है। उनके काव्य में प्रेम, रहस्य, प्रकृति, सौंदर्यानुभूति, आत्मचिंतन, वैयक्तिकता, बौद्धिक चिंतन और प्रयोगशीलता मिलती है। उन्हें 'आँगन के पार द्वार' इस कविता-संग्रह के लिए सन 1964 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया है तथा 'कितनी नावों में कतनी बार' इस काव्य-संग्रह के लिए उन्हें सन 1979 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। निश्चय ही हिंदी साहित्य जगत में उनका स्थान सर्वतोपरि है। ऐसे महान हस्ति का देहांत दिल्ली में 4 अप्रैल, 1987 ई. को हुआ।

प्रमुख रचनाएँ :

कविता-संग्रह - भग्नदूत, चिंता, इत्यलम, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इंद्रधनु रौंदे हुए, अरी ओ करूणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, सुनहले शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, पहले मैं सन्नाआ बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे आदि।

उपन्यास - शेखर : एक जीवनी भाग 1, 2 नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी।

कहानी-संग्रह - विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, अमर वल्लरी, ये तेरे प्रतिरूप आदि।

यात्रावृत्त - अरे यायावर याद रहेगा? एक बूँद सहसा उछली।

निबंध-संग्रह - सब रंग, त्रिशंकु, आत्मनेपद, हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, आलवाल, लिखि कागज कोरे भवंती, अंतरा अंत: प्रक्रियाएँ, स्त्रोत और सेतु, व्यक्ति और व्यवस्था, युग संधियों पर आदि।

नाटक - उत्तर प्रियदर्शी।

संस्मरण - स्मृतिरेखा।

संपादन - तार सप्तक भाग 1, 2, 3, 4 सैनिक, विशाल भारत, प्रतीक, दिनमान आदि पत्रिकाएँ, पुष्करिणी, रूपांबरा, समकालीन कविता में छंद आदि।

4.3.2 वसंत आ गया कविता का परिचय :

प्रस्तुत कविता अज्ञेय जी के 'बावरा अहेरी' इस काव्य-संकलन में संकलित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने प्रकृतिगम सौंदर्य को बिखेरकर सामने रखा हैं। वसंत ऋतु के आगमन पश्चात के सुनहरे माहौल को बखूबी ढ़ंग से चित्रित करते हुए कवि ने प्रकृति जैसे ही नवचेतना को लेकर मनुष्य को कार्यरत रहने का संदेश दिया है। उत्साहमय वसंत ऋतु में मनुष्य को जगने के लिए कवि कहते हैं। मलय का झोंका, पीपल की खाल, सिरिस के फूल, नीम के बौर, कचनार की कलि, पलाश के फूल एवं आकाश के बादल आदि के माध्यम से वसंत ऋतु के प्रकृतिगत सौंदर्य का अनोखा चित्रण किया है। प्रकृति में नवचेतना जागृत हो गई है। सारी दिशाओं में यौवन एवं प्यार के स्वर गूँज रहे हैं। अत: कवि इस ताजगीभरे माहौल में हर किसी को नवयौवन, स्नेह एवं उत्साह से चेतित होते हुए कार्यमग्न रहने के लिए कहते हैं।

4.3.3 वसंत आ गया कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने वसंत ऋतु के आगमन से उत्पन्न उल्हासमय, ताजगीभरे, सुंदर एवं सुहाने माहौल को बेहद खुबसुरती के साथ चित्रित किया है। कवि की आंतरिक प्रवृत्ति एवं प्रकृति के प्रति की उनकी सौंदर्य-दृष्टि को कविता बेहतरीन ढ़ंग से उजागर करती है। पेड़ों का नए पत्तों से सुशोभित होना, फुलों का खिलना, कलियों का मुसकाना, हर तरफ हरियाली और बहार का चित्र ऋतुराज बसंत की अपनी खासियत है। इस सुहाने मौसम में हर कहीं चेतना संचरित होती रहती है। कवि ने इस बसंत का अनोखा चित्रण प्रस्तुत किया है।

कवि बसंत के आगमन की सूचना देते हुए सभी को जगने तथा चेतित होने का आवाहन करते हुए कहते हैं कि जागो, मलय का झोंका खेलता हुआ अपने मधुर स्पर्श से रोम-रोम को रोमांचित करते हुए बुला रहा है, जागो बसंत

आ गया है। बसंत के आने पर माहौल किस प्रकार से आल्हादित हो गया है यह बताते हुए वे कहते हैं कि पीपल की सूखी खाल कोमल एवं तरोताजा होने लगी है, सिरिस के फूल खिल उठे हैं और अपने अनोखे सौंदर्य को बिखेर रहे हैं। साथ ही ऐसे माहौल में नीम के बौर में भी मिठास छाई हुई है और इसे देखकर कचनार की कली हँस उठी है। पलाश के फूलों से आरती सजाते हुए यह वनभूमि वधू जैसे सज गई है। सारा आकाश प्रेम और स्नेह भरे बादलों से छा गया है। यहाँ कवि ने प्रकृति के अप्रतिम सौंदर्य को उंडेलते हुए बेहद सुंदरता से उसे साकार किया है।

बसंत के आने से पूरे आभामंडल में नवचेतना जागृत हो गई है। यौवन खिल उठा है। निष्प्रभ शरीर में खून की धार चेतित हो उठी है, कोई दूर की अज्ञात सी आल्हादित पुकार मनमानस पर छा गई है। सभी दिशाएँ गूँज उठी है और असीम के अपार भी स्वर बार-बार गूँज रहा है कि हे सखि, हे बंधु, प्यार में ही यौवन है और यौवन में ही प्यार है। कवि सभी को ऐसे मदभरे माहौल में प्यार और यौवन से छाए हुए समा की ओर भी आकृष्ट करते हैं। मानवीयता पर प्रकृतिगत सौंदर्य को आरोपित करते हुए वे हर किसी को नवयौवन, स्नेह एवं उत्साह से चेतित होने को कहते हैं और ऐसे में ही आज मधुदूत भी निज गीत गाते हुए जगने के लिए कह रहा है, नवचेतना के स्वर फूँक रहा हैं। कवि ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से मनुष्य को प्रकृतिगत सौंदर्य की तरह ही चेतित हो ताजगी को संचरित करते हुए कर्मलीन होकर विकास की गति को थामने की ओर भी संकेत किया हैं। अत: प्रस्तुत कविता में कवि बसंत के आनेपर प्रकृति की सुंदरता का चित्रण करते हुए, जागृत होकर नवचेतना को अपनाने की दृष्टि से सचेत करना चाहते हैं।

4.3.4 वसंत आ गया कविता का विशेषताएँ :

1. प्रस्तुत कविता में वसंत ऋतु के अनुपम सौंदर्य को चित्रित किया गया है।
2. मलय का झोंका, पीपल की खाल, सिरिस के फूल, नीम के बौर, कचनार की कलि, पलाश के फूल एवं आकाश के बादल आदि के माध्यम से वसंत ऋतु के आगमन से उत्पन्न प्रकृतिगत सौंदर्य को कलात्मक दृष्टि से सम्मुख रखते हुए प्रकृति की अनोखी रूपसृष्टि का अहसास कविता कराती है।
3. वसंत ऋतु के उत्साह एवं ताजगी भरे माहौल से नवचेतना को लेकर मनुष्य को कार्यरत रहने के लिए कविता प्रेरित करती है।
4. प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने प्रकृति की तरह ही हर किसी को नवयौवन, स्नेह एवं उत्साह से चेतित होते हुए आल्हादमय जीवन व्यतीत करने की दृष्टि से सचेत होने का संदेश दिया है।

4.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) 'वसंत आ गया' इस कविता के कवि .... जी हैं।

   1) नागार्जुन 2) निराला 3) अज्ञेय 4) धूमिल

2) अज्ञेय जी का असली नाम .... है।

1) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायण 2) हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन

3) वैद्यनाथ मिश्र 4) सुदाम पाण्डे

3) वसंत के आने पर .... की सूखी खाल तरोताजा होने लगी है।

1) आम 2) नीम 3) पेड़ 4) पीपल

4) वसंत के सुंदर माहौल में .... के बौर में भी मिठास छाई हुई है।

1) नीम 2) आम 3) पीपल 4) करेली

5) वसंत ऋतु में .... के फूलों से आरती सजाते हुए यह वनभूमि वधू जैसे सज गई है।

1) गेंदे 2) गुलाब 3) सिरिस 4) पलाश

6) वसंत ऋतु में सारा आकाश प्रेम और स्नेह भरे .... से छा गया है।

1) बादलों 2) आवाज 3) रंग 4) स्वरों

7) असीम के अपार भी स्वर बार-बार गूँज रहा है कि सखि, हे बंधु, प्यार में ही यौवन है और यौवन में ही .... है।

1) दुलार 2) संसार 3) आनंद 4) प्यार

4.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) मलयज - चंदन।

2) कंपाना - हिलाना, कंपित करना, थरथराना।

3) स्निग्ध - कोमल, तेल, मोम, दूध की मलई।

4) सिरिस ने रेशम सी वेणी बाँधना - सिरिस के फूलों का खिल उठाना।

5) बौर - आम के वृक्ष की मंजरी (यहाँ नीम के वृक्ष की मंजरी)

6) टेसू - पलाश का फूल, ढाक का फूल।

7) व्योम - आकाश।

8) दिगंत - दिशाओं का छोर (किनारा), आकाश का छोर।

4.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) अज्ञेय 2) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायण 3) पीपल

4) नीम 5) पलाश 6) बादलों

7) प्यार

4.7 सारांश :

1) अज्ञेय जी हिंदी काव्यधारा के प्रयोगवाद एवं नई कविता आंदोलन के एक मूर्धन्य कवि हैं। हिंदी साहित्य जगत में उनका स्थान सर्वतोपरि है। प्रस्तुत कविता अज्ञेय जी के 'बावरा अहेरी' इस काव्य-संकलन में संकलित है। इस कविता में कवि ने वसंत ऋतु के आगमन से उत्पन्न उल्हास, उत्साह एवं ताजगीभरे माहौल को अनोखे ढ़ंग से चित्रित किया हैं। यह कविता कवि की आंतरिक प्रवृत्ति एवं प्रकृति के प्रति की उनकी सौंदर्य-दृष्टि को बेहतरीन ढ़ंग से उजागर करती है। वसंत के सौंदर्य एवं उसकी चेतना को कवि ने बेहद कलात्मकता के साथ प्रस्तुत कविता में उतारा है।

2) वसंत के आगमन की सूचना देते हुए कवि कहते हैं कि जागो, मलय का झोंका खेलता हुआ अपने मधुर स्पर्श से रोम-रोम को रोमांचित करते हुए बुला रहा है, जागो वसंत आ गया। सारी सृष्टि आनंदमय हो गई हें पीपल की सूखी साल तरोताजा होने लगी है, सिरिस के फूल खिल उठे हैं और अपने अनोखे सौंदर्य को बिखेर रहे हैं। साथ ही ऐसे माहौल में नीम के बौर में भी मिठास छाई हुई है और इसे देखकर कचनार की कली हँस उठी है। पलाश के फूलों से आरती सजाते हुए यह वनभूमि वधू जैसे सज गई हैं सारा आकाश प्रेम और स्नेह भर बादलों से छा गया है। यहाँ प्रकृति के अद्‌भुत रूप का चित्रण कलात्मकता के साथ कवि ने बखूबी ढ़ंग से किया है।

3) बसंत के आगमन से पूरी सृष्टि में नवचेतना छा गई है। निष्प्राण देह में खून खौल उठा है और कहीं दूर की आल्हादित पुकार मन से समा गई है। सभी दिशाओं के साथ ही असीम के अपार भी स्वर बार-बार गूँज रहा है कि हे सखि, हे बंधु, प्यार में ही यौवन है और यौवन में ही प्यार है। इस सुनहरे समा में मधुदूत भी निज गीत गाते हुए जगने के लिए कह रहा है। कवि यहाँ प्रकृति की तरह ही हर किसी को नवयौवन, स्नेह एवं उत्साह से चेतित होने को कहते हैं।

4) अत: प्रस्तुत कविता के माध्यम से बसंत ऋतु के प्रकृतिगत सौंदर्य का अद्‌भुत चित्रण करते हुए, प्रकृति की तरह ही सभी को जागृत होकर नवचेतना को लिए कर्मलीन होने की दृष्टि से कवि सचेत करते हैं।

4.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'वसंत आ गया' कविता में अज्ञेय जी ने प्रकृति सौंदर्य को किस प्रकार से वर्णित किया है?

2) अज्ञेय जी ने 'वसंत आ गया' कविता में मनुष्य को किस प्रकार से चेतित हो उठने को कहा है?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'वसंत आ गया' कविता में अज्ञेय जी ने वसंत ऋतु का वर्णन कैसे किया है?

2) 'वसंत आ गया' कविता में अज्ञेय जी ने वसंत के प्राकृतिक सौंदर्य एवं नवचेतना का बेहद सुंदर चित्रण किया है, अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) प्रस्तुत कविता की तरह ही प्रकृतिगत सौंदर्य की आभा को बिखेरनी वाली अज्ञेय जी की अन्य कविता को पढिए।
2) सृष्टि की सुंदरता को लेकर चेतना जागृत करने वाली मराठी में लिखी गई इसी ढ़ंग की कविता को पढ़िए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'बावरा अहेरी' (काव्यसंग्रह) - अज्ञेय
2) 'आँगन के पार द्वार' (काव्यसंग्रह) - अज्ञेय
3) 'कितनी नावों में कितनी बार' (काव्यसंग्रह) - अज्ञेय

◆◆◆

इकाई 2 (क)

5. एक अजीब सी मुश्किल

- कुंवर नारायण

अनुक्रम

5.1 उद्‌देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 विषय विवरण

- 5.3.1 कुंवर नारायण का परिचय
- 5.3.2 'एक अजीब सी मुश्किल' कविता का परिचय
- 5.3.3 'एक अजीब सी मुश्किल' कविता का आशय

5.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

5.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

5.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

5.7 सारांश

5.8 स्वाध्याय

5.9 क्षेत्रीय कार्य

5.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

5.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) कुंवर नारायण के व्यक्तित्त्व और कृतित्व का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

2) नई कविता के क्षेत्र में कुंवर नारायण के स्थान से परिचित होंगे।

3) प्रस्तुत कविता द्वारा कुंवर नारायण के दिए गए आपसी समन्वय और धार्मिक सहिष्णुता के संदेश से परिचित होंगे।

5.2 प्रस्तावना :

नई कविता आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर कुंवर नारायण अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' (1959) के प्रमुख कवियों में से एक है। कुंवर नारायण को अपनी रचनाशीलता में इतिहास और मिथक के जरिए वर्तमान को देखने के लिए जाना जाता है। उनकी कविता में मिथक और इतिहास, परंपरा और आधुनिकता, पूर्व और पश्चिम की काव्यात्मक परंपरा, बौद्धिक सधनता, वैचारिक ईमानदारी, काव्यात्मक नैतिकता, संवेदनात्मक गहनता का मेल पिछली शताब्दी के मध्य से लेकर इक्कीसवीं सदी के डेढ़ दशक बाद भी बना हुआ है। कुंवर नारायण की कविताएँ अपने समय से संवाद थी। उनमें अस्तित्व की अनुगूंज है। कुंवर नारायण आधुनिक हिंदी काव्य परंपरा में अपना स्वतंत्र और विशेष स्थान रखते हैं।

5.3 विषय-विवरण :

5.3.1 कुंवर नारायण का परिचय :

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिंदी के सम्मानित कवि कुंवर नारायण का जन्म 19 सितंबर, 1927 ई. में उत्तरप्रदेश के फैजाबाद में हुआ। वे इंटर तक विज्ञान शाखा के छात्र बने रहे परंतु अपनी साहित्यिक रुचि के चलते बाद में साहित्य के छात्र बन गए। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से सन् 1951 में अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. किया। अपने मामा, चाचा और बहन की असमय मृत्यु से एक लंबी निराशा उनके मन पर गहरी छायी रही। कार चलाना उनका पैतृक व्यवसाय रहा। पर इसके साथ-साथ वे साहित्य जगत में भी सक्रिय हो गए। सन् 1973 से 1979 तक वे संगीत नाटक अकादमी के उपपीठाध्यक्ष भी रहे। सन् 1975 से 1978 तक अज्ञेय द्वारा संपादित मासिक पत्रिका में संपादक मंडल के सदस्य के रूप में कार्यरत रहे। वे हिंदी कविता के साथ साथ फिल्म समीक्षा, पत्र पत्रिकाओं में नियमित लेखन, अनुवाद साहित्य, कहानी लेखन आदि द्वारा हमेशा चर्चित रहे। कुंवर नारायण को अपनी रचना शीलता में इतिहास और मिथक के माध्यम से वर्तमान को देखने के लिए जाना जाता है। 15 नवंबर, 2017 ई. को उन्होंने जगत् से विदा ली। इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित है।

कविता संग्रह	-	चक्रव्यूह (1956), तीसरा सप्तक (1959), परवेश : हम तुम (1961), अपने सामने (1979), कोई दूसरा नहीं (1993), इन दिनों (2002)
खंडकाव्य	-	आत्मजयी (1965),

		वाजश्रवा के बहाने (2008)
समीक्षा	-	आज और आज से पहले (1998), मेरे साक्षात्कार (1999), साहित्य के कुछ अंतर्विषयक संदर्भ (2003)
संकलन	-	कुंवर नारायण संसार (चुने हुए लेखों का संग्रह) (2002) कुंवर नारायण उपस्थिति (चुने हुए लेखों का संग्रह) (2002) कुंवर नारायण चुनी हुई रचनाएँ (2007) कुंवर नारायण प्रतिनिधि कविताएँ (2008)

पुरस्कार एवं सम्मान :

कुंवर नारायण को वर्ष 2005 के 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। कुंवर जी को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'व्यास सम्मान', 'कुमार आशान पुरस्कार', प्रेमचंद पुरस्कार, राष्ट्रीय कबीर सम्मान, शलाका सम्मान, मेडल ऑफ वॉरसा युनिवर्सिटी, पोलैंड और रोम के अंतरराष्ट्रीय प्रीमियों फेरेनिया सम्मान से सम्मानित किया गया है। वे सन् 2009 में 'पद्मभूषण' से भी सम्मानित हो चुके हैं।

5.3.2 'एक अजीब सी मुश्किल' कविता का परिचय :

नई कविता आंदोलन के सशक त कवि कुंवर नारायण द्वारा लिखित 'एक अजीब सी मुश्किल कविता' जीवन की सच्चाइयों और मन की संवेदनाओं की कविता है। प्रस्तुत कविता द्वारा कवि ने आपसी समन्वय का संदेश देते हुए सांप्रदायिक सहिष्णुता का महत्त्व पाठकों के सामने रखने का प्रयत्न किया है।

विविध जाति संप्रदायों से संपन्न इस विश्व में मनुष्य अनायास ही एक दूसरे के प्रति नफरत पालता है वस्तुत: इस संसार में नफरत नाम की कोई चीज नहीं है। वह मन का वहम है जिसे हमें अपने मन से निकाल फेंकना होगा। इस महान संदेश को पाठकों के सामने रखते हुए कवि वैश्विक स्तर पर मानवतावाद की स्थापना का सपना देखते हैं। कवि को विश्वास है कि उनका सपना बहुत जल्द पूर्ण होगा।

5.3.3 'एक अजीब सी मुश्किल' कविता का आशय :

कुंवर नारायण लिखित 'एक अजीब सी मुश्किल' कविता जीवन की सच्चाइयों और मन की संवेदनाओं की कविता है। कवि ने अपनी मनोवस्था को उजागर करते हुए सामाजिक, सांप्रदायिक अवस्थाओं को चित्रित किया है। प्रस्तुत कविता आपसी समन्वय का संदेश देती है। इस कविता द्वारा कवि ने सांप्रदायिक सहिष्णुता का महत्त्व पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है।

कवि ने अपनी कविता में उन सभी स्थितियों का वर्णन किया है जहाँ पर व्यक्ति धर्म, परंपराएँ, संस्कृति को लेकर अनायास ही अपने अंदर टकराहट निर्माण करता हैं एक दूसरे का विरोध करता है। पर एक क्षण वह इस विचार से भी बेचैन हो जाता है कि वह दूसरे धर्म का व्यर्थ ही विरोध कर रहा है, जब कि हर धर्म ने उसे कुछ न कुछ मूल्य दिए

है, नैतिकता पढाई है, दिशादर्शन, मार्गदर्शन किया है। अत: एक दूसरे के धर्म के प्रति व्यर्थ की नफरत मूर्खता है। नफरत संसार की सबसे बड़ी गलत चीज है। नफरत मानवतावाद की राह में सबसे बड़ी बाधा है। कवि का मानना है कि कोई किसी से कितनी भी नफरत क्यों न करें परंतु नफरत की आयु बड़ी अल्प होती है क्यों कि यह संसार नफरत पर नहीं तो एक दूसरे के प्रति आत्मीय भाव और सहयोग पर टिका हुआ है। कवि वैश्विक स्तर पर सहिष्णुता की कामना रखते हैं। विश्व के विविध धर्मीय लोग हो या भारत के अनेक जाति-संप्रदायों में बटे लोग, सभी के प्रति कवि गहरी आत्मीयता रखते हैं तथा वैश्विक स्तर पर मानवतावाद को स्थापित हुआ देखना चाहते हैं।

कवि कहते हैं यदि अंग्रेजों के प्रति मन में नफरत उत्पन्न हो जाए तो तत्काल शेक्सपीयर याद आ जाते हैं और न जाने ऐसी अनेक चीजें जो हमने अंग्रेजों से सीखी है। उसी प्रकार भारत जैसे विविध जाति संप्रदायों से संपन्न देश में हम चाहकर भी अधिक समय तक किसी से नफरत नहीं कर सकते। हिंदू, मुस्लिम, सीख, इसाई आदि धर्मों, धर्मगुरुओं, भाषाओं, परंपराओं, रीतिरिवाजों से हम कुछ न कुछ ज्ञान अर्जित करते हैं। फिर हम कैसे उनसे तिरस्कार कर सकते हैं? मुस्लिमों के प्रति उत्पन्न नफरत गालिब की याद आते ही ठंडी पड जाती है। गुरुनानक का स्मरण सिखों के प्रति क्रोध भडकने नहीं देता। क्योंकि शेक्सपीयर की प्रतिभा, गालिब का शायराना अंदाज, गुरुनानक का मार्गदर्शन हमें सालों से प्रभावित करता आया है। बिल्कुल उसी प्रकार कंबन, त्यागराज, मुत्तुस्वामी इन दक्षिण भारत की हस्तियों ने अपने काव्य, ज्ञान, संगीत से भारत के सभी हिस्से के लोगों को अपना बना लिया है।

कवि इन महान हस्तियों का उल्लेख करते हुए अपने अंतरमन की सहिष्णु भावनाओं को पाठकों के सामने उजागर करते हैं।

कवि अपनी व्यक्तिगत मनोवस्था को खोलते हुए कहते हैं अपनी प्रेमिका से धोखा खाने के बाद उन्होंने उससे नफरत करने की खूब कोशिश की। वह यदि मिल जाए तो उसका खून कर दे। इस हद तक प्रेमिका के बारे में बूरा सोचां परंतु वे मन के कटू विचारों को अंजाम नहीं दे पाए। उनकी प्रेमिका जब भी उनसे मिलती है तो वे उसमें अपना मित्र पाते हैं कभी माँ, तो कभी बहन। कवि को इन रिश्तों में उन्हें धोखा दे चुकी प्रेमिका नजर नहीं आती। उनके मन में प्रेमिका के प्रति अपार प्रेम भरा हुआ है। जिसे वे चाहकर भी मिटा नहीं सकते। उसी प्रकार कवि का मन दूसरे के प्रति आत्मीय भाव से परिपूर्ण बनता जा रहा है।

कवि मानते हैं कि मानवतावाद की स्थापना के लिए सबसे आवश्यक चीज है मन की शुद्धता, एक दूसरे के प्रति नफरत, घृणा, तिरस्कार से मुक्ति। कवि ने अपने आप को मानसिक तौर पर शुद्ध करने का प्रयत्न किया हैं और वे अपेक्षा रखते हैं कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को संकुचित दायरे से मुक्त करें।

कविता के अंत में कवि स्पष्ट करते हैं कि लाख कोशिशों के बावजूद वे अपने अंदर नफरत नहीं भर सकते। चाहे वह कितने ही पागलो की तरह भटकते रहे कि कोई ऐसी व्यक्ति उन्हें मिल जाए जिससे वे भरपूर नफरत करें। अपने दिल को हल्का महसूस करें परंतु उनकी कोशिश नाकाम साबित होती है क्योंकि कवि की दृष्टि में इस संसार में नफरत

के लिए कोई जगह नहीं है। कवि जब प्रयासपूर्वक किसी से नफरत करने में जूट जाते हैं तो परिणाम उल्टा ही सिद्ध हो जाता है, उस व्यक्ति के प्रति उनका मन प्यार से भर जाता है। अब उन्हें डर लगने लगा कि हर किसी से प्यार करने का जज्बा एक दिन उनकी जान ले लेगा।

प्रस्तुत कविता वैश्विक स्तर पर मानवतावाद की स्थापना का संदेश देती है। कवि पाठकों को संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में नफरत के लिए कोई स्थान नहीं है। यदि हम प्रयासपूर्वक किसी से नफरत करने लग जाते है तो उस व्यक्ति की जाति, धर्म, संस्कृति, परंपरा, रिवाज आदि से बंधित विशेषताएँ कुछ इसतरह हमारे सामने आकर खडी हो जाती है कि हम नफरत करना भूल जाते हैं। वस्तुत: इस संसार में नफरत या विरोध नाम की कोई चीज नहीं है। यह हमारे मन का वहम है। इस वहम को हमे अपने से निकालना होगा। इसमें यदि हम सफल बनते हैं तो निश्चित ही मानवतावाद की स्थापना का कवि का सपना पूर्ण हो सकता है। अत: प्रस्तुत कविता आपसी समन्वय और मानवतावाद की स्थापना का महान संदेश देती है।

5.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) एक अजीब सी मुश्किल कविता .... द्वारा लिखित है।

1) निराला 2) कुंवर नारायण 3) सुमन 4) नीरज

2) एक अजीब सी मुश्किल कविता आपसी .... का संदेश देती है।

1) अनबन 2) क्रोध 3) समन्वय 4) मेलमिलाफ

3) कुंवर नारायण को वर्ष 2005 के .... पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1) ज्ञानपीठ 2) साहित्य अकादमी 3) शलाका 4) व्यास सम्मान

4) कुंवर नारायण की काव्यायात्रा .... से आरंभ होती है।

1) अपने सामने 2) कोई दूसरा नहीं 3) चक्रव्यूह 4) इन दिनों

5) अंग्रेजों से नफरत करने की इच्छा जागृत होते ही कवि को .... याद आ जाते हैं।

1) शेक्सपीयर 2) मिल्टन 3) इलियट 4) वर्डस्वथ

6) .... का स्मरण कवि को मुसलमानों से नफरत नहीं करने देता।

1) जायसी 2) कबीर 3) गालिब 4) अमीर खुसरों

7) सिखों के प्रति नफरत की भावना जागृत होने पर .... कवि की आँखों में छा जाते हैं।

1) पैगंबर 2) गुरुनानक 3) बसवेश्वर 4) ईमासमीह

5.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) मुश्किल - कठिन, दुष्कर।

2) नफरत - घिन, घृणा।

3) वहम - शक, संदेह, मन में उत्पन्न मिथ्या धारणा।

4) एहसान - ऋण, उपकार, कृपाभाव।

5.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) कुंवर नारायण

2) समन्वय

3) ज्ञानपीठ

4) चक्रव्यूह

5) शेक्सपीयर

6) गालिब

7) गुरुनानक

5.7 सारांश :

1) कुँवर नारायण लिखित 'अजीब सी मुश्किल' कविता जीवन की सच्चाइयों और मन की संवेदनाओं की कविता है।

2) प्रस्तुत कविता आपसी समन्वय का संदेश देती है।

3) प्रस्तुत कविता में कवि ने उन सभी स्थितियों का वर्णन किया है जहाँ पर व्यक्ति धर्म, परंपराएँ, संस्कृति को लेकर अनायास ही अपने अंदर टकराहट निर्माण कर एक दूसरे का विरोध करता है।

4) कवि का मानना है कि कोई किसी से कितनी भी नफरत क्यों न करें परंतु नफरत की आयु अल्प होती है क्योंकि यह संसार नफरत पर नहीं तो एक दूसरे के प्रति आत्मीयभाव और सहयोग पर टिका हुआ है।

5) भारत जैसे विविध जाति-संप्रदायों से संपन्न देश में हम चाहकर भी एक दूसरे के प्रति नफरत नहीं रख सकते क्योंकि हर धर्म की विशेषताएँ दूसरे धर्म को प्रभावित करती रहती है। हम हर धर्म से कुछ न कुछ महत्त्वपूर्ण चीजें, ज्ञान अर्जित करते हैं।

6) कवि ने शेक्सपीयर, गुरुनानक, गालिब, कंबन, त्यागराज, मुत्तुस्वामी आदि विद्वानों का उल्लेख करते हुए अपने अंतरमन की सहिष्णु भावनाओं को पाठकों के सामने खोलकर रखा है।

7) कवि वैश्विक स्तर पर मानवतावाद की स्थापना का संदेश देते हैं।

8) कवि मानते हैं कि मानवतावाद की स्थापना के लिए सबसे आवश्यक चीज है मन की शुद्धता, एक दूसरे के प्रति नफरत, घृणा, तिरस्कार से मुक्ति। कवि की दृष्टि में इस संसार में नफरत या विरोध नाम की कोई

चीज नहीं है। यह हमारे मन का वहम है। इस वहम से हम मुक्त बने तो निश्चित ही वैश्विक स्तर पर मानवतावाद की स्थापना में हम योगदान दे सकते हैं।

5.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'एक अजीब सी मुश्किल' कविता का उद्देश्य लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'एक अजीब सी मुश्किल' कविता में कुंवर नारायण रेखांकित किया हुआ सहिष्णु भाव स्पष्ट कीजिए।
2) 'एक अजीब सी मुश्किल' कविता का आशय लिखिए।

इ) संदर्भ के प्रश्न -

1) सिखों से नफरत करना चाहता
तो गुरूनानक आँखों मे छा जाते
और सिर अपने आप झुक जाता

2) ये कंबन, त्यागराज, मुत्तुस्वामी
लाख लाख समझाता अपने को
कि वे मेरे नहीं
दूर कहीं दक्षिण के हैं
पर मन है कि मानता ही नहीं
बिना उन्हें अपनाए

5.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) उपर्युक्त विषय से संबंधित अन्य हिंदी कविताओं का संकलन कीजिए।
2) प्रस्तुत कविता में वर्णित शेक्सपियर, गालिब, गुरूनानक, कंबन, मुत्तुस्वामी त्यागराज के श्रेष्ठ विचारों को पढकर उनके चरित्रों को लिखिए।

5.10 अतिरिक्त अध्ययन :

कुंवर नारायण की मशहूर कविता 'अयोध्या' 1992 को पढिए।

कुंवर नारायण संसार - सं. यतींद्र मिश्र

◆◆◆

इकाई 2 (ख)

6. पैदल आदमी

- रघुवीर सहाय

अनुक्रम

6.1 उद्‌देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 विषय विवरण

6.3.1 रघुवीर सहाय का परिचय

6.3.2 'पैदल आदमी' कविता का परिचय

6.3.3 'पैदल आदमी' कविता का आशय

6.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

6.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

6.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

6.7 सारांश

6.8 स्वाध्याय

6.9 क्षेत्रीय कार्य

6.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

6.1 उद्देश्य :

इस इकाई के बाद आप -

1) समकालीन हिंदी कविता का स्वरूप समझ सकेंगे।

2) समकालीन हिंदी कविता और रघुवीर सहाय के अंतसंबंध को समझेंगे।

3) अन्य समकालीन कवि और रघुवीर सहाय की चिंतन दिशा दोनों का साम्य और विशेषताओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

6.2 प्रस्तावना :

रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के महत्त्वपूर्ण स्तंभ माने जाते हैं। उनकी कविताएँ स्वातंत्र्योत्तर भारत विशेषत: सन् 60 के बाद भारत की तस्वीर को समग्रता से रेखांकित करती हैं। मुक्तिबोध के बाद समकालीन पीढी में में रघुवीर सहाय सर्वाधिक जटिल कवि माने जाते हैं। रघुवीर सहाय परिवर्तन के पक्षघर हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त अंतर्विरोधों, छटपटाहट, मोहभंग, निराशा और असफलता को अपनी कविता में प्रस्तुत किया है। उनकी काव्ययात्रा का केंद्रिय लक्ष्य ऐसी जनतांत्रिक व्यवस्था की निर्मिति है जिसमें शोषण, अन्याय, विषमता, दासता, पलायनवाद, सांप्रदायिकता के लिए कोई स्थान न हो। रघुवीर सहाय की कविताएँ सहज मानवीय अनुभवों का प्रामाणिक आलेख हैं।

6.3 विषय-विवरण :

6.3.1 रघुवीर सहाय का जीवन परिचय :

समकालीन हिंदी कविता के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसंबर 1929 ई. को लखनऊ में हुआ। उन्होंने सन् 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने सन् 1955 में विमलेश्वरी सहाय के साथ दांपत्य जीवन की शुरुआत की। अपनी प्रतिभा के बल पर उन्होंने पत्रकारिता और साहित्य दोनों क्षेत्रों में अपना विशेष स्थान निर्माण किया। सन् 1946 से उन्होंने साहित्य सृजन का आरंभ किया। उन्होंने सन् 1949 में दैनिक नवजीवन (लखनऊ) से पत्रकारिता की शुरुआत की। सन् 1951 के आरंभ तक वे उपसंपादक और सांस्कृतिक संवाददाता के रूप में काम करते रहे। इसी वर्ष वे दिल्ली आए और यहाँ 'प्रतीक' के सहायक संपादक (1951-52) एवं आकाशवाणी के समाचार विभाग में उपसंपादक (1953-57) बने। वे सन् 1969 से 1982 तक 'दिनमान' पत्रिका के प्रधान संपादक रहे। उन्होंने सन् 1982 से 1990 तक स्वतंत्र लेखन किया। उन्होंने 30 दिसंबर, 1990 ई. को जगत से विदा ली।

रघुवीर सहाय ने अपनी कृतियों में उन मुद्दों, विषयों को छुआ है जिनपर तब तक साहित्य जगत में बहुत कम लिखा गया था। उन्होंने कविता के अलावा गद्य साहित्य में भी अपना योगदान दिया है। रघुवीर सहाय ने कविता में अपनी पत्रकार दृष्टि का सृजनात्मक रूप से प्रयोग किया हैं उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं -

कविता संग्रह - सीढ़ियों पर धूप में
आत्महत्या के विरुद्ध

हंसों - हंसों - जल्दी हसों
लोग भूल गए हैं
कुछ पते कुछ चिठ्ठियाँ
एक समय था

कहानी संग्रह - रास्ता इधर से है
जो आदमी हम बना रहे है

निबंध संग्रह - दिल्ली मेरा परदेस
लिखने का कारण
उबे हुए सुखी
वे और नहीं होंगे जो मारे जाएँगे
भँवर, लहरे और तरंग
यथार्थ का अर्थ अर्थात

अनुवाद - बरनमवन (शेक्सपीयर के नाटक 'मैकबेथ' का अनुवाद)
तीन हंगारी नाटक

पुरस्कार - रघुवीर सहाय को वर्ष 1982 में उनकी रचना 'लोग भूल गए हैं' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

6.3.2 'पैदल आदमी' कविता का परिचय :

रघुवीर सहाय लिखित 'पैदल आदमी' कविता 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' काव्यसंग्रह में संकलित हैं। इस कविता के केंद्र में देश का 'सैनिक' है। यह सैनिक आम आदमी का प्रतीक है। देश के सूत्रधार कभी भी लडाई के मैदान में पहुँचकर युद्ध के सूत्र अपने हाथों में नहीं लेते। वे इसके लिए आम सैनिक का उपयोग करते हैं। सैनिक के युद्ध में बलि हो जाने पर सत्ताधीश उसके प्रति संवेदना जताने का नाटक करते हैं। युद्ध विराम होने पर सैनिक को भूला दिया जाता है। फिर से सैनिक को तभी याद किया जाता है जब युद्ध घोषित किया जाता है। सत्ताधीशों की दृष्टि में देशपर मर मिटनेवाला सैनिक आम आदमी होता है। इस प्रकार प्रस्तुत कविता सत्ताधीशों की झूठी संवेदना, राजनीति के उपरी दिखावे, समसामायिक सभ्यता का भीतरी पाखंड आदि को मार्मिकता से उजागर करती है।

6.3.3 'पैदल आदमी' कविता का आशय :

रघुवीर सहाय हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ समकालीन कवि माने जाते हैं। स्वभावत: विद्रोही रघुवीर सहाय ने संवेदनशील व्यक्ति के रूप में देश के आम आदमी की घुटन, मोहभंग की व्यथा, आम आदमी को प्राप्त प्रताडना को सार्थक अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने अपनी कविता में स्वतंत्र भारत की राजनीति की अर्थहीनता निजी बैचेनी, कसमसाहट और वे ब्यौरे जो मन को छलते हैं उन्हें एक संवेदनशील, सजग व्यक्ति की तरह रेखांकित किया है।

'पैदल आदमी' कविता के केंद्र में देश का सैनिक है। यह सैनिक देश के आम आदमी का प्रतीक है। देश का यह आम आदमी देश की सुरक्षा का जिम्मा समर्पित वृत्ति से निभाता है। वह कभी सवाल नहीं करता कि देश के खास लोग देश की सुरक्षा के लिए युद्धभूमि में पहुंचकर शत्रू का सामना क्यों नहीं करते? अधिकांश बार शत्रू का सामना करते करते सैनिक बना आम आदमी दम तोड देता है। देश पर मर मिटता है। पर उसका बलिदान कौन याद रखता है?

देश का सत्तावर्ग शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। जो अपनी स्वार्थांध और आत्मकेंद्रित राजनीति में मशगूल है। उसे देश के आम आदमी से कोई लेना देना नहीं होता। जब युद्धजन्य परिस्थिति निर्माण होती है तब वह देश की सुरक्षा के लिए स्वयं युद्धभूमि में शत्रू का सामना करने के लिए उपस्थित नहीं होता। इसके लिए वह देश के आम आदमी अर्थात सैनिक का उपयोग करता है। सत्तावर्ग के परिवारजन ऐसी स्थितियों में चार दीवारी में बंदिस्त रहते हैं। सैनिक हाथों में शस्त्र लेकर शत्रू के समक्ष उपस्थित होता है। वह यह सवाल बिल्कुल नहीं करता कि सत्ताधीशों में से कोई यहाँ क्यों उपस्थित नहीं है? वह पूरी वीरता के साथ देश की सुरक्षा में जूट जाता है। राजधानी में बैठकर सुरक्षा के सदंर्भ में राजनेता द्वारा लिए गए निर्णयों पर वह बिना प्रश्नचिन्ह लगाए अमल करता है।

बड़े जोश के साथ शत्रू से लडते लडते वह दम तोड देता है। उसका नाम शहीदों की सूची में स्थान प्राप्त करता है। लढाई में बलि चढे इन जवानों के प्रति सत्ताधीशों को कोई लेना देना नहीं होता और न ही कोई संवेदना होती है। वे तो राष्ट्रीय स्तरपर राजनीतिक निर्णय लेते हुए गिनती करते हैं कि हमारे कितने सैनिक बलि चढें और शत्रू पक्ष के कितने? किसका पल्ला भारी है। हा औपचारिकता वश वे शहीद जवानों के परिवारजनों के शोक में शामिल होते हुए घडियाली आंसू बहाकर शोक जताने का दिखावा भर कर देते हैं। शहीद जवानों के परिवारजन और देशवासियों की संवेदना बटोरते हैं।

दोनों ओर की हानि और वैश्विक दबाव के चलते दोनों देशों के प्रधानमंत्री समझौते पर उतर आते हैं और अचानक युद्धविराम की घोषणा की जाती है। परराष्ट्र मंत्रियों द्वारा दोनों के लिए नियम लगाए जाते हैं कि दोनों देशों में रिश्ते बने रहे। इसके लिए दोनों ओर के दो दो उच्चवर्गियों को एक दूसरे के देश में हवाई यात्रा को लांघ नहीं करता। यदि वह ऐसा प्रयास करें तो उसपर कार्यवाही होगी। पैदल आदमी तभी सीमा पार कर सकता है जब उसके हाथों में बंदूक देकर उसे अधिकृत सैनिक के रूप में तैनात किया जाएगा या फिर दोनों ओर के सैनिकों की अदला बदली करनी होगी। क्योंकि यदि आम आदमी स्वेच्छा से आने जाने लगेगा तो फिर दोनों देशों की सीमाएँ टूट जाएगी। दोनों देशों के बीच की कटुता धूल जाएगी। स्वार्थांध राजनेता ऐसा होने देना नहीं चाहते क्योंकि यदि ऐसा होता है तो फिर वे आत्मकेंद्रित, स्वार्थांध, भ्रष्ट राजनीति कैसे चलाएँगे? वे तो चाहते हैं कि जनता आपसी वैमनस्य को लेकर एक दूसरे के प्रति कटुता पालती रहे, लडती रहे। भ्रष्ट राजनेता और उनकी राजनीति के विरोध में सवाल करने का उन्हे समय ही ना मिले। अत: जनता को आपसी कटूता में व्यस्त रखकर स्वार्थांध राजनीति करनेवाले भ्रष्ट सत्ताधीश अपनी सत्ता बचाने के उद्देश्य से सुरक्षा संदर्भ में नए नए नियम बनाते रहते हैं। इस प्रक्रिया में आम सैनिक की कोई भूमिका नहीं होती। युद्ध विराम पर उसे भूला दिया जाता है। उसकी याद फिर से तभी हो आती है जब पुनश्च युद्ध

घोषित होता है। इस प्रकार प्रस्तुत कविता देश का सुरक्षाकवच, हमारे सैनिकों की जीवन व्यथा को रेखांकित करते हुए देश की स्वार्थांध राजनीति को उजागर करती है। यह कविता आम आदमी की दबावपूर्ण उत्पीडित, प्रताडित जिंदगी का दस्तावेज है।

6.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) पैदल आदमी कविता .... द्वारा लिखित है।

1) रघुवीर सहाय 2) अज्ञेय 3) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना 4) धूमिल

2) पैदल आदमी कविता .... काव्यसंग्रह में संकलित है।

1) सीढियों पर धूप में 2) हंसो हंसो जल्दी हंसो

3) कुछ पते और चिठ्ठियाँ 4) लोग भूल गए हैं

3) पैदल आदमी कविता के केंद्र में देश का .... है।

1) डॉक्टर 2) सैनिक 3) सुरक्षाकर्मी 4) शिक्षक

4) .... काव्य संग्रह के लिए रघुवीर सहाय को 1982 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1) आत्महत्या के विरुद्ध 2) दूसरे सप्तक की कविताएं

3) लोग भूल गऐ हैं 4) सीढियों पर धूप में

5) रघुवीर सहाय साहित्यिक होने के साथ साथ .... भी थे।

1) चित्रकार 2) शिल्पकार 3) छायाचित्रकार 4) पत्रकार

6.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) भूखमरी - अन्नअभाव के कारण भूख से बनी मृतप्राय अवस्था।

2) पारपत्र - किसी राष्ट्र के सरकार द्वारा जारी वह दस्तावेज जो अंतरराष्ट्रीय यात्रा के लिए उसके धारक की पहचान और राष्ट्रीयता प्रमाणित करता है।

3) पैदल - पैरों से चलानेवाला, पादचारण।

6.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) रघुवीर सहाय

2) हंसो हंसो जल्दी हंसो

3) सैनिक

4) लोग भूल गए हैं

5) पत्रकार

6.7 सारांश :

1) सैनिक देश के आम आदमी का प्रतीक है। लढाई में देश के लिए समर्पित वृत्ति से आम आदमी अपना बलिदान देता है।

2) देश के सत्ताधीश शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

3) देश के सूत्रधार कभी भी लडाई के मैदान में पहुँचकर युद्ध के सूत्र अपने हाथों में नहीं लेते। वे इसके लिए आम आदमी का उपयोग करते हैं।

4) राजधानी में बैठकर सुरक्षा के संदर्भ में राजनेता द्वारा लिए गए निर्णय पर बिना प्रश्नचिन्ह लगाए अमल करनेवाले सैनिक ही होते हैं।

5) सत्ताधीशों की संवेदना सैनिक के साथ नहीं होती वे केवल गिनती करते हैं कि हमारे देश के कितने सैनिक बलि चढे और शत्रू पक्ष के कितने।

6) लडाई में दोनों ओर बलि चढे जवानों के परिवारजनों के दु:ख से सत्ताधीशों को कोई लेना देना नहीं होता। वे शोक नाम पर घडियाली आंसू बहाकर उन परिवारजनों और देशवासियों के संवेदना बटोरना चाहते हैं।

7) दोनों देशों के प्रधानमंत्री जब आपस में दोस्ती करते हैं तब युद्ध विराम की घोषणा हो जाती है और फिर सैनिक को भूला दिया जाता है। फिर से सैनिक की याद तभी आ जाती है जब पुनश्च लडाई घोषित की जाती है।

8) युद्ध विराम की घोषणा हो जानेपर बनाए नियमों के अनुसार दोनों देशों में संबंध बने रहने के उद्देश्य से दोनों ओर के दो दो उच्चवर्गियों को एक दूसरे के देश की हवाई यात्रा करने की अनुमति दी जाएगी।

9) पैदल आदमी सीमा लांघने का प्रयास करे तो उसपर कार्यवाही की जाएगी।

10) पैदल आदमी उसी समय सीमा लांघ सकता है जब उसे अधिकृत सैनिक घोषित किया जाएगा।

11) राजनेता चाहते हैं कि दोनों ओर की आम जनता एक दूसरे के प्रति कटुता पालकर आपसी वैमनस्य बनाए रखे ताकि आम जनता को आपसी कटुता में व्यस्त रखकर उन्हें स्वार्थांध, भ्रष्ट, आत्मकेंद्रित राजनीति करने रहने का मौका मिले।

12) भ्रष्ट सत्ताधीश अपनी सत्ता बनाए रखने के उद्देश्य से सामान्य जनता को भ्रमित बनाकर अपनी स्वार्थसिद्धि कर लेते हैं।

13) प्रस्तुत कविता आम आदमी की प्रताडित जिंदगी का दस्तावेज है।

6.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'पैदल आदमी' कविता का उद्‌देश्य लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) पैदल आदमी कविता का आशय लिखिए।

इ) संदर्भ के प्रश्न -

1) पैदल को हम केवल तब इज्जत देंगे
जब दे करके बंदूक उसे भेजेंगे
या घायल से घायल अदल बदलेंगे

6.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) सन् 2017-18 में देश के लिए बलिदान दे चुके महाराष्ट्र के वीर जवानों की जानकारी संकलित करें।

2) सैनिक जीवनपर आधारित मराठी की कविताएँ पढिए।

6.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) लोग भूल गए हैं - रघुवीर सहाय

2) हंसो हंसो जल्दी हंसो - रघुवीर सहाय

◆◆◆

इकाई 2 (ग)

7. बीस साल बाद

- धूमिल

अनुक्रम

7.1 उद्‌देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 विषय विवरण

7.3.1 धूमिल का परिचय

7.3.2 'बीस साल बाद' कविता का परिचय

7.3.3 'बीस साल बाद' कविता का आशय

7.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

7.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

7.7 सारांश

7.8 स्वाध्याय

7.9 क्षेत्रीय कार्य

7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

7.1 उद्देश्य :

इस इकाई के बाद आप -

1) कवि धूमिल के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व से परिचित होंगे।

2) साठोत्तरी काव्यधारा से परिचित होंगे।

3) स्वातंत्र्योत्तर भारत की विषम राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों से परिचित होंगे।

4) धूमिल की कविता में जनवाद की स्थिति से परिचित होंगे।

7.2 प्रस्तावना :

सुदाम पांडे 'धूमिल' साठोत्तरी हिंदी कविता के चर्चित कवि रहे हैं। संघषपूर्ण पारिवारिक स्थितियों को स्वीकारते हुए वे लगातार साहित्य सृजन करते रहे। बचपन से ही धूमिल क्रांतिकारी विचारों के साहसी व्यक्ति रहे। परिणामत: उनकी अभिव्यक्ति परंपरा, बंधन, जातिभेद, अंधविश्वास, भद्रता, अतिशालीनता के विरोध में रही। जनवादी कवि धूमिल की अधिकांश कविताओं में आजादी के पश्चात भारतीय जनता की मोहभंगवाली अवस्था और आक्रोश की सशक्त अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। अपनी कविताओं द्वारा उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर भारत के आम आदमी की व्यथा को उजागर करते हुए भारतीय जनतंत्र के नकली मुखौटे का पर्दाफाश किया है।

7.3 विषय-विवरण :

7.3.1 धूमिल का जीवन परिचय :

साठोत्तरी कवि सुदामा पांडे हिंदी साहित्य में 'धूमिल' इस उपनाम से सुप्रसिद्ध है। धूमिल का जन्म 9 नवंबर, 1936 ई. को वाराणसी के 'खेवली' नामक गांव में हुआ। पिता पं. शिवनायक पांडे तथा माता रजवंतीदेवी की पांच संतानों में से धूमिल सबसे बड़े थे। पिता के असमय देहांत से धूमिल को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करा पडा। वस्तुत: धूमिल विज्ञान शाखा के छात्र रहे पर आर्थिक प्रतिकूलता के कारण वे अपनी पढाई पूर्ण नहीं कर पाए। उन्होंने सन् 1958 में औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र से विद्युत प्रविधि का डिप्लोमा प्रथम श्रेणी में प्राप्त किया। विभाग ने उन्हें विद्युत अनुदेशक के रूप में नियुक्त किया। वे अर्थार्जन के लिए सरकारी नौकरी करते रहे साथ में लगातार अपना साहित्यिक योगदान भी देते रहे। दुर्भाग्यवश 10 फरवरी, 1975 ई. की रात्रि ब्रेनट्यूमर से उनका देहांत हुआ।

बचपन से ही धूमिल क्रांतिकारी विचारों के साहसी, जिद्दी व्यक्ति रहे। परिणाम स्वरूप उनकी अभिव्यक्ति परंपरा, बंधन, जातिभेद, अंधविश्वास, भद्रता, अतिशालीनता के विरोध में रही। जनवादी कवि धूमिल की अधिकांश कविताओं में आजादी के पश्चात भारतीय जनता की मोहभंगवाली अवस्था और आक्रोश की सशक्त अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। उनकी कविताएं स्वातंत्र्योत्तर भारत के आम आदमी की व्यथा को उजागर करते हुए देश की भ्रष्ट, स्वार्थांध, विषम राजनीति, समाजनीति, प्रशासकीय व्यवस्था पर करारा व्यंग करती है। उनकी काव्य भाषा अतिशय कल्पनाशीलता और जटिल बिंबधर्मिता से मुक्त है। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने पहली तुकांत कविता की रचना की। सन् 1962 में भारत-चीन संघर्ष के दिनों मे धूमिल ने युद्ध काव्य लिखा। धूमिल ने अपनी समस्त विचार चेतना

को 'पटकथा' नामक काव्यरचना के माध्यम से प्रस्तुत किया जिसमें एकालाप, संवाद, आक्रोश, तिलमिलाहट, विवशता, निराशा, खीज और व्यंग्य की बौछार सभी का समीकरण मिलता है। धूमिल के नाम पर मुख्यत: तीन काव्यसंग्रह दर्ज हैं।

1) संसद से सड़क तक - 1972

2) कल सुनना मुझे - 1977

3) सुदाम पांडे का प्रजातंत्र - 1977 म

पुरस्कार :

अपने साहित्यिक योगदान के लिए धूमिल को सन् 1975 में मध्यप्रदेश शासन की ओर से 'मुक्तिबोध - पुरस्कार' से गौरवान्वित किया गया। सन् 1979 में धूमिल को 'कल सुनना मुझे' काव्य संग्रह पर मरणोपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।

7.3.2 बीस साल बाद कविता का परिचय :

'बीस साल बाद' कविता सन् 1972 में प्रकाशित काव्यसंग्रह 'संसद से सडक तक' में संग्रहित है।

इस काव्यसंग्रह की महत्त्वपूर्ण कविता 'बीस साल बाद' आजाद भारत की दुरावस्था पर करारा व्यंग्य करती है। इसमें मुख्यत: स्वातंत्र्योत्तर भारत के आम आदमी की मोहभंगवाली अवस्था का चित्रण प्राप्त होता है। आजाद भारत की स्वार्थांध, भ्रष्ट, आत्मकेंद्रित, राजनीति, समाजनीति तथा अर्थनीति के चलते देश का आम आदमी बडा बेचैन है। भारतीय जनतंत्र के नकली मुखौटे का पर्दापाश करनेवाली इस कविता में कवि ने देश की आजादी पर अविश्वास प्रकट किया है। उसे आजाद भारत का लहराता हुआ झंडा बडा दयनीय प्रतीत होता है।

7.3.3 बीस साल बाद कविता का आशय :

बीस साल बाद कविता धूमिल लिखित काव्यसंग्रह 'संसद से सडक तक' में संकलित है। जनवादी कवि धूमिल ने अपनी कविताओं द्वारा स्वातंत्र्योत्तर भारत की भ्रष्ट स्वार्थांध, विषम राजनीति, समाजनीति, अर्थव्यवस्था पर कडा प्रहार करते हुए देश के आम आदमी की व्यथा को उजागर किया है।

गांधी तथा उनके समकालीन नेताओं ने आजादी के पूर्व देशवासियों के सुनहरे भविष्य के सपने दिखाए थे परंतु जैसे ही देश आजाद बना वह चुनिंदा स्वार्थांध लोगों के हाथों सुपुर्द हुआ। जिससे आम आदमी के सुनहरे भविष्य के सपने धरे के धरे रह गए। आजादी के तत्काल पश्चात तो जनता इस वास्तव से अनभिज्ञ थी परंतु जैसे जैसे समय बीतता गया लोक सत्य से परिचित होने लगे। लोगों में असंतोष, निराशा, असहायता, कुंठा निर्माण होने लगी। ठिक इसी समय सुदामा पांडे 'धूमिल' जैसे संवेदनशील साहित्यिक भी प्राप्त स्थितियों से बेचैन होकर साहित्य सृजन करने लगे। 'बीस साल बाद' कविता इसी मानसिक अवस्था को प्रस्तुति देती है।

कवि लिखते हैं आजादी प्राप्त हो चुके लंबा अरसा बीत चुका है और अब हमें यह अहसास होने लगा है कि

हम सब बडे से सैलाब में फंस चुके हैं। हम लाख कोशिश करें तो भी इस सैलाब से बचने का कोई उपाय हमारे पास नहीं है। अर्थात, सुनहरे भविष्य के सपने लेकर भारतवासियों ने आजाद भारत में प्रवेश तो किया पर स्वार्थांध सूत्रधारों ने आत्मकेंद्रित राजनीति को विकसित करते हुए जनहित के विचार को किनारे रख दिया। जिससे देश का आम आदमी स्वतंत्रतापूर्व काल में जितना अभावग्रस्त, शोषित जीवन जी रहा था उससे भी अधिक अभावग्रस्तता का सामना उसे करना पड रहा है। एक गहरी निराशा, वेदना, देश के आम आदमी के जीवन में व्याप्त हो गई है। इससे बाहर निकलने का कोई उपाय आम आदमी के पास नहीं है।

आजादी के बीस साल बाद देश की बदतर बनी अवस्था पर टिप्पणी करना कवि को लगभग अनुपयोगी महसूस हो रहा है क्योंकि कवि की टिप्पणी सुनेगा कौन? देश के वे सूत्रधार जिनसे किए जानेवाले हर प्रश्न को वे जानबूझकर अनसुना कर रहे हैं या फिर उनके विरोध में उठनेवाली हर आवाज को प्रयासपूर्वक दबा रहे हैं। ऐसे में देश के आम आदमी की अवस्था जानवरों के समान बनी हुई है। जिस प्रकार जानवर अपनी भावनाओं को शब्द के माध्यम से प्रकट नहीं कर सकते बिल्कुल उसी प्रकार देश का आम आदमी मूक बनकर अन्याय, शोषण, प्रताडना, अपमान, उपेक्षा, पीडा को सहता जा रहा है।

अब इन स्थितियों को सहते जाने की लोगों को आदत सी हो गई है। प्रतिकूलता के साथ आम आदमी का जीवन व्यर्थ बीतता जा रहा है। हर तरफ असंतोष, निराशा, सांप्रदायिक तनाव, दंगेफसाद, झगडे फैलते जा रहे हैं। देश के भ्रष्टांध सूत्रधार, राजनेता जानबुझकर आम आदमी को इन सब में व्यस्त रख रहे हैं ताकि आम आदमी व्यक्तिगत विकास की चिंता न करें और न ही राजनेताओं से सवाल करें कि आजादी ने आम आदमी को क्या दिया? देश की इन स्थितियों में कवि को आजाद भारत का लहराता हुआ झंडा बडा निरर्थक महसूस हो रहा है। देश के तिरंगे पर अभिमान महसूस करना भी कवि को निरर्थक प्रतीत हो रहा हैं कवि समझ नहीं पा रहा है कि वह कौन सी भूमिका निभाएँ। असहाय आम लोगों का हौसला बढाने के लिए आगे आए या देश की बदतर स्थितियों के लिए जिम्मेदार लोगों से जवाब मांगे या फिर इस बात पर चिंतन करें कि देश की ऐसी स्थितियाँ कैसे बनी? यदि देश आजाद न बनता तो इसका चित्र कैसा होता? आजाद बनकर देश के आम आदमी ने क्या पाया? कवि के पास इन प्रश्नों के उत्तर नहीं है। गहरी बेचैनी लेकर कवि अपने आप से सवाल करता है कि क्या आजादी का मतलब तीन रंगोवाला लहराता निशान है जिसे एक पहिया ढोता है? जिसे लहराते देख देशवासी अपने आप में कुछ क्षणों के लिए गर्व की भावना भर देते हैं और फिर दूसरे ही क्षण गहरी निराशा, मायूसी उनमें भर जाती है। कवि को इन सारे प्रश्नों के उत्तर में गहरी खामोशी घेर लेती है। आजादी की अनुपयुक्तता से निराश कवि अंतरमुख बन जाते हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत कविता आजाद भारत की दुरावस्था और आम आदमी की व्यथा पर गहरा व्यंग्य करती है।

7.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) धूमिल का पूरा नाम .... है।

1) गोपाल दास सक्सेना   2) महेंद्रप्रसाद पांडे

3) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना		4) सुदामा प्रसाद पांडे

2) धूमिल हिंदी साहित्य के चर्चित .... कवि माने जाते हैं।

1) जनवादी	2) हालावादी	3) छायावादी	4) प्रयोगवादी

3) बीस साल बाद कविता .... द्वारा लिखित है।

1) धूमिल	2) निराला	3) महादेवी वर्मा	4) नीरज

4) बीस साल बाद कविता .... काव्यसंग्रह में संकलित है।

1) रसवंती		2) संसद से सडक तक

3) अरी ओ करूणा प्रभामय		4) कोइ दूसरा नहीं

5) क्या आजादी सिर्फ .... थके हुए रंगों का नाम है?

1) तीन	2) चार	3) पांच	4) एक

7.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) सैलाब - बाढ, जलप्लावन।

2) चेतावनी - खतरे की पूर्वसूचना, कोई आशंकित संकट।

3) पहिया - गाडी या यंत्र में लगाया हुआ गोलाकार चक्र, चाक, चक्का आदि।

7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) सुदामा प्रसाद पांडे

2) जनवादी

3) धूमिल

4) संसद से सडक तक

5) तीन

7.7 सारांश :

1) धूमिल की कविताएं स्वातंत्र्योत्तर भारत के आम आदमी की व्यथा को मार्मिकता के साथ उजागर करती है।

2) धूमिल अपनी कविताओं के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारत के भ्रष्ट, स्वार्थांध, आत्मकेंद्रित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करते हुए आम आदमी को अपनी बेचैनी के खिलाफ विद्रोह करने की प्रेरणा भी देते हैं।

3) धूमिल की कविताएँ भारतीय जनतंत्र के नकली मुखौटे का पर्दाफाश करती हुई जनता में सकारात्मक परिवर्तन की आशा जागृत करने का प्रयास करती है।

4) 'बीस साल बाद' कविता स्वातंत्र्योत्तर भारत के भारतीय जनता की मोहभंगवाली अवस्था का रेखांकन करती है।

5) आजादी के बीस साल बाद भी देश के आम आदमी के पास प्राथमिक सुविधाएँ नहीं हैं। रोजी रोटी की समस्या से वह घिरा हुआ है। आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान उसके लिए कभी न प्राप्त हो सकनेवाला सपना है। इस बात से व्यथित कवि की चिंता प्रस्तुत कविता का कथ्य है।

6) प्रस्तुत कविता में कवि देश की आजादी पर अविश्वास व्यक्त करता है। उसे आजाद भारत का लहराता हुआ झंडा बडा दयनीय प्रतीत होता है।

7.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'बीस साल बाद' कविता का उद्देश्य लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'बीस साल बाद' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।

इ) ससंदर्भ स्पष्टिकरण दीजिए।

1) बीस साल बाद और इस शरीर में
सुनसान गलियों से चोरों की तरह गुजरते हुए
अपने आप से सवाल करता हूँ
क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है
जिन्हें एक पहिया ढोता है।

7.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'बीस साल बाद' कविता के आधार पर अपने शहर की राजनीति का मूल्यांकन कीजिए।

2) 'बीस साल बाद' कविता पर निबंध लिखिए।

7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) कल सुनना मुझे - धूमिल

2) सुदामा पांडे का प्रजातंत्र - धूमिल

◆◆◆

इकाई 2 (घ)

8. घर की याद

- राजेश जोशी

अनुक्रम

8.1 उद्‌देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 विषय विवरण

8.3.1 राजेश जोशी का परिचय

8.3.2 'घर की याद' कविता का परिचय

8.3.3 'घर की याद' कविता का आशय

8.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

8.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

8.7 सारांश

8.8 स्वाध्याय

8.9 क्षेत्रीय कार्य

8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

8.1 उद्देश्य :

इस इकाई के बाद आप -

1) कवि राजेश जोशी के व्यक्तित्त्व और साहित्यिक योगदान से परिचित होंगे।

2) समकालीन हिंदी कविता में राजेश जोशी के योगदान को समझ पाएँगे।

3) समकालीन परिवेश में भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था को समझ सकेंगे।

8.2 प्रस्तावना :

राजेश जोशी समकालीन साहित्य के चर्चित साहित्यकार हैं। साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत राजेश जोशी साहित्य सृजन के साथ साथ पत्रकारिता और अध्यापन क्षेत्र में भी कार्यरत रहे। राजेश जोशी ने कविताओं के साथ साथ कहानी, नाटक, लेख-टिप्पणियाँ आदि का लेखन भी किया हैं उन्होंने नाट्यरूपांतर एवं कुछ लघु फिल्मों के लिए पटकथा लेखन भी किया है। कई भारतीय भाषाओं के साथ साथ अंग्रेजी, रूसी और जर्मनी भाषाओं में उनकी कविताएं अनुवादित हुई हैं। उनकी कविताएं आम आदमी के जीवन को रेखांकित करती हैं। कवि आजाद भारत की उस व्यवस्था से बेहद नाराज है जिसने आम आदमी को सुख का झूठा भरोसा दिलाया था। गहरे सामाजिक अभिप्राय से युक्त अपनी कविताओं में उन्होंने एक ओर देश के आम आदमी के जीवन की प्रतिकूलता पर चिंता व्यक्त की है वहीं दूसरी ओर विषम युगीन परिस्थितियों में भी संभावनाओं पर विश्वास जताया है। उनकी कविताओं द्वारा उनके चिंतन की स्तरीयता और व्यापकता उजागर होती है।

8.3 विषय-विवरण :

8.3.1 राजेश जोशी का जीवन परिचय :

राजेश जोशी का जन्म 8 जुलाई, 1946 ई. में मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ जिले में हुआ। राजेश जोशी मूलत: विज्ञान शाखा के छात्र रहे। उच्च शिक्षा हासिल करने के उपरांत लंबे समय तक वे पत्रकारिता, अध्यापन तथा बैंक सेवा में कार्यरत रहे। साहित्य सृजन के साथ साथ राजेश जोशी ने ट्रेड युनियन में तथा भोपाल गैसकांड में आम जनता का सेवक बनकर काम किया हैं। कवि की पत्नी बैंक में सेवारत है तथा पुत्री आई. आई. टी. मुंबई में लेक्चरर है। अपनी बाल्यावस्था से ही उन्हें लेखन के प्रति लगाव रहा। अशोक अत्रे और वेणूगोपाल जी के संपर्क से उनकी लेखन रूचि वृद्धिंगत हुई।

साहित्यिक योगदान :

कविता संग्रह	-	एक दिन बोलेंगे पेड, मिट्टी का चेहरा, नेपथ्य में हँसी, दो पंक्तियों के बीच, चाँद की वर्तनी
बाल कविता संग्रह	-	गेंद निराली मीठू की
लंबी कविता	-	समरगाथा

उपन्यास	-	किस्सा कोत्याह
कहानी संग्रह	-	सोमवार और अन्य कहानियाँ कपिल का पेड
नाटक	-	जादू जंगल, अच्छे आदमी, तुम सआदत हसन मंटो हो, पाँसे, सपना मेरा यही सखी, हमें जबाब चाहिए।
बाल नाटक	-	ब्रह्मराक्षस का नाई
अनुवाद	-	पतलून पहना बादल (मायकोवस्की की कविताओं का अनुवाद) भूमि का कल्पतरू यह (भर्तृहरि की कविताओं का अनुवाद)

इसके साथ राजेश जोशी ने आलोचना के क्षेत्र में भी लेखन किया है। साथ में 'इसलिए' और 'नया पथ' तथा वर्तमान साहित्य के कविता विशेषांक का संपादन किया है। कुछ लघु फिल्मों का पटकथा लेखन भी किया है।

पुरस्कार :

अपने साहित्यिक योगदान के लिए राजेश जोशी को श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान, पहल सम्मान, शमशेर सम्मान, मुक्तिबोध सम्मान, माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, शिखर सम्मान तथा 'दो पंक्तियों के बीच' कविता संग्रह के लिए सन् 2002 का साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

8.3.2 'घर की याद' कविता का परिचय :

प्रस्तत कविता राजेश जोशी कृत साहित्य अकादमी सम्मान प्राप्त कृति 'दो पंक्तियों के बीच' में संकलित है। यह कवि का चौथा काव्य संकलन है। इसका प्रथम संस्करण सन् 2000 में हुआ। इस संकलन में समाविष्ट कविताओं का रचना काल सन् 1989 से 1999 तक का है। अपवादात्मक तौर पर इसमें सन् 1974 और 1985 की दो कविताओं का भी समावेश है। प्रस्तुत कविताओं के केंद्र में आजाद भारत के आम आदमी का जीवन है। राजेश जोशी विषम युगीन परिस्थितियों में भी संभावनाओं पर विश्वास रखते हैं जिससे उनकी कविताओं के पात्र प्रतिकूलता में भी सुखद भविष्य का सपना देखते हैं। यहाँ पर कवि के चिंतन की स्तरीयता और व्यापकता अजागर होती है।

प्रस्तुत कविता वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार और उससे प्रभावित शिक्षक की व्यथा को मार्मिकता से रेखांकित करती है। भ्रष्टाचार का शिकार बना प्रस्तुत कविता का शिक्षक कवि के साथ साथ पाठकों की मृतप्राय बनी संवेदनाओं को जागृत करता हैं। आज मनचाही जगह पर उसी शिक्षक का तबादला हो पाता है जो संबंधित सरकारी अधिकारी को मुँह मांगी घूंस दे पाता है। अन्यथा एक गहरी निराशा उसके जीवन में व्याप्त हो जाती है। व्यवस्था के इस घिनौने स्वरूप के प्रति असंतोष प्रस्तुत कविता का कथ्य है।

8.3.3 'घर की याद' कविता का आशय :

राजेश जोशी की अधिकांश कविताओं के केंद्र में आजाद भारत के आम आदमी का जीवन है। कवि ने अपनी

कविताओं के जरिए आजाद भारत की व्यवस्था के खिलाफ अपना तीव्र असंतोष प्रकट किया है। क्योंकि देश की विषम, भ्रष्ट शासन प्रणाली में आम आदमी का कोई अस्तित्त्व नहीं है। व्यवस्था से तंग आ चुका यह आदमी आज भी झूठे भरोसे की डोर पर चलकर अपना जीवन बरबाद कर रहा है। कवि उस व्यवस्था से बेहद नाराज है जिसने आम आदमी को सुख का झूठा भरोसा दिलाया था। अंतरबाह्य घटनाओं से जुझता टकराता कवि आम आदमी को सुखी देखना चाहता है।

समकालीन परिवेश की भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था कवि के लिए चिंतनीय बात है। सबसे आदर्श और पवित्र मानी जानेवाली शिक्षा व्यवस्था भी अब देश की भ्रष्ट राजनीति की चपेट में आ गई है जिससे शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार ने बडी मात्रा में अपनी जडे जमा ली है। शिक्षा विभाग से संबंधित सरकारी अधिकारियों ने मनमाने तरिके से भ्रष्टाचार को अपना लिया है। जिससे शिक्षक वर्ग को बडी यातनाएँ भुगतनी पड रही हैं समाज का परिवर्तन करने की क्षमता रखनेवाला यह वर्ग भ्रष्टाचार का शिकार बन रहा है यह देश की सबसे बडी विडंबना है

प्रस्तुत कविता वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार और उससे प्रभावित शिक्षक की व्यथा को मार्मिकता से रेखांकित करती है। भ्रष्टाचार का शिकार बना यह शिक्षक कवि के साथ साथ पाठकों की मृतप्राय बनी संवेदनाओं को जागृत करता है। तबादले की समस्या आज के अनेक से शिक्षकों की मुख्य समस्या बनी हुई है। आज मनचाही जगह पर उसी शिक्षक का तबादला हो पाता हे जो संबंधित सरकारी अधिकारी को मूँहमांगी घूस दे पाता हैं। जिसकी पैसे देने की क्षमता नहीं है उसका सालों तबादले की अर्जियाँ देने के बावजूद मनचाही जगह पर काम नहीं हो पाता। गहरी निराशा उसके जीवन में व्याप्त हो जाती हैं व्यवस्था के इस घिनौने स्वरूप के प्रति कवि का असंतोष प्रस्तुत कविता का कथ्य है।

लंबे अरसे से अपने घर से कोसों मील नौकरी कर रहा यह शिक्षक अब जीवन में व्याप्त अकेलेपन से तंग आ चुका हैं, अपने जीवन की उम्मीदों पर उसे पानी फिरता दिखाई दे रहा हैं, मानसिक तौर पर वह पूरी तरह टूट चुका हैं, अपने परिवारजनों के साथ रहने की उसकी चाहत उसे अपना तबादला करा लेने के लिए उसका रही है। जिससे उसने तबादले की अर्जियां लेकर शिक्षा विभाग के पचासों चक्कर लगाए हैं। अपनी पगार में से अधिकांश पैसा वह संबंधित कार्यालय में आने जाने पर खर्च कर चुका है। लगभग दस वर्षों से वह इस काम में जुटा हुआ है, कितनी कितनी बार अधिकारियों की मिन्नत करता रहा हैं इन यात्राओं के दरम्यान कितनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक यातनाएँ उसे भुगतनी पडी है पर उसके हाथ कुछ नहीं लगा है। किसी अधिकारी ने उसकी कोई बात नहीं सुनी है। अधिकारी तो केवल पैसों की भाषा जानते हैं। इस शिक्षक के पास संबंधित अधिकारियों को देने के लिए पैसों का अभाव है। अत: अपनों से कोसों मील दूर वह लडखडाता हुआ अपने जीवन की उम्मीदों पर पानी फिरते हुए देखकर शराब की आगोश में अपने आप को सुपूर्द कर उदासीन एवं प्रताडित जीवन को भूगत रहा है। यह घटना देश की भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था को उजागर करती है।

सार्वजनिक जगह पर भ्रष्ट व्यवस्था से संबंधित लोगों के विरोध में गुस्सा निकालता हुआ, गालियाँ देता हुआ, रोता चिल्लाता शिक्षक देख लोग समझ नहीं पाते कि यह किस बात का दुखडा है। कुछ समय के लिए शिक्षक की

व्यथा लोगों का मन बहलानेवाला तमाशा बन जाती है। अपनी मनोवस्था से भ्रमित बना शिक्षक खुद भी समझ नहीं पाता कि कैसे वह शिक्षक से बहुरूपिया बन गया। अपने मन की व्यथा को दबाकर दर्शकों का मन बहलानेवाला बहुरुपिया। वैसे बहुरुपिये के व्यक्तिगत दु:ख से दर्शकों को कभी कोई लेना देना नहीं होता। वे तो बहुरुपिये में अपने मन का आनंद खोजते हैं। अत: अपने घर से सालों दूर अपनों से बेखबर यह शिक्षक अपने घर से ही नहीं अपने जीवन से भी टूटते हुए संपूर्ण मानव जाति के सामने अपने अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह उपस्थित करता है। यह कविता जीवन के पुनर्वास की कविता है। अत: कविता के क्षेत्र में नए तेवर के साथ जीवन की वास्तविकता को बिंबात्मक रूप में प्रस्तुत करनेवाला कवि अपने परिवेश संबंधी कटिबद्धता का प्रमाण देकर अपने साहित्यिक योगदान को सिद्ध करता है। प्रस्तुत कविता के जरिए समकालीन कवियों के लिए अभिव्यक्ति के अलग अलग मुद्दों को खोलकर रख देता है।

8.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) राजेश जोशी बहुचर्चित .... कवि हैं।

 1) समकालीन 2) छायावादी 3) प्रगतिवादी 4) हालावादी

2) .... काव्यसंग्रह के लिए राजेश जोशी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

 1) मिट्टी का चेहरा 2) दो पंक्तियों के बीच 3) नेपथ्य में हँसी 4) एक दिन बोलेंगे पेड

3) 'घर की याद' कविता .... द्वारा लिखित है।

 1) सुमन 2) हरिवंशराय बच्चन 3) धूमिल 4) राजेश जोशी

4) 'घर की याद' कविता .... काव्यसंग्रह में संकलित है।

 1) दो पंक्तियों के बीच 2) कबाडी का तराजू 3) यह हरा गलीचा 4) यह तुम भी जानो

5) घर की याद कविता में .... की व्यथा वर्णित है।

 1) डॉक्टर 2) वकील 3) शिक्षक 4) क्लर्क

8.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) झोंक - झुकाव, प्रचंड गति, वेग।

2) अर्जियां - आवेदन।

3) निर्वासन - देश निकाला, गांव, शहर या देश आदि से दंडस्वरूप निकाल देना।

4) स्वांग - नक्कल, लोकनाट्य का अत्यंत लोकप्रिय रूप।

5) टिटहरी - पानी की तलाश में रहनेवाली सफेद चिडियाँ।

8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) समकालीन
2) दो पंक्तियों के बीच
3) राजेश जोशी
4) दो पंक्तियों के बीच
5) शिक्षक

8.7 सारांश :

1) घर की याद कविता राजेश जोशी कृत साहित्य अकादमी सम्मान प्राप्त कृति 'दो पंक्तियों के बीच' में संकलित है।
2) प्रस्तुत कविता के केंद्र में आजाद भारत के आम आदमी का जीवन है।
3) प्रस्तुत कविता वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार और उससे प्रभावित शिक्षक की व्यथा को मार्मिकता से रेखांकित करती है।
4) तबादले की समस्या आज के अनेक से शिक्षकों से जुडी विशेष समस्या है। मनचाही अच्छी जगह पर आज उसी शिक्षक का तबादला हो पाता है जो संबंधित सरकारी अधिकारी को मुँहमांगी घूंस दे पाता है।
5) आर्थिक अभाव के कारण अपना तबादला न करा लेने की स्थिति में अपने घर से सालों दूर अपनों से बेखबर यह शिक्षक अपने घर से ही नहीं अपने जीवन से भी टूटते हुए संपूर्ण मानव जाति के सामने अपने अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह उपस्थित करता है। यह कविता जीवन के पुनर्वास की कविता है।

8.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'घर की याद' कविता का उद्देश्य लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'घर की याद' कविता में वर्णित शिक्षक की व्यथा को उजागर कीजिए।
2) 'घर की याद' कविता का आशय लिखिए।

इ) ससंदर्भ के प्रश्न।

1) घर से दाई सौ मील दूर
दस बरस में लगाई हैं मैंने सैकडों अर्जिया
लगाए हैं पचासों चक्कर शिक्षा विभाग के

....

फांक चुका हूँ न जाने कितने मन धूल

2) कोई नहीं सुनता

कोई नहीं सुनता साला पर मेरी बात

हमारे समय का सबसे बडा दु:ख है निर्वासन

8.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) सरकारी स्कूलों के अध्यापकों से मिलकर उनके साथ उनकी समस्याओं पर चर्चा करें।

2) दोन ओळीमधले अंतर - अनु. डॉ. बलवंत जेऊरकर की पुस्तक को पढिए।

8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'दो पंक्तियों के बीच' - राजेश जोशी

2) चांदनी की वर्तनी - राजेश जोशी

◆◆◆

इकाई 3 (क)

9. हो गई है पीर

- दुष्यंतकुमार

अनुक्रम

9.1 उद्‌देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 विषय विवरण

9.3.1 दुष्यंतकुमार का परिचय

9.3.2 'हो गई है पीर' कविता का परिचय

9.3.3 'हो गई है पीर' कविता का आशय

9.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

9.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

9.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

9.7 सारांश

9.8 स्वाध्याय

9.9 क्षेत्रीय कार्य

9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

9.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप,

1) कवि दुष्यंतकुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा जीवन परिचय से परिचित होंगे।

2) काव्य के क्षेत्र में गजल इस काव्यरूप से परिचित होंगे।

3) प्रस्तुत कविता से कवि के प्रगतिशील विचारों से अवगत हो सकेंगे।

4) प्रस्तुत कविता में व्यक्त आम आदमी की पीडा, दु:ख तथा वेदना की अभिव्यक्ति से परिचित होंगे।

5) कवि द्वारा किये गए बुनियादी परिवर्तन की माँग से परिचित होंगे।

9.2 प्रस्तावना :

हिंदी गजल साहित्य में दुष्यंतकुमार का स्थान सर्वोपरि हैं। उन्होंने परम्परा से चली आयी गजल परम्परा को तोडकर गजल का रिश्ता आम आदमी से जोडकर, आम आदमी के अभावग्रस्तता, पीडा, द्वंद्व, तनाव और उत्पीडन को गजल के जरिए अभिव्यक्त किया है। दुष्यंत से पहले गजल केवल दरबार तथा प्रेमी-प्रेमिका के आसपास भटकती थी परंतु दुष्यंतकुमार ने आम आदमी के पर्वत जैसे दु:ख, पीडा, वेदना की तथा भ्रष्ट व्यवस्था, गंदी राजनीति, देश प्रेम आदि के अभिव्यक्ति के लिए गजल का प्रयोग किया है। दुष्यंत जी ने व्यक्तिगत पीडा को व्यापक चेतना के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी गजलें यथार्थ की भावभूमि पर लिखी है। उनकी गजलें आम आदमी का आक्रोश व्यक्त करती है। संक्षेप में कहे तो आम आदमी के भावों, विचारों को गजल के माध्यम से व्यक्त किया है। सन् 1975 में प्रकाशित उनका 'साये में धूप' गजल संग्रह आम आदमी के भावों विचारों की ही अभिव्यक्ति है। इस गजल संग्रह में 52 गजले संकलित हैं, जो विषय विविधता को व्यक्त करती है। यह गजल संग्रह आपात्काल के दौरान प्रकाशित हुआ था। आपात्काल से सारा देश हतप्रभ हुआ था। इस दौरान समाज का जूझता-टूटता रूप, आम आदमी की घुटन, बिखराव, पीडा, अंतर्द्वंद्व, राजनीति और राजनीतिज्ञों का देश तथा समाज के साथ रहा व्यवहार, आम आदमी की जरूरतें और मुश्किलें आदि को उन्होंने बेहिचक अभिव्यक्त किया है। दुष्यंत की गजलों में शासकीय आतंक के खिलाफ आवाज सुनाई पडती है। अपनी अनुभूति के सशक्त अभिव्यक्ति के लिए दुष्यंतकुमार ने प्रवाहपूर्ण तथा भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

9.3 विषय-विवरण :

9.3.1 दुष्यंतकुमार का परिचय :

दुष्यंतकुमार का पूरा नाम है - दुष्यंतकुमार त्यागी। उनका जन्म 01 सितंबर 1933 ई. के दिन ग्राम राजपुर नवादा, जिला बिजगौर, उतरप्रदेश में हुआ। पिताजी भगवत सहायक एक जमींदार थे। दुष्यंतकुमार के परिवार में कई भाई-बहने थे परंतु दुर्भाग्य वश वे बच नहीं पाए। दुष्यंत का बालकाल राजपुर नवादा और मुजफ्फरनगर में बीता। प्रारंभिक शिक्षा मुजफ्फरनगर में हुई। सन् 1945 में हाईस्कूल की परीक्षा का फार्म भरते समय अपने मित्र के सुझाव पर अपने नाम के आगे लगनेवाले 'नारायण' के स्थान पर 'कुमार' कर दिया। तब से वे दुष्यंतकुमार त्यागी नाम से पहचाने

जाते हैं। उन्होंने अपनी उच्चतर शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूरी की। स्कूली जीवन में 'परदेशी' उपनाम से कविताएँ लिखने लगे थे। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. किया। 1966 से वे आकाशवाणी भोपाल में हिंदी के कार्यक्रम निर्देशक रहे। फिर मध्य प्रदेश प्रशासन के भाषा विभाग में सहायक संचालक नियुक्त हुए। 30 सितंबर 1975 ई. को हृदयगति रुकने से उनका असामयिक देहांत हो गया। दुष्यंतकुमार महत्त्वाकांक्षी, संवेदनशील, भावुक, राष्ट्रप्रेमी, परोपकारी, कर्तव्यनिष्ठ, सत्यवादी, स्वाभिमानी आदि गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति थे। उनके मित्रों के अनुसार दुष्यंतकुमार का दिमाग एक बहुत बडी 'फैक्टरी' थी जिससे हमेशा अनगिनत चीजें एक साथ बनती थी। साहित्य सृजन में उन्होंने काव्य के अतिरिक्त उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेडियो-नाटक आदि विधाओं में भी योगदान दिया है।

साहित्य परिचय :

कविता संग्रह	-	सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का वसंत, साये में धूप आदि।
नाटक	-	एक कंठ विषपायी (काव्य नाटक), मसीहा मर गया।
एकांकी संग्रह	-	मन के कोण।
उपन्यास	-	छोटे छोटे सवाल, आंगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी।

9.3.2 'हो गई है पीर' कविता का परिचय :

'हो गई है पीर' गजल में दुष्यंतकुमार ने आजादी के बाद के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन के लिए पूरे समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। आजादी के बाद आम आदमी को अनेक पीडाएँ तथा यातनाएँ सहनी पडी है। अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए दु:ख-कष्ट उठाने पडे हैं। अब वक्त आ गया है कि हिमालय जैसे दु:खों के पहाड में से सुख और आनंद की गंगा बहनी चाहिए। आज विषमता, भेदभाव, ऊँच-नीच की दीवार खडी हैं, उसे मूल से उखाड फेंकने की आवश्यकता है। यह काम हर गाँव, हर नगर, हर सडक एवं गली हमें मिल-जुलकर करना है। इस परिवर्तन में सभी के हाथों की सहायता की आवश्यकता है। इस गजल का उद्देश्य सिर्फ हंगामा खडा करने का नहीं है, कवि की कोशिश यह है कि पूरे समाज की सूरत बदलवाना चाहते हैं। इस नये समाज के लिए, क्रांति के लिए प्रत्येक के हृदय में चिनगारी का जलना ही आवश्यक है। इस प्रकार कवि दुष्यंत समाज में बुनियादी परिवर्तन की कामना करते हैं, मानवतावाद में आस्था रखते हैं।

9.3.3 'हो गई है पीर' कविता का आशय :

उर्दू-फारसी की तरह हिंदी में भी गजल इस काव्यरूप का विकास हो रहा है। साठोत्तरी कवियों ने गजल को परंपरागत ढाँचे से अलग परिवर्तनवादी तथा यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत किया है। सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों तथा इंसान की सूक्ष्म सी सूक्ष्म संवेदनाओं को लेकर गजले लिखी जा रही हैं। इसी कडी में दुष्यंतकुमार के 'साये में धूप' गजल संग्रह की चर्चा रही। 'साये में धूप' दुष्यंत जी के परिवर्तनवादी दृष्टिकोण तथा प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत करनेवाला गजल संग्रह है। पाँच शेरों से बनी प्रस्तुत गजल उनके 'साये में धूप' इस गजल संग्रह से ली गई है।

इस गजल में दुष्यंत जी के प्रगतिशील विचारों की अभिव्यक्ति हो गई है। दुष्यंत जी के इस गजल के शेरों में संघर्ष, परिवर्तन, विद्रोह, आंदोलन, नवनिर्माण आदि तत्त्वों का समावेश है।

प्रस्तुत गजल दुष्यंत जी के परिवर्तनवादी विचारों को प्रस्तुत करती है। समाज पीडा के अंधकार में डूब गया है। आज देश में गरीबी, महंगाई, भ्रष्टाचार, भूखमरी, शोषण जैसी समस्याओं की पीडा पहाड जैसी हो गई है। बर्फ बनी यातना पिघल जानी चाहिए। हिमालय जैसे दुखों के पहाड को पिघलकर सुख और आनंद की गंगा बहनी चाहिए। परिवर्तन और संघर्ष से समाज में व्याप्त विषमता, भेदभाव, ऊँच-नीच की दीवार हिलनी ही चाहिए लेकिन शर्त यह है कि उसकी मूलत: जडे ही उखडनी चाहिए। हर सडक, हर गली, हर नगर, एवं हर गाँव में निष्क्रिय सी लाशें बिछी हुई है, लेकिन इस परिवर्तन, संघर्ष एवं नवचेतना की लडाई में हर निष्क्रिय लाश को सचेत होकर कार्य करना होगा। कवि का उद्‌देश्य सिर्फ शोर मचाते हुए हंगामा खडा करना नहीं है। उनकी दरअसल कोशिश तो यह है कि ये सूरत बदल जाए, उनके रूप में मूलत: परिवर्तन हो। क्रांति और संघर्ष कहीं से क्यों न हो, शुरू होना चाहिए। नए समाज के लिए, क्रांति के लिए हर एक के हृदय में इसकी आग कहीं से भी लगे लेकिन आग जलनी चाहिए। तभी पुरानी रूढियाँ, भ्रष्ट व्यवस्था, महंगाई, गरीबी, भूखमरी, भ्रष्टाचार, शोषण को नष्ट किया जा सकता है।

प्रस्तुत गजल के जरिए कवि दुष्यंतकुमार स्थितियों में बदलाव लाने के लिए क्रांति एवं परिवर्तन लाना चाहते हैं। इस परिवर्तन के लिए संघर्ष करना होगा, अनिष्ट की जडों को काटना होगा, बेजानों में चेतना जगानी होगी, सिर्फ हंगामा न मचाते हुए स्थितियों में बदलाव लाना होगा, इसके लिए हर जगह क्रांति की आग को जलाना होगा। इस तरह प्रस्तुत गजल में दुष्यंत जी ने अपने प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया हैं।

9.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) 'हो गई है पीर' कविता के कवि .... हैं।

   1) दुष्यंतकुमार 2) राजेश जोशी 3) रघूवीर सहाय 4) अज्ञेय

2) 'हो गई है पीर' कविता दुष्यंत जी के .... में संकलित है।

   1) सूर्य का स्वागत 2) आवाजों के घेरे 3) गजल संग्रह 4) साये में धूप

3) 'हो गई है पीर' गजल द्‌वारा दुष्यंत जी व्यवस्था में .... लाना चाहते हैं।

   1) बदल 2) परिवर्तन 3) चेंज 4) गजल

4) हो गई है .... पर्वत-सी, पिघलनी चाहिए।

   1) दु:ख 2) पीडा 3) पीर 4) वेदना

5) आज यह दीवार .... की तरह हिलने लगी।

   1) पतंग 2) परदों 3) मेण 4) कुर्सी

6) सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा .... नहीं।

1) इरादा 2) मकसद 3) हौसला 4) ध्येय

7) हो कहीं भी आग लेकिन आग .... चाहिए।

1) लगनी 2) बुझनी 3) जलनी 4) होनी

9.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) पीर - दर्द, वेदना, तकलीफ, दु:ख, पीडा, कष्ट (गरीबी, महंगाई, भ्रष्टाचार, भूखमरी, शोषण आदि की पीडा)

2) बुनियाद - आधार, नींव, आरंभ, जड मूल।

3) लाश - शव, मृत शरीर (चेतना न होनेवाले व्यक्ति)।

4) सूरत - शकल, रूप (व्यवस्थारूपी सूरत)।

5) आग - अग्नि, चेतना (हर व्यक्ति के हृदय में व्यवस्था परिवर्तन की चेतना संपन्न हो)।

9.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) दुष्यंतकुमार
2) साये में धूप
3) परिवर्तन
4) पीर
5) परदों
6) मकसद
7) जलनी

9.7 सारांश :

1) प्रस्तुत गजल से दुष्यंतकुमार के प्रगतिशील विचारों का चित्रण हुआ है।
2) प्रस्तुत गजल से आम आदमी के महंगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार, भूखमरी, शोषण जैसी पर्वत समाज पीडा की अभिव्यक्ति होकर, इन हिमालय जैसे दु:खों के पहाड को पिघलाकर उसमें से सुख और आनंद की गंगा बहनी चाहिए, का चित्रण हुआ है।
3) समाज में व्याप्त विषमता, भेदभाव, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, छूत-अछूत की यह दीवार जड से उखाड फेंकनी चाहिए।
4) आम से आम व्यक्ति भी परिवर्तन की इस लडाई में सचेत होकर अपना योगदान करने का चित्रण हुआ है।

5) कवि व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन लाना चाहते हैं।

6) इस बुनियादी परिवर्तन के लिए कवि हर एक के हृदय में क्रांति की आग जलाना चाहते हैं तभी भ्रष्ट व्यवस्था, पुरानी रूढियाँ, महंगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार तथा शोषण आदि पर्वत समान दु:खों का अंत होने का चित्रण किया है।

9.8 स्वाध्याय :

अ) संदर्भ -

1) सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'हो गई है पीर' इस गजल से कवि दुष्यंतकुमार ने किस उद्देश्य को स्पष्ट किया है?

2) 'हो गई है पीर' गजल में स्थिति में बदलाव, परिवर्तन एवं संघर्ष ही कवि का मकसद है, अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

9.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'हो गई है पीर' गजल की प्रासंगिकता पर वर्तमान भारत की स्थितियों पर निबंध लिखिए।

2) मराठी की गजलों को पढिए।

9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'एक कंठ विषपायी' (काव्य नाटक) - दुष्यंतकुमार

2) 'दुहरी जिंदगी' (उपन्यास) -दुष्यंतकुमार

◆◆◆

इकाई 3 (ख)

10. माँ जब खाना परोसती थी

- चंद्रकांत देवताले

अनुक्रम

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 विषय विवरण

10.3.1 चंद्रकांत देवताले का परिचय

10.3.2 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता का परिचय

10.3.3 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता का आशय

10.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

10.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

10.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

10.7 सारांश

10.8 स्वाध्याय

10.9 क्षेत्रीय कार्य

10.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

10.1 उद्देश्य :

1) चंद्रकांत देवताले जी का जीवन परिचय एवं कृतित्व से परिचित होंगे।

2) साठोत्तर एवं समकालीन काव्यधारा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

3) देवताले जी के कविताओं में जन, प्रकृति, परिवेश और परंपरा का भंजन आता है, इससे परिचित होंगे।

4) माँ के विशाल और स्नेहमयी हृदय तथा उसके बेटे के प्रति प्रेम से परिचित होंगे।

5) चंद्रकांत देवताले घर, परिवार और पडोस के भी कवि है, इससे परिचित होंगे।

10.2 प्रस्तावना :

समकालीन कवियों में एक सफल और उच्च कोटि के कवि देवताले जी है। उनकी रचनाओं में समसामयिकता का यथार्थ एवं वास्तविक चित्रण मिलता है। जो उन्होंने देखा, अनुभव किया, उसी को यथार्थ के धरातल पर मतलब समाज, आर्थिक विषमता, राजनैतिक भ्रष्टाचार आदि का यथार्थ चित्रण करते हैं। देवताले जी ने आम आदमी की अभावग्रस्तता, तनाव, विद्रोह, अवसाद, संघर्ष आदि को अपने काव्य में अभिव्यक्ति दी है साथ ही अमीर, पूँजीपति एवं शोषकों के प्रति तीव्र घृणा का भाव व्यक्त किया है। देवताले जी पीडा के भी कवि है। देवताले ने स्त्री के लिए, औरत के लिए जितनी मार्मिक और सशक्त कविताएँ लिखी है वैसी हिंदी में किसी दूसरे कवि के पास नहीं है। देवताले दो बेटियों के पिता है, इसलिए कविताओं में भी बाप का दिल धडकने लगता हैं। देवताले जी घर, परिवार और पडोस के भी कवि हैं जहाँ हर रोज जरूरतों के बीच आपसी सुख-दुख भी बँटता रहता है। चंद्रकांत देवताले अपनी भाषा की धरती और अपने जनपद के जीवन में रचे बसे हैं। आधुनिकता, वैज्ञानिकता तथा सूचना क्रांति के युग में भी देशीयता-स्थानीयता-जमीन और अपनी भाषा को बचाने की उन्हें गहरी चिंता है।

10.3 विषय-विवरण :

10.3.1 चंद्रकांत देवताले का परिचय :

चंद्रकांत देवताले जी का जन्म 7 नवंबर 1936 ई. को मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के छोटे से गाँव जोलखेडा में हुआ। इनके पिताजी स्टेशन पर गुड्स क्लर्क थे। आरंभिक शिक्षा बडवाहा में ही हुई। सन 1960 में होल्कर कॉलेज इन्दौर से हिंदी साहित्य में एम. ए. किया। सन 1984 में सागर विश्वविद्यालय से मुक्तिबोध पर पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। सन 1961 से 1996 तक उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन के महत पन्ना, भोपाल, उज्जैन, पिपरिया, राजगड, रतलाम, नागदा तथा इंदौर के कॉलेजों में अध्यापन कार्य किया है। सन 1994 तक सब करने के बाद इंदौर के देवी अहिल्याबाई होलकर विश्वविद्यालय इंदौर में डीन, कला संकाय रहे। शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर में हिंदी विभागाध्यक्ष रहे। सभी पदों से सेवा निवृत्ति के बाद स्वतंत्र लेखन एवं पत्रकारिता में योगदान देते रहे हैं।

दैनिक भास्कर, इंदौर में लगभग छह वर्षो तक स्तंभ लेखन किया है। विभिन्न कविता प्रसंगों के साथ-साथ विश्व कविता उत्सव में भी भाग लिया। इटली आदि अनेक देशों की यात्राएँ की। देवताले जी का विवाह सन 1963

में इंदौर में हुआ। पत्नी कमल देवताले जी से इन्हें दो कन्यारत्न प्राप्त हुई जो कनु और अनु हैं। समकालीन कवियों में कवि चंद्रकांत देवताले ऐसे कवि है, जिसका व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में व्यक्त हुआ है। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित है -

कविता संग्रह :

हड्डियों में छिपा ज्वर (1973), दीवारों पर खून से (1975), लकडबग्घा हँस रहा है (1980), रोशनी के मैदान की तरफ (1982), भूखण्ड तप रहा है (1982), आग हर चीज में बताई गयी थी (1987), पत्थर की बेंच (1996), इतनी पत्थर रोशनी (2002), उसके सपने (1998), विष्णु खरे तथा चंद्रकांत पाटील द्वारा सम्पादित संचयन, बदला बेहद मँहगा सौदा (1995), उजाड में संग्रहालय (2003), तथा जहाँ थोडा-सा सूर्योदय होगा (2008), पत्थर फेंक रहा हूँ (2010) आदि।

पुरस्कार एवं सम्मान :

- सृजनात्मक लेखन के लिए 'मुक्तिबोध फैलोशिप'
- 'माखनलाल चतुर्वेदी' कविता पुरस्कार
- मध्यप्रदेश सरकार का 'शिखर सम्मान' पुरस्कार
- उडीसा की वर्णमाला साहित्य संस्था द्वारा 'सृजन भारती सम्मान'
- अखिल भारतीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान
- पहल सम्मान
- भवभूति अलंकरण सम्मान
- कुसुमाग्रज राष्ट्रीय पुरस्कार
- वर्ष 2012 में साहित्य अकादमी सम्मान

10.3.2 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता का परिचय :

सातवें दशक की कविता में प्रमुखत: आक्रोश और विद्रोह का स्वर पाया जाता है। परंतु हिंदी कविता में भाषिक और शिल्पगत बदलाव नजर आता है। इन कवियों ने सामान्य कथन और काव्याभिव्यक्ति में अंतर ही नहीं रखा। इसमें बहुचर्चित कवि चंद्रकांत देवताले जी है। माता, पिता, पारिवारिक प्रेम, स्नेह, बचपन की सुनहरी यादें आदि का चित्रण उनकी कविताओं में हुआ है। 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता 'लकडबग्घा हँस रहा है' काव्यसंग्रह में संकलित है। कवि कहते हैं कि एक समय था जब माँ के बिना खाना परोसे पेट भरता ही नहीं था। माँ अपने सबसे छोटे और बेकार बेटे को सहृदय होकर खाना परासेती थी। वह यह नहीं पूछती थी कि वह दिनभर क्या करता है, कहाँ भटकता है। अपने पान-तम्बाकू के लिए पैसे कहाँ से जूटाता है। खाना कम खाने पर भी उसकी डाँट सुनती पडती थी। समय बदलता गया। बीवी, बच्चों के साथ खाना खाते समय वैसी राहत और बेचैनी दोनों ही गायब

हो गयी हैं एक दूसरे के खाने के बारे में निश्चिंत रहते हैं। परंतु कभी-कभार मेथी की भाजी या बेसन होने पर कवि को माँ की याद बहुत आती है। कुएँ में डूबी बाल्टियों को ढूँढने के समान ही कवि माँ की सुनहरी यादों को ढूँढने का प्रयास करते हैं।

10.3.3 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता का आशय :

'माँ जब खाना परोसती थी' कविता 'लकडबग्घा हंस रहा है' काव्य संकलन में संकलित है। चंद्रकांत देवताले जी ने प्रस्तुत कविता द्वारा माँ का अपने बेटे के प्रति होनेवाला स्नेहभाव, त्याग तथा बेटे के सेहत को लेकर चिंता को व्यक्त किया हैं। कवि कहते हैं कि माँ जब तक खाना नहीं परोसती थी तब तक उसका पेट नहीं भरता था। माँ ही अपने बेटे के भूख-प्यास को रत्ती रत्ती जानती है। बेटे के आधे पेट उठने पर वह स्वयं ही बडबडाती रहती। पता नहीं चलता था कि न जाने वह किस भगवान को कोसती रहती थी। माँ की अनुपस्थिति में जब कवि अपने बीवी बच्चों के साथ खाना खाने बैठते हैं तब वैसी राहत और बेचैनी क्यों महसूस नहीं होती? दोनों गायब है। इस तरह कवि ने अपनी माँ के प्रति अपने प्यार को याद कर, उसके साथ जुडी पुरानी गहरी यादों को ढूँढने का प्रयास किया है।

कवि अपनी माँ को याद करते हुए कहते हैं कि वे दिन बहुत दूर चले गए हैं जब मुझे माँ खाना परोसती थी। उन दिनों माँ के बिना अगर कोई खाना परोसता था तब पेट भरता ही नहीं था। जब माँ खाना परोसती थी तब पेट भर जाता था। माँ के हाथ से खाना खाये वे दिन गहरे कुएँ में गिर पडी पीतल की चमकदार बाल्टी की तरह दबे पडे हैं, कवि के हृदय में। कवि कहते हैं कि अब वो दिन आ गए हैं कि माँ बुढी हो गई है और उसकी मौजूदगी में हमें खाना परोसा जा रहा है, तब उसकी मौजूदगी में एक कौर गले के अंदर निगलना तक दुश्वार होने लगता है। क्योंकि वह अपने सबसे छोटे और बेकार बेटे को खाना परोसते समय घी की कटोरी लेना कभी भूलती ही नहीं थी। बिना माँगे थाली घी परोसती रहती थी। अब कोई वैसे परोसता ही नहीं हैं दिनभर कहाँ कहाँ भटकते रहनेवाले तथा पान-तम्बाकू की लत लगे अपने बेटे को कभी नहीं पूछा कि तुम पान-तम्बाकू के लिए कहाँ से पैसे जुटाते हो? दिनभर भटककर खाने के वक्त घर आनेवाले अपने बेटे को खाना परोसते वक्त वह और अधिक स-हृदय होकर रोटी, सब्जी, घी, चावल आदि के लिए हठ करती रहती थी। उस वक्त कवि अपनी गरदन नीचे कर रोटी के टुकडे चबाने लगाता और स्वयं के द्वारा रोटी के टूकडे चबाने की आवाज बिना कुछ बोले सुनता रहता था। माँ मेरी भूख-प्यास को रत्ती-रत्ती पहचानती थी और जब कभी मैं आधे पेट थाली से उठ जाता था तब जूठे बरतन माँजते समय चौके में अकेली बडबडती रहती थी। उस समय कवि बरामदे में छिपकर उसके हर शब्द को सुनते रहते थे। बेटे की चिंता को लेकर उसका भगवान के लिए बडबडाना सबसे अधिक खौफनाक सिद्ध होता था। माँ के ऐसे खौफनाक बडबडाते समय कवि चुपचाप दरवाजा खोलकर बाहर आकर देर रात तक सडक के एकांत अंधेरे में टहलते रहते हैं। अब वे दिन भी उसी कुएँ में लोहे की वजनी बाल्टी की तरह गहराई में जाकर धँस पडे हैं, वे फिर से वापस आनेवाले नहीं हैं।

कवि अपनी माँ के प्यार में भावविवश होकर कहता है कि माँ के हाथ से खाना परोसने और उसका पेट भरने के

बाद मिलनेवाली राहत तथा परोसते वक्त बेचैनी महसूस होती थी। अब वे दिन जैसे लोहे की वजनी बाल्टी की तरह कुएँ की गहराई में धँस पड़ी हैं। अब कवि अपने बीवी बच्चों के साथ मेज तथा मेजपोश पर खाना खाते हैं। उस समय माँ के परोसने से मिलनेवाली राहत तथा परोसते वक्त होनेवाली बेचैनी दोनों गायब हैं अब हम सब अपनी अपनी जिम्मेदारी से जितना चाहिए उतना ही खाते हैं। हम सब एक दूसरे के खाने के बारे में बिल्कुल निश्चिंत है कि जिसे जितना चाहिए उतना वह स्वयं ही लेके खा लेगा। अब कोई भोजन परोसने का हठ नहीं करता। फिर भी कभी कभी जब भोजन में मेथी की सब्जी और बेसन का समावेश होने पर मेरी भूख-प्यास और बढ जाती थी। उस वक्त मेरी भूख-प्यास को रत्ती-रत्ती पहचाननेवाली माँ की याद मुझे सताने लगती है, क्योंकि मेरी भूख और प्यास को पहचाननेवाली माँ की दृष्टि और परोसते वक्त किए जानेवाली उसकी हठ की आवाज मेरे सामने हवा में तैरने लगती हैं। माँ की उस जानी-पहचानी दृष्टि और आवाज के कारण कवि मुँह में रखे रोटी के टुकडों को पानी के साथ गटक लेते हैं और कुछ देर माँ की उन यादों को गहरे कुएँ में पडी उन बाल्टियों की तरह ढूँढने लगते हैं। इस तरह कवि ने यहाँ अपनी माँ के द्वारा भोजन परोसने प्यार से किया जानेवाला हठ, माँ के परोसने से बेटे का पेट भर जाना तथा बेटे के बडे होने के बाद अपने बीवी बच्चों के साथ खाना खाते समय बिना परोसे हर कोई अपनी अपनी जिम्मेदारी से खाने तथा सभी का एक दूसरे के खाने के बारे में एकदम निश्चिंत रहने की आज की आधुनिक जीवन पद्धति की तुलना करते हुए, एक माँ का अपने बेटे के प्रति होनेवाला स्नेहभाव, त्याग तथा चिंता को यहाँ व्यक्त किया दिखाई देता है।

10.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता के कवि .... है।

   1) नागार्जुन 2) निराला 3) चंद्रकांत देवताले 4) अज्ञेय

2) 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता .... काव्यसंग्रह से ली गई है।

   1) लकडबग्घा हँस रहा है 2) भूखण्ड तप रहा है 3) पत्थर फेंक रहा हूँ 4) उसके सपने

3) चंद्रकांत देवताले जी को सन 2012 को .... काव्यसंग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।

   1) पत्थर फेंक रहा हूँ 2) भूखण्ड तप रहा है 3) उसके सपने 4) इतनी पत्थर रोशनी

4) माँ अपने बेटे के भूख-प्यास को .... जानती थी।

   1) संपूर्ण 2) रत्ती-रत्ती 3) अपूर्ण 4) कम

5) बेटे के आधे पेट उठने पर माँ का भगवान के लिए बडबडाना सबसे .... सिद्ध होता था।

   1) खौफनाक 2) कठोर 3) सदय 4) प्रेमपूर्ण

6) कवि अपने बीवी-बच्चों के साथ खाते समय .... से खाते हैं।

   1) कर्तव्य 2) समझदारी 3) नासमझी 4) जिम्मेदारी

7) माँ की दृष्टि और आवाज तैरने के बाद कवि पानी की मदत से खाना .... लेते हैं।

1) खा 2) खाते 3) गिटक 4) पूर्ण

10.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) सदय - दयालु।

2) दुशवार - मुश्किल, कठिन।

3) रत्ती-रत्ती पहचानना - पूरी तरह समझना।

4) खौफनाक - भयंकर, डरावना।

10.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) चंद्रकांत देवताले

2) लकडबग्घा हँस रहा है

3) पत्थर फेंक रहा हूँ

4) रत्ती-रत्ती

5) खौफनाक

6) जिम्मेदारी

7) गिटक

10.7 सारांश :

1) 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता में कवि चंद्रकांत देवताले जी ने माँ का अपने बेटे के प्रति होनेवाले प्रेम को चित्रित किया है।

2) माँ ही अपने बेटे के भूख-प्यास को सही पहचानने का चित्रण इसमें है।

3) अपने आवारा, दिनभर घूमकर भोजन के वक्त घर आनेवाले बेटे के प्रति माँ के प्रेम में कभी कभी न आने का चित्रण प्रस्तुत कविता में हुआ है।

4) माँ के हाथ से परोसे खाना खाने के बाद मिलनेवाली राहत तथा खाना परोसते वक्त होनेवाली बेचैनी का अनुभव बीवी बच्चों के साथ खाना खाते समय न मिलने का दु:ख यहाँ कवि ने व्यक्त किया दिखाई देता है।

5) भोजन परोसते समय माँ द्वारा किया जानेवाला हठ, माँ के हाथ से परोसे खाना खाने से बेटे का पेट भर जाना तथा कवि का बीवी बच्चों के साथ खाना खाते समय अपनी अपनी जिम्मेदारी से भोजन करने तथा एक दूसरे के खाने के बारे में निश्चिंत रहने की आधुनिक जीवन पद्धति की तुलना कर माँ का बेटे के प्रति होनेवाला स्नेह, त्याग तथा चिंता कितनी महत्त्पूर्ण है, इस बात का चित्रण प्रस्तुत कविता में हुआ है।

6) भारतीय समाज में जितना स्नेह, त्याग तथा चिंता माँ के द्वारा अपने बेटे के प्रति है, उसको याद कर वह प्रेम, त्याग तथा चिंता किसी और में न होने की बात की अभिव्यक्ति यहाँ हुई दिखाई देती है।

7) चंद्रकांत देवताले जी के प्रस्तुत कविता में समकालीन यथार्थ का चित्रण हुआ मिलता है।

10.8 स्वाध्याय :

अ) संदर्भ -

अपने बीवी-बच्चों के साथ खाते हुए
अब खाने की वैसी राहत और बेचैनी
दोनों ही गायब हो गयी हैं।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता का आशय।

2) 'माँ के हाथ से परोसे भोजन को खाकर पेट भरने तथा राहत मिलती है' ऐसा कवि क्यों कहते हैं?

10.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'माँ जब खाना परोसती थी' कविता के आशय पर आधारित निबंध लीखिए।

2) 'प्रेम पिता का दिखायी नहीं देता' तथा 'माँ जब खाना परोसती थी' इन दोनों चंद्रकांत देवताले जी के कविताओं की तुलना करने का प्रयास कीजिए।

10.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) आग हर चीज में बतायी गयी थी - चंद्रकांत देवताले

2) रचनाकार चंद्रकांत देवताले - डॉ. बी. एफ. शेख, वाणी प्रकाशन, जनवरी 2013.

◆◆◆

इकाई 3 (ग)

11. एकलव्य

- कीर्ति चौधरी

अनुक्रम

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 विषय विवरण

11.3.1 कीर्ति चौधरी का परिचय

11.3.2 'एकलव्य' कविता का परिचय

11.3.3 'एकलव्य' कविता का आशय

11.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

11.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

11.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

11.7 सारांश

11.8 स्वाध्याय

11.9 क्षेत्रीय कार्य

11.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

11.1 उद्‌देश्य :

1) कीर्ति चौधरी जी का जीवन परिचय एवं कृतित्व से परिचित होंगे।

2) नई कविता की कवयित्री कीर्ति चौधरी की कविताओं से परिचित हो सकेंगे।

3) अपने प्रिय शिष्य को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए योग्य, प्रतिभासंपन्न छात्रों पर होनेवाले अन्याय से परिचित होंगे।

4) प्रस्तुत कविता से गुरू के प्रति शिष्य में होनेवाली निष्ठा, भक्ति और समर्पण से परिचित होंगे।

11.2 प्रस्तावना :

नई कविता की शुरुआत आमतौर पर 'दूसरा सप्तक' से होती है और 'तीसरा सप्तक' के प्रकाशन के साथ वह अपने उत्कर्ष को पहुँच कर समाप्त हो जाती है। नई कविता के इसी उत्कर्षकाल की साक्षी और सारथी थी कीर्ति चौधरी और उनकी कविताएँ। कीर्ति चौधरी की कविता में प्रगीतात्मकता है। उन्होंने अपने कविता में मनुष्य और उसके समग्र अनुभवों को पकड़ने का प्रयास किया है। वास्तव में कीर्ति चौधरी की कविता नई कविता के अन्य रचनाकारों की तरह ही संपूर्ण जीवन की कविता है। उनकी कविता में प्रतीकों और बिंबों का काफी प्रयोग मिलता है। कीर्ति चौधरी नई कविता की कवयित्री थी, जिन्होंने महादेवी वर्मा के जाने के बाद आई रिक्तता को अपनी ओर से पाटने का कार्य किया हैं उनकी रचनाओं में ताजगी और एक खास तरह की स्त्री सुलभ संवेदना हैं जो उनके समय में किसी और के पास नहीं थी।

11.3 विषय-विवरण :

11.3.1 कीर्ति चौधरी का परिचय :

'तीसरा सप्तक' की चर्चित कवयित्री कीर्ति चौधरी का जन्म 1 जनवरी 1934 ई. को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के नईमपुर ग्राम के एक कायस्थ परिवार में हुआ। कीर्ति चौधरी का मूल नाम कीर्ति बाला सिन्हा था। उन्नाव में जन्म के कुछ बाद वे पढाई के लिए कानपुर चली आयी। सन 1954 में एम. ए. करने के बाद 'उपन्यास के कथानक तत्त्व' जैसे विषय पर उन्होंने शोधकार्य किया है। कीर्ति जी को साहित्य के संस्कार विरासत में मिले और फिर जीवन साथी के साथ भी साहित्य संप्रेषण से जुड़ी रही। कीर्ति चौधरी के पिता जमींदार थे पर उनकी माँ सुमित्राकुमारी सिन्हा एक बडी कवयित्री, लेखिका तथा जानी मानी गीतकार थी। कीर्ति जी का लेखन उनकी माँ के प्रभाव से मुक्त था और अपनी मौलिकता लिए था। उनकी रचनाधर्मिता के पीछे उनके अनुभवों की विविधता दिखाई देती हैं। कीर्ति जी का विवाह हिंदी के सर्वश्रेष्ठ रेडियों प्रसारकों में से एक ओंकार श्रीवास्तव जी से हुआ। बीबीसी हिंदी सेवा के साथ जुडे ओंकारनाथ श्रीवास्तव का योगदान केवल रेडियों के लिए नहीं था बल्कि वे अपनी कविता और कहानियों के लिए भी जाने जाते हैं। जाने माने साहित्यकार अजितकुमार कीर्ति जी के भाई हैं। उनकी बेटी अतिमा श्रीवास्तव अंग्रेजी की लेखिका है। अतिमा के दो उपन्यास है। 'टांसमिशन' और 'लुकिंग फॉर माया' प्रकाशित हुए हैं।

कीर्ति जी की कविता नई कविता के अन्य रचनाकारों की तरह ही संपूर्ण जीवन की कविता है। उनकी कविता

में प्रतीकों और बिंबों का काफी प्रयोग मिलता है। उनकी कविता में प्रगीतात्मकता है। उनकी कविता में मनुष्य और उसके समग्र अनुभवों को पकडने का प्रयास दिखाई देता है। पिछले ढाई दशकों में आकाशवाणी द्‌वारा सैकडों रचनाओं का प्रसारण किया, साथ ही कई पत्रिकाओं का संपादन एवं रचनाएँ प्रकाशित की हैं। इनका निधन 13 जून 2008 ई. को लंदन में हो गया है।

साहित्य परिचय :

तीसरा सप्तक में शामिल रचनाएँ, कविताएँ, खुले हुए आसमान के नीचे, कीर्ति चौधरी की कविताएँ, कीर्ति चौधरी की कहानियाँ आदि।

11.3.2 'एकलव्य' कविता का परिचय :

'तीसरा सप्तक' में संकलित कवियों में एक कवयित्री है ' कीर्ति चौधरी। उनकी कविता के विषय में प्रकृति प्रेम के साथ जीवन जीवंतता और अकेलापन मोहक रूप में समाविष्ट है। परंतु 'एकलव्य' नामक कविता एक अलग ही विषय लेकर रची गयी है। 'एकलव्य' महाभारत की कथा का एक पात्र है जो एक भीलपुत्र था। पुलक मुनि के कहने पर उसे द्रोणाचार्य के पास धनुर्विद्या सिखने के लिए भेजा जाता है। परंतु वहाँ एकलव्य अपमानित होता है। अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को तथा केवल राजपुत्रों को शिक्षित करने के लिए वचनबद्ध गुरू द्रोण एकलव्य को धनुर्विद्या का ज्ञान देने से इंकार करते हैं। एकलव्य स्वयं गुरू द्रोण की मूर्ति बनाकर स्वाध्याय द्‌वारा धनुर्विद्या का ज्ञान आत्मसात कर लेता है। एकलव्य की धनुर्विद्या की प्रतिभा गुरू द्रोण सह नहीं पाते और गुरूदक्षिणा में दाहिना अंगूठा मांग लेते हैं। अंगूठा काटकर देने के बाद का एकलव्य का मंथन इस कविता में चित्रित हुआ है। एकलव्य कहना चाहता है कि मेरा दाहिना अंगूठा, लक्ष्य, उपकरण, साध्य, बाण प्रत्यंचा, हाथों की चंचलगति यह सब आपकी देन है। बेंधे हुए लक्ष्य और साधे हुए बाण भी आपको समर्पित थे। परंतु आप मुझे समझ नहीं पाये, आप केवल माटी की मूरत बने रहे। यदि आप समानता की दृष्टि से सोचते तो गुरूदक्षिणा में मेरा सबकुछ छीन न लेते। द्रोणाचार्य के दिमाग में विषमता भरी होने के कारण राजकुमारों को शिक्षित करना और निम्न जाति के लडकों को विद्या से दूर रखना यह कार्य उन्हें शोभा नहीं देता। यहाँ प्रतिभा को महत्त्व देने की आवश्यकता पर कवयित्री जोर देती दिखाई देती है।

11.3.3 'एकलव्य' कविता का आशय :

हिंदी साहित्य में नई कविता की जानी पहचानी मुखर कवयित्री कीर्ति चौधरी की 'एकलव्य' कविता पौराणिक संदर्भों को प्रस्तुत करते हुए गुरू की अमानवीयता को उजागर करती है। यह कविता 'तीसरा सप्तक' में संकलित है। यह बात सर्वविदीत है कि महाभारत में गुरू द्रोणाचार्य ने अपने शिष्य अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर सिद्‌ध करने के लिए एकलव्य का अंगूठा कटवा लिया था। इस घटना से साहसी धनुर्धर एकलव्य को उसकी गुरूनिष्ठा, गुरूभक्ति एवं गुरू के प्रति संपूर्ण समर्पित छात्र के रूप में याद किया जाता है। लेकिन गुरू द्रोण ने एकलव्य की निष्ठा, भक्ति और समर्पण का अनुचित लाभ उठाकर उसका अहित किया है। गुरू द्‌वारा हुए अहित से दु:खी एकलव्य के दु:ख का एकालाप शैली में वर्णन कवयित्री कीर्ति चौधरी ने प्रस्तुत कविता में किया है। यहाँ गुरू द्रोण की पूर्वग्रहदूषित भावना द्‌वारा

छात्र की प्रतिभा को अनदेखा करने का तथा गुरू की अमानवीयता, असभ्यता का व्यवहार एवं बरसों से जड जमाई मनोरूग्णता का पर्दाफाश किया दिखाई देता है।

प्रस्तुत कविता में गुरूभक्ति, गुरू निष्ठा एवं गुरू के प्रति संपूर्ण समर्पण से पीड़ित एकलव्य अपनी वेदना गुरू द्रोण के प्रति व्यक्त करते हुए कहता है कि, मैंने अपने जीवन में गुरू के रूप में केवल तुम्हें ही चाहा था। एकलव्य कहता है कि मेरा दाहिना अँगूठा पहले से ही आपको समर्पित था। इतना ही नहीं मेरा हर लक्ष्य, उपलक्ष्य, उपकरण, साध्य, बाण, प्रत्यंचा, मेरे हाथों की चंचलगति ये सब आपकी देन मानकर आपको समर्पित किये थे। इन्हें तो मैंने पूजा की सामग्री समझकर गुरू चरणों में निर्माल्य-सा चढाया था। मेरे बेंधे हुए लक्ष्य और सिद्‌ध किए हुए बाणों को बार बार माथे से लगाया था, इनके सामने अपना सिर नवाया और गुरू चरणों पर इन्हें समर्पित किया था। हे गुरूवर्य द्रोण, मेरा जो कुछ भी था उसे मैंने तुम्हारी ही देन समझी थी। लेकिन विडंबना यह है कि जिस गुरू को मैं संसार का सर्वश्रेष्ठ गुरू समझकर जिसके प्रति मैंने अपना पूरा व्यक्तित्त्व समर्पित किया था, वह गुरू ही उससे अनभिज्ञ है। अंगूठा कटवा देने के बाद मैं अपने जीवन में गुरू के प्रति किए संपूर्ण समर्पण का सिंहावलोकन करने लगता हूँ तब मुझे ऐसा महसूस होता है कि मेरा अपना अपने गुरू के प्रति किया संपूर्ण समर्पण, निष्ठा और मेरे प्राणों की आकुल प्रतिष्ठा सब कुछ झूठी साबित ठहरती है। मैंने जिस गुरू के प्रति समर्पण, निष्ठा और प्राणों की आकुल प्रतिष्ठा अर्पित की थी वह गुरू तुम थे ही नहीं। आप केवल माटी की मूरत थे क्या? जिसमें संवेदना नहीं रहती। हे गुरुवर्य, मैंने जो समर्पण, निष्ठा और भक्ति जिस गुरू के प्रति समर्पित की थी वे गुरू केवल माटी की मूरत नहीं थे। आपने जानबूझकर, सोच-समझकर मेरे प्रति यह अन्याय किया है। यदि आप में वह पूर्वग्रह दूषित भावना न होती तो आप गुरूदक्षिणा में मेरा सबकुछ छीन लेने की बात न सोचते। यहाँ हम देखते हैं कि गुरू द्रोण में पूर्वग्रह दूषित भावना होने के कारण राजकुमारों को सर्वश्रेष्ठ साबित करने के लिए निम्न जाति के छात्रों की प्रतिभा को छीन लेना, उन्हें विद्या से दूर रखना, जीवन की प्रधान धारा से किनारे कर देनी की बरसों पुरानी मानसिकता को कवयित्री उजागर करती है।

11.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रशन :

1) 'एकलव्य' कविता की .... कवयित्री है।

   1) अनामिका   2) कीर्ति चौधरी   3) महादेवी वर्मा   4) सुमित्राकुमारी

2) कीर्ति चौधरी .... की प्रमुख कवयित्री है।

   1) तार सप्तक   2) दूसरा सप्तक   3) तीसरा सप्तक   4) सप्तक

3) कीर्ति चौधरी का सही नाम है .... ।

   1) कीर्ति बाला सिन्हा   2) अनामिका   3) सुमित्राकुमारी सिन्हा   4) मृदुला

4) 'एकलव्य' कविता .... संदर्भों को प्रस्तुत करती है।

   1) आधुनिक   2) पौराणिक   3) वर्तमान   4) मध्यमकालीन

5) ‘एकलव्य’ कविता में .... के दुःख, वेदना तथा पीडा का चित्रण है।

1) अर्जुन 2) द्रोण 3) एकलव्य 4) दुर्योधन

6) ‘एकलव्य’ कविता में गुरू की .... को व्यक्त किया है।

1) अमानवीयता 2) सहृदयता 3) पीडा 4) दुःख

7) ‘एकलव्य’ का अपने गुरू के प्रति निष्ठा, भक्ति तथा .... था।

1) समर्पण 2) श्रद्‌धा 3) असुया 4) भय

11.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) उपकरण - साधन, औजार, यंत्र।

2) चरण - पाँव।

3) साध्य - लक्ष्य, सिद्धि।

4) प्रत्यंचा - धनुष की डोरी।

5) निर्माल्य - निर्मल, शुद्ध, पवित्रता।

6) बेधना - छेदना, भेदना, घाव करना।

7) नवाना - झुकना, नम्र होना।

8) अभिज्ञ - जाननेवाला, ज्ञाता।

9) समर्पण - अर्पित करना, सौंपना, देना।

10) आकुल - परेशान, बेचैन, उतावला।

11.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) कीर्ति चौधरी
2) तीसरा सप्तक
3) कीर्ति बाला सिन्हा
4) पौराणिक
5) एकलव्य
6) अमानवीयता
7) समर्पण

11.7 सारांश :

1) ‘एकलव्य’ कविता में गुरू की अमानवीयता का चित्रण हुआ है।

2) अपने प्रिय शिष्य को सर्वश्रेष्ठ सिद्‌ध करने के लिए योग्य, प्रतिभासंपन्न छात्र पर होनेवाले अन्याय का चित्रण प्रस्तुत कविता में हुआ है।

3) प्रस्तुत कविता से गुरू के प्रति शिष्य में होनेवाली निष्ठा, भक्ति और समर्पण से एकलव्य को गुरुभक्त, गुरूनिष्ठ तथा गुरू के प्रति समर्पित छात्र के रूप में पहचानने का चित्रण, प्रस्तुत कविता में हुआ है।

4) गुरू के प्रति संपूर्ण समर्पित छात्र का गुरू द्‌वारा ही अहित होने के कारण शिष्य की पीडा, दु:ख तथा वेदना का एकालाप शैली में वर्णन प्रस्तुत कविता में हुआ है।

5) प्रस्तुत कविता द्‌वारा गुरू की पूर्वग्रहदूषित भावना द्‌वारा छात्र की प्रतिभा को अनदेखा करने का तथा गुरू की अमानवीयता, असभ्यता के व्यवहार का एवं बरसों पुरानी जड जमाई जातियवादी मनोरूग्णता का चित्रण हुआ है।

11.8 स्वाध्याय :

अ) संदर्भ -

सब था तुम्हारा -
अरे, सब कुछ 'तुम्हारा'।
तुम्ही उससे अभिज्ञ रहे।
अथवा यह मेरा समर्पण सब झूठा था।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'एकलव्य' कविता का आशय।

2) एकलव्य को उसकी गुरू भक्ति, निष्ठा तथा समर्पण का क्या फल मिला है?

11.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'एकलव्य' कविता की प्रासंगिकता पर निबंध लीखिए।

2) महाभारत में चित्रित एकलव्य पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

11.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'एकलव्य' (मराठी उपन्यास) शरद दळवी, मेहता प्रकाशन, पुणे.

2) 'एकलव्य' (मराठी नाटक) विश्वनाथ खैरे, मौज प्रकाशन, पुणे.

◆◆◆

इकाई 3 (घ)

12. बेजगह

- अनामिका

अनुक्रम

12.1 उद्‌देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 विषय-विवरण

12.3.1 अनामिका का परिचय

12.3.2 'बेजगह' कविता का परिचय

12.3.3 'बेजगह' कविता का आशय

12.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

12.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

12.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

12.7 सारांश

12.8 स्वाध्याय

12.9 क्षेत्रीय कार्य

12.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

12.1 उद्देश्य :

1) अनामिका जी का जीवन परिचय एवं कृतित्त्व से परिचित होंगे।

2) वैश्वीकरण के पृष्ठभूमि पर लिखी कविताओं से परिचित हो सकेंगे।

3) समकालीन भारतीय समाज में नारी की यथार्थ स्थिति का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

4) प्रस्तुत कविता से भारतीय परिवार में स्त्री को किस तरह बेदखल किया जाता है, इससे परिचित हो सकेंगे।

12.2 प्रस्तावना :

वैश्वीकरण के युग में लिखी गई अनामिका की कविताएँ स्त्री विमर्श को प्रस्तुत करती है। उनकी कविताओं में स्त्री अनेक रूपों में चित्रित हुई दिखाई देती है। अनामिका संवेदनशील कवयित्री है, जिनकी संवेदना समाज की हर विसंगति का पर्दाफाश करती है। अनामिका की विशेषता यह है कि वे खुली आँखों से सामाजिक दृश्यों को देखती है और वे दृश्य अपनी कविता में उतार देती है। 21 वीं शती के भारतीय नारी के दु:खों, यातनाओं और संघर्ष को सही परिप्रेक्ष्य में समझने तथा समझानेवाली महिला कवयित्री है। उनकी कविताएँ भारतीय समाज में स्त्री की सही दशा से हमें रू-ब-रू करती है। अनामिका की कविता नारी मुक्ति की बातें करती है पर उनके लिए नारी मुक्ति कभी भी परिवार से मुक्ति नहीं रही है। अनामिका की कविताएँ भारतीय परिवार के बीच अनछुए प्रसंगों द्वारा स्त्री पीड़ा और यातना को मूर्त रूप देती है। बदलते सामाजिक परिवेश, टूटते मूल्य, टूटते संयुक्त परिवार, अकेलेपन की त्रासदी, तथा स्त्री-पुरुष संबंध आदि को अपने काव्य के जरिए अभिव्यक्ति देती है। अनामिका की कविताएँ सामाजिक सत्य की ही अभिव्यक्ति करती दिखाई देती है।

12.3 विषय-विवरण :

12.3.1 अनामिका का परिचय :

कवयित्री अनामिका का जन्म 17 अगस्त, 1961 ई. को बिहार के मुजफ्फरपुर में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए., पीएच. डी. तथा डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की है। आपने अंग्रेजी विभाग, सत्यवती कॉलेज एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया। अनामिका को समकालीन हिंदी कविता की चंद सर्वाधिक चर्चित कवयित्री में जाना जाता है। अंग्रेजी की प्राध्यापिका होने के बावजूद उन्होंने हिंदी कविता के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

साहित्य परिचय :

1. कविता संग्रह - खुरदरी हथेलियाँ, गलत पते की चिट्ठी, दूब धान, बीजाक्षर, कविता में औरत आदि।

2. कहानी संग्रह - प्रतिनायक

3. उपन्यास - अवांतर कथा, दस द्वारे का पिंजरा, तिनका तिनके पास पर कौन सुनेगा आदि।

4. संस्मरण	-	एक ठो शहर : एक गो लडकी, एक थे शेक्सपीयर, एक थे चार्ल्स डिकेंस आदि।
5. आलोचना	-	पोस्ट-इलियट पोएट्री : अ वॉएज फ्रॉम कांप्लिक्ट टु आइसोलेशन, डन - क्रिटिसिज्म डाउन दि एजेज, ट्रीटमेंट ऑफ लव ऐंड डेड इन पोस्ट वार अमेरिकन पोएट्स आदि
6. विमर्श	-	स्त्रीत्व का मानचित्र, मन माँजने की जरूरत, पानी जो पत्थर पीता है।
7. अनुवाद	-	औरतों की मेज का कवि - रिल्के, कहती है औरतें (विश्व साहित्य की स्त्रीवादी कविताएँ) नागमंडल (गिरीश कर्नाड) अटलांत के आर-पार (समकालीन अंग्रेजी कविता)
8. पुरस्कार	-	राजभाषा परिषद पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, गिरिजाकुमार माथुर सम्मान, साहित्यकार सम्मान, केदार सम्मान, परंपरा सम्मान, साहित्य सेतु सम्मान आदि।

12.3.2 'बेजगह' कविता का परिचय :

अनामिका समकालीन हिंदी कविता की चंद सर्वाधिक चर्चित कवयित्रियों में शामिल की जाती है। 'बेजगह' कविता 'खुरदरी हथेलियाँ' कवितासंग्रह में संकलित है। यह एक स्त्री के अस्तित्व को दर्शानेवाली कविता है। संस्कृत काल से लेकर आज तक स्त्री की घर-परिवार एवं समाज में क्या जगह है? यह प्रश्न कवयित्री हमारे सामने खडा करती है। कवयित्री कहती है कि स्त्री का कोई अस्तित्व ही नहीं है जैसे केश और नाखून अपनी जगह से कटने पर कहीं के नहीं रहते उसी प्रकार स्त्री की भी कोई जगह नहीं हैं बचपन से उसे खाना पकाना, झाडू लगाना और अपने भाईयों की सेवा करने को कहा जाता है। पिता के घर में उसका स्थान दूसरे दर्जे का है। उसे बार बार यह अहसास दिलाया जाता है कि पिता के घर में उसको जगह नहीं है और न ही पति के घर में। उसे लगता है, घर-परिवार में उसका स्थान नगण्य है। फिर भी वह चाहती है कि जैसे तुकाराम के अधुरे अभंग की मौलिक व्याख्या हो सकती है तो मैं भी सारे संदर्भों एवं मुश्किलों का सामना करते हुए यहाँ तक पहुँच गयी हूँ तो हमें भी समझने की आवश्यकता हैं। कहने का मतलब यह है कि बरसों से स्त्री को दोयम स्थान पर रखा गया है, उसके अस्तित्व को बेदखल किया है। घर-परिवार तथा समाज में बेदखल किये गए स्त्री की जगह को लेकर प्रस्तुत कविता में प्रश्न उपस्थित किए गए हैं इन प्रश्नों का उत्तर वह चाहती है।

12.3.3 'बेजगह' कविता का आशय :

'बेजगह' कविता सुप्रसिद्‌ध कवयित्री अनामिका की है। प्रस्तुत कविता 'खुरदरी हथेलियाँ' काव्य संग्रह से ली है। पितृसत्ताक समाज में अपनी अस्मिता को तलाशती स्त्री की पीडा तथा वेदना की अभिव्यक्ति 'बेजगह' कविता द्‌वारा हुई है। इक्कीसवीं सदी में भी लडकियों का कोई घर नहीं होता, घर तथा समाज में उसकी कोई जगह नहीं होती। वह हमेशा अपने आपको बेजगह खडी पाती है। कटे हुए नाखून और कंघी में फँसकर बाहर आए केशों की तरह

एकदम बुहार दी जानेवाली होती हैं। ताज्जूब की बात यह है कि कानूनन प्रावधान होते हुए भी लडकी पिता के घर तथा संपत्ति पर अधिकार जता नहीं सकती। समाज भी इसे स्वीकरता नहीं है। अफसोस इस बात का है कि लडका लडकी अलगाव का यह भेद उसके जन्म से ही आरंभ कर दिया जाता है। घर-परिवार तथा समाज के विभिन्न स्तरों पर लिंग भेद को व्यक्त कर स्त्री को बेजगह करार देने की प्रवृत्ति का पर्दाफाश प्रस्तुत कविता में अनामिका जी ने किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

पुरूषप्रधान संस्कृति में स्त्री अपने ही घर-परिवार में किस तरह बेजगह करार दी जाती है उसका उदाहरण देती हुई कवयित्री कहती है कि, अपनी जगह से गिरकर जिस तरह नाखून और कंघी में फँसकर बाहर आए केशों की कोई जगह नहीं होती बिलकुल वैसे ही अपने ही घर-परिवार में स्त्री बेजगह होती है। इसके संदर्भ के लिए किसी संस्कृत श्लोक को हमारे टीचर हमारे सामने उजागार कर देते थे और मारे डर के कक्षा की सारी हम उम्र लडकियाँ सहम कर अपनी जगह और अधिक सिकुड जाती थी। जगह? जगह क्या होती है? यह हमने पहली कक्षा में हमें पढानेवाले टीचर के मुँह से जान लिया था।

कवयित्री आगे कहती है कि, पहली कक्षा के आरंभिक पाठ में हमें यह पढाया था की, 'राम, पाठशाला जा। राधा, खाना पका। राम, आ बताशा खा। राधा, झाडू लगा। भैया, अब सोएगा, जाकर बिस्तर बिछा। अहा, नया घर है। राम, देख यह मेरा कमरा है। और जब लडकी अपने पिता के मुँह से बेटे के कमरे के बारे में सुनती है तब वह अपने पिता से पुछती है कि यह अगर राम का कमरा है तो मेरा कमरा कहाँ है? बालसुलभ जिज्ञासावश पूछे इस प्रश्न का उत्तर देते समय स्वयं लडकी का बाप उसकी कोई जगह न होने की बात बता देता है। कहता है, बेटी, लडकियाँ हवा, धूप, मिट्‌टी होती है। उनका कोई घर नहीं होता। यह बात बचपन से ही लडकियों के गले उतार दी जाती है। लेकिन उनके बालसुलभ मन में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि,

जिनका कोई घर नहीं होता -
उनकी होती है भला कौन - सी जगह?

कवयित्री हमें पूछती है कि, ऐसी कौनसी जगह होती है, जो छूट जानेपर लडकी औरत बन जाती है? माँ-बाप का घर छूटते ही लडकी औरत बन जाती है। इस तरह संदर्भ होने के बावजूद भी उसकी कोई जगह नहीं होती। अपनी जगह से कटे हुए नाखून और कंघी में फँसकर बाहर आए केश की तरह स्त्री को एकदम बुहार दी जाती हैं लडकी जब औरत बन जाती है तो उसका अपना घर, द्‌वार, अपने लोग पीछे छूट जाते हैं। ऐसे समय कई प्रश्न उसका पीछा करते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर उसके पास नहीं है। फिर भी नेलकटर में फँस गए नाखून या कंघी में फँस गए केशों की तरह फँसे पडे होने का अहसास भी कभी नहीं होता, ऐसा क्यों?

स्त्री को बेजगह बनाने या स्त्री निर्वासन की यह परंपरा हमारे देश में बहुत पुरानी है। संस्कृत काल से लेकर अब तक इस परंपरा का निर्वाह हो रहा है। इस परंपरा के खिलाफ खडे रहकर विद्रोह करने का तथा इस परंपरा से छूटने का एक ओर आनंद है तो दूसरी ओर अपराधबोध भी होता हैं इस परंपरा के खिलाफ विद्रोह का आनंद कितना होता है?

बस, किसी बडी क्लासिक किताब में दो-एक पंक्ति में मुझे जगह मिलती है। जैसे किसी कोर्स में ससंदर्भ के लिए पूछे काव्य पंक्ति के बराबर। ऐसे में कौन मेरी सही व्याख्या सप्रसंग कर सकता है? मैं यह चाहती हूँ कि कोई मेरी सही व्याख्या सप्रसंग प्रस्तुत करे। इन सारे संदर्भों के पार अब कहीं मुश्किल से जड कर पहुँच गई हूँ। अत: मुझे ऐसे ही समझकर पढाया जाएगा क्या? जैसे तुकाराम का कोई अधूरा अभंग पढाया जाता है। इस तरह अपनी अस्मिता को तलाशती स्त्री की पीडा तथा वेदना की अभिव्यक्ति प्रस्तुत कविता में हुई दिखाई देती है।

12.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'बेजगह' कविता की कवयित्री .... है।

1) मंगेश डबराल 2) कीर्ति चौधरी 3) अनामिका 4) मृदुला गर्ग

2) 'खुरदरी हथेलियाँ' इस काव्य संग्रह से .... कविता ली है।

1) दूब धान 2) बेजगह 3) बीजाक्षर 4) एकलव्य

3) अनामिका .... विषय की प्राध्यापिका है।

1) अंग्रेजी 2) हिंदी 3) गणित 4) सायन्स

4) अपनी जगह से गिरकर कहीं के नहीं रहते केश, ... और नाखून।

1) कुर्सी 2) मेज 3) किताब 4) औरते

5) राम, देख यह तेरा कमरा है। 'और मेरा?' 'ओ पगली', लडकियाँ हवा, ... मिट्टी होती है।

1) पानी 2) किताब 3) धूप 4) छाव

6) लेकिन, कभी तो नेलकटर या कंघी में फँसे पडे होने का .... नहीं हुआ।

1) अहसास 2) साहस 3) धैर्य 4) उत्साह

7) अनामिका का जन्म .... में हुआ।

1) दिल्ली 2) बंबई 3) मुजफ्फरपुर 4) लखनौ

12.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) अन्वय - वाक्य में पदों का परस्पर उचित संबंध।

2) श्लोक - पद्य, संस्कृत का कोई छंद या पद्य।

3) जगह - किसी पद या किसी अधिकार का उत्तराधिकारी तथा जमीन, संपत्ति का अधिकारी।

4) संदर्भ - संबंध निर्वाह।

5) व्याख्या - विवेचन, विवरण, अर्थयन, विश्लेषण।

6) बुहार - झाडू लगाना।

12.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) अनामिका
2) बेजगह
3) अंग्रेजी
4) औरते
5) धूप
6) एहसास
7) मुजफ्फरपुर

12.7 सारांश :

1) इक्कीसवीं सदी के भारतीय नारी की स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कविता में किया है।
2) स्त्री को बेदखल तथा बेजगह बनानेवाले पितृसत्ताक कुटुंब पद्धति में स्त्री की होनेवाली छटपटाहट का चित्रण प्रस्तुत कविता में हुआ है।
3) अपनी जगह से कटे हुए नाखून और कंघी में फँसकर बाहर आए केश जिस तरह बुहार दिए जाते हैं उसी तरह भारतीय परिवार में स्त्री को बुहार याने बेदखल किया जाने का चित्रण प्रस्तुत कविता में हुआ है।
4) स्त्री को बचपन से ही इस बात का एहसास दिलाया जाता है कि उसकी परिवार में जगह नहीं है।
5) नेलकटर में फँसे पडे तथा कंघी में फँसे पडे केश की तरह भारतीय पितृसत्ताक कुटूंब में फँसे पड़े होने का एहसास भी स्त्री को न होने का चित्रण प्रस्तुत कविता में है।
6) स्त्री को बेदखल / बेजगह बनाने की बरसों पूरानी परंपरा के खिलाफ स्त्री ने अगर विद्रोह किया और उसमें वह अगर यशस्वी हो गई तो इस विद्रोह से मिलनेवाले आनंद से ज्यादा अपराधबोध की भावना का एहसास अधिक होता है।
7) स्त्री को बेदखल / बेजगह बनाने की इस परंपरा के खिलाफ विद्रोह करनेवाली स्त्रीयों की संख्या में तुलना में बहुत ही कम है।
8) सारे संदर्भ के होने के बावजूद भी स्त्री को बेजगह बनानेवाली परंपरा के खिलाफ विद्रोह करनेवाली स्त्री अपनी सही व्याख्या होने की इच्छा करती दिखाई देती हैं।

12.8 स्वाध्याय :

अ) संदर्भ -

कटे हुए नाखूनों,
कंघी में फँस कर बाहर आए केशों - सी

एकदम से बुहार दी जानेवाली?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'बेजगह' कविता का आशय।

2) कटे हुए नाखून और कंघी में फँस कर बाहर आए केश की तरह बुहार दी जानेवाली स्त्री की पीडा तथा वेदना का चित्रण 'बेजगह' कविता में किस तरह अनामिका जी ने किया है?

12.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'बेजगह' कविता के आशय पर आधारित निबंध लिखिए।

2) अनामिका की 'बेजगह' तथा निर्मला गर्ग की 'पुत्रमोह' कविताओं की तुलना करने का प्रयास कीजिए।

12.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'गलत पते की चिट्ठी' - अनामिका

2) अनामिका का काव्य : आधुनिक स्त्री-विमर्श - मंजु रुस्तगी.

◆◆◆

इकाई 4 (क)

13. नया बैंक

- मंगलेश डबराल

अनुक्रम

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 विषय विवरण

13.3.1 मंगलेश डबराल का परिचय

13.3.2 'नया बैंक' कविता का परिचय

13.3.3 'नया बैंक' कविता का आशय

13.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

13.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

13.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

13.7 सारांश

13.8 स्वाध्याय

13.9 क्षेत्रीय कार्य

13.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

13.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) कवि मंगलेश डबराल का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।

2) भूमंडलीकरण काव्यधारा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

3) नए बैंक की व्यवस्थापन प्रणाली से परिचित होंगे।

4) पुराने और नए बैंक के अंतर को जान सकेंगे।

5) अर्थकेंद्रित संबंधों की व्यवस्था को जान सकेंगे।

13.2 प्रस्तावना :

आधुनिक काल में कविता छायावाद, रहस्यवाद, हालावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तर कविता, समकालीन कविता, नवगीत, आधुनिक एवं उत्तर आधुनिक कविता, भूमंडलीकरण की कविता आदि वादों के बीच विकसित हो रही है। मंगलेश डबराल समकालीन हिंदी कवियों में सबसे चर्चित नाम हैं। भारतीय समाज के बदलते स्वरूप के अनुसार कविता के विषय में भी काफी परिवर्तन मिलता हैं। मंगलेश डबराल की कविताओं में विषय-वैविध्य मिलता है। एक समय में सामंती बोध एवं पूँजीवादी छल-कपट पर प्रहार करनेवाले मंगलेश जी ने भूमंडलीकरण की अर्थवादी व्यवस्था को उघाडकर रख दिया है।

13.3 विषय-विवरण :

13.3.1 मंगलेश डबराल का जीवन परिचय :

मंगलेश डबराल का जन्म सन 16 मई, 1948 ई. को टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड के काफलपानी गांव में हुआ। इनकी शिक्षा-दीक्षा देहरादून में हुई। संपन्न परिवार में जन्म लेने वाले कवि मंगलेश के घर में पहले से ही एक सांस्कृतिक वातावरण था। इनके पिताजी मित्रानंदजी ज्योतिषी तथा प्रसिद्‌ध वैद्‌य थे। वे गढ़वाली भाषा में कविता लिखते थे। मंगलेश जी को उच्च शिक्षा के लिए देहरादून आना पडा। जब वे कॉलेज के तृतीय वर्ष में पढ़ रहे थे तब पारिवारिक समस्याएँ बढ़ने के कारण उन्हें दिल्ली आना पडा। दिल्ली आकर 'हिंदी पैट्रियट', 'प्रतिपक्ष', 'आसपास'में कार्य करने लगे। कुछ समय तक वे भोपाल में साहित्यिक त्रैमासिक 'पूर्वाग्रह' में सहायक संपादक रहे। छ: साल तक इलाहाबाद और लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत प्रभात' में संपादक रहे। सन 1983 से दैनिक 'जनसत्ता' में साहित्य संपादक का पद संभाला। कुछ समय 'सहारा समय' में संपादक कार्य करने के बाद सन 2006 से नेशनल बुक ट्रस्ट में सलाहाकार के रूप में सेवारत हैं। समकालीन हिंदी कविता के विकास में मंगलेश डबराल का योगदान महत्त्वपूर्ण हैं कविता के अतिरिक्त वे गद्‌य साहित्य, सिनेमा, संचार माध्यम और संस्कृति के विषयों पर नियमित लेखन भी करते हैं।

कृतित्व परिचय :

1. काव्य - पहाड पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो दखते हैं, आवाज भी एक जगह है, मुझे

दिखा एक मनुष्य, नए युग में शत्रु, कवि ने कहा

2. गद्य - लेखक की रोटी, कवि का अकेलापन

3. यात्रा डायरी - एक बार आयोवा

4. पटकथा लेखन - नागार्जुन, निमर्ल वर्मा, महाश्वेता देवी, यू. आर. अनंतमूर्ति, कुर्रतुल ऐन हैदर तथा गुरुदयाल सिंह पर केंद्रित वृत्त चित्रों का पटकथा लेखन

5. संपादन - रेतघड़ी एवं कविता उत्तरशती

6. अनुवाद - बेर्टोल्ट ब्रेष्ट, हांस माग्नुस ऐंत्सेंस्बर्गर (जर्मन), यानिस रित्सोस (यूनानी), ज्बग्नीयेव हेर्बेत, तादेऊश रूजेविच (पोलिश), पाब्लो नेरूदा, एर्नेस्तो कार्देनल (स्पानी), डोरा गाबे, स्तांका पेंचेवा (बल्गारी) आदि की कविताओं का हिंदी में अनुवाद।

7. पुरस्कार - ओमप्रकाश स्मृति सम्मान, श्रीकांत वर्मा पुरस्कार, शमशेर सम्मान, पहल सम्मान, कुमार विकल स्मृति सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिंदी अकादमी का साहित्यकार सम्मान

13.3.2 'नया बैंक' कविता का परिचय :

मंगलेश डबराल की 'नया बैंक' कविता 'नये युग में शत्रु' काव्यसंग्रह में संकलित है। इस कविता में नया बैंक और पुराने बैंक की बाजार के तौर पर तुलना की गयी है। आज बाजार और उपभोगवाद की बजबजाती दुनिया का बोलबाला है। कवि ने स्पष्ट किया है कि नया बैंक पुराने बैंक से किसी भी प्रकार का रिश्ता नहीं रखना नहीं चाहता। वह उसे पिछडेपन का कारण समझकर अपने से दूर रखने का प्रयास करता है। भूमंडलीकरण के युग में भाईचारा या मानवीय रिश्तों की कोई अहमियत नहीं है, बल्कि अर्थकेंद्रित रिश्ते रखकर मुनाफे की बात की जाती है।

13.3.3 'नया बैंक' कविता का आशय :

कवि कहते हैं की, नया बैंक पुराने बैंक की तरह नहीं है, नया बैंक में पुराने बैंक की कोई छाया नजर नहीं आती है। नया बैंक पुराने बैंक जैसा लोहे की सलाखों वाला दरवाजा और उसमें अंधेरा भी नहीं है। पुराने बैंक की तरह लॉकर और स्ट्राँगरूम नहीं है, जिसकी चाबियां वह खुद से भी छिपाकर रखता है। पुराने बैंक में एक सपाट और रोशन जगह है, एक विशाल कांच की दीवार के पार एअरकंडीशनर भी बहुत तेज है। बाहर से लोक हांफते पसीना पोंछते आते हैं और तुरंत कुछ राहत महसूस करते हैं।

नए बैंक में एक ठंडी पारदर्शिता है और वह अपने को हमेशा चमकाकर रखता है। उसका फर्श लगातार साफ किया जाता है। नया बैंक अपने आसपास ठेलों पर सस्ती चीजें बेचनेवालों को भगा देता है और वहां कारों के लिए कर्ज देनेवाली गुमटियाँ खोल देता है। मतलब, नया बैंक अपनी शान-शौकत बनाए रखने के लिए सामान्य ठेलेवालों को हमेशा दूर रखता है। बैंक के भीतर मेजें, कुर्सियाँ और लोग इस तरह टिके हैं कि जैसे वे अभी-अभी आए हों,

उनकी कोई जडे न हों। मतलब नया बैंक भीतरी व्यवस्था अस्थायी लगती है। नया बैंक पुराने बैंक से कोई भाईचारा महसूस नहीं करता। वह पुराने बैंक को अपने इलाके के पिछडेपन का कारण मानता है और उसे अपने से दूर ढकेल देना चाहता है।

पुराने बैंक में खजांची होते थे जो महान गणितज्ज्ञों की तरह बैठे होते थे और किसी अंधेरे से रहस्यमय पूंजी को निकाल लाते थे। किसी भी समस्या का समाधान झट से हल कर देते थे। पुराने बैंक प्रबंधक होते थे, जो बूढे लोगों की पेंशन का हिसाब संभालकर रखते थे। परंतु नया बैंक न तो इसी प्रकार के खजांची है और नहीं प्रबंधक। नया बैंक सिर्फ दिए जानेवाले कर्ज और लिए जानेवाले ब्याज का हिसाब रखता हैं। नया बैंक का लक्ष्य प्रोसेसिंग शुल्क, मासिक किश्त, पेमेंट चार्जेज, चक्रवृद्धि ब्याज, लेट फाईन और पेनल्टी वसूलने में लगा रहता है। नया बैंक एक जासूस की तरह देखता रहता है कि कौनसा खातेदार अमीर हो रहा है, किस खातेदार का पैसा कम हो रहा है, कौनसा खातेदार दिवालियेपन के कगार पर है और किसका खाता बंद करने का समय आ गया हैं मतलब नया बैंक सिर्फ अपने मुनाफे की सोचता है। नया बैंक की आमलोगों के साथ न कोई भाईचारा, सहानुभूति और न कोई हमदर्दी है।

13.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) 'नया बैंक' कविता के कवि .... है।

1) उदय प्रकाश 2) मंगलेश डबराल 3) दुष्यंतकुमार 4) धूमिल

2) 'नया बैंक' कविता .... काव्य-संग्रह में संकलित है।

1) हम जो देखते हैं 2) नये युग में शत्रु 3) घर का रास्ता 4) पहाड पर लालटेन

3) नया बैंक तुलना .... बैंक से की गई है।

1) देना 2) पुराने 3) अपना 4) आम

4) मंगलेश डबराल का जन्म .... गांव में हुआ।

1) सारंगपानी 2) काफलपानी 3) इलाहाबाद 4) लखनऊ

5) मंगलेश डबराल का जन्म 16 मार्च .... में हुआ।

1) 1945 2) 1848 3) 1951 4) 1958

6) नया बैंक पुराने बैंक से कोई .... महसूस नहीं करता है।

1) सुख-दुख 2) भाईचारा 3) रिश्ता 4) अपनापन

13.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) सलाखें - लोहे की छड।

2) लॉकर - संदूक।

3) स्ट्राँगरूम - तिजोरी।

4) ढेला - छोटी गाडी।

5) गुमटियां - गोलाकार गुंबदनुमा कमरा।

6) खजांची - कोषाध्यक्ष।

7) प्रमेय - नापने योग्य।

8) किस्त - भाग।

9) चक्रवृद्धि - वह ब्याज जिस में संचित ब्याज मूलधन में शामिल हो जाए।

10) जासूस - गुप्तचर।

11) दिवालियापन - ऋण चुकाने में असमर्थ।

13.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) मंगलेश डबराल	2) नये युग में शत्रु
3) पुराने	4) काफलपानी
5) 1948	6) भाईचारा

13.7 सारांश :

मंगलेश डबराल जी समकालीन कविता के प्रमुख कवि है। भूमंडलीकरण, बाजारीकरण और निजीकरण की नीतियों का व्यापक प्रभाव हिंदी साहित्य पर पडा हैं। भूमंडलीकरण के अंतर्गत नव-उदारवाद, नव-साम्राज्यवाद एवं नव-पूंजीवाद का पूरा वर्चस्व रहा है नया बैंक भी उपभोक्तावाद की नीतियों को उघाडकर रख देती है। नया बैंक और पुराने बैंक की तुलना करते हुए कवि ने दोनों की व्यवहार नीतियों पर प्रकाश डाला है। पुराने बैंक का आम आदमी या ग्राहक से भाईचारा था, एक सौहार्दपूर्ण रिश्ता बनाया रखा जाता था। पुराने बैंक सभी प्रकार के लोगों को साथ लेकर आगे बढता था। ग्राहक से पैसा वसूलने के बजाय उनको अनेक प्रकार की सेवाएँ दी जाती थी। लेकिन नया बैंक का व्यवहार एकदम विपरित है। वह ग्राहक को एक जासूस की तरह देखता है कि किससे लेट फाईन और पेनल्टी वसूलने हैं और किसका खाता बंद करना है। मतलब नया बैंक सिर्फ अर्थकेंद्रित रिश्तें बनाये रखना चाहता है। ग्राहकों की भावनाओं के साथ कोई संबंध रखना नहीं चाहता है।

13.8 स्वाध्याय :

अ) संसदर्भ के प्रश्न -

1) ''नया बैंक पुराने बैंक से कोई भाईचारा महसूस नहीं करता
वह उसे अपने इलाके के पिछडेपन का कारण मानता है
और कहीं दूर ढकेल देना चाहता है।''

आ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'नया बैंक' कविता का उद्देश्य लिखिए।

2) 'नया बैंक' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

इ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'नया बैंक' कविता का आशय लिखिए।

2) ''नया बैंक कविता उपभोक्तावादी संस्कृति का उत्तम उदाहरण है'' स्पष्ट कीजिए।

13.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) अपने नगर के किसी एक नए बैंक और पुराने बैंक की कार्यप्रणाली को समझने का प्रयास कीजिए।

2) उपभोक्तावाद की नीति पर आधारित कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

13.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) नये युग में शत्रु (काव्य-संग्रह) - मंगलेश डबराल

◆◆◆

इकाई 4 (ख)

14. सत्ता

- उदय प्रकाश

अनुक्रम

14.1 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 विषय विवरण

14.3.1 उदय प्रकाश का परिचय

14.3.2 'सत्ता' कविता का परिचय

14.3.3 'सत्ता' कविता का आशय

14.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

14.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

14.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

14.7 सारांश

14.8 स्वाध्याय

14.9 क्षेत्रीय कार्य

14.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

14.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) कवि उदय प्रकाश का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।

2) राजनीति की तिकडमबाजी से परिचित हो जाएंगे।

3) आम आदमी के पारतंत्रीय जीवन से परिचित होंगे।

4) उदय प्रकाश की काव्य-शैली से परिचित होंगे।

14.2 प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य के अंतर्गत उदय प्रकाश कवि, कथाकार, पत्रकार, अनुवादक, समीक्षक और फिल्मकार के रूप में चर्चित है। उदय प्रकाश जनवादी विश्वदृष्टि रखने वाले कवि है। उदय प्रकाश ने कविता, कहानी, निबंध, आलोचना, पटकथा लेखन, निर्देशक और अनुवाद पर अपनी लेखनी चलाई है। उदय प्रकाश की कुछ कृतियों के अंग्रेजी, जर्मन, जापानी एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं। इनकी कई कहानियों के नाट्य रूपांतर और सफल मंचन हुए हैं। उदय प्रकाश के अब तक पांच कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। वे हिंदी साहित्य जगत् में एक प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्‌ध हैं।

14.3 विषय-विवरण :

14.3.1 उदय प्रकाश का जीवन परिचय :

भारत के प्रख्यात कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार उदय प्रकाश का जन्म 1 जनवरी 1952 ई. में मध्य प्रदेश जिले के सीतापुर गांव में हुआ था। सीतापुर गांव छत्तीसगढ़ जिले का सीमावर्ती गांव है जिसमें आदिवासी जनसंख्या बहुलता में पाई जाती है। उदय प्रकाश का जन्म एक सामंतवादी घराने में हुआ। उदय प्रकाश के पिता प्रेमकुमार सिंह क्षेत्र के बेहद सम्मानित व्यक्ति थे। उदय प्रकाश ने प्राथमिक स्तर की शिक्षा सीतापुर में और छठी, सातवीं तथा आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई अनुपपुर में की। उच्च शिक्षा की पढ़ाई उन्होंने सागर विश्वविद्‌यालय से की। शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति हेतु उन्होंने जे. एन. यू. में पीएच. डी. के लिए प्रवेश लिया। वे हिंदी के साथ-साथ फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी आदि भाषाओं में पूर्णाधिकार रखते हैं। सन 1978-80 तक जे. एन. यू. में. और 1980-1982 संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश में काम किया। बाद में 'दिनमान', 'द टाईम्स ऑफ इण्डिया', 'संडे मेल एमीनेन्स' आदि पत्र-पत्रिकाओं में कार्य किया है। वर्तमान में उदयजी स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य पर रहे हैं।

कृतित्व :

1. कविता संग्रह - सुनो कारीगर, अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम, एक भाषा हुआ करती है, कवि ने कहा

2. कहानी संग्रह - दरयायी घोडा, तिरिछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली

छतरीवाली लडकी, मेंगोसिल, दिल्ली की दीवार, अरेबा-परेबा, दत्तात्रय के दुख, मोहनदास

3. निबंध - ईश्वर की आँख, नई सदी का पंचतंत्र

4. पुरस्कार - भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार, ओमप्रकाश सम्मान, श्रीकांत वर्मा पुरस्कार, मुक्तिबोध सम्मान, वनमाली पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, पहल सम्मान द्विजदेव समान, अंतरराष्ट्रीय पुश्किन सम्मान, कृष्ण बलदेव वैद सम्मान, महाराष्ट्र फाउंडेशन पुरस्कार आदि।

14.3.2 'सत्ता' कविता का परिचय :

'सत्ता' कविता भारतीय राजनीति पर आधारित है। इस कविता के माध्यम से कवि राजनीतिक निकडमबाजी पर प्रहार करते हैं। सत्तासीन लोगों की घिनौनी राजनीति का पर्दाफाश किया है। सत्ताधारियों ने आम आदमी का जीना मुश्किल कर दिया है। कवि कहते हैं कि जो व्यक्ति अपराध के खिलाफ आवाज उठायेगा, जो सुख खोजने की कोशिश करेगा, जो समस्याएँ सुलझाने का प्रयास करेगा, जो समाज के हित की बात करेगा, जो सच बोलना एवं स्वतंत्रता चाहेगा; उसे सभी दृष्टिकोण से दरकिनार किया जाएगा। मतलब सत्तासीन सत्ताहीनों का आवाज बंद करना चाहता है।

14.3.3 'सत्ता' कविता का आशय :

कवि कहते हैं की जो अपराध के खिलाफ आवाज उठायेगा या विरोध करेगा उसे ही आज के सत्तासीन अपराधी सिद्ध करेंगे। जो व्यक्ति बरसों से अन्याय-अत्याचार सहता आया है वही व्यक्ति अगर एक बार भी व्यवस्था के खिलाफ सोचना चाहेगा तो उसे आजीवन जगाए रखा जाएगा। मतलब उसके दिमाग में हमेशा के लिए डर और आतंक डाला जाएगा।

जो व्यक्ति अपने रोग के इलाज के लिए दवाई की दूकान खोजने निकलेगा उसे ही अन्य किसी रोग की सूई लगा दी जाएगी। मतलब जो व्यक्ति अपनी समस्याओं के समाधान के लिए कोशिश करेगा या कोशिश करनेवालों का साथ देगा, उसे हमेशा के लिए विकलांग कर दिया जाएगा। ऐसी बिकट स्थिति में भी कोई व्यक्ति हंसना चाहेगा या बहुत सारे दुखों के बीच में भी सुखी रहने का प्रयत्न करेगा तो उसके जीवन में दुखों को पहाड खडे कर दिए जाएंगे और उसे हमेशा के लिए रोने पर मजबूर किया जाएगा।

जो अपने और अपने समाज के हित के लिए दुआएँ मांगेगा उसे शाप दिया जाएगा। उसके सबसे मीठे शब्दों को मिलेगी सबसे असभ्य गालियाँ। मतलब सत्तासीन गरीबों के भलाई के बारे में सोचते नहीं और यदि कोई समाज का हित चाहता है तो उसे असभ्य गालियां दी जाती है। जो प्यार करना चाहता है उसे नींद की गोलियां खिलाई जाती है। प्यार करनेवालों को नशे में या सुप्तावस्था में रखने का काम किया जाता है।

यदि सामाजिक विषमता और अव्यवस्था से भरे माहौल के बारे में कोई सच बोलना चाहता है, तो उसे अफवाहों से घेर दिया जाएगा या उसे झूठा साबित करने का प्रयास किया जाएगा। जो व्यक्ति सबसे कमजोर और दूर्लक्षित होगा, उसके संदिग्ध और डरावना बना दिया जाएगा। मतलब कमजोर को और अधिक कमजोर और भयभीत कराने का काम आजकल हो रहा है।

जो व्यक्ति गुलामी (अराजकता) की स्थिति से स्वतंत्र होना चाहेगा या स्वतंत्रता की बात भी करेगा, तो उसे आजीवन कारावास में रखा जाएगा। मतलब विचारों की लडाई विचारों से लड़ने के बजाय सत्ताबल का सहारा लेकर विचारों को मारा जाएगा या उसे आजीवन जेल में डाल दिया जाएगा। आज सत्तासीन इतना मुहजोर हो चुका है कि जनता के बीच फूट डालने का काम कर रहा है। उन्हें डर है कि यदि आम जनता संघटित हो गई तो उनकी सत्ता नहीं रहेगी। इसलिए 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति का अवलंब किया जाता है। यदि इस नीति में सत्ताधारी सफल हो गए तो हर किसी व्यक्ति को लगेगा की उसके आसपास अपना कोई भी नहीं है। जब उसमें अकेलेपन की भावना बरकरार रहेगी तभी तो वह सत्तासीन के अधीन रह सकता है और उसके इशारे पर नाच सकता है।

सत्ताधारी वर्ग चाहता है की, आम जनता अपराध का विरोध न करें, समाज हित या दूसरों की भलाई के बारे न सोचे, समस्या सुलझाने का प्रयत्न न करें, निर्बल को सबल बनाने का प्रयत्न न करें, वह हमेशा दुखी रहें, सुख और हंसने के बारे में न सोचे मतलब हमेशा के लिए शारीरिक और मानसिक दृष्टि से विकलांग रहे। सत्ताधारी की ऐसी कूटनीति से बाहर निकलना हैं, तो आम जनता को संघटित होना पडेगा और डटकर मुकाबला करना पडेगा। यही संदेश कवि ने 'सत्ता' कविता के माध्यम से दिया है।

14.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) 'सत्ता' कविता के कवि .... है।

   1) मंगलेश डबराल 2) उदय प्रकाश 3) चंद्रकांत देवताळे 4) धूमिल

2) उदय प्रकाश का जन्म शहडोल जिले के .... गांव में हुआ था।

   1) मातापुर 2) सीतापुर 3) रामपुर 4) रायपुर

3) उदय प्रकाश का जन्म 1 जनवरी .... को हुआ था।

   1) 1950 2) 1952 3) 1955 4) 1956

14.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) शाप - अनिष्ट कामनासे कहा गया कथन   **2) अफवाह** - उड़ाई हुई खबर

3) सत्ता - अधिकार, सामर्थ्य   **4) वध्य** - वध किए जाने योग्य

14.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) उदय प्रकाश 2) सीतापुर 3) 1952

14.7 सारांश :

उदय प्रकाश ने 'सत्ता' कविता के माध्यम से समकालीन सत्तांध शक्तियों की पोल खोल दी है। समकालीन परिवेश की सच्चाइयों को उजागर किया है। वर्तमान समय में सत्ताधारी वर्ग बाहुबल (सत्ताबल) के आधार आम जनता शोषण कर रहा है। सत्ताधारी अंग्रेजी नीति अपनाकर समाज में फूट डालकर सत्ता में बने रहना चाहते हैं। स्वतंत्रता के बाद संस्थानों को भारत में विलीन तो कर दिया परंतु उन्हीं संस्थानों के प्रमुख ने अपना चोला बदलकर सत्ता का भोग ले रहे हैं। उनके पास पैसा, बल और सत्ता है, इसलिए आम जनता पर हुकुमत करते हैं और उन्हें अपने अधिपत्य में रहने के लिए मजबूर करते हैं। यदि आप आदमी इनके खिलाफ आवाज उठाने का प्रयत्न करता है तो इनकी आवाज दबाने का प्रयत्न नहीं बल्कि आवाज ही बंद कर देते हैं।

14.8 स्वाध्याय :

अ) संसदर्भ के प्रश्न -

1) जो चाहेगा हंसना बहुत सारे दुखों के बीच
उसके जीवन में भर दिए जांगे आँसू और आह''

2) ''जो चाहेगा स्वतंत्रता
दिया जाएगा उसे आजीवन कारावास।
एक दिन लगेगा हर किसी को
नहीं है कोई अपना, कहीं आसपास।''

आ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'सत्ता' कविता का उद्देश्य लिखिए।

2) 'सत्ता' कविता के माध्यम से कवि उदय प्रकाश कौनसा संदेश देना चाहते है?

इ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'सत्ता' कविता का आशय लिखिए।

2) 'सत्ता' कविता में वर्तमान की सत्तांध प्रवृत्ति का चित्रण हुआ है, स्पष्ट कीजिए।

14.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'सत्ता' कविता के आधार पर निंबंध लिखने का प्रयास कीजिए।

2) 'सत्ता' कविता का मराठी में अनुवाद कीजिए।

14.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) कवि ने कहा (काव्य संग्रह) - उदय प्रकाश

◆◆◆

इकाई 4 (ग)

15. स्त्री मुक्ति की मशाल हो

- रजनी तिलक

अनुक्रम

15.1 उद्देश्य

15.2 प्रस्तावना

15.3 विषय विवरण

    15.3.1 रजनी तिलक का परिचय
    15.3.2 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता का परिचय
    15.3.3 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता का आशय

15.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

15.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

15.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

15.7 सारांश

15.8 स्वाध्याय

15.9 क्षेत्रीय कार्य

15.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

15.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) कवयित्री रजनी तिलक का जीवन परिचय एवं कृतित्त्व से परिचित होंगे।

2) सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य को समझ सकेंगे।

3) स्त्री की त्रासदी के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

4) दलित साहित्य का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

15.2 प्रस्तावना :

रजनी तिलक हिंदी की जानी-मानी दलित लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता है। रजनी तिलक हिंदी में क्रांति-ज्योति सावित्रीबाई फुले के कार्य को परिचित कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही हैं। रजनी तिलक एक स्त्री और दलित स्त्री है जो दूसरे स्त्री का दर्द समझ सकती है। रजनी तिलक एक सामाजिक कार्यकर्ता होने के कारण उन्होंने दिल्ली और दिल्ली के आसपास की महिलाओं के संघटन के लिए कार्य किया है। आरक्षण बिल में उन्होंने दलित महिलाओं के लिए विशेष आरक्षण हेतु अभियान चलाया था। समस्या के साथ कवयित्री ने आंदोलन, जनजागरण, चेतना आदि उपाय भी बताए हैं। 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' का स्वर विद्रोहात्मक दिखाई देता है। पुराणपंथी लोगों के साथ जूझकर सावित्रीबाई ने स्त्री मुक्ति की लड़ाई लढ़ी है। अनेक समस्याओं का सामना करते हुये सावित्रीबाई ने स्त्री शिक्षा, सति प्रथा, बाल विवाह, बाल विधवा और विधवा विवाह के लिए कार्य किया है।

15.3 विषय-विवरण :

15.3.1 रजनी तिलक का परिचय

कवयित्री रजनी तिलक का जन्म 27 मई 1958 ई. को पुरानी दिल्ली के एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री. दुलारेलाल भारती और माता का नाम श्रीमती जावित्रीदेवी था। दिल्ली में एक गरीब दर्जी पिता की सबसे बडी लडकी होने की वजह से रजनी तिलक उच्च शिक्षा नहीं पा सकी और यह बात उन्हें बहुत खटकती थी। उन्होंने 12 वीं तक शिक्षा प्राप्त की। सन 1975 में हायर सेकेंडरी की परीक्षा देने के बाद कटिंग और टेलरिंग और स्टेनोग्राफी सीखी ताकि परिजनों की मदद कर सकें। रजनी तिलक ने लंबे सांगठनिक अनुभव अर्जित किए हैं। वह बामसेफ, दलित पैंथर, अखिल भारतीय आंगनबाड़ी वर्कर एंड हेल्पर युनियन, आह्वान थियेटर, नेशनल फेडरेशन फॉर दलित वीमेन आदि महिला आंदोलन से जुड़ी रही। ऐसी प्रसिद्ध दलित लेखिका एवं सामाजिक कार्यकर्ता रजनी तिलक का 30 मार्च, 2018 ई. को निधन हो गया। अब रजनी के परिवार में एक पुत्री है।

15.3.2 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता का परिचय :

यह कविता क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य को उजागर करती है। हिंदी भाषा में सावित्रीबाई फुले के महत्त्व को परिचित कराने में रजनी तिलक की उल्लेखनीय भूमिका रही है। सावित्रीबाई फुले ने अपने पति

जोतिबा के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर सामाजिक काम किया। स्त्री शिक्षा, विधवाओं का पुनर्वसन, बाल विवाह पर बंदी एवं दलित उद्धार के लिए कार्य किया। मनुवादी व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई और वंचितों के मान-सम्मान को जगाने का काम किया, इसी कारण वह पहली स्त्री मुक्ति की मशाल बनी है।

15.3.3 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता का आशय :

रजनी तिलक सावित्रीबाई फुले के कार्य का चित्रण करते हुए कहती है कि, क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फुले तुम पूजनीय एवं अनुकरणीय हो, तुम्हारे अदम्य साहस से हर युग का मनु घबराया था। स्त्री को हर युग में अपमानित करनेवाले और बन्धनों में रखनेवाले, अब तुमसे डर गए हैं। स्त्री को गुलामी का जीवन देनेवाले सावित्रीबाई से घबरा गए हैं।

सावित्रीबाई के समय तक स्त्री को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, उसे भोग की वस्तु माना जाता था। सावित्रीबाई ने जब इन्हें शिक्षित करने का ठान लिया तो उनपर कीचड उछाली गई। सावित्रीबाई जब घर से निकलती थी, तो अपनी थैली में एक साडी रखती थी क्योंकि रास्ते में उनपर कीचड फेंकी जाती थी। लेकिन सावित्री न डरती हुई आगे बढ़ती रहीं, उनके महान व्यक्तित्व के सामने सब बौने हुए।

सावित्रीबाई फुले तुम्हारा जीवन एक कसौटी एवं संघर्षरत रहा है। भारत में तुम पहली शिक्षिका बनी जिसने स्त्री मुक्ति की लौ जलाई हैं। अभाव और कष्टों में रहकर तुमने संचेतना का बीज अंकुरित किया हैं। मतलब स्त्री में चेतना जगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य तुमने किया है।

सावित्रीबाई तुम्हारी पाठशालाओं ने दलित और पद-दलित स्त्रियों को केवल अक्षर-ज्ञान ही नहीं दिया था बल्कि एक द्वंद्व, एक जेहाद छेडा था उस समय के पुरोहितों और वेदणास्त्रों के खिलाफ। सावित्रीबाई ने शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों में आत्मविश्वास जगाया और उन्हें लढने के लिए तैयार किया।

सावित्रीबाई ने सिर्फ स्त्रियों को शिक्षित ही किया, ऐसा नहीं है। इसके साथ-साथ बाल विधवाओं एवं सतियों के अछूते, अनकहे, तिरस्कृत मन और पीडा में मर्म को भी समझा था। उन्होंने बाल-विधवाओं को अपने घर में पनाह दी, उनके बच्चों को संभालने की जिम्मेदारी ली, सति प्रथा को बंद कर दिया।

कवयित्री आगे कहती है कि, आज इस आधुनिक युग में गर्भ में ही स्त्री-भ्रूण की हत्या हो जाती है। यदि वहाँ से बच जाए तो दहेज के लिए उसे ससुराल में जलाकर मारा जाता है। नारी की त्रासदी इस पतित संस्कृति में भी खत्म नहीं हो रही है। नारी स्वतंत्रता की बात की जाती है परंतु यह स्वतंत्रता बहुत कम नारियों को मिली हैं। आज नारी के शरीर का प्रदर्शन करके पैसा कमाया जाता हैं, सुष्मिता सेन और ऐश्वर्या रॉय भी इस पूंजीवादी व्यवस्था के खिलौना बन गए हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति ने नारी के अंग-प्रत्यांग को भुनाकर रख दिया है।

फिर एक बार कवयित्री सावित्रीबाई फुले की ओर आती है और विचार रखती है कि सावित्रीबाई फुले तुम पहली पद-दलित स्त्री थी जिसने ऊंची आवाज में ब्राह्मणी समाज को दुत्कारा था और तुम मनुवादियों की घोर

आलोचक थी। तुमने ही शुद्रातिशुद्रों एवं स्त्री जाति के मन एवं स्वाभिमान को जगाया था। इसलिए सावित्रीबाई फुले तुम्हें इतिहास से हटाया गया था। सावित्रीबाई फुले के महान कार्य एवं अनेक विचारों को दबाने का प्रयास किया गया था परंतु सावित्रीबाई फुले का स्त्री-शिक्षा, बाल-विधवाओं का पुनर्वसन, सति प्रथा बंदी एवं दलित-पददलितों के लिए किया गया कार्य अजरामर है।

15.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता की कवयित्री .... है।

   1) अनामिका 2) रजनी तिलक 3) जया जादवानी 4) कीर्ति चौधरी

2) स्त्री मुक्ति की मशाल .... को कहा गया है।

   1) रजनी तिलक 2) सावित्रीबाई फुले 3) अनामिका 4) सरस्वती

3) 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता .... कविता संग्रह में संकलित है।

   1) पडताल 2) पदचाप 3) हवासी बेचैन युवतियाँ 4) पदस्पर्श

15.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) सावित्रीबाई फुले - महात्मा जोतिराव फुले की पत्नी, जिन्होंने स्त्री-पुरुष समानता के लिए संघर्ष किया, भारत में प्रथमत: स्त्री- शिक्षा की शुरुआत करनेवाली, साक्षरता अभियान, बालहत्या प्रतिबंधक गृह, सत्यशोधक विवाह की शुरुआत, बालविवाह का विरोध, विधवा पुनर्विवाह, दत्तक योजना, शूद्रातिशूद्रों के लिए काम करनेवाली क्रांति ज्योति।

2) जेहाद - धर्म के नाम पर लडाई छेडना।

3) पुरोहित - धार्मिक कर्म संपन्न करानेवाला याजक।

4) वेदणास्त्र - धार्मिक शास्त्र।

5) सति - पति की चिता संग जल जानेवाली।

6) पूंजीवाद - पूँजीवाद सिद्धांत।

7) मकडजाल - मकडी का बुना जाला, छल प्रधान रचना।

15.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) रजनी तिलक 2) सावित्रीबाई फुले 3) पदचाप

15.7 सारांश :

रजनी तिलक संभवत: हिंदी दलित साहित्य की पहली कवयित्री है, जो सामाजिक कार्यकर्ता की छबिवाली है। 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता क्रांति-ज्योति सावित्रीबाई फुले के समाजिक कार्य को उजागर करती है।

सावित्रीबाई फुले ने अपने पति जोतिबा के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर सामाजिक कार्य किया है। स्त्री को शिक्षित करने का संकल्प किया और उसमें सावित्रीबाई सफल भी हुई। बाल-विधवाओं का पुनर्वसन किया और सति जाने की गलत प्रथा को बंद किया। सावित्रीबाई इस अदम्य साहस से मनुवादी लोग डर गए और उन्होंने सावित्रीबाई के सामाजिक कार्य में रूकावटे पैदा करने का प्रयत्न किया। आज तक नारी को भोग्या समझा जाता था, सावित्रीबाई ने नारी में संचेतना जगाने का काम किया। सावित्रीबाई ने शुद्रातिशुद्रों एवं स्त्री जाति में मान-सम्मान को जगाया, इसलिए उन्हें इतिहास से हटाया गया। परंतु सावित्रीबाई का स्त्री मुक्ति का काम अजरामर है, क्योंकि वह भारत की पहली शिक्षिका है, जो एक स्त्री मुक्ति की मशाल के रूप में पहचानी जानी है।

15.8 स्वाध्याय :

अ) संसदर्भ -

''दलित और पद-दलित स्त्रियों में
तुम्हारी पाठशालाओं ने
केवल अक्षर-ज्ञान ही नहीं,
छेडा था एक द्वंद्व, एक जेहाद
पुरोहितों व वेदणास्त्रों के खिलाफ।''

आ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता का उद्देश्य लिखिए।
2) 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

इ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता का आशय लिखिए।
2) 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' कविता के आधार पर सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य का चित्रण कीजिए।

15.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) सावित्रीबाई फुले के जीवन पर आधारित निबंध लिखिए।
2) सावित्रीबाई फुले के जीवन पर नाटक लिखकर उसका मंचन करने का प्रयास कीजिए।

15.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) ज्ञान ज्योति सावित्रीबाई फुले - प्रा. हरि नरके
2) पड़ताल (साक्षात्कार) - रजनी तिलक (www.padtal.com)

◆◆◆

इकाई 4 (घ)

16. बाजार

- जया जादवानी

अनुक्रम

16.1 उद्देश्य

16.2 प्रस्तावना

16.3 विषय विवरण

16.3.1 जया जादवानी का परिचय

16.3.2 'बाजार' कविता का परिचय

16.3.3 'बाजार' कविता का आशय

16.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

16.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

16.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

16.7 सारांश

16.8 स्वाध्याय

16.9 क्षेत्रीय कार्य

16.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

16.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) कवयित्री जया जादवानी का जीवन एवं कृतित्व से परिचित होंगे।

2) उपभोक्तावादी संस्कृति से परिचित होंगे।

3) विज्ञापन ने हमें किस प्रकार जकड लिया है, इसे जान सकेंगे।

4) 'बाजार' कविता के प्रदेय से परिचित होंगे।

16.2 प्रस्तावना :

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य के अंतर्गत अनेक विमर्शों ने जन्म लिया है। इसमें प्रमुख रूप से उभरकर आया वह है स्त्री-विमर्श। स्त्री विमर्श पर लेखन करनेवाली प्रमुख महिला साहित्यकारों में से एक प्रमुख है जया जादवानी। जया जादवानी को हिंदी साहित्य के अंतर्गत एक अप्रतिम गद्यकार और कवयित्री के रूप में पहचाना जाता है। जया जादवानी हिंदी साहित्य की युवा पीढ़ी की सशक्त कहानीकार है। इन्होंने अब तक तीन कविता-संग्रह लिखे हैं। आज बाजारीकरण, भूमंडलीकरण और नीजिकरण का युग है। इन्हीं विषयों को ध्यान में रखकर जया जादवानी ने 'बाजार' नामक कविता लिखी है। आज इस उपभोक्तावादी संस्कृति में आदमी की कीमत कम और वस्तुओं की कीमत बढ़ गई है। आदमी कब बाजार की चपेट में आ गया इसका हमें पता ही नहीं चला। अनावश्यक बाजार की चीजों से हम अपने घर भरते जा रहे हैं। इसपर प्रकाश डालने का काम 'बाजार' कविता के माध्यम से किया गया है।

16.3 विषय-विवरण :

16.3.1 जया जादवानी का परिचय

जया जादवानी का जन्म 1 मई 1959 ई. को कोतमा, मध्य प्रदेश में हुआ था। इनके पिताजी का नाम रामनदास और माताजी का नाम लक्ष्मीदेवी था। जया जी सिंधी परिवार से थी। स्कूली जीवन को जया जी स्वर्णिम जीवन मानती है। ये पढ़ने में काफी अच्छी थी। बचपन से ही इनके दो शौक रहे हैं - एक गायिका, दो लेखिका बनना। क्यों वह लता मंगेशकर तथा अमृता प्रीतम की दीवानी थी। जया जी काफ़ी खूबसूरत रही है इसी वजह से उनकी शिक्षा में बाधा आ गई। ग्यारहवीं की पढ़ाई के बाद रायपुर के श्री. प्रकाश जादवानी के साथ उनका विवाह संपन्न हुआ। उन्होंने विवाह के बाद अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी की है। बी. ए. के बाद एम. ए. हिंदी और मनोविज्ञान दोनों में किया है। सन 1990 में अपनी प्रिय सहेली खुशी के कहने पर जयाजी ने लिखना शुरू किया और आज तक वह कलम रूकी नहीं है। जया जी का लेखन - संसार अधिकांश रूप में मनोवैज्ञानिक स्तर का है। उन्होंने कहानी, उपन्यास और कविता विधा में अपनी लेखनी चलाई है। आज जया जी का एक स्वतंत्र लेखन के रूप में अपने कर्म और कर्तव्य के साथ जुटी हुई है।

कृतित्त्व :

1. कविता संग्रह - मैं शब्द हूँ, अनंत संभावनाओं के बाद भी, उठाता है कोई एक मुट्ठी ऐश्वर्य।

2. कहानी संग्रह - मुझे ही होना है बार-बार, अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता है, मैं अपनी मिट्टी में खडी हूँ कांधे पर अपना हल किए।

3. उपन्यास - तत्वमासि, कुछ न कुछ छू जाता है, मिट्ठो पाणी खारो पाणी।

पुरस्कार :

1. छत्तीसगढ़ हिंदी अकादमी का सम्मान
2. कुसुमांजलि साहित्य सम्मान
3. कथाक्रम सम्मान
4. मुक्तिबोध सम्मान

16.3.2 'बाजार' कविता का परिचय :

आज उपभोक्तावादी संस्कृति का बोल-बाला है। एक समय था जब हम बाजार तक चले जाते थे और आवश्यक वस्तुओं को घर लाते थे। इस भूमंडलीकरण के युग में बाजार आपके घर तक आ गया है। सिर्फ घर तक ही नहीं आया तो वह हमारे दिलों-दिमाग में घूस गया है और वह हमें मजबूरन अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने के लिए उकसाता है। विज्ञापन के अतिरेक के कारण हम हमारी जेबें खाली करते जा रहें हैं। निजीकरण के कारण कंपनियों में अपने माल को खपाने की होड लगी है। इसलिए नयी-नयी तौर तरीकेवाली वस्तुएँ बनाई जा रही है। लोग खरीदते जा रहे हैं और वें खूद बाजार तक एक हिस्सा बनते जा रहे हैं।

16.3.3 'बाजार' कविता का आशय :

कवयित्री कहती है कि आज के बाजारवादी युग में जो विक्रेता हमारे कहे बिना हमारी जरूरतें कैसे जान जाता है, इसका पता ही नहीं चलता। जैसे प्रेस करने की टेबल, कपडे धोने के औजार, चमडी चमकाने के लिए असरदार नुस्खे मतलब गोरा होने के लिए उपाय, बच्चों के भिन्न-विभिन्न खिलौने, बच्चों को खिलाने, पिलाने के ताम-झाम और गद्दे-तकिए-पलंग-सोफे आदि विज्ञापनों के द्वारा हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। असल में हमें क्या चाहिए या हमारी जरूरते क्या-क्या हैं? हमे खुद पता नहीं हैं हमें तो भीतर पंजे पकडकर बैठी प्रेम की जरूरत के बारे में भी पता नहीं चलता है। मतलब प्रेम करने के तौर तरीके के बारे में पता नहीं जो बाजार में आसानी से उपलब्ध होते हैं। बाजारवादी व्यवस्था हमारे सामने सामानों का ढेर खडा कर देते हैं, हम भाग भी नहीं सकते सिर्फ भकुआए दृष्टि से देखते रहते हैं। वे हमारे घरों के भीतर कैसे घुस जाते हैं, इसका पता ही नहीं चलता। वे फुसफुसाकर हमें बताते हैं कि हमारे क्या-क्या नहीं है। वे हमें हमारे अभावों के प्रति जगाए रखते हैं, वे हमें हमेशा भूखा रखते हैं। वे हमसे कुछ नहीं मांगते मतलब वे हमें खरीदने के लिए नहीं कहते परंतु हम ही लगातार ग्लानि और खेद के कारण खरीदते जाते हैं और

उनके सामने अपनी जेबें खाली कर देते हैं। फिर हम अपने घर को एक करूण दृष्टि से देखते हैं और सोचते हैं कि अभी बहुत कुछ हमें लाना है, खरीदना है हम अपने में शर्म और क्षोभ महसूस करते हैं। मतलब बाजार हर एक नई चीज यदि हम नहीं ला सके तो हम शर्म महसूस करते हैं और हमें अपने आप पर बहुत गुस्सा आ जाता है।

16.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'बाजार' कविता की कवयित्री .... है।

1) रजनी तिलक 2) जया जादवानी 3) अनामिका 4) कीर्ति चौधरी

2) जया जादवानी का जन्म 1 मई .... को हुआ।

1) 1958 2)1959 3) 1960 4) 1961

3) जया जादवानी का जन्म .... मध्य प्रदेश में हुआ।

1) सीतापुर 2) कोतमा 3) काफलपानी 4) जौलखेडा

16.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) नुस्खे - गुणयुक्त, विविधता।

2) भकुआ - घबराया हुआ।

3) ग्लानि - मानसिक शिथिलता।

4) खेद - दु:ख, रंज।

5) क्षोभ - रोषपूर्ण, क्षुब्ध।

16.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) जया जादवानी 2) 1959 3) कोतमा

16.7 सारांश :

जया जादवानी की 'बाजार' कविता भूमंडलीकरण पर आधारित है। हमें किसी वस्तु की आवश्यकता होने पर हम बाजार चले जाते हैं। परंतु आज बाजारवादी दौर में हम बाज़ार नहीं जाते तो माल आपका पीछा करता है। आपकी असुविधा का ध्यान किए बिना आपके घर में घुस जाता है। वह आपकी जीवनशैली और शक्ल का मखौल उड़ाकर तब तक आपको हीन भावना से भरता रहता है जब तक आप उस माल का उपयोग करना आरंभ नहीं कर दें। वर्तमान युग विज्ञापन का हैं विज्ञापन के द्वारा घटिया-से घटिया वस्तु के प्रशंसा के फुल बांधे जाते हैं। आधुनिक बाजार पद्धति के कारण हमें अनावश्यक चीजों को खरीदना पडता हैं बाजार हमें बताता है कि आपके घर में क्या-क्या नहीं है और किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता है। हम लगातार ग्लानि और खेद से उसके सामने हमारी जेबें खाली करते जा रहे हैं। बाजार के जंजाल से हम भाग भी नहीं सकते क्योंकि हम अपने घर को ही एक करूण दृष्टि से

देखते हैं लगता है कि बहुत कुछ चीजें हम नहीं ला पाए हैं। मतलब वर्तमान में विज्ञापनवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति ने जकड लिया है।

16.8 स्वाध्याय :

अ) संसदर्भ के प्रश्न -

''वे कैसे घुस जाते हैं हमारे घरों के भीतर
वे फुसफुसाकर हमें बताते हैं कि
हमारे पास नहीं है क्या-क्या
वे हमें जगाए रखते हैं अभावों के प्रति''

आ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'बाजार' कविता का उद्देश्य लिखिए।
2) 'बाजार' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

इ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'बाजार' कविता का आशय लिखिए।
2) 'बाजार' कविता उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है, स्पष्ट कीजिए।

16.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'बाजार' कविता का मराठी में अनुवाद कीजिए।
2) 'बाजार' कविता के आधार पर निबंध लिखिए।

16.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) उठाता है कोई एक मुट्ठी ऐश्वर्य (काव्य-संग्रह) - जया जादवानी
2) समकालीन भारतीय साहित्य (द्वैमासिक पत्रिका) - जुलाई-अगस्त 2011

◆◆◆

इकाई 1 (क)

1. जीवन और शिक्षण

- विनोबा भावे

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

- 1.3.1 निबंध विधा का महत्त्व
- 1.3.2 विनोबा भावे का परिचय
- 1.3.3 'जीवन और शिक्षण' निबंध का स्वरूप
- 1.3.4 'जीवन और शिक्षण' निबंध का आशय

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

प्रस्तत इकाई में हमें तीन निबंधों का अध्ययन करना है। विनोबा भावेजी द्वारा लिखित 'जीवन और शिक्षण' इस निबंध का पाठ्यक्रम में समावेश करने का उद्देश्य निम्नप्रकार से है।

1) निबंध विधा क्या है? इससे छात्र परिचित होंगे।

2) विनोबा भावेजी के व्यक्तित्त्व और कृतित्व का छात्रों को परिचय होगा।

3) छात्र जीवन और शिक्षण निबंध का आशय समझ सकेंगे।

4) छात्र जीवन में शिक्षा के महत्त्व को समझ सकेंगे।

5) शिक्षा का सच्चा अर्थ और उसमें बदलाव करने की जरूरत को हम समझ सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना :

आधुनिक काल की महत्त्वपूर्ण कथेतर गद्यसाहित्य में निबंध, आत्मकथा, डायरी, जीवनी, रेखाचित्र और यात्रा वर्णन आदि का उल्लेख किया जाता है। शिवदानसिंह चौहान जी निबंध को गद्य का अत्यंत शक्तिशाली रूपविधान कहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी कहते है यदि गद्य कवियों की लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। निबंध शब्द की व्युत्पत्ति नि और बंध इन दो शब्दों के योग से हुई है। इसका अर्थ है, बांधना, रोकना और संग्रह करना।

1.3 विषय-विवरण :

1.3.1 निबंध विधा का महत्त्व :

आज के साहित्य में निबंध शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के एस्से (ESSAY) के पर्यायवाची शब्द के रूप में किया जाता है। अंग्रेजी तथा हिंदी निबंध की विकास यात्रा में इसमें काफी परिवर्तन होता आया है। साथ साथ इसकी परिभाषाओं में भी परिवर्तन होता आया है। फ्रेंच रचनाकार मॉटेन के मतानुसार निबंध विचारों, उद्धरणों और आख्यानात्मक वृत्तों का संमिश्रण है, उसमें आत्मतत्त्व का समावेश आवश्यक है। आ. रामचंद्र शुक्ल ने निबंध के बारे में लिखा है, संसार की हर बात सब बातों से संबंध है। अपने मानसिक संगठन के अनुसार किसी का मन किसी संबंध सूत्र पर दौडता है, किसी का किसी पर। ये संबंध एक दूसरे से नथे हुए, पतो के भीतर की नसों के समान चारों ओर एक जाल के रूप में फैले हुए रहते हैं। तत्त्व चिंतक या दार्शनिक केवल अपने व्यापक सिद्धांतो के प्रतिपादन के लिए उपयोगी कुछ संबंध सूत्रों को पकडकर किसी ओर सीधा चलता है और बीच के ब्योंरे में कही नहीं फँसता पर निबंध लेखक अपनी मन की प्रवृत्ति के अनुसार स्वच्छंद गति से इधर उधर फुटी हुई सूत्रशाखाओं पर विचरता है। व्यक्तित्त्व का प्रकाशन यह निबंध विधा की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। किसी भी विषय पर स्वाधीन चिंतन तथा वैयक्तिक विचार अभिव्यक्त करने के लिए निबंध विधा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

1.3.2 विनोबा भावे का परिचय :

जन्म - विनोबा भावेजी का जन्म 11 सितंबर 1985 में गागोदे जि. रायगड मे हुआ था।

माता, पिता – उनके पिता का नाम नरहरी भावे तथा माता का नाम रूक्मिणी भावे था।

शिक्षा – विनोबाजी ने वाई के वैदिक पाठशाला में वैदिक संस्कृति का अध्ययन किया।

संक्षिप्त परिचय : भारतीय संस्कृति तथा अनेक धार्मिक तत्त्वज्ञान के अध्येता के रूप में विनोबा भावेजी की पहचान है। महात्मा गांधी की तरह आश्रम जीवन के प्रति उन्हे आस्था थी। सविनय सत्याग्रह के आंदोलन में पहले सत्याग्रही के रूप में महात्मा गांधी ने उन्हें चुना था। सर्वोदय, अहिंसा तथा विज्ञान को अध्यात्म से जोडना, भगवद्‌गीता के भाष्यकार, भूदान आंदोलन आदि कई भूमिकाएँ उन्होंने सक्षमता के साथ निभाई। 1951 से 1964 इन सालों में वे ग्रामदान आंदोलन के लिए देशभर घूमें। 55 से 68 साल की उम्र में उन्होंने 40,000 मैल पैदल यात्रा की। उनके भूदान आंदोलन को ऐतिहासिक सफलता हासिल हुई। 'मधुकर' पत्रिका में उन्होंने अपने सर्वोदय की संकल्पना को विस्तृत रूप में लिखा। वे खुद को विश्व नागरिक समझते थे। इसलिए वे अपने लेख अथवा संदेश के आखिर में जय जगत लिखते थे।

सन 1920 और 1930 के दशक में भावेजी कई बार जेल गए और 1940 में उन्हें पाँच साल जेल जाना पडा। ग्रामदान, संपत्तीदान, कंचनमुक्ति, ऋषिखेती जैसे खेत के विषय में किए गए उनके प्रयोग काफी सफल हुए।

प्रकाशित रचनाएँ :

ऋग्वेदसार, वेदांतसुधा, गुरूबोधसार, भागवत धर्म, प्रसाद अध्यात्म, विश्व सुधा, अहिंसा की तलाश, भारताचा धर्म विचार, स्वराज्यशास्त्र, गीताई, गीता प्रवचनानी, मधुकर, मन - शासनम, नाममाला, सर्वोदय विचार, गीत चिंतनिका, साम्यसूत्रे आदि 40 से भी ज्यादा ग्रंथ विनोबाजी ने लिखे है।

मान-सम्मान :

सन 1958 में अंतरराष्ट्रीय रेमन मैगसेसे पुरस्कार, सन 1983 में मरणोत्तर भारतरत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मृत्यु – नवंबर 1982 में विनोबा भावेजी अस्वस्थ हो गए और उन्होंने देहत्याग करने का निश्चय किया। उसके बाद उन्होंने अन्नजल तथा कोई भी औषधी या पथ्य लेने से इन्कार किया। 15 नवंबर 1982 के दिन इस महान विभूति का देहावसान हुआ।

1.3.3 'जीवन और शिक्षण' निबंध का स्वरूप :

जीवन और शिक्षण आचार्य विनोबा भावे के सर्वोत्कृष्ट निबंध में से एक निबंध है। इस निबंध में विनोबाजी ने सर्वोत्कृष्ट शिक्षा कैसी होनी चाहिए इस एक धागे को पकडकर अपनी बात को विविध उदाहरणों के द्वारा सुंदरता से स्पष्ट किया है। आज की शिक्षा व्यवस्था, शिक्षक और छात्र तीनों को यह निबंध सोचने के लिए बाध्य करता है। आचार्य विनोबाजी यह मानते है कि जो जीवन जीने की कला सिखाती है वही सच्ची शिक्षा है। इस दृष्टि से आज के युग में भी यह निबंध प्रासंगिक है।

1.3.4 'जीवन और शिक्षण' निबंध का आशय :

'जीवन और शिक्षण' यह आचार्य विनोबा भावेजी का मशहूर निबंध है। प्रस्तुत निबंध में आज की शिक्षण पद्धति पर विचार प्रस्तुत किए है। आज की शिक्षण पद्धति किस प्रकार खोखली है, बच्चों के जीवन में वह किस प्रकार तणाव निर्माण करती है, इसे विनोबाजी ने विविध उदाहरण देकर सुंदरता से स्पष्ट किया है। आज की शिक्षण पद्धति अत्यंत विचित्र है इसने हमारे जीवन को दो टुकडों में बाँट दिया है। पहले टुकडे में आदमी पंद्रह बीस वर्षो तक जीने की कला न सिखकर शिक्षा प्राप्त करता है और बाद में उसी शिक्षा को बस्ते में लपेटकर मरने तक जीता है।

विनोबा भावेजी के विचार से आज की शिक्षा पद्धति प्रकृति की योजना के विरुद्ध है। जैसे एक छोटे बच्चे के शरीर की दिन प्रतिदिन वृद्धि होती है परंतु उसका यह विकास धीरे-धीरे और थोडा-थोडा होता है इस कारण वह किसी के ध्यान में भी नही आता। इसके उल्टे हमारी शिक्षा पद्धति है। आज की शिक्षा पद्धति में मनुष्य को बीस साल तक कोई जिम्मेदारी का एहसास नहीं होता और अचानक बीस सालों बाद उसपर जिम्मेदारी थोंपी जाती है। इस कारण सम्पूर्ण गैरजिम्मेदारी से संपूर्ण जिम्मेदारी की यह छलांग लगाने में वह सफल नहीं हो पाता अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए विनोबाजी भगवद्गीता का उदाहरण देते है। वे कहते है भगवान श्रीकृष्ण ने कुरूक्षेत्र की रणभूमि पर अर्जुन से भगवद्गीता कही। इस घटना में पहले अर्जुन रणभूमि पर उतरे और बाद में भगवान ने मार्गदर्शक बनकर उनकी मदत की इससे यह बात स्पष्ट होती है कि हम अपने छात्रों को जीवन की कला सिखाते ही नहीं है और उसे जीवन की रणभूमि में ढकेल देते है। इस कारण हम उसके मौत की ही तैयारी करते है।

आज का युवक बीस साल तक अध्ययन में मग्न होता है। इसमें से कुछ युवक छ. शिवाजी महाराज, वाल्मिकी और न्यूटन बनने के सपने देखते है पर जब सच्चे रूप में उसका जीवन से सामना होता है तो उसे अपना पेट भरने के लिए वन वन घूमना पडता है। उसकी सारी कल्पनाएँ व्यर्थ साबित होती है क्योंकि जीवन की जिम्मेदारी का उसने बीस सालों में कोई अनुभव ही नहीं किया है।

विनोबाजी कहते है कि आज का युवक बीना किसी सोच को लेकर पढ रहा है। जब हम किसी मैट्रिक के छात्र से पूछते है कि तुम आगे जाकर क्या करनेवाले हो तो वह कहता है, आगे कॉलेज में जाऊंगा लेकिन उसके बाद क्या करोगे ऐसा प्रश्न पूछने पर कहता है, अभी सोचा नहीं हैं इसका मतलब यह है कि, हम बच्चों को उसके पढाई का कोई लक्ष्य नहीं दे रहे है। इस कारण शिक्षा समाप्त होने के उपरांत उसका चेहरा चिंताग्रस्त हो जाता है और वही प्रश्न अब आगे क्या होगा? क्या होगा? यह प्रश्न उसके मन में चक्कर लगाता रहता है। वह केवल आज की मौत कल पर ढकेलता है। जीवन में उसे क्या करना है इस बात का पता ही नहीं है। इस बात का उसने कभी अनुभव ही नही किया है। जिस प्रकार एकाध अंध व्यक्ति दृष्टि न होने के कारण खंभे से टकरा जाता है पर जिसकी आँखे ठीक होती है वह उस खंबे से नहीं टकराता।

विनोबाजी कहते है जिंदगी की जिम्मेदारी कोई मौत नहीं है और मौत दु:खदायी होती है। इसका भी हमे खुद को कहा अनुभव होता है, वह तो एक कल्पनाही है। वैसे तो जीवन और मौत दोनों बातें सुखद ही होनी चाहिए। हर पिता

यह चाहता है कि उसका बच्चा सुखमय जीवन जीए, परेशानी और झंझट भरी जिंदगी से वह दूर रहे। हम उसी ईश्वर की संतान है इसलिए वह अपने बच्चों के लिए सुखमय और आसान जिंदगी देने की कोशिश करता है। ईश्वर हमें जिस चीज की जितनी जरूरत ज्यादा होती है वह उतनी ही सुलभता से मिलने का इंतजाम करता है। जैसे हमें हवा की ज्यादा जरूरत होती है तो वह उसे सुलभता से उपलब्ध कराता है। पानी से हवा ज्यादा जरूरी है इसलिए ईश्वर ने सहजता से हवा को उपलब्ध किया है। जहाँ नाक है वहाँ आसानी से मौजूद है। पानी से अन्न की जरूरत कम होने के कारण पानी से ज्यादा अन्न को प्राप्त करना कठिन होता है। आत्मा सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तू होने के कारण वह सबको दे दी है। ईश्वर ने हमारा जीवन सुखकर बनाने के लिए ऐसी प्रेमपूर्ण योजना की है इसका खयाल न करते हुए हम निकम्मे बन कर हमारा जीवन केवल भौतिक सुविधाओं को जमा करने में ही लगा दे तो इसलिए केवल हम ही दोषी है, ईश्वर नहीं।

विनोबाजी मानते है कि, जिम्मेदारी का एहसास करानेवाली जिंदगी ही सच्ची जिंदगी है। इसलिए पहले हमें यह समझना चाहिए की जिंदगी की जिम्मेदारी लेना कोई डरावनी बात नहीं है तो वह एक आनंद से भरी हुई बात है। जीवन का हमें सच्चा आनंद लेना है तो हमें हमारी अनुपयुक्त वासनाओं को दबाकर रखना पडेगा। जिंदगी की जिम्मेदारी का एहसास दिलानेवाली शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। जिंदगी की जिम्मेदारियों को सिखानेवाली शिक्षा से बच्चों का जीवन कुम्हलाता है ऐसा बहुत सारे शिक्षाशास्त्री अगर सोचते हैं, तो यह उनकी जीवन के विषय में दुष्ट कल्पना ही है। ऐसी शिक्षा के हाथ में सुंदर जिंदगी सौपना याने बंदर के हाथ में मोतियों की माला सौपने जैसा ही है क्योंकि उस मोतियों की माला की कीमत वह बंदर कभी भी नहीं जान पाएगा। ऐसा अगर हुआ तो मानो मनुष्य से वह पहले बंदर था इस डार्विन के सिद्धांत को सिद्ध किया है ऐसा ही होगा।

जीवन अगर भयानक वस्तु है तो बच्चों को उसमें दाखिल न करों और खुद भी मत जियो मगर वह आप को आनंददायी वस्तु लगे तो उसमें उसे जरूर दाखिल करों ऐसा आवाहन विनोबा जी सभी अभिभावकों को करते है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो शिक्षा दी वैसी शिक्षा आज के बच्चों को भी दी जा सकती है।

विनोबाजी 'भगवद्गीता' में अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दी गयी शिक्षा का समर्थन करते हुए लिखते है की, कर्तव्य करते हुए शिक्षा दी जाए तो वह ज्यादा लाभदायक साबित होती है। जैसे खेत में काम करने दो, वहाँ उसे आयी हुई समस्या का निराकरण करने के लिए उसे सृष्टि शास्त्र या पदार्थ विज्ञान या अन्य किसी बात का ज्ञान दो, यह सच्चा शिक्षण होगा। बच्चों को खाना बनाने दो, वहाँ अगर जरूरत पडे तो उसे पाकशास्त्र सिखाओ। व्यवहार में काम करनेवाले आदमी को जैसे ज्ञान मिलता है वैसे वह बच्चों को भी मिलना जरूरी है। उसकी मुसीबत के समय यह मार्गदर्शक उसके आसपास मौजूद हो, उस मार्गदर्शक के पास बच्चों को समझकर बताने की योग्यता जरूर होनी चाहिए, पर इसके लिए शिक्षक जैसे किसी स्वतंत्र धंदे की जरूरत नहीं है। वह केवल एक अनौपचारिक बात होनी चाहिए। ऐसा हुआ तो बच्चों को क्या करते हो? प्रश्न पूछने पर पढता हूँ कि, बजाय खेती करता हूँ, बुनता हूँ ऐसे उतर उसके अंतकरण से आने चाहिए तो सच्चे रूप में उसने शिक्षा पायी है। विनोबाजी इस संदर्भ में विश्वामित्र को आदर्श

शिक्षक और राम, लक्ष्मण को आदर्श विद्यार्थी मानते है। यज्ञ की रक्षा के लिए विश्वामित्र ने दशरथ से उनके पुत्र की मदत की। दशरथ ने राम लक्ष्मण को भेजा तो इससे राम और लक्ष्मण को सच्ची शिक्षा मिली।

विनोबाजी यह मानते है कि, शिक्षा कर्तव्य का आनुषंगिक फल है। जो कर्तव्य करता है तो उसे वह फल मिल ही जाता है। हमें केवल इस बात की ओर ध्यान देना है कि हम उसे ठोकर लगने से पहले संभाले इसलिए हमे उसके पास ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जिससे कि वह धीरे-धीरे स्वावलंबी बने ऐसी योजना हमें बनानी चाहिए। 'माँ फलेषु कदाचन' यह बात यहाँ भी लागू हो जाती है। इस शिक्षा से हमे यह मिलेगा यह वासना बच्चों में नहीं आनी चाहिए निष्काम कर्म की भावना हो तो इससे शिक्षा तो जरूर मिलेगी ही। माँ बीमार है उसकी सेवा से हमें कुछ मिलेगा इस भावना से कर्तव्य नहीं करना है तो पवित्र भावना से वह कर्तव्य करेंगे तो इससे शिक्षा तो मिलने ही वाली है पर माँ की सेवा से कोई दूसरी चीज हम गँवाने वाले है और इस कारण हम इस कर्तव्य से विमुख हुए तो यह गलत बात है।

विनोबाजी के मतानुसार प्राथमिक महत्त्व के जीवनोपयोगी परिश्रम को शिक्षा में स्थान होना चाहिए। पेट भरने के लिए हम शिक्षा ले यह बिल्कुल गलत बात है। मनुष्य को पेट देने का ईश्वर का हेतु है पेट इमानदारी से भरे यह अत्यंत जरूरी है और यह बात अगर मनुष्य समझ ले तो दुनिया के काफी दु:ख नष्ट हो जाएँगे। सभी लोगों को साथ लेकर जीना या किसी का भी विरोध न लेते हुए जीना ही मनुष्य की शरीर यात्रा का पहला कर्तव्य है। इसी कर्तव्य कर्म से मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नती होती है। इसी से शरीर यात्रा के परिश्रम को ही शास्त्रकारों ने यज्ञ कहा हैं वामन पंडित के 'उदर भरण नोहे जाणिजे यज्ञकर्म' इस श्लोक में यही अर्थ प्रतिपादित किया है। शरीर यात्रा के लिए मैं परिश्रम करता हूँ यह भावना उचित है। वहाँ विनोबाजी के मतानुसार शरीर यात्रा का मतलब केवल अपने साढेतीन फुट शरीर से नहीं है तो समाज की सेवा और ईश्वर की पूजा से है। यह भावना हर मनुष्य में होनी चाहिए इसलिए यह भावना बच्चों में भी होनी चाहिए। बच्चों को जीवन के हर क्रिया कलाप में भाग लेना चाहिए और आवश्यकतानुसार उनके सारे शिक्षण की हमें व्यवस्था करनी चाहिए।

ऐसा करने से मनुष्य के जीवन के दो भाग नहीं होंगे। जीवन की जिम्मेदारी अचानक आ पडने से बच्चों को जो कठिनाई महसूस करनी पडती है वह नहीं होगी। अनौपचारिक शिक्षा तथा निष्काम कर्म की ओर वह सहजता से उन्मुख होगा।

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'जीवन और शिक्षण' निबंध .... ने लिखा है।

   अ) विनोबा भावे   ब) बाबू श्यामसुंदरदास   क) मोहन राकेश   ड) शरद जोशी

2) विनोबाजी के मतानुसार आज की विचित्र शिक्षण पद्धति के कारण जीवन के .... टुकडे हो जाते है।

अ) तीन ब) दो क) चार ड) पाँच

3) विनोबा भावेजी को .... का उत्तराधिकारी माना जाता है।

अ) महात्मा गांधी ब) शंकराचार्य क) विश्वामित्र ड) वामन पंडित

4) उदर भरण नोहे जाणिजे यज्ञकर्म यह .... का वचन है।

अ) विनोबा भावे ब) शंकराचार्य क) विश्वामित्र ड) वामन पंडित

5) जिंदगी की .... कोई डरावनी चीज नहीं है।

अ) जिम्मेदारी ब) खुशी क) परेशानी ड) शिक्षा

6) अर्जुन से .... ने कुरुक्षेत्र में भगवद्गीता कही थी।

अ) श्रीकृष्ण ब) राम क) महादेव ड) विश्वामित्र

7) विनोबा भावेजी को मरणोत्तर .... पुरस्कार दिया गया।

अ) पद्मश्री ब) भारतरत्न क) पद्मभूषण ड) पद्मविभूषण

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) हनुमान कूद - लंबी छलांग

2) तत किम - आगे क्या?

3) बनिस्बत - ज्यादा

4) डार्विन का सिद्धांत - डार्विन इंग्लंड के महान वैज्ञानिक थे। उनका उत्पत्ति तथा विकासवाद का सिद्धांत महत्त्वपूर्ण है।

5) 'मा फलेषु कदाचन' - फल प्राप्त करना तेरा अधिकार नहीं है।

6) 'इदमदय मया लब्धम' - आज मैने यह पाया।

7) इदं प्राप्स्ये - कल वह पाऊंगा।

8) सर्वशामविरोधेन - सबको साथ शांत कर किसी का विरोध न करनेवाला।

9) अविरोधवृत्ति - किसी का भी विरोध न करने की भावना।

10) 'उदर भरण नोहे जाणिजे यज्ञ कर्म' - खाना खाना याने उदरभरण नहीं

11) 'बंदर के हाथ में मोतियों की माला' - अपात्र व्यक्ति के हाथ में अमूल्य चीज का होना।

1.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) अ - विनोबा भावे

2) ब - दो

3) अ - महात्मा गांधी

4) ड - वामन पंडित

5) अ - जिम्मेदारी

6) अ - श्रीकृष्ण

7) ब - भारतरत्न

1.7 सारांश :

जीवन और शिक्षण आचार्य विनोबा भावेजी का मशहूर निबंध है। प्रस्तुत निबंध में विनोबाजीने शिक्षा का सही अर्थ परिभाषित किया है। विनोबा जी विद्यार्थियों के पूर्ण व्यक्तित्त्व को विकसित करनेवाली शिक्षा को ही सही शिक्षा मानते है। वे जीवन और शिक्षण को बिंब और प्रतिबिंब के रूप में देखते है। विद्यार्थी को स्वावलंबी तथा जीवन जीने का कौशल्य सिखानेवाली शिक्षा की जरूरत को प्रस्तुत निबंध में अधोरेखित किया है।

1.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'जीवन और शिक्षण' निबंध में विनोबा भावेजी ने कौनसे विचार अभिव्यक्त किए है?

2) 'जीवन और शिक्षण' निबंध का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए।

3) 'जीवन और शिक्षण' निबंध में आज की शिक्षा पद्‌धति के कौनसे दोष प्रकट किए हैं?

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''मेरी शरीर यात्रा अर्थात समाज की सेवा और इसीलिए ईश्वर की पूजा इतना समीकरण दृढ होना चाहिए। यह भावना हर एक में होनी चाहिए। इसलिए वे छोटे बच्चों में भी होनी चाहिए। इसके लिए उनकी शक्ति भर उन्हें जीवन में भाग लेने का मौका देना चाहिए और जीवन जीवन को मुख्य केंद्र बनाकर उसके आसपास आवश्यकतानुसार सारे शिक्षण की रचना करनी चाहिए।''

2) ''जिंदगी की जिम्मेदारी कोई डरावनी चीज नहीं है, वह आनंद से ओत प्रोत है, बशर्ते कि ईश्वर की रची हुई जीवन की सरल योजना को ध्यान में रखते हुए अनुपयुक्त वासनाओं को दबाकर रखा जाये। यह पक्की बात समझनी कि जो जिंदगी से वंचित हुआ वह सारे शिक्षण का फल गँवा बैठा।''

3) ''अर्जुन के सामने प्रत्यक्ष कर्तव्य करते हुए सवाल पैदा हुआ। उसका उत्तर देने के लिए भगवद्‌गीता निर्मित हुई। इसी का नाम शिक्षा हैं बच्चों को खेत में काम करने दो। वहाँ कोई सवाल पैदा हो तो उसका उत्तर देने के लिए सृष्टि शास्त्र अथवा पदार्थ विज्ञान की या दूसरी जिस चीज की उसको जरूरत हो उसका

ज्ञान हो। यह सच्चा शिक्षण होगा। बच्चों को रसोई बनाने दो, उसमें यहाँ जरूरत हो पाकशास्त्र सिखाओ।''

4) ''शिक्षा कर्तव्य का आनुषंगिक फल है। जो कोई कर्तव्य करता है, उसे जाने अनजाने वह मिलता ही हैं। लडकों को भी वह उसी तरह मिलना चाहिए। औरों को वह ठोकरें खा-खाकर मिलता। छोटे लडकों में आज इतनी शक्ती नहीं आई है, इसलिए उनके आसपास ऐसा वातावरण बनाना चाहिए कि वे बहुत ठोकरें न खा पाएँ और धीरे-धीरे वे स्वावलंबी बनें ऐसी अपेक्षा और योजना होनी चाहिए।''

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) वर्धा में विनोबा भावे जी द्वारा स्थापित पवनार आश्रम की यात्रा कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) आचार्य विनोबा भावे - वेदांत सुधा, अहिंसा की तलाश

2) महात्मा गांधी - शिक्षा पर मेरे विचार, नई शिक्षा के लिए

◆◆◆

इकाई 1 (ख)

2. सूरदास

- बाबू श्यामसुंदरदास

अनुक्रम

2.1 उद्‌देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवरण

- 2.3.1 बाबू श्यामसुंदरदास का परिचय
- 2.3.2 'सूरदास' निबंध का स्वरूप
- 2.3.3 'सूरदास' निबंध का आशय

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्‌देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के उद्‌देश निम्न प्रकार से है,

1) छात्रों को बाबू श्याम सुंदरदास की निबंध शैली से परिचित कराना।

2) छात्रों को सूरदास का व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व से अवगत करना।

3) सूरदास और तुलसीदास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4) सूरदास के ग्रंथों की भाव तथा कला पक्ष की दृष्टि से समीक्षा करना।

2.2 प्रस्तावना :

सूरदास हिंदी साहित्य के सूरज है। आजतक कई विद्‌वानों ने सूरदास के ग्रंथों की समीक्षा की है। सूरदास कृष्णभक्ति शाखा के महनीय भक्तकवि है। बाबू श्यामसुंदरदास जी ने अपने अनूठे शब्दों में सूरदास को रेखांकित करने का सफल प्रयास किया है। हिंदी साहित्य जगत में सूरदास के साथ तुलना करनेवाला अन्य भक्त कवि तुलसीदास छोडकर और कोई नहीं है। बाबू श्यामसुंदर दासने सूरदास और तुलसीदास का तुलनात्मक अध्ययन कर दोनों के साहित्यिक महत्त्व को अभिव्यक्त किया है।

2.3 विषय-विवरण :

2.3.1 बाबू श्याम सुंदर दास का परिचय :

जन्म - बाबू श्यामसुंदरदास का जन्म काशी में सन 1875 में एक पंजाबी खत्री परिवार में हुआ।

शिक्षा - बाबू श्यामसुंदरदास की शिक्षा कवीस कॉलेज में हुई उन्होंने सन 1897 में वहाँ से बी. ए. की पदवी प्राप्त की।

अल्प परिचय - बाबू श्यामसुंदरदास हिंदी के अनन्य प्रेमी थे। उनका व्यक्तित्त्व बहुमुखी था। बी. ए. पास होने के उपरांत वे हिंदु स्कूल में अध्यापक हो गये। इसके बाद वे कालीचरण हाईस्कूल में हेडमास्टर हो गए। उसके उपरांत वे काशी विश्वविद्‌यालय में हिंदी विभाग प्रमुख बने। हिंदी का प्रचार और प्रसार, नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना, आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य की रचना में बाबूजी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उत्तरप्रदेश में हिंदी को सरकारी भाषा बनाने में उन्होंने खूब प्रयत्न किए इसलिए तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने उन्हें रायबहादुर और काशी विश्वविद्‌यालय ने डी.लिट. की उपाधि से सम्मानित किया। यह उपाधि उन्हें महात्मा गांधी के हाथों प्रदान की गयी। डॉ. बाबू श्यामसुंदरदास उच्चकोटी के निबंधकार, समीक्षक, भाषा और साहित्य निर्माताओं में शीर्षस्थ स्थान के अधिकारी है। उनके निबंध साहित्य में विचारात्मकता की प्रधानता है। साहित्य, कला और मानव जीवन के विविध अंगों की मार्मिक अभिव्यक्ति करनेवाले बाबूजी के निबंध में उनका विशाल अध्ययन ओर मनन दिखायी देता है। कला, साहित्य, उपन्यास, कविता आदि संबंधी उनके विवेचन पर पश्चिमी समीक्षा पद्‌धति का प्रभाव दिखायी देता है। संस्कृत शब्दों और पदावली का उदारतापूर्वक प्रयोग करनेवाले श्यामसुंदरदासजी की भाषा सहज, सरल और

परिवर्तित, स्पष्ट और बोधगम्य है। छोटे छोटे वाक्यों का प्रयोग कर उन्होंने गंभीर और कठीण विषयों को सरल बनाया है।

ग्रंथ संपदा :

हिंदी कोविद, रत्नमाला, साहित्यालोचन, छत्र-प्रकाश, वनिता विनोद, हिंदी- वैज्ञानिक कोष, भाषा विज्ञान, हिंदी भाषा का विकास, गद्‌य कुसुमावली, हिंदी भाषा और साहित्य, भाषा रहस्य, हिंदी गद्‌य के निर्माता, मेरी आत्मकहानी आदि।

2.3.2 'सूरदास' निबंध का स्वरूप :

सूरदास बाबू श्यामसुंदरदासजी का मशहूर निबंध है। यह बाबूजी की सहृदयतापूर्ण व्यावहारिक समीक्षा प्रणाली का ज्वलंत उदाहरण है। प्रस्तुत निबंध में सूरदासजी का जीवन परिचय साथही उनके ग्रंथों में चित्रित सूरदास की विविध लीलाओं का तथा विविध रूपों का सुंदर वर्णन किया है। यह निबंध सूरदास के साहित्य की भावपक्ष तथा कलापक्ष की सुंदर आलोचना करता है। सूरदास तथा तुलसीदास की रचनाओं की तुलना कर सूरदास को हिंदी साहित्याकाश का सूरज घोषित किया गया है।

2.3.3 'सूरदास' निबंध का आशय :

हिंदी के अमर कवि महात्मा सूरदास का जन्म सं. 1540 में मथुरा के नजदीक रूनकता गाँव में हुआ। वल्लभाचार्य की शिष्य परंपरा में सूरदास प्रमुख है। सूरदास ने 'सूरसागर' नामक महान ग्रंथ की रचना की। 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' तथा 'भक्तमाला' इन ग्रंथों के आधारपर सूरदास सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ लोग उन्हें महाकवि चंदवरदाई के वंशज समझते है। सूरदास जन्म से अंधे थे या बाद में अंधे हुए इसके बारे में विद्‌वानों में मतभेद है। कुछ लोग मानते है कि वे जन्म से अंधे थे। एक बार वे कुएँ में गिरे तब भगवान कृष्ण ने इन्हें दर्शन दिए और वे दृष्टि संपन्न हो गए परंतु उन्होंने भगवान से वर माँगा कि जिस आँख से प्रभू के दर्शन किए उस आँख से अब किसी मनुष्य को नहीं देखना चाहता। इस कथा को केवल एक रूपक मानना चाहिए। वास्तविकत: सूरदास जन्मांध नहीं थे क्योंकि अपने ग्रंथों में उन्होंने जो कृष्ण का रूपवर्णन तथा श्रृंगार का वर्णन किया है वह कोई अंध व्यक्ति कभी भी कर नहीं सकता। वास्तविक रूप ऐसा जान पडता है कि, कुएँ में गिरने के उपरांत उन्हें भगवान कृष्ण से ज्ञान चक्षु मिले।

जब महात्मा वल्लभाचार्य और सूरदास की भेंट हुई तब सूरदास बैरागी वेष में रहा करते थे। इसके उपरांत सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य बने और उनकी आज्ञा से भगवान कृष्ण पर नव नवीन भजन बनाने लगे। इसी रचना का नाम सूरसागर है। इसमें एक ही प्रसंग पर अनेक पदों का संकलन किया गया है। इन पदों में पुनरूक्ति होने के बाद भी उसमें मर्मस्पर्शिता और हृदय को प्रसन्न करने की शक्ति की कोई कमी नहीं है। 'सूरसागर' ग्रंथ में सवा लाख पद है ऐसे कहा जाता है पर आज तक सूरसागर की जो प्रतियाँ प्राप्त हुई है, उसमें छ: हजार से अधिक पद नहीं है परंतु इतने पद भी इन्हें महाकवि सिद्‌ध करने में सक्षम है। इस ग्रंथ में कृष्ण की बाललीला से लेकर उनके गोकुल त्याग और गोपिकाओं की विरह कथा फुटकर पदों में कही गयी हैं यह पद मुक्तक के रूप में लिखे है फिर भी एक-एक भाव को पूर्णता प्रदान

की गयी है। यह सभी पद गाने योग्य है इसकारण 'सूरसागर' को हम गीतिकाव्य कह सकते है। गीतिकाव्य में जिस प्रकार छोटे छोटे रमणीय प्रसंगों को लेकर रचना की जाती है, कवि की अंतरात्मा का दर्शन होता है। क्रोध, कठोर और कर्कश भावों का त्याग कर सरसता, मधुरता और कोमलता रहती है आदि सभी विशेषताएँ 'सूरसागर' में दिखायी देती है। 'सूरसागर' में कृष्ण की पूरी जीवनगाथा मिलती है पर उसमें कथा कही जा रही है ऐसा महसूस नहीं होता। उसमें केवल प्रेम, विरह आदि विभिन्न भावनाओं को सुंदरता से अभिव्यक्त किया है।

'सूरसागर' में कृष्ण के जन्म से कथा का आरंभ होता है। कृष्ण की बाललीलाओं का सूरदास ने जो वर्णन विशद किया है वैसा विस्तृत वर्णन और किसी हिंदी कवि ने नहीं किया है। यशोदा के घर में कृष्ण धीरे-धीरे बडे होने लगे। कृष्ण अभी छोटे कुछ ही महिनों के है। माँ का दूध पीते है पर माँ यह सोचती है कि कृष्ण कब बडे होंगे, कब इनके दो दाँत निकल आएँगे, कब वह माँ कहकर पुकारेगा, कब वह घुटनों के बल रेंगता फिरेगा आदि प्रसंगों के साथ सूरदास ने यशोदा मैया के कृष्ण का दूध पीलाने का प्रसंग, न पिने पर चोटी बढाने का लालच दिखाना, कृष्ण के रोने पर थाल में पानी भरकर चाँद को भूमी पर लाना आदि असंख्य सूक्ष्म भावों के वर्णन में जो वात्सल्य, सूक्ष्म निरीक्षण और वास्तविकता का अनोखा संगम नजर आता है वह अनूठा है। कृष्ण कुछ बडे होते है तो मणि खंभों में अपना प्रतिबिंब देखकर प्रसन्न होते है, मचलते है। घर की दहलीज नहीं लाँघ पाते। इसके बाद सूरदासजीने कृष्ण की किशोरावस्था का वर्णन किया है। इसमें गोप सखाओं के साथ खेलना, कूदना, माखनचोरी प्रसंग, गोपिकाओं का यशोदा मैया के पास कृष्ण की शिकायत करना । वास्तविकत: गोपिकाओं का कृष्ण की लीलाओंपर मुग्ध होना ऐसे प्रसंगों में सूरदास ने गोपिकाएँ और कृष्ण के प्रेम का जो वर्णन किया है, उसमें तनिक भी वासना नजर नहीं आती। इसके बाद कृष्ण का सारे ब्रज में सबके प्रिय बन जाना, गोचारण करनेवाले कृष्ण का मनुष्य से उठकर पशुओं के जगत तक पहुँचना, यमुना के कुंजों में गोप गोपिकाओं के साथ मुरली बजाना ऐसे सुंदर प्रसंगों का चित्रण करने का सौभाग्य संसार के किसी अन्य कवि को नहीं मिला है। श्यामसुंदरदासजी कहते है कि, ब्रज की यह सुंदरता से स्वर्ग भी ईष्या करता है।

गोपिकाओं का कृष्ण से स्नेह बढने के उपरांत उनका कृष्ण की रासलीला में शामिल होना कृष्ण की मुरली चुराना, उन्हें अबीर लगाना, उन्हे चोली पहनाना, कृष्ण का गोपियों की वेणी गुंथना, किसी की आँखे मूंद लेना, गोपियों को बांसुरी बजाकर सुनाना एक आधबार उन्हे लज्जित करने के लिए चिरहरण करना कृष्ण की इस संयोग लीला का सूरदास ने जो वर्णन किया है, वह भक्तों का सर्वस्व है।

सूरदास ने कृष्ण और गोपिकाओं के संयोग श्रृंगार के साथ-साथ वियोग श्रृंगार का भी हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। कृष्ण वृंदावन छोडकर मथुरा चले जाते है वहाँ राजकार्य की व्यस्तता के कारण यह गोपिकाओं को भूल जाते है। गोपिकाएँ ब्रज में कृष्ण की राह देखती रहती है। वह कृष्ण की राह देखते हुए दिन काटती है। गोपिकाएँ कृष्ण के बर्ताव से परिचित होती हैं। कृष्ण-उद्धव के माध्यम से गोपिकाओं को संदेश भेज देता है परंतु गोपिकाएँ उसके ज्ञानोपदेश को स्वीकार नहीं करती। उनके हृदय में कृष्ण की सौंदर्यशाली मूर्ति बसी हुई है। कृष्ण कही भी रहे वह गोपिकाओं के मन में हमेशा के लिए बसे हुए है। वह उसे कभी भी भूल नहीं सकती।

सूरदास ने कृष्ण के लोकरक्षक रूप का वर्णन करते हुए उसे अंतिम शक्ति का रूप कहा है। वे बचपन में ही पूतना जैसी महाकाय राक्षसी का वध करते है। थोडा बडा होनेपर वह केशी, बकासूर का वध करते है, कालिया का मर्दन करते है इन प्रसंगों से कृष्ण के बल और वीरता का वर्णन किया है। सूरदास ने कृष्ण के बल और वीरता के वर्णन की ओर जादा ध्यान नहीं दिया है क्योंकि सूरदास कृष्ण के महाभारत में चित्रित कृष्ण की तरह नीतिज्ञ और पराक्रमी रूप चित्रित नहीं करना चाहते थे। उन्होंने तो केवल कृष्ण को प्रेम के प्रतिक तथा सौंदर्य की मूर्ति के रूप में चित्रित किया है।

सूरदास ने कृष्ण के शील का भी वर्णन किया है। यशोदा मैया जब उन्हें दंड देती है तो वह रोते कलपते हुए उसे स्वीकृत करते है। गोचारण के लिए जाते वक्त यशोदा मैया उन्हें पीने के लिए छाज लाती है तो वह अकेले नहीं पीते तो अपने दोस्तों के साथ बाँटकर खाते है। कभी कभी किसी का जूठा भी खाते है उसमें उन्हें कोई शर्म महसूस नहीं होती। सूरदास ने कृष्ण की प्रेममयी मूर्ति का चित्रण किया है उसके लोकादर्श के रूप की ओर ध्यान नहीं दिया है।

कृष्ण कथा के साथ साथ सूरदास ने राम कथा भी फुटकर पदों में लिखी है पर उसमें वह तन्मयता दिखायी नहीं देती जैसी कृष्ण कथा में दिखायी देती है। वह वैसी ही बनी है जैसे तुलसीदास की कृष्ण गीतावली। इसके साथ साथ सूरदास ने कुछ दृष्ट कूट और कूट पद भी लिखे है पर उसकी क्लिष्टता के कारण उसका अर्थ केवल विशेषज्ञ ही समझ सकते है। वास्तविक रूप से सूरदास की कीर्ति का आधारस्तंभ उनका 'सूरसागर' ग्रंथ ही है। 'सूरसागर' हिंदी साहित्य का एक अनुपम ग्रंथ है। श्रृंगार और वात्सल्य का ऐसा सरस और निर्मल स्त्रोत अन्य हिंदी साहित्य में कही भी दिखायी हीं देता है। सूरदास ने इस ग्रंथ में कृष्ण के जीवन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावनाओं के साथ-साथ जीवन के अकृत्रिम प्रवाह का भी सुंदरता से वर्णन किया है। सूरदास ने अपनी रचनाओं में कभी जीवन के संबंध में गंभीर विषयपर विवेचन जादा नहीं किया। परंतु जीवन में गंभीरता के साथ साथ कोमलता, सरसता और सरलता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है यह उनकी रचनाओं से स्पष्ट हो जाता है। सूरदास की कृष्ण भक्ति ने उनकी रचनाओं में सर्वकालीनता और चिरंतनता भर दी है। उनमें नया कुछ निर्माण करने की प्रतिभा भी दिखायी देती है। उनकी पवित्र वाणी में अनूठी उक्तियाँ आ गयी हैं। अन्य हिंदी कवि इस पहुँच से दूर है। सूरदास हिंदी के अन्यतम कवि है उनकी बराबरी करनेवाला कवि तुलसीदास को छोडकर कोई अन्य नहीं है। सूरदास और तुलसीदास इन दो कवियों में कौन बडा है यह कहना बहुत ही मुश्किल है। तुलसीदास ने ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं का प्रयोग कर उसे संस्कृत का पुट देकर उसे पूर्णत: साहित्यिक भाषा बना दिया है। भाषा पर तुलसीदास का असामान्य अधिकार था। सूरदास ने अधिकतर प्रचलित ब्रज भाषा का प्रयोग किया है परंतु हमें एक बात ध्यान में रखनी है कि, काव्य समीक्षा में भाषा से जादा भावों की तीव्रता और व्यापकता पर ध्यान दिया जाता है। तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से जीवन की अनेक परिस्थितियों का वर्णन किया है। सूरदास के कृष्ण चरित्र में इतनी व्यापकता नहीं है इस दृष्टि से तुलसीदास सूरदास से उँचा ठहरते है परंतु दोनों की वाणी में पूत भावनाएँ एक जैसी है। मधुरता की दृष्टि से सूरदास तुलसीदास से अधिक अव्वल है। जीवन के अत्यंत संकीर्ण क्षेत्र को लेकर उसमें अपनी प्रतिभा का पूर्ण चमत्कार दिखाने में और सूक्ष्म वर्णन में सूरदास का कोई प्रतिस्पर्धी नहीं हो सकता। तुलसीदास का क्षेत्र सूरदास की अपेक्षा अधिक व्यापक है। उनकी रचनाएँ लोककल्याण की दृष्टि से

अधिक शक्तिशालिनी और महत्त्वपूर्ण है। शुद्ध कवित्व की दृष्टि से विचार करे तो दोनों का हिंदी भक्त कवियों में समान महत्त्व है।

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) सूरदास यह निबंध .... ने लिखा है।

अ) बाबू श्यामसुंदरदास ब) विनोबा भावे क) मोहन राकेश ड) भीष्म साहनी

2) सूरदास के गुरू का नाम .... है।

अ) वल्लभाचार्य ब) नाभादास क) तुलसीदास ड) रामानंद

3) सूरदास का जन्म सं .... में हुआ।

अ) 1540 ब) 1560 क) 1570 ड) 1580

4) 'सूरसागर' ग्रंथ में .... पद है।

अ) दो लाख ब) चार लाख क) सवा लाख ड) देढ लाख

5) सूरदास का जन्म .... गाँव में हुआ था।

अ) रूनकता ब) काशी क) बांदा ड) कानपुर

6) सूरसागर .... काव्य है।

अ) महा ब) खण्ड क) गीति ड) रीति

7) 'सूरसागर' ग्रंथ में श्रृंगार और .... रस का निर्मल स्त्रोत दिखायी देता है।

अ) वात्सल्य ब) करूणा क) वीर ड) हास्य

8) सूर सूर तुलसी ....।

अ) ससी ब) चाँद क) तुलसी ड) श्याम

2.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) वाणी - आवाज

2) चक्षु - आँखे

3) हृदयहारिता - हृदय को पराजित करनेवाली

4) सन्निवेश - अंतर्भाव

5) कुंज - बन

6) सुषमा - शोभा

7) चिरहरण - वस्त्रहरण

8) व्यंजना - स्पष्टीकरण

9) दैत्य - राक्षस

10) बृहद - बडा

11) पुट - आधार

12) नवोन्मेषशालिनी - नया कुछ करने की शक्ति

13) संकीर्ण - छोटा

14) प्रयोजनीय - प्रयोजन करने योग्य

2.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) बाबू श्यामसुंदरदास
2) वल्लभाचार्य
3) 1540
4) सवा लाख
5) रूनकता
6) महा
7) वात्सल्य
8) ससी

2.7 सारांश :

सारांश रूप में हम कह सकते है कि सूरदास निबंध के माध्यम से बाबू श्यामसुंदरदास जी ने सूरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व को समीक्षात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। सूरदास के काव्य का भाव तथा कलापक्ष का सूक्ष्मता से वर्णन किया है। तुलसीदास के साथ सूरदास की तुलना कर श्यामसुंदरदासजीने दोनों के अपने अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं को अधोरेखित कर दोनों महान कवियों की साहित्यिक विशेषताओं को स्पष्ट किया है।

2.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'सूरदास' निबंध के आधारपर कृष्ण लीलाओं को स्पष्ट कीजिए।
2) 'सूरदास' निबंध का आशय स्पष्ट कीजिए।

3) ‘सूरदास’ निबंध के आधारपर सूरदास का व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व स्पष्ट कीजिए।

4) ‘सूरदास’ निबंध में सूरदास और तुलसीदास का तुलनात्मक अध्ययन किस प्रकार किया है?

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ‘‘उनका गोचारण उन्हें मनुष्य के परिमित क्षेत्र से दनी उठाकर पशुओं जगत तक पहुँचा देता है। वंशीवट और यमुना कुंजों की रमणी स्थली में कृष्ण की जो सुन्दर मूर्ति गोप गोपिकाओं के साथ मुरली बजाते और स्नेह लीला करते अंकित की गयी है वैसी सुषमा का चित्रण करने का सौभाग्य संभवत संसार के किसी अन्य कवि को नहीं मिला ब्रजमंडल की यह महिमा अपार है। कृष्ण का ब्रजनिवास स्वर्ग को भी ईर्ष्यालु करने की क्षमता रखता है।’’

2) ‘‘सूरसागर हिंदी की अपने ढंग की अनुपम पुस्तक है। श्रृंगार और वात्सल्य का जैसा सरस और निर्मल स्त्रोत इसमें बहा है वैसा अन्यत्र नहीं देख पडता। सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों तक सूर की पहुँच है साथही जीवन का सरल अकृत्रिम प्रवाह भी उनकी रचनाओं में दर्शनीय है। यह ठीक है कि लोक के सम्बन्ध में गम्भीर व्याख्याएँ सूरदास ने अधिक नहीं की, पर मनुष्य-जीवन में कोमलता, सरलता और सरसता भी उतनी ही प्रयोजनीय है, जितनी गंम्भीरता।’’

3) ‘‘इन दोनों महाकवियों में कौन बडा है, यह निश्चयपूर्वक कह सकना सरल काम नहीं। भाषा पर अवश्य तुलसीदास का अधिकार व्यापक था। सूरदास ने अधिकतर ब्रज की चलती भाषा का ही प्रयोग किया है। तुलसी ने ब्रज और अवधी दोनों का प्रयोग किया है और संस्कृत का पुट देकर उनको पूर्ण साहित्यिक भाषा बना दिया है। परंतु भाषा को हम काव्य-समीक्षा में अधिक महत्त्व नहीं देते। हमें भावों की तीव्रता और व्यापकता पर विचार करना होगा। तुलसी ने रामचरित का आश्रय लेकर जीवन की अनेक परिस्थितियों तक अपनी पहुँच दिखलाई है। सूरदास के कृष्ण-चरित्र में उतनी व्यापकता नहीं।

इस दृष्टि से तुलसी सूर से उँचे ठहरते है, परंतु दोनों की वाणी में पूत भावनाएँ एक-सी है।’’

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) सूरदास के सूरसागर ग्रंथ का अध्ययन कीजिए।

2) कृष्ण भक्तिशाखा के अन्य कवियों का अध्ययन कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) तुलसीदास- रामचरितमानस

2) मीराबाई - पदावली

◆◆◆

इकाई 1 (ग)

3. विज्ञापन युग

- मोहन राकेश

अनुक्रम

3.1 उद्‌देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरण

3.3.1 मोहन राकेश का परिचय

2.3.2 'विज्ञापन युग' का स्वरूप

2.3.3 'विज्ञापन युग' निबंध का आशय

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्‌देश्य :

प्रस्तुत व्यंग्य निबंध के अध्ययन के उद्‌देश्य निम्नप्रकार से है।

1) छात्रों को मोहन राकेश जी की व्यंग्य रचना से परिचित कराना।

2) छात्रों को विज्ञापन कला का ज्ञान देना।

3) छात्रों को झूठे विज्ञापनों से दूर रहने का संदेश देना।

3.2 प्रस्तावना :

आज का युग विज्ञापन का युग है। सभी प्रसार माध्यमों को इस विज्ञापन ने घेर कर रखा है। इन विज्ञापनों से बचना आज मुश्किल है। इसी बात को केंद्र में रखकर मोहन राकेशजी ने प्रस्तुत व्यंग्य निबंध की रचना की है। इस निबंध में सुबह से रात तक विज्ञापन किस प्रकार हमें भ्रमित करते रहते है, इस बात को व्यंग्यात्मक रूप देकर प्रस्तुत किया गया है।

3.3 विषय-विवरण :

3.3.1 मोहन राकेश का परिचय :

जन्म : 8 जनवरी 1925 जण्डीवाली गली अमृतसर।

बचपन का नाम : मदन मोहन गुगलानी

पिता :

करमचंद गुगलानी अमृतसर के अच्छे वकील और प्रतिष्ठित नागरिक और जागरूक कार्यकर्ता थे। साहित्य एवं संगीत में उन्हें विशेष रूचि थी।

परिवार :

मोहन राकेश जी का परिवार प्रतिष्ठित था। वह साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुडा था। घर में दादी का अनुशासन था। बचपन के इसी अनुशासन के कारण मोहन विद्रोही बन गये। पिता के शान शौकत के कारण परिवार कर्ज में डूब गया था। पिता का कर्ज पाटने के लिए माँ को अपनी सोने की चुडियाँ बेचनी पडी इसकी चोट मोहन राकेश के मन पर हो गयी। पिताजी की मौत के उपरांत घर की सारी जिम्मेदारी मोहन पर आ पडी। परिवार सहित वे लाहोर आ कर बस गए और आजादी के बाद भारत लौट आए।

परिचय :

बहुआयामी प्रतिभा के स्वामि मोहन राकेश प्रयोगधर्मी नाटककार, नई कहानी के प्रमुख प्रवर्तक, श्रेष्ठ उपन्यासकार, उच्च कोटी के निबंधकार, प्रभावी अनुवादक, लब्धप्रतिष्ठित व्यंग्यकार तथा संस्मरणकार तथा गद्य की अन्य विधाओं में अपनी स्वतंत्र पहचान बनानेवाले संवेदनशील साहित्यकार है। उन्होंने नाट्य क्षेत्र में ध्वनि नाटक, पार्श्व नाटक, बीज

नाटक जैसे प्रयोग कर अपनी अमिट छाप छोडी है। संस्कृत और अंग्रेजी में भी लेखन करनेवाले राकेशजी सफल हिंदी नाटककार के रूप में अद्वितीय स्थान प्राप्त करने मेंसफल हुए है।

राकेशजी के साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन की विभिन्न समस्याओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण उपलब्ध होता है। व्यक्ति के मानसिक द्वंद्व को गहराई तथा सूक्ष्मता से चित्रित करनेवाले राकेशजी भावानुकूल, विषयानुकूल, सरल और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करनेवाले सिद्धहस्त लेखक है। साठोत्तरी युग की पीढी की मन:स्थितियों का सूक्ष्म और जीवंत चित्रण करनेवाले राकेशजी अपने मित्रों, परिचितों तथा दुश्मनों के बीच बहुचर्चित थे। सभी ने उन्हें अपने अपने दृष्टिकोण से परखने, समझने समझाने का प्रयत्न किया है परंतु किसी को पूर्ण सफलता नहीं मिली है।

3.3.2 'विज्ञापन युग' निबंध का परिचय :

आज का आधुनिक युग विज्ञापन का युग है। इसलिए मोहन राकेशजी ने इसी विषय को निबंध के माध्यम से प्रस्तुत किया है। 'विज्ञापन युग' यह निबंध विज्ञापनों को लक्ष्य बनाकर लिखा हुआ निबंध है। इस निबंध के माध्यम से मोहन राकेशजी ने विज्ञापन किस प्रकार और किस जगह हो सकता है इसका बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है।

3.3.3 'विज्ञापन युग' निबंध का आशय :

'विज्ञापन युग' मोहन राकेश जी का प्रसिद्ध निबंध है। इस निबंध में मोहन राकेश जी ने विज्ञापन युग हम पर किस प्रकार हावी हो रहा है इसका वर्णन किया है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने दैनंदिन जीवन के छोटे मोटे उदाहरण देकर इसे अत्यंत व्यंग्यात्मक रूप से स्पष्ट किया है।

मोहन राकेश जी के पडोसी हररोज रेडियो पर गजले, भजन और गीत सुनते हैं। मोहन राकेश जी को गीतों के साथ साथ चाय, तेल और सिरदर्द की टिकियों के विज्ञापन सुनने पडते हैं। यह विज्ञापन सुनने की अब उनको इतनी आदत हो चुकी है कि जब वह कोई गजल या सूरदास का भजन सून रहे होते हैं तो अनायास ही उनके कानों पर क्या आप के सिर में दर्द रहता है, सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए यह गोली लीजिए, इससे आपका सिरदर्द गायब हो जाएगा। ऐसे विज्ञापन सुनायी पडता है। इन विज्ञापनों का उनपर इतना परिणाम हो चुका है कि अब उनके लिए कोई गीत कोई गजल नहीं रही मानों सब विज्ञापन ही बन गए हैं। दिनभर यह गीत और उनके पीछे चल रहे विज्ञापन उनका पीछा करते है। कबीर के रहना नहीं देश विराना है जैसी लय सुनने के उपरांत क्या आपके शरीर में खुजली है, खुजली का नाश करने के लिए यह रामबाण औषधी लीजिए जैसे विज्ञापन सुनकर वे कहते है कि कंपनियों अपनी खुजली की दवाईयों पर जो चाहे मोहर चिपका सकती है।

मोहन राकेश जी कहते है कि, इस विज्ञापन के कारण मेरे चारों ओर होनेवाली हर चीज का एक नया मूल्य उभर रहा है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए मोहन राकेशजी ने कंपनियाँ भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक कलाकृतियों को विज्ञापन के लिए किस प्रकार इस्तेमाल करती है इसका व्यंग्यात्मक उदाहरण दिया है। अब हर चीज का किसी न किसी रूप में विज्ञापन के लिए प्रयोग हो रहा है। अजंता के चित्र और एलोरा की मूर्तियाँ एक अछूती कला का

उदाहरण है पर आज इस कला कृतियों को अलग रूप में ही इस्तेमाल किया जा रहा है। उन मूर्तियों का केशसौंदर्य किसी कंपनी के तेल की शीशी के विज्ञापन के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उनकी आँखें एक फार्मसी कंपनी की याद दिलाती हैं और उनका संपूर्ण कलेवर किसी पेट्रोल कंपनी की कलाभिरूचि को अभिव्यक्त करता है। जिन हाथों ने उन कलाओं का निर्माण किया था अब उन हाथों को किसी बिस्कुट कंपनी की विकास योजना के विज्ञापन के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। देश के कोने कोने में बसे हुए मंदिर, पुराने किले ओर खंडहर, स्तंभ और स्मारकों का भी मानों इसलिए निर्माण किया गया है जिससे लोगों में यातायात की सुविधा के प्रति रूचि जागृत हो, पर्यटन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिले। विदेश आकर उनकी तस्वीर ले और अपनी प्रियतमाओं के पास भेजे। मीनाक्षी और रामेश्वरम के शिखर और खजुराहों की मूर्तियों का इस्तेमाल किसी सिमेंट कंपनी के विज्ञापन के लिए किया जा रहा हैं। कश्मीर के पर्यावरण का सौंदर्य, वहाँ के नवयुवतियों का भाव सौंदर्य और वहाँ की कारीगरों की मेहनत को वहाँ मिलनेवाले सफेद रंग के डिब्बा बंद शहद के विज्ञापन के साथ जोडा जा रहा हैं। बर्नाड शॉ के नाटक मानों इसलिए छापे जाते हैं क्योंकि हमें पता चले कि ब्रिटेन में सबसे अच्छी छपाई की जाती है। प्रशांत महासागर में अणुबम फोडे जाते हे वह मानो यह चेतावनी देने के लिए फोडे जाते हैं क्योंकि हमें अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए जल्द से जल्द बीमा पॉलिसी लेनी चाहिए। भारत और पाकिस्तान में कश्मीर के लिए जो लडाई होती है वह इसलिए होती है क्योंकि वहाँ सेबों का मुरब्बा बहुत अच्छा मिलता है।

मनुष्य ने विज्ञान के आधारपर आज बहुत उन्नती की है। विज्ञापन कला भी इससे दूर नही है। दक्षिणी ध्रुव से उत्तरी ध्रुव के कोने कोने का इस्तेमाल विज्ञापन के लिए किया जा रहा है। आजकल तो किसी भी चीज को किसी भी चीज के विज्ञापन के लिए इस्तेमाल किया जाता है। गेहूँ की फसल को कपडे के मिल के विज्ञापन के लिए इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि गेहूँ की फसल अच्छी आएगी तो उस पैसे से शायद कपडे खरीदने का काम ही हो सकता है। कपडे की मिल डबल रोटी का विज्ञापन है क्योंकि मिलके मजदूर तभी काम कर सकेंगे जब तक की वो डबल रोटी नहीं खाते है। बेकरी का इस्तेमाल वाटर प्रूफ जूते के लिए किया जा रहा है क्योंकि वाटर प्रूफ जूते न होंगे तब तक बारिश में इन्सान डबल रोटी जैसी साधारण चीज भी प्राप्त नहीं कर सकता। बहुत सी चीजें एक दूसरे के विज्ञापन के लिए इस्तेमाल की जाती हैं जैसे फूल इत्र की शीशी का विज्ञापन हे तो इत्र की शिशी फूलों का विज्ञापन है। पत्र लेखक का विज्ञापन है तो लेखक पत्र का विज्ञापन है। सुंदरता का सौंदर्य प्रसाधनों के विज्ञापन के लिए प्रयोग किया जाता है तो सौंदर्य प्रसाधन सुंदरता का विज्ञापन है। उपदेशकता, आलोचकता और नेतागिरी बहुत सी चीजें स्वयं अपना विज्ञापन होते हैं। आज के युग में हम विज्ञापन से नहीं बच सकते। सुबह उठते ही यह विज्ञापन ही हमें पूछते हैं कि क्या आपने आज दाँत साफ किए हैं? दाँत साफ करने के लिए केवल क्लोरोफिल वाले टूथपेस्ट से दाँत साफ कीजिए। मानो दाँत के रोगों से बचने के लिए केवल यही एक साधन है। जब हम घर से निकलते हैं तब रस्तों के दोनों तरफ, चौराहों पर सडक के खंभे पर विज्ञापन हमें विविध जानकारियाँ तथा खतरे की चेतावनी देते हैं। विज्ञापन की इस भीड में हमें कोई व्यक्तिगत जिंदगी ही नहीं रही है। मानों हमारी सारी जरूरतें और हमारी सारी समस्याओं का उत्तर विज्ञापनों के पास ही है।

विज्ञापन कला जिस तेजी से आज अपनी उन्नती कर रही है उसे देखकर यह अंदेशा लगाया जा सकता है कि भविष्य में हमारी शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और साहित्य इनका प्रयोग केवल विज्ञापन कला के लिए ही किया जाएगा। आज भी हम इन सभी का उपयोग विज्ञापन के लिए कर ही रहे हैं। भविष्य में उसकी तादात और भी बढ जाएगी। आज बहुत सारी शिक्षा संस्थाएँ सांप्रदायिक संस्थाओं का विज्ञापन कर रही हैं। अपने पिढी के किसी लेखक की कृतियाँ किसी न किसी स्मारक निधी से प्रकाशित कर उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति स्मारक होने का फर्ज अदा करेगी। विद्यार्थियों को जो उपाधियाँ दी जाएगी, उस पर भी किसी न किसी कंपनी का विज्ञापन छपा होगा। उसपर लिखा होगा आज ही आयात-निर्यात का धंदा शुरू कीजिए। मुफ्त सूचि पत्र के लिए निम्न पते पर संपर्क कीजिए। नया आविष्कार करनेवाला हर व्यक्ति टेलिविजन पर यह निवेदन करता हुआ दिखायी देगा कि उसकी सफलता का श्रेय किसी रबड टायर की कंपनी को देना चाहिए क्योंकि उन्ही के कारण ही उसे प्रोत्साहन और नयी दिशा मिली है। विज्ञापन से भगवान को भी छुटकारा मिला नहीं है। संगेमरमर के विष्णु की मूर्ति के नीचे पट्टी पर लिखा होगा कि इस भवन और मूर्ति के निर्माण का श्रेय लाल हाथी वाले निशान के निर्माताओं को है। किसी भी भवन और मूर्ति के निर्माण के लिए लाल हाथी का निशान याद रखें। आगे चलकर हमारे हाथ में ऐसे उपन्यास आयेंगे कि उसके सुंदर चमडें की जिल्द पर बारीक अक्षरों में छपा होगा कि साहित्य अभिरूचि रखनेवालों के लिए साबुन बनानेवाले कंपनी की ओर से तुच्छ भेंट। शादी के बाद पति बडे अरमान से घुँघट उठाकर दुल्हन की प्रशंसा में कुछ कहेगा तो दुलहिन मधुर भाव से कहेगी कि उसकी सुंदरता का राज नौ सौ इक्यावन नंबर वाला साबुन ही है, आप भी वह इस्तेमाल कीजिए। इसकी सुमधुर गंध सारा दिन दिमाग को ताजा रखती है। इसका कोमल झाग त्वचा को सुकोमल बनाता है। इसकी बडी टिकिया खरीदने से पैसों की बचत होती है।

मोहन राकेशजी विज्ञापनों की सही जगह के बारे में व्यंग्य कसते हुए लिखते है कि विज्ञापन कला की दृष्टि से सब चीजों का एक दूसरे के साथ अन्योन्याश्रित संबंध लगाया जा सकता है। दवाई की शीशियों में मक्खन के डिब्बों का विज्ञापन तथा मक्खन के डिब्बों में दवाई की शीशियों का विज्ञापन होना चाहिए। चित्र गैलरियों में चित्रों के अतिरिक्त तेल के इश्तिहार टाँगने चाहिए और तेल की बोतलों पर चित्र गैलरियों के इश्तेहार होने चाहिए। कंबलों और दुशालों में चाय और कोको के विज्ञापन हो सकते हैं। गलीचों पर जूतों के विज्ञापन आदर्शवत ही है। इतना ही नहीं तो बैंकों की दीवारों पर लाटरी और रेस कोर्स के विज्ञापन लिखने में कोई हर्ज नहीं है। रेस कोर्स में बचत की विविध स्कीमों का विज्ञापन दिया जा सकता है। रेल और हवाई जहाज की टिकटों पर बीमा कंपनियों का तथा अस्पतालों की दीवारों पर वैवाहिक विज्ञापन लगाए जा सकते हैं। आगे आनेवाले दिनों में विज्ञापन के लिए इन जगहों का इस्तेमाल हो सकता है।

आज की स्थिति को देखें तो सब जगह विज्ञापन ही विज्ञापन है। जहाँ विज्ञापन होने चाहिए वहाँ तो वह हैं ही पर जहाँ न हो वहाँ भी विज्ञापन नजर आते हैं। मोहन राकेश जी का कहना है कि विज्ञापन की अति के कारण उनका दिमाग आज हर आवाज, हर चेहरा ओर हर नाम को किसी न किसी विज्ञापन के साथ जोड देता है। सुबह सुबह जब राकेश जी चायवाले की दुकान के लडके को चाय लाने के लिए कहते है तो उनको नीलगिरी चाय के इश्तेहार की सुंदरी का

खयाल आता है। जिसका चेहरा हर रोज समाचार पत्र में छपता हैं निलगिरी के नाम से ही उन्हें काफी प्रदेश की ढलानें याद आती है और साथ ही बुद्धे राजपूत का चेहरा उनकी आँखों के सामने आता है। इसके साथ उन्हें इस बात पर अभिमान भी महसूस होता है कि यह अच्छी कॉफी और यह अच्छा चेहरा दोनों भारतीय ही है।

जैसे ही वह लडका दो मिनिट में चाय की प्याली लेकर आता है और हँसते वक्त उसके सफेद दाँत दिखायी देते है तो वे सोचने लगते है कि जरूर वह क्लोरोफिल वाली टूथपेस्ट इस्तेमाल करता होगा। इतनी सारी मिलियन डालर की स्माईल के बदले वह मुझसे छ: पैसे चाय के पैसे लेता है। अगर इस लडके को किसी क्लोरोफिल वाली कंपनी को सौप दूँ तो इसकी स्माईल का उसे सही मूल्य मिल सकता है। इतने में उनके कानपर एक स्त्री कंठ से निकली सुमधुर आवाज आती है वह कहती है कि आप का लिवर ठीक से काम नहीं करता तो आज ही अपना लिवर ठिक करने के लिए लिवर इमल्शन लीजिए। उन्है मालूम नहीं कि उनका लिवर ठीक से काम कर रहा है या नहीं पर जब भी वे किसी बच्चे को किलकारी मारकर हँसते हुए देखते है तो उन्हें लाल डिब्बे में बंद बेबी मिल्क की याद आती हैं। मोहल्ले के लाल चौधरी जब उन्हें मिलने के लिए आते है तो उनकी तबीयत देखकर उन्हें विटामिन बी कॉम्पलेक्स विज्ञापन नजर आ रहा है। दप्तर की नई टाइपिस्ट में उन्हे लाल रंग की लिपस्टिक नजर आती है। मोहन राकेशजी जब स्वयं को आईने के सामने खडा देखते है तो उन्हे अपने चेहरे में लिवर बाल्ट का विज्ञापन दिखायी देता है।

इसतरह प्रस्तुत व्यंग्य निबंध के द्‌वारा मोहन राकेशजी ने विज्ञापन के साथ हमारी रोजमर्रा की जिंदगी किस प्रकार जुडी हुई है इसका मार्मिक वर्णन किया है।

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) विज्ञापन युग निबंध .... ने लिखा है।

अ) मोहन राकेश ब) विनोबा भावे क) बाबू श्यामसुंदरदास ड) शरद जोशी

2) विज्ञापन युग यह .... है।

अ) निबंध ब) रेखाचित्र क) कहानी ड) एकांकी

3) आज के आधुनिक युग में हम .... से बच नहीं सकते।

अ) विज्ञापन ब) टेलिविजन क) टूथपेस्ट ड) साबुन

4) बच्चे को किलकारी मारकर हँसते हुए देखने से लेखक को .... की याद आती है।

अ) बेबी मिल्क ब) लिपस्टिक क) लीवर बाल्ट ड) कंप्लेक्स

5) दवाई की शीशियों में .... के डिब्बों के विज्ञापन होने चाहिए।

अ) मक्ख ब) रबडसोल क) तेल ड) कोको

6) चाय का नाम लेते ही मोहन राकेश जी को .... की सुंदरी का ध्यान हो आता है।

अ) निलगिरी ब) दफ्तर क) टेलिवीजन ड) साबुन

7) मोहन राकेश जी को लगता है कि उनकी चारों ओर हर चीज का एक नया .... उभर रहा है।

अ) मूल्य ब) जोश क) चित्र ड) विज्ञापन

3.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) विज्ञापन - ईश्तहार

2) मूल्य - कीमत

3) अछूती - जिसको किसी ने स्पर्श न किया हो

4) बर्नाड शा - अंग्रेजी के प्रसिद्ध नाटककार

5) रोशनदास - खिडकियाँ

6) मिलियन डालर की हँसी - बडे किमतवाली हँसी

7) स्कीम - योजना

3.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) मोहन राकेश 2) निबंध 3) विज्ञापन 4) बेबी मिल्क

5) मक्खन 6) निलगिरी 7) मूल्य

3.7 सारांश :

विज्ञापन युग मोहन राकेशजी का मशहूर व्यंग्य निबंध है। इस निबंध के माध्यम से लेखक ने यही संदेश दिया है कि आज के इस युग में आप लोगों तक पहुँचना है तो इसके लिए भिन्न-भिन्न माध्यमों का इस्तमाल करना पडेगा। विज्ञापन उनमें से एक बहुत बडा माध्यम है। आम आदमी इन विज्ञापनों से बच नहीं सकता। सुबह से रात तक यह विज्ञापन उनका पीछा करते ही रहते है। मोहन विज्ञापनों से बच नहीं सकता। सुबह से रात तक यह विज्ञापन उनका पीछा करते ही रहते है। मोहन राकेश जी ने व्यंग्य का पुट देकर इस बात को विविध उदाहरण देकर अत्यंत सुंदरता से स्पष्ट किया है।

3.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) विज्ञापन युग निबंध का आशय स्पष्ट कीजिए।

2) विज्ञापन युग निबंध का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

3) विज्ञापन के लिए किन किन जगहों का इस्तेमाल किया जाता है? विज्ञापन युग निबंध के आधारपर स्पष्ट कीजिए।

4) विज्ञापन युग निबंध का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या किजिए।

1) ''मुझे लगता है कि मेरे चारों ओर हर चीज का एक नया मूल्य उभर रहा है जो उसके आज तक के मूल्य से सर्वथा भिन्न है और जो उसके रूपको मेरे लिए बिल्कुल बद दे रहा है।''

2) ''आप की शिक्षा के उपयोग का एक ही मार्ग है। आज ही आयात निर्यात का धंदा प्रारंभ कीजिए। मुफ्त सूचि पत्र के लिए लिखिए।''

3) ''यह अच्छी कॉफी और यह अच्छा चेहरा दोनों भारतीय है।''

4) ''उतरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक कोई कोना ऐसा न बचा होगा जिसका किसी न किसी चीज के विज्ञापन के लिए उपयोग न किया जा रहा हो। हर चीज हर जगह किसी भी चीज और किसी भी जगह का विज्ञापन हो सकती है।''

5) ''याद रखिए इस मूर्ति और इस भवन के निर्माण का श्रेय लाल हाथों के निशानेवाले निर्माताओं का है। वास्तुकला संबंधी अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए लाल हाथी का निशान कभी मत भूलिए।''

6) ''और वह लडका है कि रोज छह पैसे की चाय मुझे पकडाता हुआ यह मिलियन डालर की स्माइल कहते मुस्कराहट मुस्करा जाता है।''

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) छात्र स्वयं किसी विज्ञापन को तैयार करने की कोशिश करें।

2) विज्ञापन संस्था की भेंट करें।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) विज्ञापन कला - डॉ. मधु धवन

2) आधुनिक विज्ञापन - डॉ. प्रेमचंद पातंजलि

◆◆◆

इकाई 2 (क)

4. भगत की गत (व्यंग)

- हरिशंकर परसाई

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवरण

4.3.1 हरिशंकर परसाई का परिचय
4.3.2 'भगत की गत' व्यंग्य का परिचय
4.3.3 'भगत की गत' व्यंग्य का कथानक
4.3.4 भगत का चरित्र-चित्रण

4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य से परिचित होंगे।

2) 'भगत की गत' व्यंग्य की कथावस्तु से परिचित होंगे।

3) भगतजी के पाखंड को समझ सकेंगे।

4) भगतजी की चरित्रगत विशेषताओं को समझ सकेंगे।

5) प्रस्तुत व्यंग्य विधा से उचित बोध ग्रहण करेंगे।

6) जीवन के नैतिक मूल्यों को पहचान सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना :

सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों की विसंगतियों को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने खोलकर रखना तथा समाज को परिवर्तन की दिशा दिखाना व्यंग्य विधा का प्रमुख स्वर रहा है। हिंदी साहित्य में विशेषत: 19 वीं शताब्दी में व्यंग्य विधा को सशक्त बनाने के लिए हरिशंकर परसाईजी का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। उनका व्यंग्य लेखन पाठक को अंतर्मुख बनाने के साथ साथ मानवी जीवन की कुप्रवृत्तियों पर तीखा प्रहार करता है। विषमताभरे परिवेश का वे पर्दाफाश करते हैं।

4.3 विषय-विवरण :

4.3.1 हरिशंकर परसाई का परिचय :

हास्य-व्यंग्य विधा के अत्यंत लोकप्रिय रचनाकार श्री हरिशंकर परसाईजी का जन्म मध्य प्रदेश, इटारसी के जमानी नामक गाँव में 12 अगस्त, 1924 में हुआ। सन् 1949 में नागपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. होने के बाद कई सालों तक वे महाविद्यालयों में प्राध्यापक पद पर कार्यरत रहें। समाज में व्याप्त विसंगतियों, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, विषमताओं पर अपनी लेखनी द्वारा उन्होंने जो पैना और कठोर निशाना साध लिया है, वो विशेष सराहनीय माना जाता है। सामाजिक दुरावस्थाओं के प्रति सजगता दिखाकर साहित्यकार का सही कर्म क्या होता है? इसे उन्होंने अन्य व्यंग्य रचनाकारों के सामने एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है।

उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में 'हँसते हैं और रोते हैं', 'तब की बात और थी', 'जैसे उनके दिन फिरे' आदि कहानियों का लेखन किया। 'अपनी अपनी बीमारी', 'पगडंडियों का जमामा', 'बेईमानी की परत', 'सदाचार का तावीज', 'भूत के पाँव पीछे', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' आदि उल्लेखनीय निबंध लिखे जो वैचारिक दृष्टि से सरस थे। 'तट की खोज', 'ज्वाला और जल', 'रानी नागफनी की कहानी' आदि उपन्यास लिखे। इन सभी विधाओं के लेखन से उन्होंने मनुष्य की कथनी और करनी के बीच के अंतर को समझाया है।

4.3.2 'भगत की गत' व्यंग्य का परिचय :

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में भगत का पात्र किस प्रकार मुहल्ले के लोगों को तंग करके मृत्यु के पश्चात स्वर्ग की

कामना करता है? इसके लिए वह भगवान की प्रशंसा करके उन्हें खुश करने का प्रयास करता है इस पर प्रकाश डाला है। भगवान भगत के बुरे कर्मों को देखकर उसे अंत में नरक भेजने का आदेश देते हैं। सीधी-सरल भाषा के कारण यह व्यंग्य रचना आकर्षक बन गयी है।

4.3.3 'भगत की गत' का कथानक :

जिस दिन भगतजी की मौत हुई तब कहा गया था कि, भगतजी स्वर्गवासी हुए पर मालूम पडा कि वे स्वर्गवासी नहीं बल्कि नरकवासी हुए हैं। किसी को इस बात पर भरोसा नहीं हुआ लेकिन यह सच था। उनपर ऐसे पापों के आरोप लगाये गये थे कि भविष्यत् में भी नरक से मुक्ति मिलने की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती थी। उनके प्रति अन्य लोगों की प्रार्थना से भी कोई लाभ नहीं होनेवाला था। बडी से बडी शोकसभा भी उन्हें नरक से बाहर नहीं निकाल सकती थी।

पूरी गली को याद है कि भगतजी मंदिर में बैठकर आधी रात तक भजन करते थे। किसी उदार दिल भक्त से मंदिर में लाउड - स्पीकर लगाकर अपने साथियों के साथ भजन करते रहते। त्यौहारों के दौरान चोबीसों घंटे लाउड-स्पीकर से बिना किसी रूकावट अखंडित कीर्तन होता रहता था। एक-दो बार गली के लोगों ने उनके इस शोर का विरोध किया तो उन्होंने भक्तों की भीड़ जमा करके लोगों पर दबाव निर्माण करने की कोशिश की। वे भगवान के नाम पर जान देने और लेने के लिए वचनबद्ध बन गये।

जिन्होंने हजारों बार भगवान के नाम लिये, वो नरक की तरफ भेजे गये और जिसने भूल से एक बार भगवान का नाम लिया वो मात्र स्वर्ग चला गया। बड़ा अंधेर था भगवान के दरबार में।

मृत्यु के पश्चात भगतजी परलोक पहुँचने पर इधर-उधर घूमने लगे। एक प्रवेशद्वार के पास वहाँ के चौकीदार से स्वर्ग का पता पूँछने लगे। आगे बढते ही चौकीदार ने उन्हें रोककर प्रवेशपत्र के बारे में पूँछताछ की। भगतजी क्रोधित होकर कहने लगे, ''मुझे जानते हो। मैं भगतजी हूँ। कोई मुझसे टिकिट नहीं माँगता और ना ही मैंने कभी टिकिट लिया है। सिनेमाघर और रेल में भी बिना टिकिट मैं बैठता था।'' चौकीदार ने उन्हें बिना टिकिट नहीं जाने दिया बल्कि वहाँ के एक दफ्तर में जाकर पाप-पुण्य का हिसाब लगाकर टिकिट ले आने को कहा।

भगतजी उसे पार करके आगे जाने लगे तो चौकदार पहाड़ की तरह खड़ा हो गया और उसने भगतजी को उस दफ्तर की सीढ़ी पर खड़ा कर दिया। दफ्तर में पहुँचते ही जो देवता फाईलें लिए बैठा था, उसकी प्रशंसा भगतजी करने लगे। उन्हें भगवान कार्तिकेय की उपमा देने लगे। फाईल से सिर उठाकर उस देवता ने भगतजी को झूठी चापलूसी न करके जीवनभर किये कुकर्मों के बारे में खड़े बोल सुनाये और नाम, धाम पूँछा।

भगतजी की पूरी जानकारी लेने के बाद उस अधिकारी देवता ने भगतजी के मामले को कठिन बताते हुए स्वर्ग या नरक के फैसले को भगवान पर छोड़ दिया।

भगतजी ने अपनी सफाई देते हुए सौ प्रतिशत धार्मिक होने की, भगवत् भजन करने की, झूठ न बोलने की,

चोरी न करने की, स्त्रियों पर बुरी नजर न ड़ालने की बात कथन करते हुए स्वर्ग भेजने का अनुरोध किया। अधिकारी देवता ने भगतजी के मामले को सीधा न मानते हुए परमात्मा के दिलचस्पी कीबात भगतजी को सुनाकर एक चपरासी के द्वारा उन्हें भगवान के दरबार में पेश किया। वहाँ पहुँचते ही भगतजी ने भगवान का प्रशंसागान आरंभ करके भजन गायन शुरू कियां भजन के पूरे होते ही प्रभू के रूप का अलौकिक वर्णनकरते हुए जन्म-जन्मांतर की मनोकामना पूरी होने के संकेत दिये।

भगवान भगतजी की झूठी प्रशंसा को जानकर परेशान हो गये। भगतजी की चाह पूँछने लगे तो तुरंत अपनी मनोकामना भगवान के सामने रखकर भगतजी उन्हें स्वर्ग में स्थान देने की याचना करने लगे। जब प्रभू स्वर्ग देने से पहले भगतजी को उनके कार्य पूँछने लगे तो भगतजी को इससे गहरी चोट पहुँच गयी। फिर भगवान ने उन्हें लाउड-स्पीकर लगाने के बारे में, भगवान का विज्ञापन करने के संदर्भ में, देवताओं द्वारा भगवान के हँसी-मजाक उडाने की, यहाँ तक की पत्नी द्वारा भगवान के बहरे होने की बातोंपर भगतजी से क्रोधित होकर कई सवाल किये तो इसपर भगतजी निरूत्तर हुए। भगवान से जबान लड़ाना उन्होंने उचित नहीं समझा।

भगवान को आगे करके भगत ने उन्हें काफी बदनाम किया था यह बात भगवान को अच्छी नहीं लगी थी। वे उससे चिढ़ गये थे। भगत की चापलूसी और मूर्खता से वे अप्रसन्न हो गये थे। भगत पर जब आदमियों की हत्या का आरोप हुआ तो उनका धीरज समाप्त हुआ और वे उल्टा भगवान पर ही झूठ बोलने का आरोप करने लगे तो भगवान ने भगत की गली के रमानाथ मास्टर को वहाँ बुलाया, जो अधेड़ उम्र के थे और पिछले साल बीमारी की हालत में भगतजी द्वारा लाउड स्पीकर के अखण्ड कीर्तन के मारे नींद और आराम न मिलने के कारण चौथे दिन मर गये थे।

भगवान के अविश्वास की भावना को देखकर भगत घबरा गये। तभी बीस-इक्कीस साल के सुरेन्द्र नामक लडके को वहाँ बुलाया गया जिसने परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के कारण खुदकुशी की थी। असल में स्थिति यह थी कि उसका घर मंदिर के पास था। भगतजी के लाडस्पीकर पर लगाये गये भजन के कारण वह उचित तरीके से पढ़ नहीं सका। भगत से परीक्षा के दिनों में लाऊड-स्पीकर न लगाने की बिनती करने के बावजूद भी वे नहीं माने।

भगत के सभी पापों का हिसाब-किताब करके भगवान ने बड़ी कठोरता से उन्हें नरक भेजने का आदेश दिया। भगत ने भागने की कोशिश की लेकिन नरक के भयावह दिखायी देनेवाले दूतों ने उन्हें पकड़ लिया। जिस भगत को लोग धर्मात्मा मानते थे, नरक लोक चले गये।

इस प्रकार प्रस्तुत व्यंग्य रचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि बुरे कर्मों का फल हमेशा बुरा ही होता है। बुरी प्रवृत्ति इन्सान को विनाश की ओर ही ले जाती है। भगवान के दरबार में देर है मगर अंधेरा नहीं है। मानव को हमेशा सही रास्तेपर चलना चाहिए यह सीख भी इससे मिल जाती है।

4.3.4 भगत का चरित्र चित्रण :

'भगत की गत' व्यंग्य रचना हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित रचना है। इसमें भगत का पात्र प्रमुख है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

पाखंडी : आधी रात तक भगवान का भजन करनेवाला भगत कई ऐसे पाप भगवान के नाम पर करता है कि जिससे वह बदनाम हुआ है और अपने साथ वह भगवान को भी बदनामी का हिस्सेदार बना लेता है।

आरोपों में घिरा व्यक्तित्त्व : भगत पर ईश्वर की सेवा करते करते कई आरोप निश्चित किये गये हैं, जो बिल्कुल सच हैं। बीमार रमानाथ मास्टर और सुरेंद्र नामक युवक इन दोनों की मृत्यु का जिम्मेदार भगत है।

रोब जमानेवाला व्यक्ति : त्यौहारों के तथा उत्सव - पर्वों के दौरान चोबीसों घंटे लाउड-स्पीकर से बिना किसी रूकावट अखण्डित कीर्तन करनेवाला भगत गली के लोगों से विरोध होते ही उल्टा उनपर ही रोब जमाता है और भक्तों की भीड़ जमा करके गली के लोगों को दबंगगिरी दिखाता है।

झूठी प्रशंसा करनेवाला : मृत्यु के पश्चात भी भगत कई अवगुणों का धनी बन जाता है। चौकीदार को उल्लू बनाने की कोशिश करता है। भगवान के सामने पेश होते ही भगवान की झूठी प्रशंसा करके अपने बुरे कर्मों को छिपाने का प्रयास करता है।

झूठी सफाई देनेवाला : भगत भगवान के सामने अपनी धार्मिक प्रवृत्ति का प्रदर्शन करता है। अपने कठिन मामले को सीधा करने का प्रयास करता हैं इसके लिए वह ईश्वर के सामने विभिन्न प्रकार की झूठी सफाई देता रहता है। उसकी यह प्रवृत्ति देखकर साक्षात् भगवान भी अचंबित होते हैं।

पापों को टालनेवाला : भगवान के दरबार में खुद को निर्दोष साबित करते हुए भगत कभी झूठ न बोलने, चोरी न करने, स्त्रियों पर बुरी नजर न डालने के दावे करता है जो झूठ हैं। भगत भगवान को अपने पक्ष में करने पर तुला है लेकिन इसमें वह असफल हो जाता है।

भगवान को वश करने का प्रयास : भगवान के सामने जाते ही भगत स्तुतिपरक भजन गाने लगता है। उसे लगता है कि इससे भगवान प्रसन्न हो जायेंगे लेकिन वे तो परेशान हो जाते हैं। भगत के झूठे निवेदन से भगवान अप्रसन्न होते हैं।

स्वर्ग की कामना : कई पाप और बुरे कर्म करने के बावजूद भी भगत ईश्वर से नरक की अपेक्षा स्वर्ग भेजने की इच्छा रखता है। ईश्वर सर्वव्यापी, सर्वज्ञानी होते हुए भी उनके सामने कई झूठे निवेदन करता है। चालाकी से अपनी मनोकामना को पूरा करना चाहता है अपितु इस चाल में कामयाब नहीं होता।

घायल हो जाना : प्रभू भगत को उसके कर्मों को लेकर कई सवाल करते हैं, जिससे भगत को करारी चोट पहुँच जाती हैं आज तक उसे इतने सवाल किसीने भी नहीं पूँछे थे। ईश्वर के सवालों से भगत घायल हो जाते हैं। अपने प्रति भगवान के अविश्वास को देखकर भगत निरूत्तर होता है।

पलायनवादी दृष्टिकोन : भगवान के सवालों से आहत होकर भगत भगवान पर ही झूठ बोलने का आरोप करता है। ईश्वर उसके आरोपों का खण्डन करते हुए कई प्रमाण प्रस्तुत करते हैं तो भगत अपने कुकर्मों पर पछतावा

करने की अपेक्षा झूठ कथन करके पलायनवादी मानसिकता को अपनाता है। वहाँ से भागने की कोशिश करता है पर नरक के दूत उसे पकड लेते हैं।

नरक की प्राप्ति : भगवान भगत की काली करतूतों को देखते हुए अत्यंत कठोरता के साथ उसे नरक भेजने का आदेश देते हैं। जिसे लोग बुरे कर्मों के बाद भी धर्मात्मा समझते थे वो अब नरक की यातना को भुगत रहा था। उसके किये की बराबर सजा उसको मिल चुकी थी।

इस प्रकार भगत के पाखंड की पोल प्रस्तुत व्यंग्य रचना के द्‌वारा खुल जाती है। हरिशंकर परसाई ने भगत के चरित्र के माध्यम से धार्मिक तथा सामाजिक भारतीय श्रद्‌धा के परिवेश का गलत लाभ उठानेवाली प्रवृत्तियों का पर्दाफाश किया है तथा ऐसी प्रवृत्तियों से सावधान रहने का अप्रत्यक्ष रूप से संदेश भी दिया हे।

4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'भगत की गत' रचना के रचनाकार .... हैं।

अ) हरिशंकर परसाई　ब) प्रेमचंद　क) यशपाल　ड) शरद जोशी

2) भगतजी .... हो गये।

अ) स्वर्गवासी　ब) नरकवासी　क) पृथ्वीवासी　ड) पातालवासी

3) भगतजी की मुलाकात सबसे पहले .... से हुई।

अ) पुलिस　ब) भगवान　क) चौकीदार　ड) वकील

4) भगतजी ने कहा, ''मैं .... आने धार्मिक आदमी हूँ।''

अ) दो　ब) चार　क) आठ　ड) सोलह

5) भगत के कारण .... मास्टर की मृत्यु हुई।

अ) रमानाथ　ब) उमानाथ　क) सीतानाथ　ड) मातानाथ

6) आत्महत्या करनेवाले युवक का नाम .... था।

अ) वीरेन्द्र　ब) सुरेन्द्र　क) जितेन्द्र　ड) हितेन्द्र

7) 'भगत की गत' .... रचना है।

अ) निबंध　ब) कहानी　क) व्यंग्य　ड) संस्मरण

4.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) अघन्य - घोर　**2) सोलह आने** - सौ प्रतिशत

3) **मुहल्ला** - गली	4) **गदगद वाणी** - भावनात्मक स्वर
5) **समर्थ** - पात्र	6) **रूखाई** - रुखे-सूखे
7) **पर्व** - उत्सव, त्यौहार	8) **अन्तर्यामी** - सब जाननेवाला, सर्वज्ञ
9) **ठेलकर** - पार करके	10) **कोलाहल** - शोर
11) **सरीखा** - जैसा	12) **घृणा** - तिरस्कार
13) **धाम** - निवासस्थान	14) **चापलूसी** - झूठी प्रशंसा
15) **पेचीदा** - कठिन	16) **तैश** - आवेश

4.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) हरिशंकर परसाई	2) नरकवासी
3) चौकीदार	4) सोलह
5) रमानाथ	6) सुरेन्द्र
7) व्यंग्य	

4.7 सारांश :

'भगत की गत' हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचना हैं प्रस्तुत व्यंग्य में भगत जैसे ईश्वर के नामपर पाखंड करके समाज को भ्रम में डालनेवाले व्यक्ति की निंदा की गयी है। बुरे कर्म करने के बाद भी मृत्यु के पश्चात यह व्यक्ति स्वर्ग की कामना करता है। जिसने जीते जी कभी दूसरों को सुख प्राप्त नहीं होने दिया वह मात्र अपनी मृत्यु के समय ईश्वर से अपना स्वार्थपरक उद्देश्य सफल करने की होड़ में लगा रहता है। भगवान की झूठी प्रशंसा करके उसे भी वश करने की चाह रखता है। भगवान के पाप-पुण्य के हिसाब को झूठा साबित करने की कोशिश करता है। उसके लिए झूठी सफाई देता रहता है। सच का सामना करने की हिंमत उसमें नहीं है। खुद को धर्मात्मा समझता है किंतु जीवनभर अधर्म से भरे सारे कुकर्म करता रहता है। अंत में अपनी इन्हीं करतूतों के कारण नरक का धनी बन जाता है और एक कठोर सजा भुगतता है।

4.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'भगत की गत' व्यंग्य रचना को अपने शब्दों में लिखिए।
2) भगत की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
3) भगत के अवगुणों का विवेचन कीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''पर मैं बिना टिकिट के नहीं जाने दूँगा।''

2) ''मेरा मामला तो बिल्कुल सीधा है। मैं सोलह आने धार्मिक आदमी हूँ।''

3) ''जन्म-जन्मांतर की मनोकामना आज पूरी हुई है।''

4) ''तुमने ऐसा क्या किया है, जो तुम्हें स्वर्ग मिले।''

5) ''तुम्हारे पापों को देखते हुए मैं तुम्हें नरक में डाल देने का आदेश देता हूँ।''

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'भगत की गत' व्यंग्य का नाट्य रूपांतर कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) हरिशंकर परसाई - 'पगडंडियों का जमाना'

2) सं. वीणा अग्रवाल - गद्य गाथा

3) सं. प्रो. जयमोहन एम.एस. - गद्य के विविध आयाम

◆◆◆

इकाई 2 (ख)

5. फुटपाथ के कलाकार (व्यंग)

- शरद जोशी

अनुक्रम

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 विषय विवरण

- 5.3.1 शरद जोशी का परिचय
- 5.3.2 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य का परिचय
- 5.3.3 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य का कथानक

5.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

5.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

5.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

5.7 सारांश

5.8 स्वाध्याय

5.9 क्षेत्रीय कार्य

5.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

5.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य के परिचित होंगे।

2) 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य की कथावस्तु से परिचित होंगे।

3) कथेत्तर साहित्य की व्यंग्य विधा से परिचित होंगे।

4) व्यंग्य विधा की विशेषताएँ समझ लेंगे।

5) 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य का आशय जान लेंगे।

6) रचनाकार शरद जोशी के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व से परिचित होंगे।

5.2 प्रस्तावना :

कथेत्तर साहित्य के अंतर्गत व्यंग्य विधा का अपना एक विशिष्ट स्थान है। स्वतंत्रता के बाद समाज में काफी तेजरफ्तार से जीवनविषयक मूल्यों का पतन हो गया। इस बीमारी पर साहित्यिक इलाज के रूप में व्यंग्य ने जन्म लिया। एक प्रभावी दवा का कार्य व्यंग्य विधा ने किया। जहाँ विसंगतियाँ हैं, वहाँ व्यंग्य उसपर प्रहार करता है। विसंगतियों को दूर करना व्यंग्य का प्राधान्य रहा है। विरोधाभास की स्थितियों को लक्ष्य करके उनका सही विकल्प ढूँढ लेना व्यंग्य का काम है। शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य मनोरंजन के साथ पाठकों को चिंतन करने के लिए बाध्य करता है।

5.3 विषय-विवरण :

5.3.1 शरद जोशी का परिचय :

प्रबुद्‌ध, स्वतंत्र और बेबाक पत्रकार एवं व्यंग्यकार शरद जोशी का जन्म 21 मई, 1931 को मध्य प्रदेश के उज्जैन में हुआ। पत्रकारिता, आकाशवाणी और सरकारी नौकरी के बाद उन्होंने लेखन को ही अपना जीवन बना लिया। समसामयिक घटनाओं में व्याप्त विसंगतियों को सार्थकता के साथ प्रस्तुत करने का श्रेय शरद जोशी जी को दिया जाता है। हिंदी व्यंग्य को नई दिशा और अर्थवत्ता प्रदान करनेवाले वे महत्त्वपूर्ण साठोत्तरी व्यंग्यकार माने जाते हैं।

'जीप पर सँवार इल्लियाँ', 'रहा किनारे बैठ', 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ', 'पिछले दिनों,' 'परिक्रमा' आदि उनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं। उन्होंने 'दैनिक मध्य देश' - भोपाल, 'नवलेखन' मासिक - भोपाल, 'हिंदी एक्स्प्रेस' - मुंबई आदि पत्र-पत्रिकाओं का भी संपादन किया। साथ ही 'क्षितिज', 'छोटी सी बात', 'दिल है कि मानता नहीं' आदि फिल्मों का लेखन किया। उनके 'देवी जी', 'ये जो है जिंदगी', 'विक्रम और वेताल', 'वाह जनाब', 'ये दुनिया गजब की' आदि दूरदर्शन धारावाहिक काफी लोकप्रिय हुए। उनके साहित्यिक योगदान के फल स्वरूप 1989 में उन्हें भारत सरकारने 'पद्‌मश्री' इस सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किया।

5.3.2 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य का परिचय :

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में लेखक ने जेबकतरे की जेब काटने की कला को दाद दी है। एक बार जब खुद लेखक की

ही जेब की संपत्ति को यह कलाकार हजम करता है तो उसके ऊंगलियों की लेखक सराहना करता है। जेब कटने के उन पीड़ा के क्षणों में भी लेखक के मन पर वह अनदेखा, अस्पर्शित कलाकार स्मृति की गहरी छाप छोड़कर चला जाता है जिसे लेखक कभी भूल नहीं सकता है।

5.3.3 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य का कथानक :

एक दिन लेखक की जेब इतनी आसानी से काटी गयी, उसे पता तक नहीं चला। बस स्टॉप पर तो हररोज ही काफी भीड़ रहती है। सिटी बस पकड़ते समय भीड़ को धक्का देते हुए लेखक दरवाजे पर पहुँचकर अंदर घूसने की कोशिश कर रहा था तभी उसके साथ यह अनहोनी हुई। पैण्ट की दाहिनी जेब में एक तार, बिजलीघर की रसीद थी तो बायीं जेब में रूमाल था। जिस जेबकतरे ने ये करतूत दिखायी थी शायद उसे दायें-बायें का अंतर पता था। रूपयों के साथ जेब के वो कागज भी निकाले गये। कण्डक्टर से टिकिट लेते समय छुट्टे पैसे निकालकर दिये गये। घर आने के बाद जेब के पूरी तरह से साफ होने की बात पता चली। जिस कलाकार ने अपनी इस कला का परिचय दिया था, उसकी खोज करना नामुमकिन था। पता चलने पर भी अब क्या किया जा सकता था?

निश्चित रूप से यह पीड़ादायी अनुभव था लेकिन दूसरी तरफ मन उस कलाकार की कला को मान रहा था। मान गये उस्ताद को। हर आदमी अपनी जेब को सेफ लॉकर की तरह मानकर उसमें कई रूपये रखता है। जेबकतरे की जब तक उस पर नजर नहीं पड़ती तब तक वह सुरक्षित रहता है। आबादी की तुलना में वैसे जेबकतरे बहुत ही कम हैं। इन कलाकारों की दृष्टि जेब की तरफ जाने पर लाख कोशिशों के बावजूद जेब का बचना असंभव हो जाता है। सुरक्षितता के सभी प्रबंध नाकाम होते हैं। वो थोड़े ही हमें सूचित करके जेब काटेगा, जन समुदाय में वह कब घूसेगा और हमारे माल को उड़ा ले जायेगा कोई बता नहीं सकता। अर्थशास्त्रियों के मतानुसार जेब में पड़ा मृत पैसा हवा में उड़ जायेगा। गोपियों की मटकियाँ तोड़ने के लिए गोविंदा अर्थात भगवान श्रीकृष्णजी जब आते थे तो कम से कम पूर्वसूचना तो मिल जाती थी पर यहाँ ऐसे नहीं हुआ।

किसी कविता में जिस प्रकार कोई अपरिचित आकर शरीर को छूकर रोमांचित करता था, बिल्कुल उसी प्रकार लेखक सोचता है कि आखिर वो कौन था? जिस आँखों से देखा भी नहीं गया। वह एक स्मृति बनकर तन और मन में छा गया। यह कोई खुसरो की पहेली नहीं थी। कोई प्रेमी, प्रिया, साजन का भ्रम नहीं था। धीरे से आकर तन को छूकर धन ले जानेवाला वह श्याम वर्ण कौन था?

सचमुच जेब काटना एक कला है। प्राचीन काल में चोरी कला मानी जाती थी। बडी सूक्ष्मता का वह काम है। एक विदेशी उपन्यास में लेखक ने जेबकतरों की पाठशाला का वर्णन पढ़ लिया था। जेब काटने की कला में माहिर एक अवकाशप्राप्त दादा इस पाठशाला के बच्चों को यह धंदा सिखाता था। एक व्यक्ति को कोट पहनाकर उसकी जेब में बटुआ रखकर उस कोट के आसपास कई घुँघरू बाँधे जाते थे। बिना घुँघरू बजे बटुआ काटने की परीक्षा ली जाती थी और उत्तीर्ण छात्र पेरिस की सड़कों पर जेब काटने का व्यवसाय आरंभ कर देता था।

कई बार हमारी लापरवाही जेबकतरों के लिए सोने पे सुहागा बन जाती है। जेब में पैसों को कचरे की तरह रखा

जाता है जो आसानी से साफ हो जाते हैं। कलाकार के राज पुलिस जानती है। उसका खेल हम नहीं समझ सकते। पैसों की माया महाठगिनी बनकर ऐसे कलाकारों की सहायक बन जाती है। सरकार करप्रणाली लागू करके कर वसूल करती है, उसीमें से कर्मचारियों का वेतन देती है लेकिन इन कर्मचारियों का पाकिट कोई जेबकतरा कब साफ करता है, कोई नहीं जानता।

जेबकतरा मानवीय रूप लेकर प्रेतात्मा जैसी हरकतें करता हैं। बुद्धि पर पर्दा ड़ाल लेने के कारण वह पर्दे के पीछे का चमत्कार दिखाता है। उसका न कोई अतीत होता है और न ही भविष्यत्, वह केवल वर्तमान में जीता है। बहती गंगा में वह निरन्तर हाथ साफ करता रहता है। असंख्य जेबों की असंख्य माया जमा करके अपने घड़े को भरता रहता हैं कम परिश्रम में उसकी दिन-रात लाटरी लगती रहती है, इसके लिए उसे पसीना भी नहीं बहाना पडता है।

महानगर कलकत्ता में एक ऐसा ही कलाकार था जो सिर्फ काला धन कमानेवालों की जेब काटता था, पुलिस में शिकायत न होने के कारण उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा। उसने कभी आम जेब साफ नहीं की। बंगले में रहता है, उसके पास टेलीफोन भी है, सभी प्रकार के ठाठ हैं। बरसों से वह इस कार्य में व्यस्त था। घटिया श्रेणी का काम उसने नहीं किया।

अगर इन जेबकतरों को फुटपाथ का कलाकार कहा जाये तो पता नहीं ऐसे कितने कलाकार सभी जगहों पर होंगे। कई जगहों पर जेबकतरे से सावधान रहने की सूचनाएँ लिखने के बावजूद भी वह अपने काम को अंजाम देता ही है। बिना किसी आहट के वह आ जाता है और कार्य पूरा करके चूपचाप निकल जाता है। उनके हाथ की ऊँगलियों में जो जादू है, वह अन्यत्र कहीं दिखाई देना दुर्लभ है।

लेखक की जेब से सिर्फ तीस-बत्तीस रू. ही गायब हो गये थे फिर भी उसे गहरा दु:ख हुआ था लेकिन जिनकी जेब से अधिक रू. जाते होंगे वे पता नहीं अपना दु:ख व्यक्त करने के लिए कौनसा सहारा ढूँढते होंगे? इस पर लेखक सोच रहा था। खैर, रू. उसके पास होते तो भी कभी ना कभी वो खर्च होनेवाले ही थे लेकिन उनपर किसी और की नजर पड़ गयी इसका दु:ख बड़ा था। अपने हाथों से पैसे खर्च करने का सुख न मिला सका।

लेखक जेबकतरे को प्रणाम करता है, उसके आगे नतमस्तक हो जाता है। उसके पास आने पर भी न मिलने का गम खलता रहता है। परिचितों की चोट से भी यह चोट गहरी थी। कोई संबंध या अपनेपन की भावना न होते हुए भी कई कठिनाईयों को पार करके वह अपने लक्ष्य तक पहुँच चुका था। उससे प्रभावित होकर लेखक सार्थकता महसूस करता है किंतु साथ ही उससे अपनी पराजय स्वीकार करके उसे दुबारा पास न आने की बिनती करता है। चुनौती न देते हुए साधारण भाव स्वीकृत करता है। मगर एक बात ऐसी भी थी कि जो जेब काटी गयी, उसमें दो टिकिट लॉटरी के थे, उनपर ढ़ाई लाख का इनाम था। अगर वह लॉटरी जेबकतरे के नाम खुल गयी तो उसमें से आधा धन लेखक चाहता है। मर्यादाओं की चौखट में रहकर अगर यह धन प्राप्त हो जाएगा तो लेखक उस जेबकतरे के गले लगकर महानता का अनुभव करेगा।

इस प्रकार प्रस्तुत व्यंग्य रचना में एक जेबकतरे की जेब काटने की कला की लेखक ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। यह व्यंग्य रचना मनोरंजन के साथ आम आदमी को सचेत और सावधान रहने का भी संदेश देती है।

5.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य रचना के लेखक .... है।

अ) शरद जोशी ब) भीष्म सहानी क) मोहन राकेश ड) मन्नू भंडारी

2) .... कब बेवफाई कर जाए और मुझे बिना लिए आगे बढ़ जाए, कहा नहीं जा सकता।

अ) रेल ब) सिटी बस क) हवाई जहाज ड) स्कूटर

3) .... को धक्का देते हुए दरवाजे पर पहुँच गये और चढ़ गये।

अ) पुरूष ब) लडके क) भीड़ ड) कण्डक्टर

4) शरद जोशी को .... यह सर्वोच्च पुरस्कार मिला था।

अ) अर्जुन ब) पद्म क) पद्मभूषण ड) पद्मश्री

5) .... का कोई रूप नहीं होता।

अ) जेबकतरे ब) मानव क) भूत ड) प्रेतात्मा

6) .... बहती रहती है और वह निरन्तर उसमें हाथ साफ करता रहता है।

अ) जमुना ब) गंगा क) सरस्वती ड) कृष्णा

7) मेरी जेब से सिर्फ .... रुपये गायब हुए।

अ) चालीस-पचास ब) दस-बीस क) तीस-बत्तीस ड) सत्तर-अस्सी

8) जो जेब तुमने काटी थी उसी में दो लॉटरी के टिकिट थे। इन पर .... का इनाम था।

अ) दो लाख ब) एक लाख क) डेढ़ लाख ड) ढ़ाई लाख

5.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) अक्सर - हमेशा

2) अन्धकूप - भ्रम

3) रेजगारी - छुट्टे रुपये

4) हौले-हौले - धीरे-धीरे

5) बृजबाला - गोपियाँ

6) सिहरन - रोमांच

7) एडवान्स वार्निंग - पूर्वसूचना

8) पहेली - भ्रम

9) गाढ़ी - काफी, घनी

10) महीन - सूक्ष्म

11) सनसनीखेज - रोचक

12) सिफत - कौशल

13) टस से मस - इधर-उधर

14) आहट - सूचना, हलचल

15) नौबत - वक्त समय

16) सिद्धि - प्राप्ति

17) बख्शों - माफ करो

18) ललककर - खुश होकर

5.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) शरद जोशी

2) सिटी बस

3) भीड़

4) पद्मश्री

5) जेबकतरे

6) गंगा

7) तीस-बत्तीस

8) ढ़ाई लाख

5.7 सारांश :

व्यंग्य शैली में लिखा गया साहित्य अक्सर मनोरंजक तथा पाठकों को सहज स्वाभाविक शैली में अंतर्मुख बनाता है। दैनंदिन जीवनकी कई विसंगतियों को अधोरेखित करने का काम व्यंग्य साहित्य करता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत व्यंग्य रचना काफी अर्थपूर्ण है।

बस स्टॉप पर खड़े लेखक की भीड़ भरे माहौल में कब जेब काटी जाती है इसका पता तो उसे घर वापस लौटने पर ही चलता है। जेब में कम रुपये होने के बावजूद भी उसके खो जाने का गम मन को सताते रहता है। जेबकतरे की जेब काटने की कला लेखक के मन को दुःख के इन क्षणों में भी भा जाती है। वह जेबकतरे के इस हुनर की सराहना करता है। शायद हाथ की उन ऊँगलियों ने जो कमाल दिखाया था, वह अन्यत्र देखने को भी नहीं मिल सकता था। लेखक की आँखों के सामने ऐसे कई जेबकतरों के चलचित्र तरल हुए जो कौशल और कला के धनी थे। चोरी-चुपके आकर अपना पूरा कार्य निपटाकर उसे सफलता का अंजाम देनेवाले सभी जेबकतरे लेखक के अनुसार फुटपाथ के कलाकार थे। हमेशा अपने शिकार को लक्ष्य करनेवाले ये लोग विशिष्ट वर्ग के मालिक थे। महाठगिनी माया को उन्होंने अपने वश में कर लिया था।

अपनी पराजय को स्वीकृत करके लेखक एक बार भी क्यों न हो इस अस्पर्शित कलाकार के गले लगकर उसे प्रणाम करके मिलना चाहता है।

5.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य रचना के आशय को स्पष्ट कीजिए।

2) 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य के जेबकतरे की कला का वर्णन कीजिए।

3) शरद जोशी ने जेबकतरे की सराहना क्यों की है?

4) जेब कटने की पीड़ा के क्षणों को शरद जोशी ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

5) 'फुटपाथ के कलाकार' व्यंग्य रचना की कथावस्तु को लिखिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या किजिए।

1) ''उस दिन पीडित क्षणों में भी मैं मन-ही-मन जेबकतरे को दाद देता रहा।''

2) ''आप क्या रखेंगे, खाक ! जब वह जिद्‌ध पुरुष आयेगा, यह सारी किलेबन्दी बेकार जाएगी।''

3) ''गोविन्दा आला रे, आला, मटकी सँभाल बृजबाला।''

4) ''वह आया और मेरे भार को हल्काकर गया। वह कौन था?''

4) ''मुझे बख्शों ! मैं हार मान गया, चीं बोल गया।''

5.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'फुटनाथ के कलाकार' व्यंग्य का कहानी रूपांतर कीजिए।

2) 'फुटनाथ के कलाकार' व्यंग्य का मंचन कीजिए।

5.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) शरद जोशी - 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ'

2) सं. डॉ. श्रीराम शर्मा - गद्‌य यात्रा

3) शरद जोशी - 'जीप पर सँवार इल्लियाँ'

4) शरद जोशी - दूरदर्शन धारावाहिक - 'ये जो है जिंदगी', 'ये दुनिया गजब की'

5) शरद जोशी - फिल्मलेखक - 'क्षितिज', 'छोटी सी बात'।

◆◆◆

इकाई 2 (ग)

6. गोशाला चारा और सरपंच (व्यंग्य)

- शंकर पुणतांबेकर

अनुक्रम

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 विषय विवरण

6.3.1 शंकर पुणतांबेकर का परिचय

6.3.2 'गोशाला चारा और सरपंच' व्यंग्य का परिचय

6.3.3 'गोशाला चारा और सरपंच' व्यंग्य का कथानक

6.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

6.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

6.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

6.7 सारांश

6.8 स्वाध्याय

6.9 क्षेत्रीय कार्य

6.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

6.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) शंकर पुणतांबेकर के व्यंग्य साहित्य से परिचित होंगे।

2) 'गोशाला चारा और सरपंच' व्यंग्य की कथावस्तु से परिचित होंगे।

3) सरपंच ज्वालाप्रसाद के भ्रष्टाचार को समझ सकेंगे।

4) ज्वालाप्रसाद की चरित्रगत विशेषताओं को जान जायेंगे।

5) गाँव में स्थित राजनीतिक पदों के द्वारा गैरफायदा उठानेवाली प्रवृत्तियों को समझ सकेंगे।

6) रचनाकार शंकर पुणतांबेकरजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व से परिचित होंगे।

6.2 प्रस्तावना :

व्यंग्य यह एक ऐसी विधाहै, जो समाज की विषमताओं को निशाना बनाकर समय आनेपर प्रभावी रूप से वार करती है। विशेषत: हिंदी साहित्य की व्यंग्य विधा ने स्वतंत्रतापूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात यह कार्य बड़ी इमानदारी से किया है। भ्रष्टाचार करनेवाली कुप्रवृत्तियाँ सिर्फ शहर तथा महानगरों तक ही सीमित नहीं रही बल्कि ग्रामों के परिवेश में भी उनका प्रवेश हुआ। भोले-भाले गाँव के निवासियों के सीधे-सरल-निर्मल स्वभाव का गैरफायदा लेकर उनकी नजरों की आड़ में किये जानेवाले भ्रष्टाचार का यहाँ पर्दाफाश हुआ है। प्रबोधन करनेवाले तथा प्रतिबंध करनेवाले रामदास और पटेल को डराया-धमकाया जाता है।

6.3 विषय-विवरण :

6.3.1 शंकर पुणतांबेकर का परिचय :

व्यंग्य विधा को आदर्शवाद का रूप देनेवाले सशक्त रचनाकार डॉ. शंकर पुणतांबेकरजी का जन्म 26 मई, 1925 को मध्य प्रदेश के गुणा जिले के कुंभराज नामक गाँव में हुआ। विदिशा, ग्वालियर तथा आगरा आदि शैक्षिक केन्द्रों से उन्होंने हिंदी और इतिहास जैसे विषयों में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके उपरांत उन्होंने विद्यावाचस्पति अर्थात पीएच. डी. उपाधि भी संपादित की। मध्य प्रदेश के विदिशा तथा महाराष्ट्र के जलगाँव में बरसों तक वे अध्यापन पेशे में कार्यरत रहें।

'शतरंज के खिलाड़ी', दुर्घटना से दुर्घटना तक', 'प्रेम विवाह', 'विजिट यमराज की', 'पतनजली', 'कैक्टस के काँटे', अंगूर खट्टे नहीं हैं' आदि उनकी प्रकाशित रचनाएँ विख्यात हैं। उन्हें 'व्यंग्यश्री' और 'अक्षर साहित्य सम्मान' आदि पुरस्कारों से नवाजा गया।

उनके व्यंग्य लेखन में नये सामाजिक यथार्थ को बड़ी सूक्ष्मता और संकेतों के आधार पर विश्लेषित किया जाता है। उनकी रचनाधर्मिता समकालीन अन्य व्यंग्य लेखकों के लिए दिशादर्शक रही। उनकी व्यंग्य रचनाएँ इस

दिशा में श्रेष्ठ रही। उनकी कलम विभिन्न आयामों को स्पर्श करती हुई पाठक को नयी राह दिखाने की कोशिश करते हुए आगे बढ़ती है। उनका व्यंग्य इसी कारण चिंतन की ओर निर्धारित हो जाता है।

6.3.2 'गोशाला चारा और सरपंच' व्यंग्य का परिचय :

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में गाँव का सरपंच ज्वालाप्रसाद गोशाला की गायों को दिये जानेवाले चारे में भ्रष्टाचार करता है। गाँव का पढ़ा-लिखा साक्षर युवक रामदास सरपंच के भ्रष्टाचार को प्रकाश में लाकर गाँव में प्रबोधन करने का प्रयास करता है तो उसे सरपंच के दूवारा धमकाया जाता है। सरपंच का पाला हुआ गुंड़ा कल्लू भी आगे चलकर उसका साथ नहीं देता और सरपंच की पत्नी भी उसकी निंदा करती है तो वह बौखला जाता है। चुनाव में किसी ज्योतिषी के कहने पर एक बैल को चुनाव का चिन्ह बनाकर ज्वालाप्रसाद चुनाव तो जीत जाता है किंतु इसके बाद चारा घोटाले की पूँछताछ के दौरान क्रोध में आकर प्रतिबंध करनेवाले पटेल पर किसी जानवर की तरह टूट पडता है। हराम के चारे से ज्वालाप्रसाद की दबंगगिरी समाप्त होकर वह खुद साँड़ बन जाता है।

6.3.3 'गोशाला चारा और सरपंच' व्यंग्य का कथानक :

एक गाँव की गोशाला में स्थित गायों की यह शिकायत थी कि उन्हें पेटभर चारा नहीं मिलता है। गोशाला के निरीक्षण करनेवाले निरीक्षकों से वे अपनी शिकायतें सुनाती थी। उनके मतानुसार वहाँ का रखवालदार चारा खाता था। वास्तविकता यह थी कि इन भूखी गायों की आवाज निरीक्षकों तक नहीं पहुँचती थी क्योंकि असली घोटाला तो वहीं पर था। जो लोग इन निरीह गायों के चारे की मलाई बीच में हाथ मारकर खा रहे थे, वो उनकी आवाज कैसे सुन सकते थे?

गाँव का साक्षर नौजवान रामदास गायों पर होनेवाले इस अन्याय से अस्वस्थ हो गया। इन निरीह गायों को न्याय देने का निर्णय उसने ले लिया। वह गाँव के बच्चों को पढ़ाता था। गाँव की पाठशाला में रामदास अध्यापक बनने के लिए इच्छुक था पर सरपंच का दूर का कोई रिश्तेदार सरपंच ज्वालाप्रसाद के कारण वहाँ अध्यापक बन गया। रिश्तेदारी का यह फल था। वो कभी बच्चों को नहीं पढ़ाता था, इतना ही नहीं कभी-कभी पाठशाला जाता था मगर वेतन मात्र पूरा लेता था। रामदास मात्र अभी तक नौकरी की खोज कर रहा था।

रामदास गायों के चारे में हो रहे भ्रष्टाचार को प्रकाश में लाने तथा गाँववालों का इसके बारे में प्रबोधन करने के लिए ढोल को गले में लटकाकर प्रभात फेरी निकालकर तीखे स्वरों में लोगों को अपना मन का आक्रोश सुनाने लगा। इससे गाँव के लोग प्रभावित हुए। उन्हें रामदास का यह कार्य अच्छा लगने लगा।

कुछ लोग तो रामदास की इस कृति से डर गये, विशेषत: गाँव में स्थित वृद्‌ध लोगों को लगा कि रामदास सरपंच से बहुत बड़ी दुश्मनी मोल रहा है। सच्चाई तो यह थी कि गोशाला का रखवालदार गोबरधन और सरपंच ज्वालाप्रसाद की मिलीभगत से ही गाँयों के चारे में भ्रष्टाचार हो रहा था। बड़े बूढ़ों के समझाने पर भी रामदास चूप नहीं बैठ सकता था। रामदास सोचता था कि चूप बैठने पर यह उन गायों के प्रति बड़ी संवेदनशून्यता होगी। बेशर्मी की सारी हदें पार हो चुकी थी। आवाज तो किसी ना किसी को तो उठानी ही थी।

रामदास के प्रबोधन से सरपंच ज्वालाप्रसाद क्रोधित हुआ। आज तक गाँव में कभी किसी ने उसका विरोध करने का दु:साहस नहीं किया था। सरपंच के कारण किसी जमाने में नेक और ईमानदार रहनेवाले गोबरधन की नियत को बिगाड दिया था। प्रारंभ में प्रामाणिकता से रखवालदारी करनेवाले, भगवान से डरनेवाले गोवरधन को एक दिन सरपंच ने लात मारकर नौकरी से निकालने की धमकी दी तो अपने बच्चों के भूखे मरने की कल्पना से वह मजबूरन यह भ्रष्टाचार करने के लिए राजी हो गया।

ज्वालाप्रसाद रामदास के गाँव में स्थित प्रचार-प्रसार से बहुत क्रोधित हुआ था। उसने रामदास को बार-बार बुलावा भेजा किंतु रामदास नहीं आया। इससे वह और भी क्रोधित होकर सोचने लगा कि दो कौड़ी का आदमी होकर भी इतनी घमंड़ कहाँ से आ गयी? आखिर सरपंच ने खुद रामदास के यहाँ जाकर उसे धमकाया कि रामदास ने सरपंच के खिलाफ गाँववालों को भड़काना बंद नहीं किया तो इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। रामदास ने भी उल्टे जवाब में सरपंच को खरी-खोटी सुनाकर उसकी शिकायत जिला बोर्ड में करने की बात कही। ज्वालाप्रसाद इस भ्रम में था कि भले ही रामदास ने उसकी शिकायत जिला बोर्ड में की तो भी उस पर कौन विश्वास करेगा और उसकी दखल कौन लेगा?

घर लौटते ही ज्वालाप्रसाद रामदास को सबक सिखाने के बारे में सोचने लगा और उसने कल्लू को बुलाया। कल्लू ज्वालाप्रसाद का पाला हुआ गाँव का गुण्डा था। सरपंच के आदेश पर किसी को पीटना, दंगा-फसाद करना, आग लगाना आदि कुकर्म वह करता रहता था। कल्लू के आनेपर ज्वालाप्रसाद ने उसे रामदास को खूब पीटने को और उसकी आवाज को दबाने की बात कही तो सरपंच की आँखों में आँखें डालकर कल्लू ने रामदास का पक्ष लिया। इससे ज्वालाप्रसाद भौचक्का रह गया, कल्लू को होश में आने के लिए कहने लगा। गोमाता के चारे में भ्रष्टाचार को कल्लू भी जानता था इसलिए उसे रामदास की कृति यथायोग्य लग रही थी। उसे यह भी पता था कि सरपंच ने गाँव के रास्ते, पुल, कुएँ यहाँ तक की पब्लिक संडास में भी पैसे खाकर भ्रष्टाचार किया था। गाय तो भगवान का रूप थी। उन मूक जानवरों के चारे में किये जानेवाले भ्रष्टाचार को देखकर कल्लू सरपंच पर थूकता है, उसकी निंदा करता है।

ज्वालाप्रसाद जब कल्लू को हवालात में बंद करने की धमकी देता है तो उल्टा कल्लू भी सरपंच से सभी पोल खोलने की बात कहकर रामदास को पीटने से इन्कार करता है। इससे ज्वालाप्रसाद बेबस बन जाता है।

ज्वालाप्रसाद गाँव में दुकान चलाने के साथ-साथ साहुकारी करता था। चुनाव नजदीक आने पर सरपंच एक ज्योतिषी के कहने के अनुसार एक बैल खरीदता है। बैल को चुना में चिन्ह बनाकर चुनाव जीत जाता है। विरोधी उम्मीदवार को हराकर जीतनेपर सरपंच की पत्नी उस पर व्यंग्य करके निंदा करती है। पत्नी को लगता है कि अब गधे चुनाव हारकर बैल जीतने लगे हैं। कुछ दिनों के बाद सरपंच के ध्यान में यह बात आती है कि उसके द्‌वारा खरीदा गया वह बैल चारा नहीं खा रहा है तो सरपंच को बैल की बीमारी या बदहजमी की आशंका आ जाती है। पशु वैद्‌य बैल को देखकर चला जाता है। बैल को कोई बीमारी नहीं थी। ज्योतिषी को बुलाया गया। ज्योतिषी के मतानुसार वह बैल सामान्य नहीं, खानदानी था। चुनाव जीतने के बाद वह सामान्य चारा नहीं खा सकता था। उसके लिए भ्रष्ट चारा

आवश्यक था। अब सरपंच के सामने गोशाला के चारे के सिवा और कोई पर्याय नहीं था। बैल को चोरी का चारा हाथ मारकर खिलाया गया।

कुछ दिनों बाद गोशाला की गाय मर गयी। रामदास को इस घटना का पता चलने पर उसने सभी ग्राम निवासियों को गाय की भूख से मरने की बात को लेकर सचेत किया। गोवरधन और ज्वालाप्रसाद ने गाय की मृत्यू भूख से नहीं बल्कि बीमारी से होने का प्रतिवाद किया। आखिर रामदास ने ज्वालाप्रसाद की शिकायत जिला बोर्ड से की। ज्वालाप्रसाद ने इस शिकायत को साम-दाम-दण्ड-भेद से दबाने का प्रयास किया पर बात जब समाचारपत्रों तक पहुँच गयी तो पूरे मामले की जाँच के आदेश दिये गये। जाँच की जिम्मेदारी गाँव के पटेल को सौंपायी गयी। पटेल ने गोशाला पहुँचकर छान-बीन का काम आरंभ किया। ज्वालाप्रसाद पटेल को उल्टे-सीधे जवाब देने लगा तो पटेल ने सीधे ज्वालाप्रसाद के घर जाकर तलाश करने का काम शुरू किया। पटेल को उसके घर से चारे की गंध आने लगी।

पटेल ने बाहर के आंगन की कोठरी खोलने का आदेश दिया तो कोठरी के ताले की चाबी बेटे के पास होने और बेटा शहर चले जाने का कारण ज्वालाप्रसाद आगे करता है। पटेल ताले को तोडता है तो उसकी आँखे आश्चर्य से बड़ी हो जाती हैं क्योंकि पूरी कोठरी चारों तरफ से चारे से भरी हुई नजर आती है। इस पर सवाल पूँछते ही ज्वालाप्रसाद जानवर की तरह पटेल पर ऐसे झपटता है जैसे कोई खूँखार पशू अपने शिकार पर टूट पड़ा हो। रामदास सहित सभी ग्रामवासी सरपंच ज्वालाप्रसाद की इस प्रतिक्षिप्त क्रिया को देखते हैं। उनको लगता है कि गोशाला के हराम के चारे ने ज्वालाप्रसाद को साँड़ बना दिया है।

इस प्रकार अंत में पता चलता है कि, व्यक्ति का कार्य जिस प्रकार का होता है, उसकी प्रवृत्तियाँ भी उसी कार्य के अनुसार विद्यमान होती हैं। 'कर भला तो हो भला' और 'कर बुरा तो हो उससे भी बुरा' जैसी उक्तियाँ यहाँ पूर्णत: चरितार्थ हो जाती हैं।

6.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) गाँव के सरपंच का नाम .... था।

   अ) ज्वालाप्रसाद ब) मथुराप्रसाद क) गंगाप्रसाद ड) जमुनाप्रसाद

2) .... गुंडा कुकर्म में ज्वालाप्रसाद का साथ नहीं देता है।

   अ) गुल्लू ब) कल्लू क) मल्लू ड) टिल्लू

3) चारा घोटाले की पूँछताछ .... करता है।

   अ) चौधरी ब) ठाकूर क) पटेल ड) पाटीदार

4) चारा घोटाले के खिलाफ .... गाँव में प्रबोधन करता है।

   अ) चरणदास ब) लक्ष्मणदास क) ब्रजदास ड) रामदास

5) गोशाला का रखवालदार .... था।

अ) गोवरधन ब) धरमधन क) चतुरधन ड) कुँवरधन

6) ज्वालाप्रसाद चुनाव के दौरान .... को चुनाव चिह्न बनाता है।

अ) भैंस ब) बैल क) कुत्ता ड) बिल्ली

7) हराम के चारे से ज्वालाप्रसाद .... बन जाता है।

अ) सूअर ब) चिता क) साँड ड) शेर

8) .... में ज्वालाप्रसाद भ्रष्टाचार करता है।

अ) मकान ब) अस्पताल क) पाठशाला ड) चारा

9) रामदास ज्वालाप्रसाद की शिकायत .... में करता है।

अ) जिला बोर्ड ब) जिला परिषद क) जिला पंचायत ड) जिला मंडल

10) अपनी आवाज को तीखी करने के लिए रामदास ने एक .... खरीदा।

अ) हार्मोनियम ब) ढोल क) गिटार ड) तबला

6.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) निरीह - निष्पाप
2) पल्ले - जिम्मेदार
3) बदौलत - कारण
4) सरपरस्त - श्रेष्ठ
5) कराह - वेदना, पीड़ा
6) बेहाल - घायल
7) दरखास्त - बिनती
8) मुटिया - बडे
9) मुनादी - स्वर
10) मिसाल - उदाहरण
11) तिलमिलाना - अस्वस्थता
12) आँच - संकट
13) भीरू - घबरानेवाला
14) गिडगिड़ाना - बिनती करना
15) हवालात - जेल, कैदखाना
16) व्यंग्यबाण - टीका, टिप्पणी
17) भाँपना - पहचानना, जानना
18) बौखलाकर - क्रोधित होकर
19) तौहीन - अवमान
20) आगबबूला - क्रोधित

6.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) ज्वालाप्रसाद
2) कल्लू
3) पटेल
4) रामदास

5) गोवरधन	6) बैल
7) साँड़	8) चारा
9) जिला बोर्ड	10) ढोल

6.7 सारांश :

हिंदी व्यंग्य साहित्य ने भारतीय ग्रामजीवन के परिवेश में स्थित कई विषमताओं पर भी भाष्य किया है। समकालीन परिस्थिति में हम देख रहे हैं कि भारत के कई प्रदेशों की राजनीतिक सत्ताएँ चारा घोटाले के कारण खतरे में आ गयी। कई विख्यात नेतागण आरोपों में घिरकर कुर्सी खाली कर बैठे। शंकर पुणतांबेकरजी ने वर्तमान इन्हीं स्थितियों को अपनी इस प्रस्तुत रचना में वाणी दी हैं इस दृष्टि से यह व्यंग्य रचना काफी प्रासंगिक बन गयी है।

सरपंच ज्वालाप्रसाद अपनी गाँव में स्थित हैसियत के कारण गायों के चारे में भ्रष्टाचार करता है। रखवालदार गोवरधन को भी वह इस बुरे कर्म में शामिल कर लेता है। साक्षर युवक रामदास के प्रबोधन से क्रोधित होकर उसे धमकाता है। कल्लू गुंड़े का इस्तेमाल करके गाँव में गुंड़ागर्दी का माहौल खड़ा करना चाहता है। अपनी दबंगाई से पूरे गाँव को दबाने का प्रयास करता है। गोशाला के भ्रष्टाचार को सभी ग्रामवासी खुली आँखों से देखते हैं किंतु ज्वालाप्रसाद का विरोध करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं। रामदास की शिकायत के बाद जिला बोर्ड के आदेश पर पटेल द्वारा की गयी पूँछताछ के दौरान सरपंच की चोरी पकड़ी जाती हैं गाँववालों के सामने वह नंगा हो जाता है। हराम के चारे से वह पशुवत व्यवहार पटेल से करता हैं। साँड जैसी हरकतें करता है शायद यह उन मूक गायों का शाप प्रतित होता है। मार्मिक शैली में इस व्यंग्य रचना का समापन हो जाता है।

6.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'गोशाला चारा और सरपंच' व्यंग्य रचना को विस्तार से लिखिए।
2) सरपंच ज्वालाप्रसाद की चरित्रगत विशेषताओं पर कथावस्तु के आधार पर प्रकाश डालिए।
3) ज्वालाप्रसाद की बुरी करतूतों को विषद कीजिए।
3) ज्वालाप्रसाद की दूषित मनोवृत्ति का विवेचन कीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''सुनो, भाई लोगों सुनो! कैसा जमाना आ गया है। आदमी जानवर बन गया है। वह हमारे पशुओं को भूखा रख उनका चारा खुद खा जाता है।''
2) ''रामदास ढोल तो तुम्हारा सही है, लेकिन ढोल पीटकर तुम तालाब में रहते मगर से बैर मोल ले रहे हो।''

3) ''नहीं-नहीं, ऐसा मत करो ज्वालाप्रसाद! मेरे बच्चे भूखें मर जायेंगे।''

4) ''तुम मेरे खिलाफ ढोल पीटना बंद करो, वरना इसका नतीजा ठीक नहीं होगा।''

5) ''तो ठीक है। मैं ताला तुडवाता हूँ।''

6) ''गोशाला की गंध! यह तू कैसी पागलों जैसी बात कर रहा है।''

6.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'गोशाला चारा और सरपंच' व्यंग्य को कहानी का रूप दीजिए।

1) 'गोशाला चारा और सरपंच' व्यंग्य को नाट्य रूप दीजिए।

6.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'विजिट यमराज की'

2) डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'शतरंज के खिलाडी'

3) डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'एक मंत्री स्वर्गलोक में'

◆◆◆

इकाई 3 (क)

7. पंचलाइट (कहानी)

- फणीश्वरनाथ रेणु

अनुक्रम

7.1 उद्‌देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 विषय विवरण

7.3.1 फणीश्वरनाथ रेणु का परिचय
7.3.2 'पंचलाइट' कहानी का परिचय
7.3.3 'पंचलाइट' कहानी का कथानक

7.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

7.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

7.7 सारांश

7.8 स्वाध्याय

7.9 क्षेत्रीय कार्य

7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

7.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) फणीश्वरनाथ रेणु के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व से परिचित होंगे।

2) 'पंचलाइट' कहानी की कथावस्तु समझ लेंगे।

3) 'पंचलाइट' कहानी के कथ्य को जान लेंगे।

4) गांव के लोग अपनी टोली या मुहल्ले की इज्जत को अत्यधिक महत्त्व देते हैं, इस कथ्य को समझ लेंगे।

5) गांव में प्रचलित परंपरा को समझ पायेंगे।

7.2 प्रस्तावना :

प्रेमचंद के पूर्व युग में कहानी साहित्य का सर्वोपरी विकास नहीं हुआ था। इस युग में कहानी विधा बाल्यावस्था में थी। परंतु इस क्षेत्र में जैसे ही प्रेमचंद का आगमन हुआ, कहानी साहित्य का विकास आलेख ऊपर चढता गया। प्रेमचंद और अनेक समकालीन कहानीकारों ने कहानी कला के विकास में अपना अपूर्व योगदान दिया परिणामत: कहानी साहित्य दिन-ब-दिन अत्यधिक विकसित तथा समृद्ध होता गया।

हिंदी साहित्य में अनेक विषयों पर कहानियाँ लिखी गयी। ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, आँचलिक तथा वैज्ञानिक विषयों पर कहानियां लिखी गयी। आँचलिक तथा भारतीय ग्रामों, बस्ती तथा टोलियों से संबंधित विषयों पर मार्मिक कहानियों का लेखन करने वाले कहानीकारों में फणीश्वरनाथ रेणु महत्त्वपूर्ण कहानीकार है। आँचलिक धारा में कहानी लिखने वाले कहानीकारों में आपका स्थान शीर्षस्थ है।

7.3 विषय-विवरण :

7.3.1 फणीश्वरनाथ रेणु का परिचय :

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 में पूर्णिया जनपद के औराही हिंगना नामक गांव में हुआ। ये पूर्णिया जनपद आजकल अररिया नाम से परिचित है। रेणुजी आँचलिक साहित्य लेखन में अग्रणी है। हिंदी कहानी साहित्य में रेणुजी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे आजीवन शोषण और दमन के विरूद्ध संघर्ष करते रहें। सिर्फ साहित्य के क्षेत्र में नहीं बल्कि राजनीति के क्षेत्र में भी उन्होंने अपूर्व योगदान दिया है। राजनीति में सक्रिय प्रतिभागी होने के कारण उन्होंने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में प्रमुख भूमिका निभायी। उन्होंने सन 1950 ई. में नेपाली जनता को राजेशाही के दमन और अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए वहाँ की सशस्त्र क्रांति और राजनीति में भी अपना योगदान दिया। सन 1952-53 ई. में वे बुरी तरह रोगग्रस्त रहें परिणाम स्वरूप उनकी दृष्टि राजनीति की अपेक्षा साहित्य सृजन की ओर अधिक झुकी। वे साहित्य सृजन में अत्यधिक रूचि लेने लगे। इसी दौरान रेणु जी की प्रथम रचना बहुचर्चित उपन्यास 'मैला आँचल' सन 1954 ई. में प्रकाशित हुआ। रेणु जी अपने जीवन के उत्तरार्ध में पुन: राजनीति से जुड़ गए। वे पुलिस के दमन के शिकार हो गए। उन्होंने भारत सरकार द्वारा दी जानेवाली 'पद्मश्री' उपाधि का त्याग किया। अत: इस महान साहित्यकार का 11 अप्रैल 1977 में देहांत हो गया।

रेणुजी का साहित्य परिचय एवं प्रकाशित रचनाएँ -

उपन्यास - मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, कलंकमुक्ति।

कहानी संग्रह - ठुमरी, अग्निखोर, आदिमरात्री की महक, एक श्रावणी दोपहर की धूप, अच्छे आदमी, प्रतिनिधि कहानियाँ।

संस्मरण - ऋणका धनजल।

रिपोर्ताज - नेपाली क्रांति कथा, बन तुलसी की गंध, श्रुत अश्रुतपूर्व, एकांकी के दृश्य, उत्तर नेहरू चरितम्, समय की शिला पर।

कविता - कवि रेणु कहे।

7.3.2 'पंचलाइट' कहानी का परिचय :

पंचलाइट कहानी रेणु जी के 'ठुमरी' संग्रह में संकलित है। रेणुजी ने प्रस्तुत कहानी में पूर्णिया आँचल के ग्रामीण परिवेश, रस्म रिवाज, आचार-विचार, रहन-सहन का सुंदर चित्रण किया हैं गाँव में हर बिरादरी का अपना-अपना विशेष महत्त्व होता है, अलग वजूद होता हैं। हर बिरादरी की अपनी-अपनी अलग व्यवस्था होती है। महतो टोली में पंचलाइट लायी गयी, पर उसे जलाना कोई नहीं जानता था। महतो टोली का केवल एकही व्यक्ति पंचलाइट जलाना जानता था और वो था गोधन पर गोधन को मुनरी के प्रेम के चक्कर के कारण जाति से बहिष्कृत किया गया था। बिरादरी की इज्जत बचाने के लिए, पंचलाइट जलाने के लिए गोधन को बुलाया जाता है और जाति में शामील किया जाता है। रेणुजी ने गांव की एक छोटी सी घटना के माध्यम से पंचलाइट को बिरादरी की प्रतिष्ठा और उसके माध्यम से जीवन का उल्लास चित्रित किया है। रेणु जी की यह आँचलिक कहानी लोक-जीवन की अनुभूतियों से अनुप्रणित है।

7.3.3 'पंचलाइट' कहानी का कथानक :

प्रस्तुत कहानी रेणु जी के 'ठुमरी कहानी संग्रह' से ली गयी है। इस कहानी में बिहार के गाँवों में बिरादरी का महत्त्व एवं गाँव में होनेवाले रस्म रिवाज, प्रथाएँ, परंपराएँ आदि का चित्रण किया है। गाँव में आठ पंचायतें थी और सभी पंचायतों में दरी, जाजिम, सतरंजी और पंचलाइटें थी पर केवल महतो टोली के पास पंचलाइट नहीं थी। महतो टोली के पास पिछले पंद्रह महिने से दंड-जुरमाने के पैसे जमा थे सो तय हो गया कि रामनवमी के मेले में पंचलाइट खरीदी जाएगी। महतो टोली के लोगों ने मेले में जाकर पंचलाइट खरीदी और उसे बडी शान-शौकत और धूम-धाम से गाँव में ले आए। इस गाँव में पेट्रोमेक्स को पंचलाइट कहते है।

पंचोने मेले में ही तय किया कि पंचलाइट खरीदने के बाद जो दस रूपये बच जाते हैं, उससे पूजा की सामग्री खरीदी जाय। पंचलाइट का उद्घाटन पूजा-पाठ से करना तय हो गया। मेले से सभी पंच दिन-दहाडे गाँव लौटे। छडीदार पंचलाइट का डिब्बा सर पर लेकर आ रहा था और उसके पीछे सरदार, पंच मंडली थी। गाँव के ब्राह्मण

टोले के लोग रास्ते में पंचलाइट को लालटेन कहकर महतो टोली के लोगों का मजाक उडा रहे थे। पर महतो टोली में खुशी का माहौल था। गुलरी काकी गोसाई का गीत गुनगुनाने लगी। छोटे-छोटे बच्चे उत्साह के मारे बेवजह शोरगुल कर रहे थे। मुहल्ले में रौनक छा गयी। हर एक के चेहरे पर अनोखी चमक दिखायी दे रही थी।

शाम को पूजा की सामग्री सजाई गई। पंचलाइट के रोशनी में कीर्तन होगा यह निश्चित हो गया। कीर्तन करनेवाले लोग अपने-अपने साज-बाज के साथ तैयार हो गए। रूदल शाह की दुकान से तीन बोतल किरासन (घासलेट) तेल मँगा लिया जाता है। महतों टोली की औरतों, बच्चों, पुरुषों एवं पंच मंडली सब में उत्सुकता है कि अब पंचलाइट जलेगी। उसी की रोशनी में भजन-कीर्तन होगा। सारी तैयारी हो गयी मगर महतो टोली में कोई भी सदस्य पंचलाइट जलाना नहीं जानता था। टोली के सामने बडी समस्या खडी हो गयी। अब पंचायत की इज्जत दाँवरपर पर लग गयी थी। अन्य बिरादरी के लोग पंचलाइट जलाना जानते थे पर दूसरी पंचायत के आदमी पंचलाइट जलाएँगे तो महतो टोली का अपमान हो जाएगा और दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से महतो पंचायत के लोग पंचलाइट क्यों जलवाएँ? वे जलाएँगे तो हमेशा ताना मारेंगे इससे अच्छा पंचलाइट न जलें। दूसरे लोगों से पंचलाइट जलवाने पर खिल्ली उडने का डर था। चारों ओर उदासी छा गयी, अंधेरा बढ़ने लगा।

पंचलाइट जलाना कोई नहीं जानता, इसके बारे में पंचोने पहले सोचा नहीं था। गाँव की गुलरी काकी की बेटी मुनरी को पता था कि गाँव का गोधन नाम का लडका पंचलाइट जलाना अच्छी तरह से जानता हैं लेकिन समस्या यह थी कि उसका समाज से हुक्का-पानी बंद था। मुनरी की माँ ने पंचायत में फरियाद की थी कि गोधन रोज उसकी बेटी को देखकर 'सलम-सलम' वाला सिनेमा का गीत गाता है - 'हम तुमसे मुहब्बत करके सलम।' गोधन दूसरे गाँव से आ बसा था और पंचमंडली उसपर पहले सेही नाराज थी। पंचों ने गोधन को समाज से बहिष्कृत कर दिया था। और दस रुपया जुरमाना भी लगवाया था। आज तक गोधन पंचायत से बाहर था। मुनरी चालाकी से अपनी सहेली कनेली की कान में कहती है कि तू सरदार से कह दे कि गोधन पंचलाइट जलाना जानता है। गोधन का नाम सुनकर सरदार दीवार और पंचो की ओर देखता है। उसका हुक्का-पानी तो उन्हीं लोगों ने बंद किया था लेकिन सरदार, दीवार और पंच आपस में विचार-विनिमय करके टोली की इज्जत बचाने के लिए गोधन का हुक्का-पानी खोल देने का निर्णय लेते हैं और छडीदार को गोधन को बुलाने के लिए भेजा जाता हैं परंतु पंचों के नखरे से गोधन मना कर देता है फिर गुलरी काकी के मनाने पर गोधन पंचलाइट जलाने पहुँच जाता है। गोधन के आते सभी खूश हो जाते हैं।

गोधन पंचलाइट जलाने के लिए इसपिरिट माँगता है। इसपिरिट के बिना पंचलाइट नहीं जलेगा पर इसपिरिट तो आयी नहीं थी। उपस्थित जनसमूह में मायूसी छा गयी पर गोधन होशियार लडका था। उसने थोडा गरी का तेल मँगवाया, मुनरी ने गरी का तेल लाया और गोधन पंचलाइट में पंप करने लगा। थोडे ही समय में पंचलाइट जलने लगा। चारों ओर गोधन की वाह-वाह हो गयी, हर ओर खुशी छा गयी।

महतो टोली में पहली बार पंचलाइट के उजाले में कीर्तन होता है। पंचलाइट के प्रकाश में पेड-पौधों, पत्ता-पत्ता पुलकित हो उठता है। महतो टोली का सरदार गोधन को पास बुलाकर शाबासी देता है। वह उससे कहता है,

''तुमने हमारी इज्जत रख ली, अब तुम्हारा सात खून माफ। खूब गाओ सलीमा का गाना।'' अब मुनरी और गोधन करीब आ जाते हैं। मुनरी की माँ गुलरी काकी गोधन को अपने घर खाना खाने का निमंत्रण देती है। गोधन और मुनरी की आँखे चार होते ही एक चमक छा जाती हैं। इस तरह गोधन महतो टोली का दिल जीत लेता है।

7.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'पंचलाइट' कहानी रेणु जी के .... कहानी संग्रह से ली है।

अ) अग्निखोर ब) ठुमरी क) अच्छे आदमी ड) आदिम

2) 'पंचलाइट' .... कहानी है।

अ) ऐतिहासिक ब) सामाजिक क) आँचलिक ड) मनोवैज्ञानिक

3) गाँव में सब मिलाकर .... पंचायते हैं।

अ) छ: ब) सात क) आठ ड) नौं

4) गोधन के खिलाफ पंचायत में .... ने फरियाद दी थी।

अ) सरदार ब) मुनरी क) कनेली ड) गुलरी काकी

5) गोधन .... के प्रति प्रेमभाव रखती है।

अ) मुनरी ब) कनेली क) सलमा ड) गुलरी

6) महतो टोली ने .... को जाति से बहिष्कृत किया था।

अ) छडीदार ब) मदन क) सरदार ड) गोधन

7) पंचायत ने गोधन को .... रुपये जुरमाना भरने को कहा था।

अ) पाँच ब) दस क) पंद्रह ड) बीस

8) .... पंचलाइट जलाना जानता था।

अ) गोधन ब) सरदार क) छडीदार ड) नायक

9) गोधन को .... ने भोजन का निमंत्रण दिया।

अ) मुनरी ब) कनेली क) गुलरी काकी ड) सरदार

7.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) पंचलाइट - पेट्रोमेक्स (गॅसबत्ती) **2) पुन्याह** - आरंभ

3) सभाचट्टी - बिरादरी, पंचायत **4) टोल** - मुहल्ला

5) मूलमैन - मुखिया

6) धुरखेल - मजाक

7) बंदिश - रुकावट

8) परतीत - यकिन, विश्‍वास

9) बखेडा - परेशानी, संघर्ष

10) मायूसी - उदासी

11) गुबछल - गालों तक बटी कटी मूँछ

12) पानी उतरना - इज्जत जाना

13) रोती सुरत बनाना - दु:खी होना

7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) ठुमरी
2) आँचलिक
3) आठ
4) गुलरी काकी
5) मुनरी
6) गोधन
7) दस
8) गोधन
9) गुलरी काकी

7.7 सारांश :

'पंचलाइट' रेणुजी की आँचलिक कहानी है। प्रस्तुत कहानी में बिहार के एक गाँव के महतो टोली के मुहल्ले का वर्णन किया है। महतो टोली के पंचायत के लोग रामनवमी के मेले में पंचलाइट खरीदते हैं। टोली में पंचलाइट आने के कारण सभी खूश एवं उल्लासित है। पंचलाइट के प्रकाश में ही भजन-कीर्तन होगा यह तय हुआ है। महतो टोली के सदस्यों के घर में आज ढिबरी भी नहीं जली है मगर इस पंचलाइट को जलाना कोई नहीं जानता था। सिर्फ गोधन ही पंचलाइट जलाना जानता था। गोधन को मुनरी के प्रेम के चक्कर में पडने के कारण सरदार ने जाति से बहिष्कृत किया था पर टोली की इज्जत बचाने के लिए उसे जाति में वापस लिया जाता है और गोधन पंचलाइट जलाकर टोली की इज्जत बचाता है। सरदार द्‌वारा गोधन को शाबाशी मिलती है और गुलरी काकी द्‌वारा भोजन का निमंत्रण मिलता है। गाँव के लोग अपनी बिरादरी की इज्जत को कितना महत्त्व देते हैं, इसका चित्रण प्रस्तुत कहानी में हुआ हैं। रेणुजी ने गाँव की रस्म-रिवाजों का वर्णन बखुबी किया है। कहानीकार को भारत के पिछडे गाँवों का चित्रण करने में सफलता मिली है।

7.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'पंचलाइट' कहानी का आशय लिखिए।
2) गोधन का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3) 'पंचलाईट' कहानी भारतीय गाँवो का चित्रण करती है, स्पष्ट कीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''कितने में लालटेन खरीद हुआ महतो?''

2) ''साँझ को पूजा होगी; जल्द से नहा-धोकर चौका-पीढी लगाओ।''

3) ''कान पकडकर पंचलैट के सामने पाँच बार, उठो-बैठो, तुरंत जलने लगेगा।''

4) ''तुमने जाति की इज्जत रखी है। तुम्हारा सात खून माफ।''

7.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'पंचलाइट' कहानी का नाट्यरूपांतर कीजिए।

7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) मार्कंड्येय की कहानियाँ।

2) प्रेमचंद की कहानियाँ।

3) आनंद यादव (मराठी) कहानियाँ।

◆◆◆

इकाई 3 (ख)

8. अकेली (कहानी)

- मन्नू भंडारी

अनुक्रम

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 विषय विवरण

  8.3.1 मन्नू भंडारी का परिचय

  8.3.2 'अकेली' कहानी का परिचय

  8.3.3 'अकेली' कहानी का कथानक

8.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

8.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

8.7 सारांश

8.8 स्वाध्याय

8.9 क्षेत्रीय कार्य

8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

8.1 उद्‌देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) मन्नू भंडारी के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व से परिचित होंगे।

2) 'अकेली' कहानी की कथावस्तु समझ लेंगे।

3) 'अकेली' कहानी के कथ्य को जान लेंगे।

4) नारी के संयत और एकाकी जीवन को समझ लेंगे।

5) नारी का परिवार एवं समाज के प्रति अपनापन समझ लेंगे।

8.2 प्रस्तावना :

स्वातंत्र्योत्तर काल की लेखिकाओं में मन्नू भंडारी का स्थान दीपस्तंभ की भाँति है। उनका कहानी साहित्य काफी समृद्ध है। मन्नूजी का कहानी संसार समाज जीवन से अत्यधिक निकट है। उनकी रचनाओं का प्रयत्न समस्याओं की तह तक पहुँचकर, उन्हें बिल्कुल निरावरण कर के पाठकों के सम्मुख रखने का रहा है। समस्याओं को यथावत् प्रस्तुत कर के पाठकों को विचार करने के लिए बाध्य करना तथा सही दिशा-निर्देशन द्वारा सामाजिक जागरण के लिए प्रयत्न उनके साहित्य की सचेतन उपलब्धि है। स्वयं मन्नू जी भी मानती है कि साहित्य सामाजिक परिवर्तन का साधन है और साहित्य समाज से जुडा रहे, तो ही परिवर्तन होगा।

हिंदी साहित्य में नारी को केंद्र में रखकर अनेक कहानियाँ लिखी गयी है मगर नारी के अंतर्मन को नारी ही पहचान सकती है अत: मन्नू जी द्वारा लिखी कहानी 'अकेली' नारी जीवन, उसके जिम्मे आयी उपेक्षा तथा नारी पीडा को रेखांकित करती है परिणाम स्वरूप हिंदी की महिला लेखिकाओं में मन्नू जी का स्थान शीर्षस्थ है।

8.3 विषय-विवरण :

8.3.1 मन्नू जी का परिचय :

प्रतिभाशाली लेखिका मन्नू भंडारी जी का जन्म 3 अप्रैल 1931 ई. में मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव में हुआ। मन्नू जी की माता का नाम अनुपकुंवारी तथा पिता का नाम श्री. सुख संपतराय था। मन्नू जी की माँ सुशील, ममतामयी एवं स्नेहमयी थी। वह अनपढ़ थी मगर व्यवहार कुशल थी। मन्नू जी के पिताजी लडकियों को शिक्षा और आजादी देने के पक्ष में थे जिसके कारण मन्नू जी शिक्षा प्राप्त कर अपनी स्वतंत्र पहचान बना सकी। मन्नू जी का बचपन का वास्तव नाम महेंद्रकुमारी था पर घर के लोग उसे प्यार से मन्नू नाम से संबोधित करते थे और वही नाम रूढ हो गया।

मन्नू भंडारी के दो भाई दो बहनें हैं। मन्नू पाँचवी और सबसे छोटी संतान है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में संपन्न हुई। बी. ए. में इनका हिंदी विषय नहीं था मगर एम्. ए. की उपाधि हिंदी विषय लेकर प्राप्त की। पति का साथ देने के लिए मन्नू जी कलकत्ता छोडकर दिल्ली आ गयी पर पति से अनबन हुयी थी। उनका राजेंद्र यादव से अंतर्जातीय विवाह हुआ था। मन्नू जी पुरस्कारों से दूर रहती थी। भारत सरकार द्वारा दिया गया 'पद्मश्री' सम्मान उन्होंने अस्वीकार किया था।

मन्नू जी का साहित्य परिचय :

महिला कहानीकारों में अपनी विशेष पहचान स्थापित करने में मन्नू जी सफल हो गई है। मन्नू जी ने निम्न रचनाओं का सृजन किया है।

आत्मकथा	-	एक कहानी यह भी
कहानी साहित्य	-	1) मैं हार गई, 2) तीन निगाहों की तस्वीर, 3) यही सच है, 4) एक फ्लेट सैलाब, 5) त्रिशंकू, 6) आँखों देखा झूठ (बाल कहानियाँ), 7) संपूर्ण कहानियाँ, 8) नायक, खलनायक, विदूषक
उपन्यास	-	1) एक इंच मुस्कान, 2) आपका बंटी, 3) स्वामी, 4) महाभोज, 5) कलवा (बाल उपन्यास), 6) आसमाता (बाल उपन्यास)
नाटक	-	1) बिना दीवारों के घर, 2) महाभोज (नाट्य रूपांतर), 3) प्रतिशोध तथा अन्य एकांकी

8.3.2 'अकेली' कहानी का परिचय :

मन्नू जी ने अपने साहित्य में नारी के जीवन की व्यथा, दु:ख, उसका अंतद्वंद्व और मन:स्थिति तथा एकाकीपन प्रधान रूप में चित्रित किया है। 'अकेली' कहानी में लेखिका ने सोमा बुआ का अकेलापन चित्रित किया है। यह अकेलापन केवल उसका ही नहीं अपितु पूरे समाज के अकेलेपन को बयान करता है। सोमा बुआ का जवान बेटा जाता रहा और पति तीरथ यात्रा के लिए चले गए। परिवार में अपना कहने लायक कोई बचा नहीं, जो सोमा बुआ का अकेलापन दूर करें। सोमा बुआ अकेली रहने के लिए विवश है। वह इस अकेलेपन से मुक्ति पाने के लिए व्याकुल है। वह आस-पास के लोगों के, पडोसियों के, रिश्तेदारों के, हर कार्य में मदद करती रहती है। यहाँ तक कि अपने मरे हुए बेटे की एक मात्र निशानी अँगूठी भी बेच देती है ताकि देवर के ससुरालवालों को शादी में वह कुछ दे सके। वह निमंत्रण आने की संभावना से जी-तोड बडी तैयारी करती है, पर उसे बुलावा नहीं आता। आखिर अपने काम में लगी रहती है। सोमा बुआ एक ऐसी उपेक्षित वृद्धा है, जो अकेलेपन से मुक्ति की तलाश में पारिवारिक कार्यों में सम्मिलित तो हो जाती है, पर कहीं भी जुड नहीं पाती हैं। पुत्रहीना वृद्धा धनहीन ही नहीं, बल्कि पति के यायावरी जीवन से भी समाज में मान-मर्यादा से वंचित रहती है। वह भरकस कोशिश करती है, ताकि उसका अकेलापन दूर हो, पर वह अकेलेपन को ढोने के लिए अभिशप्त है। सोमा बुआ की परिस्थितियों से निर्माण अकेलेपन को तोडने की छटपटाहट पाठक की संवेदना को छू लेती है।

8.3.3 'अकेली' कहानी का कथानक :

भारतीय साहित्य में परिवार का एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। पुराने समय में लोग सुख-दु:ख परिवार के साथ बाँटते थे पर आधुनिक काल में यह परिवार का भाव गायब हो गया है। वृद्ध नर-नारी इस समस्या को झेलते दिखायी दे रहे हैं। इस बदली हुई पारिवारिक स्थिति को मन्नू भंडारी की कहानी 'अकेली' में दिखाया गया है।

'अकेली' मन्नू भंडारी द्वारा लिखी गयी एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। इस कहानी में एक ऐसी औरत का वर्णन है जो अपने पति के होते हुए भी अकेली है। उस स्त्री का नाम सोमा है। लोग प्यार से उसे सोमा बुआ कहते हैं। इस कहानी में सोमा बुआ के मानसिक संसार का वर्णन किया गया है। उसका सोचना, अलग-अलग विषयों पर उसके विचार, परिस्थितियों को वह किस प्रकार संभालती है? आदि को इस कहानी में दिखाया गया है।

सोमा बुआ के इकलौते जवान बेटे हरखू की असमय मृत्यु हो गयी। मानो सोमा बुआ की जवानी चली गई। उसके पति तिरथवासी हो गए। उनके हरिद्वार चले जाने के बाद सोमा बुआ अकेली रह जाती है तथा वह अपने आप को समाज को सौंप देती है। वह सामाजिक कामों में अपना मन लगा देती है। वह सारी बिरादरी को ही अपना परिजन मानती है। उनसे जुडकर अपने मन के घावों पर मरहम लगाती फिरती है पर कोई उससे जुड नहीं पाता। उसे अपनी जिंदगी पास-पडोस वालों के भरोसे ही काटनी पडती थी। किसी के घर मुंडन हो, छटी हो, जनेऊ हो, शादी हो या गम, बुआ वहाँ पहुँच जाती और छाती फाडकर काम करती थी। हर साल में एक महिने के लिए उसके पति आते थे और सोमा बुआ के सामाजिक कामों में रोक-टोक करते थे। पति-पत्नी को एक दूसरे के साथ और सहयोग की आवश्यकता जितनी वृद्धावस्था में होती है, उतनी शायद यौवन में नहीं पर उसी का समुचित सहवास न मिले तो वृद्धत्व अधिक खलने लगता है।

एक दिन सोमा बुआ अपने पति से कहती है कि समधी के यहाँ के किसी लडकी का विवाह भगीरथ जी के यहाँ हो रहा है। सोमा बुवा पुराने रिश्ते की दुम पकडकर बुलावे की प्रतिक्षा की आस लगाए बैठती है। यहाँ तक की वह सारी तैयारी में बडी उत्साह के साथ लगी रहती हैं, साडी में माड़ लगाकर सुखा देती है। शादी में देने के लिए एक नई थाली में साडी, सिंदूर-दानी, एक नारियल और थोडेसे बताशे सजाए रखती है। यह सारी तैयारी उसने अपने मरे हुए बेटे की एकमात्र निशानी, अँगूठी बेचकर की है। बुलावे की प्रतिक्षा में दिनभर वह इंतजार करती रहती है। मुहरत पाँच बजे का है, मगर इंतजार में कब सात बज गए इसका पता तक नहीं लगता। अंधेरा होने जा रहा है। राधाने सोमा बुआ को सचेत करने पर उसे सच्चाई का अहसास हो जाता है। अंत में बुलावा नहीं आया। अपने-आप को अवमानित, उपेक्षित बुढ़िया सोमा बुआ के तन-मन का उत्साह बुझ जाता है। वह अपनी चूडियाँ, थाली में सजाया सारा सामान और सारी चीजें बडे जतन से संदूक में रख देती है और बुझे हुए दिल से अँगीठी जलाने लगती है।

8.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'अकेली' कहानी की लेखिका .... है।

अ) कीर्ति चौधरी   ब) मन्नू भंडारी   क) जया जादवानी   ड) रजनी तिलक

2) सोमा बुआ के पति साल में .... के लिए घर आते थे।

अ) एक महीना   ब) दो महीना   क) चार महीना   ड) छ: महीना

3) सोमा बुआ के .... की मृत्यु हो गयी थी।

अ) पति ब) बेटे क) भाई ड) माता

4) अकेली कहानी में .... अकेली है।

अ) माँ ब) राधा क) सोमा बुआ ड) मन्नू

5) समधिन के घर शादी की तैयारी के लिए सोमा बुआने .... बेची।

अ) तस्वीर ब) साडी क) किताब ड) अँगूठी

6) सोमा बुआ के पति .... थे।

अ) राजा ब) संन्यासी क) भिखारी ड) मंत्री

7) समधि के घर शादी का मुहरत .... बजे का था।

अ) तीन ब) चार क) पाँच ड) छः

8) सोमा बुआने थाली में सजायी सारी चीजें अंत में .... मे रखी।

अ) संदूक ब) जेब क) बक्से ड) अलमारी

8.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) सदमा - आघात
2) तजकर - त्यागकर
3) जनेऊ - जानवे
4) न्योता - निमंत्रण
5) बौछार - वर्षाव
6) हिचकी - उचकी
7) भूनना - भाजणे
8) समधी - व्याही
9) रेजगारी - चिल्लर
10) कलफ - खळ
11) अबरक - अभ्रक
12) संदूक - पेटी
13) सिंदूर दानी - कुंकवाचा करंडा, कोयरी

8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) मन्नू भंडारी
2) एक महीना
3) बेटे
4) सोमा बुआ
5) अँगूठी
6) संन्यासी
7) पाँच
8) संदूक

8.7 सारांश :

भारतीय साहित्य में परिवार का एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। पुराने समय में लोग सुख या दुःख परिवार के साथ

बाँटते थे पर आधुनिक काल में यह परिवार का भाव गायब हो गया है। मन्नू भंडारी की कहानी 'अकेली' एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। अपने जवान बेटे को खोने के बाद अपने पति के होते हुए भी सोमा बुआ अकेली है। अपने अकेलेपन के अहसास को भूलाने के लिए वह सामाजिक कामों में लगी रहती है। रिश्तेदारों के साथ संबंध बनाए रखने का भरकस प्रयास करती है। इस कहानी में सोमा बुआ के मानसिक संसार का वर्णन किया है। उसका सोचना, अलग-अलग विषयों पर उसके विचार, परिस्थितियों को वह कैसे संभालती है? इसका सुंदर वर्णन प्रस्तुत कहानी में हुआ है।

8.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) अकेली कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

2) सोमा बुआ का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3) सोमा बुआ सचमुच अकेली है, कहानी के आधारपर स्पष्ट कीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''अरे मैं कही चला जाऊँ सो ही उन्हें नहीं सुझता।''

2) ''अम्मा ! तुमने आज लाज रख ली।''

3) ''तू तो बाजार जाती है राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे खरीद लेना।''

4) ''मुझे क्या बावली ही समझ रखा है, जो बिना बुलाये चली जाऊँगी।''

5) ''पर सात कैसे बज सकते हैं? मुहरत तो पाँच बजे का था।''

8.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'अकेली' कहानी का नाट्यरुपांतर कीजिए।

8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) प्रेमचंद की कहानियाँ।

2) विजया राजाध्यक्ष की (मराठी) कहानियाँ।

◆◆◆

इकाई 3 (ग)

9. चीफ की दावत (कहानी)

- भीष्म साहनी

अनुक्रम

9.1 उद्‌देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 विषय विवरण

- 9.3.1 भीष्म साहनी का परिचय
- 9.3.2 'चीफ की दावत' कहानी का परिचय
- 9.3.3 'चीफ की दावत' कहानी का कथानक

9.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

9.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

9.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

9.7 सारांश

9.8 स्वाध्याय

9.9 क्षेत्रीय कार्य

9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

9.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) भीष्म कहानी के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व से परिचित होंगे।

2) 'चीफ की दावत' कहानी की कथावस्तु समझ लेंगे।

3) 'चीफ की दावत' कहानी के कथ्य को जान लेंगे।

4) आधुनिक युग में बदलते पारिवारिक संबंध समझ पायेंगे।

5) मनुष्य रिश्तों की तुलना में पद और प्रतिष्ठा को अहम मान रहा है, इस कथ्य को समझ पाएंगे।

9.2 प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में कहानी विधा विशेष लोकप्रिय है। आधुनिक कहानी साहित्य में विविध विषयोंपर कहानियाँ लिखी गयी है। कहानियों में सामाजिक समस्या तथा अन्य विषयों को रेखांकित किया गया है। जैसे जैसे समाज विकसित होता गया वैसे परिवार का विघटन होता गया। समाज की पारिवारिक स्थिति एकल परिवार और संयुक्त परिवार ऐसे दो भागों में विभाजित हो गई। संयुक्त परिवारों में भी सदस्यों के प्रति संवेदना कम होती गयी। मनुष्य पद और प्रतिष्ठा को अत्यधिक महत्त्व देने लगा।

हिंदी के अनेक कहानीकारों ने पारिवारिक समस्याओं को रेखांकित किया है। मानवीय संवेदनाओं को उद्‌घाटित किया है। समाज में स्थित मध्यवर्ग के अंतरंग को चित्रित किया है। कुछ कहानीकारों ने व्यंग्यात्मक शैली में मध्यवर्ग के परिवार में आपसी सह-संबंध को उद्‌घाटित किया है।

9.3 विषय-विवरण :

9.3.1 भीष्म साहनी का परिचय :

भीष्म साहनी जी का जन्म सन 1915 ई. में रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ। उन्होंने लाहौर के सरकारी कॉलेज से अंग्रेजी विषय लेकर एम्. ए. किया। देश के विभाजन के समय उन्होंने काँग्रेस की रिलीफ कमिटी में काम किया। वे लगभग एक साल बंबई में रह चुके है। इसके पश्चात उन्होंने दिल्ली के एक कॉलेज में अंग्रेजी के वरिष्ठ प्रवक्ता पद पर काम किया। कुछ साल मास्को में उन्होंने विदेशी प्रशासन गृह में अनुवादक के रूप में कार्य कियां टॉलस्टॉय, आस्त्रावस्की आदि की रचनाओं का भी उन्होंने अनुवाद किया। 'नई कहानियाँ' नामक कहानी पत्रिका का कुछ साल उन्होंने संपादन किया।

प्रकाशित रचनाएँ :

कहानी संग्रह - 'भटकती राख', 'भाग्यरेखा', 'पहला पाठ', 'पटरियाँ', 'वाङ्चू' आदि।

उपन्यास - 'झरोखें', 'कडियाँ', 'तमाचे' आदि।

9.3.2 'चीफ की दावत' कहानी का परिचय :

भीष्म साहनी जी की कहानी 'चीफ की दावत' में व्यंग्य और करूणा का अपूर्व संगम है और इसी कारण यह एक श्रेष्ठ कहानी बन चुकी है। एक पंजाबी युवक मिस्टर शामनाथ कहानी का नायक है। उसपर अंग्रेजी सभ्यता का रंग चढा हुआ है। इस अंग्रेजी सभ्यता में वह इतना रंग जाता है कि उसे अपनी गरीब, अनपढ़ माँ गँवार लगने लगती है। शामनाथ अपनी तरक्की के लिए चीफ को प्रसन्न करने के उद्देश्य से वे उन्हे दावत देने के लिए घर आमंत्रित करते हैं।

घर में पार्टी का आयोजन निश्चित होता है मगर शामनाथ को अपनी बूढी माँ का घर में होना खलता है। चीफ के आने के पूर्व माँ को कहाँ भेजा जाए? यह एक समस्या शामनाथ के सामने है। अंत में शामनाथ ओर उसकी पत्नी निर्णय लेते है कि माँ को अच्छे कपडे पहनाकर कोठरी में रखा जाए। वह वहाँ जाकर सोयें नहीं क्योंकि उनकी खर्राटे लेने की आदत है। घर में माँ की उपस्थिति उसे अपनी तरक्की में बाधा महसूस होती है। वस्तुत: आज का मानव खंडित जीवन जी रहा है। उसकी विडंबना यह है कि वह न किसी का बन सकता है और न ही किसी को अपना बना सकता है।

9.3.3 'चीफ की दावत' कहानी का कथानक (समीक्षा) :

शामनाथ एक दप्तर में काम करते हैं। अपनी तरक्की के लिए चीफ को प्रसन्न करने के उद्देश्य से वे उन्हें अपने घर दावत पर आमंत्रित करते है। उनके चीफ एक अमेरिकन व्यक्ति है, अत: उन्हे प्रसन्न करने के लिए घर का पूरा वातावरण उसी रूप में प्रस्तुत करने के लिए शामनाथ और उनकी पत्नी निरंतर लगे हुए हैं। कहाँ, कब, कैसे, क्या रखना, लगाना, सजाना है, इसी तैयारी में पूरा समय व्यतित हो रहा था पर अचानक माँ का ध्यान आ गया। माँ का ध्यान आते ही दोनों पति-पत्नी बेचैन हो उठते हैं। माँ बूढी हो गयी है, अत: चीफ के सम्मुख उनका होना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं होगा। दोनों विचार करते हैं कि माँ को कहाँ भेज दिया जाये? कभी कोठरी में, कभी बरामदे में तो कभी उनकी सहेली के पास भेजे जाने का प्रस्ताव एक-एक करके नकारे जाते हैं। अंतत: निश्चय किया जाता है कि माँ बेटे के पसंद के कपडे पहनकर, जल्द ही खाना खाकर अपनी कोठरी में चली जायें और साथ ही ध्यान रखें कि वे सोयें नहीं क्योंकि उनकी खर्राटे लेने की आदत है।

डरी सहमी माँ बेटे की हर बात को सिर झुकाकर स्वीकार करती है। वह गाँव में रहनेवाली एक अनपढ़ औरत है जो प्रत्येक स्थिति में बेटे का ही भला चाहती है। शर्मिली, लजीली, धार्मिक विचारों वाली माँ को कुर्सी पर ढंग से बैठने का तरीका भी सिखाया जाता है, क्योंकि अगर कहीं गलती से साहब का माँ से सामना हो जाये तो शामनाथ को शर्मिन्दा न होना पडे।

साहब और उनके सभी साथी लगभग आठ बजे तक पहुँच गए। विस्की का दौर चलने लगा। दफ्तर में रौब रखने वाले साहब यहाँ पूरी तरह से मुक्त व्यवहार कर रहे थे। पीना पिलाना समाप्त होने पर सभी खाना खाने के लिए बैठक से बाहर जा रहे थे कि अचानक सामने कुर्सी पर बैठी, सोती हुई माँ सामने पड गई। माँ पर बेटे को बहुत क्रोध आया पर मेहमानों के सामने कुछ भी नहीं कह पा रहे थे। शामनाथ साहब के लिए परेशान थे पर साहब तो अलग

प्रवृत्ति के व्यक्ति निकले। उन्होंने माँ से हाथ मिलाया, गाना सुना। विदेशी साहब के इस उन्मुक्त व्यवहार के कारण देसी साहब भी माँ को उसी दृष्टि से देखने लगे पर माँ लज्जा के कारण अपने में सिमटती जा रही थी। साहब के कहने पर उन्होंने एक पुरानी फुलकारी भी लाकर दिखाई। माँ के इस कार्य से प्रसन्न साहब चाहते है कि माँ उनके लिए एक नई फुलकारी बनाकर दें। हिचकिचातें हुए माँ उनके इस अनुरोध को स्वीकार करती है। बेटे की तरक्की का प्रश्न है इसलिए आँखों की रोशनी कम होने पर भी इसके लिए प्रयत्नशील होने का वायदा करती है। वे तो सब कुछ छोडकर हरिद्वार जाना चाहती थी, पर इस परिस्थिति में उन्हें अपना इरादा बदलना पडा। इसके बाद शामनाथ निश्चिंत होकर पत्नी के साथ अपने कमरे में चले गए और माँ भी चुपचाप अपनी कोठरी में लौट गई।

कथानक की दृष्टि से यह कहानी प्रेमचंद परंपरा का ही विकास है। कहानी प्राय: अनुभूति का अभिव्यक्तिकरण होती है। 'चीफ की दावत' में घटना छोटी-सी है। गहराई से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि घटना का विकासक्रम अत्यंत स्वाभाविक है। चीफ का माँ को देखना लज्जा का नहीं गौरव का विषय बन गया और यहीं से घटना ने अप्रत्याशित मोड लिया पर कहानी अभी और भी है। दावत के बाद शामनाथ का माँ के पास आना-कथानक की दूसरी विशेषता है। पहली विडंबना है - माँ का फालतू सामान होना। दूसरी है - पुत्र की उन्नति के लिए हरिद्वार जाने की इच्छा की बली देकर फुलकारी बनाने के लिए तैयार होना। जो माँ आत्मग्लानि वश अपने कमरे फूट-फूटकर रोती है, वही पुत्र की तरक्की की बात सुनकर खिल उठती है। माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उनका झुर्रियों भरा मुँह खिलने लगा, आँखों में हल्की-हल्की चमक आने लगी।

9.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'चीफ की दावत' कहानी के कहानीकार .... है।

   अ) प्रेमचंद ब) फणीश्वरनाथ रेणु क) जैनेंद्र ड) भीष्म साहनी

2) 'चीफ की दावत' कहानी का नायक .... है।

   अ) शामनाथ ब) रामनाथ क) सोमनाथ ड) विश्वनाथ

3) शामनाथ ने अपनी .... के लिए दावत का आयोजन किया था।

   अ) नौकरी ब) तरक्की क) पत्नी ड) माँ

4) शामनाथ ने अपनी तरक्की के लिए .... का आयोजन किया था।

   अ) दावत ब) कीर्तन क) नाच-गाना ड) भजन

5) चीफ की दावत के आयोजन में घर में .... की बाधा थी।

   अ) पिता ब) भाई क) माँ ड) चाचा

6) शामनाथ की माँ .... जाना चाहती है।

अ) हरिद्वार ब) पंढरपुर क) काशी ड) अमरनाथ

7) माँ चीफ को .... देने का वायदा करती है।

अ) फुलकारी ब) संदूक क) शाल ड) किताब

8) चीफ और सभी शामनाथ के घर दावत के लिए लगभग .... बजे तक पहुँच जाते हैं।

अ) सात ब) आठ क) नौं ड) दस

9.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) खर्राटे - घोरणे

2) फहरिस्त - सूची

3) मुकम्मल - निश्चित

4) सुभीते - सुचारू

5) उँघना - पेंगणे

6) तरक्की - बढती

7) खिदमत - सेवा

9.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) भीष्म साहनी

2) शामनाथ

3) तरक्की

4) दावत

5) माँ

6) हरिद्वार

7) फुलकारी

8) आठ

9.7 सारांश :

भीष्म साहनी ने अपनी कहानी 'चीफ की दावत' में मानवीय संवेदनाओं को बडी सजगता से चित्रित किया है। प्रस्तुत कहानी में मध्य वर्ग के परिवारों का अंतरंग बडी सशक्तता से वर्णित है। 'चीफ की दावत' व्यंग्य और करुणा से भरी कहानी है। प्रस्तुत कहानी में बडी तेजी से बदलती दुनिया में बदलते नाते-रिश्ते का जिक्र करते हुए पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण पर व्यंग्य कसा है। लेखक ने माता-पिता के प्रति बच्चों के बर्ताव का सुंदर वर्णन प्रस्तुत कहानी में किया है। कहानी का नायक पंजाबी युवक मिस्टर शामनाथ के आरमान पूरे होने के बजाय वह अंग्रेजी सभ्यता में ऐसा रंग जाता है कि उसे अपनी अनपढ़, गरीब माँ गँवार लगने लगती है। पार्टी के दौरान वह अपनी माँ को कोने की कोठरी में छिपाता चाहता है। पार्टी में हिंदुस्थानी अफसर और उनकी अधकचरी औरतें बूढी माँ को हँसी-मजाक का विषय बनाती है किंतु अंग्रेजी साहब द्वारा आत्मीयता दिखाने पर शामनाथ को अपनी माँ प्यारी लगती है। प्रस्तुत कहानी का एक महत्त्वपूर्ण अंश है इसमें माँ का मनोवैज्ञानिक चित्रण है। वह एक ऐसी नारी है जिसने परिस्थितियों के सामने सिर झुका दिया था पर अचानक पार्टी के समय चीफ के सम्मुख आ जाने से सब कुछ बदल गया। बेकार

की चीज अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन गई। इस परिस्थिति में माँ का अत्यंत मर्मस्पर्शी चित्रण है। साथ ही बेकार बूढी माँ के चित्रण के माध्यम से बुजुर्ग पीढी की दयनीयता भी स्पष्ट होती है।

9.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'चीफ की दावत' कहानी का आशय लिखिए।
2) शामनाथ का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3) शामनाथ की बूढी माँ का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4) परिवार के सदस्यों के प्रति बदलती संवेदना को 'चीफ की दावत' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''वाह ! तुम माँ और बेटे की बातों में मै क्यों बुरी बनूँ। तुम जाने और वह जाने।''
2) ''चूडियाँ कहाँ से लाऊँ बेटा, तुम तो जानते हो सब जेवर तुम्हारी पढाई में बिक गये।''
3) ''तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनायेगा?''
4) ''तरक्की यूँ ही हो जाएगी? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेगा।''

9.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) चीफ की दावत का नाट्यरूपांतर कीजिए।

9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) जैनेंद्र की कहानियाँ।
2) आनंद यादव (मराठी) की कहानियाँ।

◆◆◆

इकाई 4 (क)

10. संस्कार और भावना (एकांकी)

- विष्णु प्रभाकर

अनुक्रम

10.1 उद्‌देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 विषय विवरण

  10.3.1 विष्णु प्रभाकर का परिचय

  10.3.2 'संस्कार और भावना' का परिचय

  10.3.3 'संस्कार और भावना' का आशय

10.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

10.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

10.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

10.7 सारांश

10.8 स्वाध्याय

10.9 क्षेत्रीय कार्य

10.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

10.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) एकांकीकार विष्णु प्रभाकर जी के साहित्य से परिचित होंगे।

2) 'संस्कार और भावना' एकांकी से परिचित होंगे।

3) 'संस्कार और भावना' एक पारिवारिक एकांकी है, इससे पारिवारिक संबंधों को समझ पाएंगे।

4) आपसी रिश्तों के संबंधों में प्रेम व स्नेह से बढकर कुछ नहीं होता इसको दिखाने का उद्देश्य है।

5) यदि रिश्तों को बचाने के लिए हमें परंपरा और संस्कारों से समझौता भी करना पडे तो अवश्य करना चाहिए इस को देख सकेंगे।

6) सभी संस्कार और परम्पराएँ मनुष्य के सुख और शांतिपूर्ण जीवन के होते हैं इसे समझ पाएंगे।

10.2 प्रस्तावना :

एक अंक वाले नाटकों को एकांकी कहते है। अंग्रेजी के 'वन ऐक्ट प्ले' (One Act Play) शब्द के लिए हिंदी में 'एकांकी नाटक' और 'एकांकी' दोनों शब्दों का प्रयोग होता है। माना जाता है वर्तमान स्वरूप में 'एकांकी' ने पश्चिमी का प्रभाव ग्रहण किया है। हमारे प्राचीन भारतीय साहित्य में भी एकांकी के समान लघु नाट्य-रूप पाये जाते हैं - जैसे नाटिका, प्रहसन इ.। इन नाट्य-रूपों में एक ही अंक होता था और इन्हें उप-रुपक कहा जाता था। इसी प्रकार 'दशरूपक और साहित्यदर्पण' में वर्णित न्यायोग, प्रहसन, भाग, वीथी नाटिका, गोष्टी, सहक, नाट्यरासक, प्रकाशिका, काव्य प्रेखण, श्रीगदित, विलासिका, प्रकरणिका, हल्पीश आदि रूपकों और उपरूपकों को आधुनिक एकांकी के निकट संबंधी सहना अनुचित न होगा। इसी तरह आधुनिक एकांकी अपने छोटे से कलेवर में बहुत कुछ समेट लेता है। कही किसी कुप्रथा पर प्रश्न चिन्ह् लगाता है, कहीं सामाजिक अन्याय पर तिलमिलाता छोड देता है या संस्कृति और परंपरा पर सवाल पूछता है। ये जीवन की कोई एक महत्त्वपूर्ण घटना या किसी एक समस्या को लेकर चलते है।

आधुनिक काव्य में हिंदी साहित्य के भारतेन्दु हरिश्चंद्र से एकांकी की शुरुआत मानते है। कुछ आलोचक जयशंकर प्रसाद के 'एक घूँट' को हिंदी का प्रथम एकांकी मानते है। इसके बाद भुवनेश्वर प्रसाद के 'कारवाँ' एकांकी संग्रह ने हिंदी एकांकी को नया मोड दिया। इसके साथ रामकुमार वर्मा, सेठ गोविन्ददास, कृष्णचंद्र, विष्णु प्रभाकर, जगदीशचंद्र माथुर, लक्ष्मीनारायण लाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, शंकर शेष, उदयशंकर भट्ट, हरिकृष्ण प्रेमी, गणेश प्रसाद द्विवेदी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश, सुरेंद्र वर्मा, सुरेशचन्द्र शुक्ल आदि सफल एकांकीकार माने जाते है।

10.3 विषय-विवरण :

10.3.1 विष्णु प्रभाकर का परिचय :

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून 1912 में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के मीरापुर गांव में हुआ। उनके पिता का नाम दुर्गाप्रसाद था। वे धार्मिक विचारोंवाले व्यक्ति थे। माता का नाम महादेवी था। उन्होंने उस समय में पर्दा

प्रथा का विरोध किया था। पत्नी का नाम सुशीला था। हायस्कूल की शिक्षा अपने मामा के घर हिसांर में की गयी जो तब पंजाब प्रांत का हिस्सा था। पंजाब विश्वविद्यालय से बी. ए. तथा प्रभाकर करके बाद उन्होंने वही सरकारी कार्यालय में नौकरी कर ली। फिर कुछ ही समय के बाद वे आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र से नाटक विभाग के एक अधिकारी के रूप में संबद्ध हो गये। कुछ वर्षो तक कार्यरत रहने के बाद विष्णु प्रभाकरजी दिल्ली में ही रहकर स्वतंत्र लेखन में जूडे रहे। सन् 2004 में वे तब सुर्खियों में आए जब राष्ट्रपती भवन में कथित हर्न्यवाहर के विरोध स्वरूप उन्होंने 'पद्मभूषण' की उपाधि लौटाने की घोषणा की। उनका आरंभिक नाम विष्णु दयाल था। एक संपादक ने उन्हें 'प्रभाकर' यह उपनाम रखने की सलाह दी थी। उनके परिवार में दो बेटे और दो बेटियाँ है। उनकी मृत्यु 11 अप्रैल 2009 में न्युमोनिया के कारण दिल्ली में हुयी थी।

विष्णु प्रभाकरजी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी जीवनी, निबंध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, कविता तथा यात्रा-वृत्तांत आदि विभिन्न विधाओं में सौ से अधिक सफलतापूर्वक रचनाएँ की है। 'आवारा मसीहा' सर्वाधिक चर्चित जीवनी है। सन् 1938 में आप एकांकी लेखन कर रहे थे। आपके चौदह एकांकी संग्रह में दो सौ पच्चास से अधिक एकांकियों की रचना की है। इन्सान और अन्य एकांकी (1947), क्या वह दोषी थी? (1951), अशोक (1956), बारह एकांकी (1958), दस बजे रात (1959), ये रेखाएँ ये दायरे (1963), ऊँचा पर्बत गहरा सागर (1966), तीसरा आदमी (1974), डरे हुए लोग (1978), प्रकाश और परछाई (मेरे प्रिय एकांकी) (1970), मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी (1980) आदि एकांकी संकलन है। साथ ही चार बाल-एकांकी संकलन प्रकाशित हुए है - कुन्ती के बेटे, अभिनव एकांकी, अभिनव-अभिनय एकांकी, नूतन बाल एकांकी आदि। इनके एकांकी साहित्य में रोमानी जीवन की अपेक्षा जीवन का कठोर सत्य, व्यावहारिक आदर्शवाद, गांधीवाद, मानवीय संवेदना और समाज व्यवस्था के ऱ्हास और आडंबर का चित्रण मिलता है।

10.3.2 'संस्कार और भावना' का परिचय :

'संस्कार और भावना' बारह एकांकी संग्रह मे से संकलित है। प्रस्तुत एकांकी 'संस्कार और भावना' में विष्णु प्रभाकर ने भारतीय हिंदू परिवार के पुराने संस्कारों से जकडी हुई रूढीवादिता माँ और आधुनिक परिवेश में पले बढ़े बच्चों के बीच संघर्ष की चेतना को चित्रित किया गया है। एकांकीकार ने इस प्रसिद्ध एकांकी के माध्यम से मानव मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। एक भारतीय मध्य वर्गीय परिवार की माँ अपने पुराने संस्कारों से बद्ध है। वह नयी बातों को स्वीकार नहीं रही है। अपने बडे पुत्र अविनाश ने एक बंगाली युवती से विवाह कर लिया है इसके कारण वे बडे बेटे से रिश्ता भी तोड देती है।

एकांकी में माँ प्रमुख पात्र बनकर आती है। उनके दो पुत्र अविनाश तथा अतुल है। माँ विजातीय बहू को न अपना सकी इसलिए अविनाश अपनी पत्नी के साथ अलग घर लेकर रह गया है। यहाँ माँ, छोटे बेटे अतुल और उसकी पत्नी उमा साथ रहती है। एक बार जब माँ को पता चलता है कि, अविनाश को जानलेवा हैजे की बीमारी हुई थी तब उनकी बंगाली बहू द्वारा की गई सेवा से वह बच जाता है इस कारण अब खुद अविनाश की पत्नी बीमार है

जिसमें उसमें बचाने की ताकत अविनाश में नहीं है। जब माँ को अविनाश की पत्नी की बीमारी की सूचना मिलती है तब उसका हृदय मातृत्व की भावना से भर उठता है। उसे इस बात का आभास है कि यदि बहू को कुछ हो गया तो अविनाश नहीं बचेगा। इस तरह अंत में पुत्र प्रेम प्रबल हो जाता है और वे अपने बहू, बेटे को अपनाने का निश्चय करती है।

10.3.3 'संस्कार और भावना' का आशय :

'संस्कार और भावना' विष्णु प्रभाकर की प्रसिद्ध एकांकी है। इस एकांकी में परम्परागत संस्कार और मानवीय भावनाओं के बीच के द्वंद्व को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत परिवार में माँ एक प्रमुख पात्र के रूप में उभर कर आती है। वही पुरानी पीढ़ी की एक प्रौढ नारी है। वह अपने संस्कारों को छोडना नहीं चाहती लेकिन पुत्र-प्रेम की मानवीय भावना से प्राचीन संस्कार और रूढियाँ दुर्बल हो जाती है। अविनाश ने विजातीय (बंगाली) कन्या से विवाह किया था। किसी ने इस विवाह का समर्थन नहीं किया। अविनाश की माँ ने इसका सबसे ज्यादा विरोध किया और उसको घर से निकाल दिया। माँ अपने छोटे बेटे अतुल और उसकी पत्नी उमा के साथ रहती है पर बडे बेटे से अलग रहना उसके मन को कष्ट पहुँचाता है।

'संस्कार और भावना' एकांकी में एक मध्यवर्गीय परिवार के घर के आँगन का दृश्य दिखाया गया है। जिसमें उमा एक पुस्तक पढ रही है। वह पुस्तक पढ़ते-पढ़ते सोचने लगती है धीरे-धीरे से फुसफुसाती है - ''जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं वे ही बाते हम चुपचाप करने को तैयार रहते हैं, एक समय आता है वे ही बातें हम चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं।'' इस वाक्य से लेखक प्रारंभ में संदेश देकर जो लोग पारंपारिक रूढीवादी संस्कार से रक्षा करना अपना कर्तव्य समझते हैं वे ही लोग विरोध करके आधुनिक विचारों को स्वीकार कर लेते हैं। माँ अपने बडे बेटे अविनाश को विजातीय कन्या से विवाह करने से घर से बाहर करती है। वह उसको पुनःस्वीकार करती है। माँ उमा को कह रही थी पिछले महिने अविनाश बीमार था। उसे कुमार की मिसरानी ने बताया था। इससे माँ अपने बेटे की खबर पाकर रोती है। उमा अपनी सास को सान्त्वना देती और कहती है, ''अपराध आपका नहीं है। माँ बडी बहू का गौरव करती है। अपने प्राण देकर उसने पति को बचा लिया है। अकेली थी, पर किसी के आगे हाथ पसारने नहीं गई। हैजे के बीमार से लडके की खबर उसे पता नहीं लगती है। माया-ममता बाप की तरह उन बेटों को भी नहीं है इसका उसे दुःख है।

उमा माँ को कहती है, ''आपका उनपर गुस्सा होकर बहुत दुःखी हो रही थी, तब मैं भाभी के पास गई थी। वे बंगाली इतने सुंदर होते की मेरा स्वागत किया, पहचानसे गले मिला दिया। जैसे की मै लडने गयी थी क्योंकि वे ही आपके दुःख का कारण थी। उसीने बडे भैय्या को आपसे अलग कर दिया था। तब भाभी ने कहा था मेरा क्या दोष था?'' उन्होंने कहा था, ''माँ-बेटे के सम्बन्ध से बढकर और कोई सम्बन्ध नहीं है परंतु साथ ही पति से बढ़कर पत्नी के लिए भी और कुछ नहीं है। पति भी वह, जिसके लिए उसने समाज ही नहीं, वरन् हृदय की साक्षी दी है; जिसे वह प्यार करती है; उसके कहने पर वह प्राण दे सकती है।'' आगे कहती है कि, ''तुम स्वयं पत्नी हो। अतुल से प्यार करती

है। उसे क्या तुम छोड सकती हो?'' उन्होने कहाँ, ''तुम अतुल से प्यार करती हो जो यहाँ आते है।'' यह सुनते ही वहाँ से भाग निकली। माँ कहती है, ''उमा तुम भी जाकर आयी हो। अतुल भी भैय्या और भाभी के पास जाता है। तुम निर्मल हो, मैं ही मोह-ममता में फँसी हुई हूँ। उसे लगता है की संस्कारों की दासता से जकडी हुई है।''

अतुल का प्रवेश होता है। उसे माँ कहती है कि, ''सुना है, क्या अविनाश बीमार है? अतुल कहता है, हाँ उसे हैजा की बीमारी हो गयी थी। माँने कहा कि, ''तुम जानते हुए मुझे बताया तक नहीं।'' तब अतुल ने कहा था कि, ''तुम नहीं जाओगी ?'' अतुल माँ से कहता है, ''जब तक तुम निम्न श्रेणी की विजातीय भाभी को घर नहीं ला सकती, तब तब प्रेम और ममता की दुहाई व्यर्थ है। तुम सब निर्मम हो, निर्मम....'' उन्होंने आगे भी कहा, ''तुम निर्मम ही नहीं कायर भी हो जिन संस्कारों में पली हो उसे तोडने की शक्ति तुम में नहीं है।'' वह आगे भी कहता है, ''भाभी से बढकर भैया का और कोई नहीं है।''

माँ को मिसरानी ने आकर यह खबर दी थी कि, अविनाश अच्छा हुआ तो उसकी बहु बीमार पड गयी है। जिससे बचने की कोई आशा नहीं है। यह बात अतुल से कहने पर उन्होंने कहा कि, ''मुझे पता है भाभी मरणासन्न है और ''यह भी पता है कि अपने प्राण खपाकर भाभी ने भैया को बचा लिया था परंतु भैया के पास भाभी को बचाने के लिए प्राण नहीं है।'' यह भी कहा कि, ''भैया के पास पैसे नहीं है परंतु वे किसी के आगे हाथ नहीं पसारेंगे वे फौलाद जैसे है। टूट जाएँगे मगर झुकेंगे नहीं।'' इसपर माँ कहती है कि, ''बहू को कुछ हो गया तो शायद अविनाश भी नहीं बच पायेगा। उसे बचाने की शक्ति केवल मुझमें है।'' वह अतुल से अविनाश के यहाँ ले जाने को कहती है। अतुल माँ को यह भी सुना देता है कि, ''यदि तुम उच-नीच कुल की विजातीय भाभी को इस घर में नहीं ला सकी तो जाने से कुछ नहीं हो सकता।'' अंत में माँ अपने बेटे अविनाश और उसकी बँगालीन बहू को स्वयं घर ले आती है क्योंकि वह माँ है। अपनी संतान का दु:ख नहीं सह सकती। भले ही इससे पूर्ण संस्कारों की दासता से जकडे होने के बाद भी वह बेटे और बहू स्वीकार करती है क्योंकि संतानों के दु:ख से माँ वात्सल्य जाग उठता है। इसी तरह पुत्र-प्रेम की भावना संस्कारों के बाँध को तोडती है।

विष्णु प्रभाकरजी ने 'संस्कार और भावना' एकांकी में यह दिखाया है कि, यदि रिश्तों को बचाने के लिए हमें संस्कार और परंपरा से समझौता भी करना पडे तो अवश्य करना चाहिए। लेखक ने यह भी बताया है कि, सभी संस्कार व परम्पराएँ मनुष्य के जीवन में बाधा पडने लगे तो उन्हे हमें त्याग देना चाहिए। इस प्रकार संस्कारों पर भावनाओं की जीत होती है। यह शीर्षक एकांकी को सार्थक लगता है।

10.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) एकांकी के लिए अंग्रेजी में .... शब्द का प्रयोग होता है।

अ) ड्रामा ब) स्कैच क) वन एक्ट प्ले ड) एस्से

2) 'विष्णु प्रभाकर' जी का जन्म .... गाँव में हुआ।

अ) मीरापुर ब) बेनीपुर क) आगरा ड) मुंबई

3) ‘संस्कार और भावना’ एकांकी का प्रमुख पात्र .... है।

अ) अविनाश　　ब) उमा　　क) अतुल　　ड) माँ

4) माँ के बडे बेटे अविनाश ने विजातीय .... कन्या से विवाह किया था।

अ) आसामी　　ब) बंगाली　　क) तमिली　　ड) कश्मिरी

5) अतुल की पत्नी का नाम .... था।

अ) मिसरानी　　ब) उमा　　क) रजिया　　ड) राधा

6) अविनाश को .... की बीमारी हुई थी।

अ) हैजे　　ब) अतिसार　　क) कर्करोग　　ड) शीतलामाता

7) ‘संस्कार और भावना’ यह एकांकी एक .... परिवार की कहानी है।

अ) निम्नवर्गीय　　ब) उच्चवर्गीय　　क) मध्यवर्गीय　　ड) निम्न-मध्यवर्गीय

10.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) रक्तिम आभा - लाल चमक　　**2) बहुनेश -** बहुत अधिक

3) मिसरानी - ब्राह्मण स्त्री जो आजीविका के लिए दूसरों के लिए खाना पकाती है।

4) हैजा - एक रोग का नाम　　**5) विद्रुप -** व्यंग्य

6) साक्षी - गवाह　　**7) कपोलों पर -** गालों पर

8) पचडे - बेकार की बाते　　**9) विजातीय -** अन्य जाति की

10) फौलाद - मजबूत शरीरवाला, कठिन

10.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) वन एक्ट प्ले　　2) मीरापुर

3) माँ　　4) बंगाली

5) उमा　　6) हैजे

7) मध्यवर्गीय

10.7 सारांश :

1) ‘संस्कार और भावना’ एकांकी मध्यवर्गीय परिवार के घर की कहानी है।

2) लेखक ने एकांकी के माध्यम से हिंदु परिवार के पुराने संस्कारों से जकडी माँ और आधुनिक विचारोंवाले बेटे के द्वंद्व को चित्रित किया है।

3) अविनाश ने दूसरी जाति की युवती से विवाह किया था। माँ अपने छोटे बेटे अतुल और उसकी पत्नी उमा के साथ रहती है पर बडे बेटे से अलग रहना उसके मन को कष्ट पहुँचाता है।

4) एक बार माँ को पता चलता है कि, अविनाश को प्राणघातक हैजे की बीमारी हुई थी तब उसकी बंगाली पत्नी अपनी जान की बाजी लगाकर उसकी जान बचाती है। माँ को बडी बहू के प्रति मन में आस्था जाग उठती है। अतुल और उमा भी उसीका गुणगान करते है।

5) अविनाश को पत्नीने बचा भी लिया लेकिन उसमें वह खुद बीमार पडी। अब अविनाश में उसे बचाने की ताकत नहीं है। अविनाश के पास पैसे न होने के कारण किसी के आगे हाथ नहीं पसारेगा। अतुल कहता है, ''भाभी की जान बचाने की ताकद अभी भैया में नहीं है। भाभी से जान से ज्यादा प्यार करता है। वह मर गयी तो भैया भी प्राण गवाँ सकता है।''

6) जब माँ को अविनाश की पत्नी की बीमारी की खबर मिलती है तब उसका मन मातृ-प्रेम की भावना से भर उठता है। उसे इस बात का पता लगता है, यदि बडी बहू मर गयी तो अविनाश मर सकता है। तब पुत्र-प्रेम की भावना से पुराने संस्कार जर्जर होते हैं और वह अपने बेटे और बहू को अपनाने का निश्चय करती है।

7) एकांकी में लेखक ने यह बताया है - ''अपने जीवन में आदर्शों तथा सिद्धांतों को लेकर चलना अच्छी बात है लेकिन उन आदर्शो और सिद्धांतो को ढोना सही नहीं है। यदि रिश्तों को बचाने के लिए हमें अपने संस्कारों और परंपरा से समझौता करना पडे तो अवश्य करना चाहिए।''

8) आलोच्य एकांकी द्वारा के लेखक ने बताया है कि, ''सभी संस्कार व परम्पराएँ मनुष्य के सुख व शांतिपूर्ण जीवन के लिए होते हैं। यदि इनके कारण मनुष्य के जीवन में बाधा पडने लगी तो उन्हे हमें त्याग देना चाहिए।''

10.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) माँ का चरित्र चित्रण कीजिए।
2) मिसरानी माँ को कौनसी खबर देती है? विवेचन कीजिए।
3) अतुल और उमा का बडे भाई अविनाश और बडी बहू के बारे में क्या रवैया है, जानकारी दीजिए।
4) माँ के संस्कार भावना में कैसे बदलते है, वर्णन कीजिए।
5) माँ की मनोवृत्ती बदलने में अतुल और उमा ने क्या भूमिका निभाई?
6) माँ ने अविनाश और बडी बहू को किस तरह स्वीकार किया इसका वर्णन कीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''बहन, मैं मानती हूँ माँ-बेटे के सम्बन्ध से बढ़कर और कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु साथ ही पति से बढकर पत्नी के लिए भी और कुछ नहीं है।''

2) ''माँ! सन्तान का पालन माँ-बाप का नैतिक कर्तव्य है। वे किसी पर एहसान नहीं करते, केवल राष्ट्र का ऋण चुकाते हैं।''

3) ''जिन संस्कारों में तुम पली हो, उन्हें तोडने की शक्ति तुममें हीं है।''

4) ''जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते है, एक समय आता है, जब चाहे किसी कारण से भी हो; हम उन्हीं बातों को स्वीकार कर लेते है।''

10.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'संस्कार और भावना' एकांकी का मंचन कीजिए।
2) विष्णु प्रभाकर की एकांकी की सूची बनाइए।
3) मराठी के राम गणेश गडकरी की एकांकी की चर्चा।

10.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) विष्णु प्रभाकर : 'बारह एकांकी'
2) जगदीशचंद्र माथुर : 'भोर का तारा'
3) रामकुमार वर्मा : 'पृथ्वीराज की आँखे'
4) उपेंद्रनाथ अश्क : 'पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ'
5) राम गणेश गडकरी : 'दीड पानी नाटक' (एकांकी)

◆◆◆

इकाई 4 (ख)

11. रजिया (रेखाचित्र)

- रामवृक्ष बेनीपुरी

अनुक्रम

11.1 उद्‌देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 विषय विवरण

- 11.3.1 रामवृक्ष बेनीपुरी का परिचय
- 11.3.2 'रजिया' का परिचय
- 11.3.3 'रजिया' का आशय

11.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

11.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

11.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

11.7 सारांश

11.8 स्वाध्याय

11.9 क्षेत्रीय कार्य

11.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

11.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) रेखाचित्र विधा से परिचित होंगे।

2) विविध रेखाचित्रकारों से परिचित होंगे।

3) रामवृक्ष बेनीपुरी के साहित्य से परिचित होंगे।

4) रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र के माध्यम से भारत के गाँव का जीवन और ग्रामीण लोगों की विशेषताओं को जान पाएँगे।

5) 'रजिया' शीर्षक रेखाचित्र से परिचित हो जाएँगे।

6) 'रजिया' के व्यक्तित्व को समझ पाएँगे।

11.2 प्रस्तावना :

'रेखाचित्र' शब्द अंग्रेजी के 'स्कैच' (sketch) शब्द का हिंदी रूपान्तर है। जैसे-स्कैच में रेखाओं के माध्यम से चित्रकार किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्र प्रस्तुत करता है वैसे ही रेखाओं के माध्यम से रेखाचित्रकार स्मृति के आधार पर व्यक्ति या वस्तु के समग्र रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करताहै। रेखाचित्र विधा आधुनिक काल की पाश्चात्य देन है। रेखाचित्र में व्यक्तित्त्व प्राय: वे होते है जिनसे लेखक किसी न किसी रूप में प्रभावित रहा हो या उनसे घनिष्ठता अथवा समीपता हो इसलिए रेखाचित्र में तटस्थता और वस्तुपरकता के स्थानपर आत्मीयता, हृदयग्राहिता सरलता और भावपरकता की प्रमुखता रहती है। रेखाचित्र का उद्देश्य मानव वर्ग में संवेदना और प्रेम को जाग्रत करना होता है। वह अपनी अनुभूति को पाठकों के सम्मुख सहानुभूति और आनंद के उद्देश्य से रखता है।

हिंदी साहित्य में रेखाचित्र को स्वतंत्र विधा के रूपमें स्थापित करने का श्रेय सन् 1929 ई. में प्रकाशित पं. पद्मसिंह शर्मा के 'पद्म पराग' को दिया जा सकता है। उनसे प्रभावित होकर श्रीराम शर्मा, हरिशंकर शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी आदिने रेखाचित्र लिखना आरंभ किया। रामवृक्ष बेनीपुरी, महादेवी वर्मा, निराला, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', पद्मलाल पुन्नालाल बख्शी, प्रकाशचंद्र गुप्त, पं. बेचन शर्मा 'उग्र', देवेन्द्र सत्यार्थी, गुलाबराय, विष्णु प्रभाकर, विनय मोहन शर्मा, बेढ़ब बनारसी, डॉ. रामविलास शर्मा, उपेंद्रनाथ अश्क, जगदीशचंद्र माथुर, रघुवीर सहाय, सत्यवति मलिक, आदि का नाम लिया जा सकता है। समकालीन हिंदी साहित्य में रचनाकारों ने विधा के बंधनों को थोडा शिथिल किया है। इसीतरह रेखाचित्र विधा कही कहानी के भीतर तो कही संस्मरण अथवा आत्मकथा के भीतर आ रही है तो कही स्वतंत्र विधा के रूप में आ गयी। यह बदलता रूप और हिंदी रेखाचित्र का अपनी सीमाओं के बाहर अतिक्रमण यह इस विधा के लिए भविष्य में शुभ संकेत है।

11.3 विषय-विवरण :

11.3.1 रामवृक्ष बेनीपुरी का परिचय :

रेखाचित्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् 1902 में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुरी गांव में हुआ। इनके

पिता कुलवंतसिंह एक साधारण किसान थे। बचपन में ही इनके माता-पिता का देहान्त हो गया। उनका पालन मौसी ने किया। सन् 1920 में गाँधीजी के नेतृत्त्व में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ होने पर बेनीपुरीजी अध्ययन छोडकर स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पडे। राजनीतिक गतिविधियों के कारण इन्हें कई बार जेल भी जाना पडा। साहित्य में इनकी किशोरावस्था से ही रूचि थी और पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने पत्र-पत्रिकाओं को लिखना आरम्भ कर दिया था। इन्होंने 'अरुण भारत', 'किसान मित्र', 'बालक', 'युवक', 'कर्मवीर', 'योगी', 'हिमालय', 'नई धारा' आदि कई पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन बडी कुशलता से किया। सन् 1957 में बिहार में विधानसभा सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए थे। लम्बी बीमारी के बाद पटना में सन् 1968 में मृत्यु हो गयी।

बेनीपुरीजी बहुमुखी प्रतिभा के लेखक थे। इन्होने कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, यात्रा-विवरण, संस्मरण, निबंध आदि गद्य की सभी प्रचलित विधाओं में प्रचुर लेखन किया। इनका पूरा साहित्य 'बेनीपुरी ग्रंथावली' के रूप में कई खंडो में प्रकाशित हो चुका है। इनके कुछ प्रसिद्ध ग्रंथ है - पतितो के देश में (उपन्यास), चिता के फूल (कहानी-संग्रह), अंबपाली (नाटक), पैरों में पंख बाँधकर (यात्रावृत्त), जंजीरे और दीवारें (संस्मरण) आदि रचनाएँ है। रामवृक्ष बेनीपुरी हिंदी रेखाचित्र के ध्रुवतारा माने जाते है। इनके प्रमुख चार रेखाचित्र है - (1) लालतारा (1940), (2) माटी की मूरतें (1946), (3) गेहूँ और गुलाब (1950), (4) मील के पत्थर (1955) आदि रेखाचित्रों की विषय वस्तु में व्यक्ति, घटना, वातावरण, दृश्य, भाव, विचार और समस्या को बेनीपुरी ने अपने साहित्य में स्थान दिया हैं।

11.3.2 'रजिया' का परिचय :

'रजिया' 'माटी की मूरतें' संग्रह में संकलित प्रथम रेखाचित्र है। रजिया गाँव की एक मुस्लिम चूडीहारिणी है जिसका बचपन से लेकर बुढापे तक रेखांकन लेखक ने किया है। लेखक ने रजिया का बाह्य व्यक्तित्त्व इतना वास्तविक रूप में मूर्तिमान कर दिया जो उस रजिया को हमारे सामने खडा कर देता है - जैसे - ''कानों में चाँदी की बालियाँ, गले में चाँदी का हैकल, हाथों में चाँदी के कंगन और पैरों में चाँदी की गोडाँई - भरबाँह की बूटेदार कमीज पहने, काली साड़ी के छोर को गले में लिपटे, गोरे चेहरे पर लटकते हुए कुछ बालों को सम्भालने में परेशान, वह छोटी सी लडकी।'' इस वाक्य से रजिया का व्यक्तित्त्व पाठक के मन पर अमर छाप छोडता है। बेनीपुरी जी ने अपने परिवेश के प्रति अपने गाँव एवं नगर के प्रति, अपनी धरती की मिट्टी के प्रति जो स्वाभाविक स्नेह होता है वह रजिया के माध्यम से स्पष्ट किया है। रजिया को पढ़ते समय इसमें एक अपनापन भर दिया है जिसे गांव की मिट्टी की महक कह सकते हैं। 'रजिया' नामक रेखाचित्र के माध्यम से निम्मवर्ग की एक बालिका को जीवंत कर दिया है। इसीतरह आँचलिक-सांस्कृतिक विषयक दृष्टिकोन से बेनीपुरी ने 'माटी की मूरतें' रेखाचित्र संग्रह में से 'रजिया' शीर्षक रेखाचित्र में रजिया को चित्रित किया है।

11.3.3 'रजिया' का आशय :

रामवृक्ष बेनीपुरी का उत्कृष्ट और कालजयी व्यक्तिपरक रेखाचित्र रजिया है। रजिया एक सच्ची ग्रामीण दृष्टि प्रदान करनेवाली मुस्लिम चूडीहारिनी पात्र है। लेखक का रजिया का वर्णन बाल्यावस्था और साज-श्रृंगार वर्णन

आकर्षित लगता है। लेखक की भावना परम वैयक्तिक तथा निजी अनुभूतियों से युक्त है। लेखक द्वारा नायिका, वातावरण, घटनाएँ तथा संबंध के परिवेश एक दूसरे से इस प्रकार घुलमिल जाते है जिसकी एकसूत्रता अवश्य बनी रहती है। लेखक ने कहा कि गाँव में एक मात्र पात्र अलग है जिसका चित्र खींचा गया है।

लेखक ने 'रजिया' का वर्णन शुरूआत में ही ऐसा सुंदर रेखांकित किया है जो पाठकों के सामने पात्र को खडा करते है। वे कहते है कि, ''रजिया ने कानों में चाँदी की बालियाँ पहनी हैं। गले में पहनने का सुंदर चाँदी का गहना है। हाथों में चाँदी के कंगन डाले है और पैरों में चाँदी के गोंडाई (पायल) पहने हैं। रजिया ने भर बाँह की बूटेदार कमीज पहनी है। काली साडी के छोर को गले में लिपटा है। गोरे चेहरे पर लटकते हुए बाल संभालने में परेशान छोटी-सी लडकी लेखक के सामने खडी होती है। लेखक अपने बचपन की बात कहते है कि, स्कूल से आते है जैसे मानो कसाईखाने से रस्सी तोडकर आए हुए बछडे है। स्कूल से आकर मौसी के दिए हुए छठपूजा में बनाए ठेकुए लेखक झूले बैठकर खा रहा था। इतने में आवाज आती है, ''खाना मत छूना'' तब उसका ध्यान छोटी रजिया पर जाता है। हिंदु बस्ती में उन्होंने कभी मुस्लिम लडकी को देखा नहीं था। क्योंकि बचपन में एक मेले में लेखक खो गया था तब उन्हे अघोरी विधा के अनुयायी उठाकर ले जा रहे थे तभी गांव की एक लडकी नजर पडी और उसी कारण वह बच पाये। माँ-बाप का बचपन में ही साया उठने से उनका पालन मौसी ने किया था। मौसी उसे कभी अपने आँखो से ओझल नहीं होने देती थी। गाँव में बहुत सी लडकियाँ थी लेकिन रजिया जैसी वेशभूषा, चाँदी के गहने, रंग-रूप, आँखों का नीलापन और समूचे चेहरे का ढंग देखकर उसे एक टक लेखक घूरने लगा। जहाँ से आवाज आयी थी, वह रजिया की माँ थी। रजिया की माँ ने लेखक के आँगन में चूडियों का बाजार पसारकर रखा था। वहाँ बहुतसी बहू-बेटियाँ उनको घेर कर चूडियों का मोल भाव कर रही थी। उस बच्ची को पहली बार देखकर उत्सुकता जाग गयी। मौसी ने उसे भी ठेकुए और कसार दिया। वह लडकी नहीं ले रही थी। माँ के कहने से लेने के बाद लेखक ने उसे सवाल पूछे उसके जवाब सिर्फ गर्दन हिलाकर ही दिया।

रजिया और उनकी माँ खरीदारिनों की तलाश में दूसरे आँगन में चली गयी। लेखक उनके पीछे चला गया तब रजिया की माँ ने कहा, ''बबुआजी, रजिया से ब्याह कीजिएगा?'' फिर बेटी की ओर मुखातिब हो मुस्कराहट से कहा, ''क्योंरी रजिया, यह दूल्हा तुम्हें पसन्द है?'' उनके कहने से वहाँ से लेखक भागता है। ब्याह और वह भी मुसलमान लडकी से? उनके जाने के बाद उन्होने मुडकर देखा। रजिया चूडिहारिन इसी गाँव में रहनेवाली थी। बचपन, जवानी और शादी भी इसी गाँव के मुसलमान लडके से हो गयी और कभी-कभी लेखक से उनकी मुलाकात होती रहती थी। लेखक पढते-पढते शहर में पढने गया। छुट्टी में जब भी आता तब रजिया माँ के पीछे घूमती रहती, वो पढ़ नहीं सकी। वह चूडियाँ पहनने की कला जान गयी। रजिया बढती हुई उसके शरीर और स्वभाव में भी बदलाव आया। पहले शहर से आने के बाद दौडकर निकट आके तरह-तरह सवाल पूँछती अब कुछ दिनों बाद सकुँचा रहती। अब वह स्वतंत्र रूप में चूडियों का व्यापार करती। रजिया के सौंदर्य के आकर्षण से बहुओं के पतिदेव दूर से ताकते रहते थे। बहुओं के सामने वह उनका मजाक उडाती थी तब वहाँ से पतिदेव भागते थे। इसीतरह रजिया अपने पेशे में निपुण हो रही थी। यह निपुणता रजिया की माँ के पास थी।

लेखक का शहर में रहना बढ़ता गया तबसे रजिया से भेट दुर्लभ होती गयी। एक दिन गाँव में रजिया के साथ

चुडियों से भरा टोकरा सिर पर लिए नौजवान देखा तो लेखक ने समझ लिया की उसका पति है। लेखक ने मजाक से कहा कि, ''इस मजूरे को कहाँ से उठा लाई है रे?'' तब उन्होंने कहा कि वे उनके पति है। रजिया की माँने बचपन में मजाक से दूल्हे की बात याद आयी। वह भी दिन आ गया कि जब वही लेखक पति बने उसकी पत्नी को चूडियाँ पहनाने रजिया आ गयी उन्होंने खूब धूम मचायी थी।

समय बीतता गया। रजिया और लेखक की भेट पटना शहर में हुयी। रामवृक्ष बेनीपुरीजी एक छोटेसे अखबार के संपादक के रूप में काम करते थे। एक चौक में तभी एक बच्चा आकर कहने लगा बाबू आपको औरत बुला रही है, यह बात सुनकर लेखक को पद प्रतिष्ठा का खयाल आया। यहाँ प्रसिद्ध पान की दूकान में वे पान खा रहे थे। चौक में से लोग इधर-उधर चले जाने के बाद बच्चे ने जहाँ इशारा किया वही पहुँच गये। तभी वहाँ एक स्त्री यानी रजिया ने आकर 'सलाम मालिक' कहा। बातचीत के दौरान समझ गया कि जमाना बदल गया है। चूडियाँ दूल्हनों के साजश्रृंगार की नयी चीजें लेकर आयी थी। रजिया लेखक को रहने का ठिकाना पूँछने लगी तब लेखक अचरज में पड गया तभी अधेड उम्र का उसका पति हसन आ गया तो लंबी दाढी, पाच हाथ लम्बा बन गया था। हसन पान लाने के बाद रजिया किस तरह दुनिया बदल गयी है यह बताते हुए कहती है, ''अब तो ऐसे गाँव है जहाँ हिंदू मुसलमानों के हाथ से सौदे नहीं खरीदते। अब हिंदू चुडिहारिने हैं, हिंदू दरजी है।'' रजिया ने यह भी खुशी की बात बताई, मेरे गाँव में यह पागलपन नहीं है। रजिया के अलावा लेखक की पत्नी किसीसे चूडियाँ लेती नहीं थी। दूसरे दिन रजिया अपने पति को लेकर डेरेपर हाजिर हो गयी। लेखक की पत्नी को देने के लिए चूडियाँ देती गयी। लेखक ने रजिया को ही चूडियाँ देने की बात कही तब उन्होंने अपने हाथ से पहनाने की बात कही जिसने पति प्रेम की बात बतायी।

काफी समय बाद एक दिन अचानक लेखक रजिया के गाँव में पहुँच गये थे। चुनावी चक्कर का कठिन कार्य था। उस गाव में पहुँचते ही उन्हें रजिया चूडीहारिन की याद आयी। नेता बने लेखक की जय-जयकार हो रही थी। उनको अपने घर में लेने के लिए लोग भाग्य समझते थे। वही नेता स्वर्ण- युग संदेश लोगों को सुना रहे थे लेकिन दिमाग में अलग गुत्थियाँ उलझी थी। इतने में ही भीड से छोटी बच्ची रजिया आ गयी, जिस तरह रजिया दिखती है। बीच में चालीस-पैतालीस साल का अंतर ही खत्म हुआ था। तब किसीने कहाँ कि वह ठीक अपनी दादी जैसी है। उन्होंने लेखक का हाथ पकडकर कहाँ, ''चलिए मालिक, मेरे घर।''

लेखक रजिया के आंगन में खडा था। छोटा सा घर लेकिन साफ-सुथरा। रजिया का पति हसन मर गया था। उनके तीन लडके थे। बडा कलकत्ता में कमाता है, मंझला उनका ही पिढीजात पेशा संभालता है छोटा लडका शहर में पढता है। रजिया जैसी दिखनेवाली बडे लडके की बेटी है। उस लडकीने रजिया को आँगन से ही पुकारा, ''मालिक दादा आ गये।'' रजिया ने पोंती को भेज दिया किंतु उन्हें विश्वास नहीं था कि ये बडे नेता जो मोटार गाडी से चलनेवाले हैं, उनके घर में आऐंगे। उन्होंने बहुओं से कहलाकर बीमारी में पडे मैलेकुचले कपडे बदल दियें। नजदीक आकर लेखक से 'मालिक सलाम' कहा। लेखक को लगता है उसके चेहरे से झुरियाँ चली गई, उसका चेहरा बिजली की तरह चमक उठा है।

इस तरह 'रजिया' रेखाचित्र स्मृतिकणों के बेजोड संयोजन का परिणाम है। रेखाचित्र के समाप्त हो जाने के उपरान्त भी हम सब कुछ भूलकर कुछ देर तक उसी रस में तन्मय रहते है। इस व्यक्तिपरख रेखाचित्र में लेखक की अपनी तीव्र अनुभूति तो है साथ ही रजिया की परिवर्तित स्थिति पाठक को एक ऐसे संभ्रम में डाल देती है जिससे उबरने की अपेक्षा वह अधिक अधिक धुँसता चला जाता है और लेखक की अनुभूति के साथ तादाम्य कर लेता है।

11.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) रजिया .... रेखाचित्र संग्रह से संकलित है।

अ) लालतारा ब) माटी की मूरते क) गेहूं और गुलाब ड) मील के पत्थर

2) रजिया .... बेचती थी।

अ) चूडियाँ ब) खिलौने क) घी ड) ठेकुएँ

3) लेखक .... शहर में अखबार के संपादक थे।

अ) दिल्ली ब) बेनीपुरी क) पटना ड) मुंबई

4) रजिया को .... बेटे थे।

अ) दो ब) तीन क) चार ड) एक

5) रजिया जैसी हूबहू उनकी .... थी।

अ) पोती ब) बेटी क) बहन ड) मौसी

6) लेखक को रजिया .... नाम से पुकारती थी।

अ) दादा ब) चाचा क) मालिक ड) भाई

7) रजिया ने अपनी पोती को .... को गाँव से बुलाने भेजा था।

अ) लेखक ब) हसन क) बेटे ड) बेटा

11.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) हैकल - गले में पहनने का गहना

2) ठेकुएँ - सुजी घी और आटे से बना बिहार का पारंपारिक मीठा पदार्थ

3) खाँची - बडा टोकरा

4) औघड - अघौरी विधा के अनुयायी

5) औघट - कठीण, अवघड

6) घाघ - चतुर मनुष्य

7) मुस्टंडा - मोरा ताजा, धष्टपुष्ट

8) पुश्तैनी - पीढीजात

9) पतोहुएँ - पुत्रवधु, बहू

11.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) माटी की मूरते
2) चूडियाँ
3) पटना
4) तीन
5) पोती
6) मालिक
7) लेखक

11.7 सारांश :

1) रामवृक्ष बेनीपुरी की 'माटी की मूरते' में भारत की मिट्‌टी की महक, उस महक का एक अंश है रजिया रेखाचित्र।
2) लेखक और रजिया बचपन में एक ही गाँव रहते थे। लेखक पढ़ते-पढ़ते शहर गया और रजिया गाँव में चूडियाँ बेचती रही। जीवन के अंतिम पडाव तक कही-न-कही मुलाकात होती रही।
3) लेखक को बचपन से लेकर बूढापे तक रजिया मिलती रही। जिसमें एक प्रकार प्रेम था। लेखक से मिलने के बाद उन्हें एक प्रकार से जीने की प्रेरणा, चमक, आस्था ओर अपनापन लगता था।
4) रजिया के बाह्य व्यक्तित्त्व की वास्तविक स्थिति के निदेशक गहने, कपडे, वेशभूषा का सूक्ष्म वर्णन है जो रजिया का वास्तविक रूप मूर्तिमान कर देता है।
5) रजिया ने किस तरह दुनिया बदल जाने की बात कही है। हिंदू-मुसलमान आपसी भेदभाव दिखायी दिया। इसमें उन्हें विश्वास दिया मेरे गाँव में ऐसी परिस्थिति अभी नहीं है। इस तरह वास्तविक स्थिति का दर्शन किया है।
6) रजिया की आदतें, स्वभाव, रूचियाँ, संस्कार, विचार तो आते ही। साथ ही जीवन और जगत् के प्रति क्या दृष्टिकोन भी सामने आते हैं। खासकर रेखाचित्र के अंत में लेखक से मिलने की इच्छा और मैले कुचैले कपडे बदल कर बीमार अवस्था में पेश आती है।
7) रजिया विभिन्न परिस्थितियों अपनी प्रतिक्रिया किस प्रकार देती है, जिसमें सांस्कृतिक, आँचलिक विषय संबंधित है।

11.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) रजिया का चरित्र चित्रण कीजिए।

2) लेखक द्वारा बचपन में रजिया भेंट वर्णन कीजिए।

3) मुस्लीम चूडीहारिणी रजिया का वर्णन कीजिए।

4) लेखक की पटना में रजिया से मुलाकात की जानकारी दीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''बबुआजी, रजिया से ब्याह कीजिएगा?'' फिर बेटी की ओर मुखातिब हो, मुस्कराहट से कहा, ''क्यों री रजिया, यह दूल्हा तुम्हें पसन्द है?''

2) ''इस मजूरे को कहाँ से उठा लाई है रे?''

3) ''किस तरह दुनिया बदल गयी है। अब तो ऐसे गाँव है, जहाँ हिन्दू-मुसलमानों के हाथ से सौदे नहीं खरीदते। अब हिन्दू चूडिहारिने है, हिन्दू दरजी हैं।''

11.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) आपके आस-पास लोगों में जो अलग व्यक्तित्त्व लगता है उसका रेखांकन कीजिए।

2) आपके गाँव में किसी विशेष जाति के व्यक्ति का वर्णन कीजिए।

11.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) रामवृक्ष बेनीपुरी - 'माटी की मूरते'

2) महादेवी वर्मा - 'स्मृति की रेखाएँ'

3) देवेन्द्र सत्यार्थी - 'रेखाएँ बोल उठी'

4) शिवाजी सावंत - 'अशी मने असे नमूने' (मराठी)

5) पु. ल. देशपांडे - 'व्यक्ती आणि वल्ली' (मराठी)

◆◆◆

इकाई 4 (ग)

12. किसान के घर से (यात्रा संवाद)

- मधु कांकरिया

अनुक्रम

12.1 उद्‌देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 विषय विवरण

- 12.3.1 लेखिका मधु कांकरिया का परिचय
- 12.3.2 'किसान के घर से' का परिचय
- 12.3.3 'किसान के घर से' का आशय

12.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

12.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

12.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

12.7 सारांश

12.8 स्वाध्याय

12.9 क्षेत्रीय कार्य

12.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

12.1 उद्देश्य :

प्रस्तत इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) 'यात्रा संवाद' विधा से परिचित होंगे।

2) लेखिका मधु कांकरिया के साहित्य से परिचित होंगे।

3) स्वतंत्र भारत में आज किसान की क्या स्थिति है, इससे अवगत होंगे।

4) महाराष्ट्र में विशेषत: मराठवाडा के किसान की समस्याओं से परिचित होंगे।

5) किसान की आत्महत्या पर लेखिकाने प्रकाश डाला उसको जानने की कोशिश करेंगे।

6) 'किसान के घर' शीर्षक यात्रा संवाद से परिचित होंगे।

12.2 प्रस्तावना :

एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना ही यात्रा है। यह किसी मकसद या बिना मकसद के हो सकती है। यात्रा संवाद गंध लेखक की विधा है। यात्रा संवाद में किसी विषय से यात्रा की जाती है। इसे यात्रा साहित्य, यात्रावृत्त तथा यात्रा वृत्तांत भी कह सकते है। यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। अपने जीवन काल में हर आदमी कभी न कभी, कोई न कोई यात्रा अवश्य करता है लेकिन सृजनात्मक प्रतिभा के धनी अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करके यात्रा साहित्य की रचना करने में सक्षम हो पाते है। यात्रा साहित्य का उद्देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटना और पाठकों को भी उन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करना है। प्राचीन काल से हमारे देश में रामायण, हर्ष चरित्र, कादंबरी आदि में यात्रा वृत्तांत के वर्णन मिलते है। हिंदी यात्रा साहित्य की शुरुआत आधुनिक काल में अंग्रेजी साहित्य के संपन्न से शुरू हुयी। यात्रा संस्कृत संज्ञा है, जिसे अरबी भाषा में 'सफर' तो अंग्रेजी में 'ट्र्व्हेलाग जर्नो' संज्ञा का प्रयोग है। आज विपुलमात्रा में यात्रा साहित्य आ रहा है इससे यात्रा साहित्य का भविष्य उज्ज्वलतम् है।

हिंदी में यात्रा वृत्त का लेखन भारतेंदु युग से शुरू हुआ। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के पहले यात्रा वृत्तांत लेखन की जडे बहुत मजबूत और गहरी नहीं हैं। भारतेन्दु के 'सरयूपार की यात्रा' से यात्रा संवाद अथवा वृत्तांत की शुरुआत मान सकते हैं। इसके बाद यात्रावृत्त लेखको में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक का प्रमुख स्थान है। देवीप्रसाद खत्री, गदाधर सिंह, गोपालराम गहमरी, रामनारायण मिश्र, राहुल सांकृत्यायन आदि का नाम भी उल्लेखनीय है। स्वातंत्र्योत्तर काल में सेठ गोविंददास, निर्मल वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, रेणु, यशपाल, अज्ञेय, मोहन राकेश, रामघार सिंह 'दिनकर', देवेंद्र सत्यार्थी, विष्णु प्रभाकर, धर्मवीर भारती, डॉ. नगेंद्र आदि ने इस यात्रा साहित्य के इतिहास आगे बढाया है। राजेंद्र अवस्थी, अमृता प्रितम, श्रीकांत वर्मा, रामदरश मिश्र, डॉ. बापुराव देसाई, ओम थानवी तथा मधु कांकरिया ने वर्तमान रूप में यात्रा साहित्य लिखने का कार्य किया। इन सभी यात्रा साहित्य में विभिन्न प्रदेशों के प्राकृतिक वैभव, सामाजिक स्थिति, आचार-व्यवहारों, सांस्कृतिक परिवेश, राजनीतिक, धार्मिक परिवेश आदि का प्रभावशाली ढंग से वर्णन हुआ है। आज यात्रा साहित्य स्वरूप में बदलाव आ रहा है। वहाँ जाकर लोगों की समस्या, उस पर उपाय क्या करना चाहिए, इनसे किस तरह संवाद होना चाहिए इसपर ध्यान दिया जा रहा है। यात्रा वृत्तांत से अब 'यात्रा' संवाद

का माध्यम बन रहा है इसलिए इसे आज 'यात्रा संवाद' नाम दिया गया है। इसीको माध्यमों का साथ मिला रहा है।

12.3 विषय-विवरण :

12.3.1 लेखिका मधु कांकरिया का परिचय :

मधु कांकरिया का जन्म 23 मार्च 1957 में कोलकाता में हुआ है। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र मे एम. ए. किया था, कंम्प्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा भी किया है। लेखिका सामान्य परिवार की महिला थी। शिक्षा दीक्षा पूरी होने के बाद लेखन कार्य के साथ जुड गई। आज के साहित्यकारों में मधु कांकरिया का नाम प्रतिष्ठित लेखिका, कथाकार, उपन्यासकार तथा यात्रा साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध है। सामाजिक, राजनीतिक, कृषक, साहित्यिक विसंगतियों, संस्कृति, महानगर की घुटन, युवाओं की समस्याएँ, नारी व्यथा का बेबाक चित्रण किया है।

मधु जी ने लेख, कहानी, उपन्यास, यात्रा वृत्तांत को नवीनता से समाज में व्याप्त ज्वलंत समस्याओं के द्वारा लिखने का प्रयास किया है।

कहानी संग्रह - चिडिया ऐसे मरती है, काली चील, फाइल, बीतते हुए, और अंत में ईसु, भरी दोपहरी के अँधेरे (प्रतिनिधि कहानियाँ), दस प्रतिनिधि कहानियाँ, युद्ध और बुद्ध आदि।

उपन्यास - खुले गगन के लाल सितारे, सलाम आखिरी, पत्ता खोर, सेज पर संस्कृति, सूखते चिनार, रहना नहीं, देस वीराना है आदि।

यात्रा वृत्तांत - बादलों में बारूद

सम्मान :

कथाक्रम सम्मान (2008), हेमचंद स्मृति साहित्य सम्मान (2009), शिवकुमार मिश्र स्मृति कथा सम्मान आदि सम्मानों से विभूषित किया है। रचनाओं में विचार और संवेदना में नयापन मिलता है। समाज में रोजमरा जिंदगी में चल रहे समस्याओं को सत्यता के साथ प्रकट किया है।

12.3.2 'किसान के घर से' का परिचय :

हमारा देश कृषि प्रधान तथा गाँवो का देश है। देश की 70 प्रतिशत आबादी गाँव देहातो में रहती है। इनका जीवन खेती-किसानी पर निर्भर है। देश की स्वतंत्रता के 70 साल बाद भी किसानों के जीवन में बहुत कुछ बदलाव नहीं आया है। स्वतंत्र भारत में आज किसान की स्थिति अत्यंत दयनीय बन गई है। यही किसान आज कई समस्याओं से घिर गया है। ऋणग्रस्तता, शासन का बोझ, रोजी-रोटी की समस्या, पूँजीपतियों का शोषण, रोजगार और शिक्षा की समस्या, फसल को योग्य दाम न मिलना, अति और अपर्याप्त बारीश होने पर फसलों की हानी, बँक का कर्ज आदि भयावह समस्याओं से भारतीय किसान ग्रसित है। जिसके चलते किसानों की समस्या तीव्र बनती जा रही है।

जिसमें उनकी आत्महत्याएँ बढ़ती जा रही है। मधु कांकरिया ने 'किसान के घर से' यात्रा संवाद में विशेषत: इन किसानों पर प्रकाश डाला है। जिसमें महाराष्ट्र के जालना जिले के कुछ गावों में आत्महत्या कर चुके 'किसानों के घर' में जाकर संवाद किया है।

किसान सारे देश में अनाज का निर्माण कर रहा है। वही एक वक्त की रोटी के लिए तरस रहा है। विशेषत: यह समस्या मराठवाडा के किसानों में दिखती है। किसान अरुणगिरी, जो घर का कर्ता पुरुष था। पत्नी संगीता, बेटा, बेटी और चार भाईयों के रहते हुए आत्महत्या करता है। उसी तरह कृषि विकास के लिए काशी विश्वेश्वरराव को पुरस्कार मिला था। वही किसान दिन-ब-दिन कर्ज की कीचड में फँसता गया। उन्होंने निराश होकर आत्महत्या की है, जिससे पूरे जिले को हिलाकर रख दिया। वही बालासाहेब जैसे अंदर जल रहे फिर भी पिघलकर लेखिका को समस्या बता रहा है इन सारी बातों को लेखिका ने 'किसान के घर से' में चित्रित करने का प्रयास किया है।

12.3.3 'किसान के घर से' का आशय :

भूमंडलीकरण और औद्योगिक विकास के इस दौड में किसानों की सतत उपेक्षा, उनके प्रति लोगों का दृष्टिकोन, किसानों का खेती से पलायन, आत्महत्या के भयावह आँकडे केवल एक समस्या नहीं भविष्य के लिए एक चेतावनी भी है। इस चेतावनी को प्रेमचंद और संजीव के बाद मधु कांकरिया ने पहचान लिया है। अपने यात्रा संवाद में मराठवाडा को केंद्र में रखकर समूचे देश के किसानों की समस्याएँ लोगों के सामने रखी है। लेखिका को नाना पाटेकर के शब्द याद आ रहे थे जिन्होंने कहा था, ''मुंबई की सडक पर कोई भिखारी मिला तो उसे भिखारी मत समझिए वह किसान भी हो सकता है।'' 1997 से लेकर अब तक दो लाख किसानों ने आत्महत्या की थी। मिडीया को वह खबर नहीं दिख रही थी, उसे आधुनिकता की चकाचौंध दिख रही थी।

लेखिका का पुत्र और उनके दो मित्र मिलकर मराठवाडा के जालना जिले के कुछ गावों में आत्महत्या कर चुके किसानों के परिवार को कुछ करने का जज्बा लेकर जा रहे थे। वे तीनों ही कॉर्पोरेट कलर (सामूहिक संस्कृति) में पले बढे युवक थे। लेखिका ने उनके साथ चलने की इच्छा प्रकट की लेकिन लेखिका के पुत्र ने कहा, ''लिखने से कुछ नहीं होगा। उसमें ठोस कार्यवाही या मदत की जरूरत वह भी तुरंत।'' तब लेखिका ने कहा था, ''हमारा काम दुबके सत्य को बाहर लाना है, तुम लोगों ने भी तो सच्चाई पहले जानी। फिर जाने का और उनके लिए कुछ करने का मन बनाया।'' उन्होंने 'हिंदू' अखबार में छपे साईनाथ के दो दिन पहले के उनके आलेख और किसानों की आत्महत्या पर लिखे संजीव के उपन्यास 'फांस' को दिखा दिया, जिसमें यह भी कहा, ''इसके लिए लिखना काम जरूरी है। बेटा सोच बदलकर उनको ले जाने के लिए राजी हो जाता है।

लेखिका जालना जिले के बलखेड गांव में गयी थी। वहाँ चारों ओर अकाल ही दिख रहा था। सभी ओर सूखे हुए घास, कही-कही जली हुई घास तथा जमीन पर सूखे पलाश थे। पेड की डालियों पर रुई के टुकडे लटके हुए थे। जगह-जगह पर कचरे के ढेर पडे थे। पोलिथिन, व्हीम बारके कवर जैसे हिंदुस्तान लीवर के व्हीम बार का प्रयोग जादा मात्रा में होता है। गाँव में काटेदार पेड, एक ही कुआँ और एक मंदीर है। लेखिका ने देखा बैलगाडी में टीन का पीपा

था, जो पानी के लिए प्रयुक्त हो रहा है। गाँव का वर्णन करते हुए टीन (पत्रे) की छत नीचे बंधी गाय और पेड से बंधी फरमती भैस। झोपडीनुमा खपरैल के छत वाले घर में मुस्लिम युवतियाँ हैं। खेल खत्म होते बाजार शुरू होता है, ''चौपहिया गाडीवाले ढेले पर श्रृंगार की ढेर सारी सामग्री बेचता एक तरुण। उसके पाउडर, लिपस्टिक, क्लिप, नेल पोलिश, सेफ्टी पिन आदि थे।'' साथ ही कचरे के ढेर पर घूमते सुअर उसके बगल में जूस सेंटर, हेयर कटिंग सलून आदि का सूक्ष्म से वर्णन किया है।

लेखिका और उनके साथियों को अरुणगिरी के घर जाना या जिन्होंने आठ महिने पूर्व आत्महत्या की थी। उनकी पत्नी संगीता, बेटी और उनके चार भाई डेढ एकर के ट्रॅक्टर चला रहे थे। ट्रॅक्टर के पीछे छोटा-सा कपडे का पोस्टर था जिसपर लिखा था, ''आत्महत्याग्रस्त शेतकरी कुटुंबांना मदतीचा हात, चला करूया दुष्काळावर मात'' (आइए आत्महत्या ग्रस्त किसानों के परिवार की मदत करे)। अरूण गिरी जी ने नाउम्मीदी और हताशा से खेत में कीटकनाशक पी लिया था। उनके छोटे भाई विजयगिरी ने पेड की ओर इशारा करते उसके ही छाया में जहर पीने का बात कही। उन्होंने दीपेश को बोलते हुए कहाँ कि स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद से 37 हजार का कर्जा लिया था। जिसकी नोटीस आई थी। कुछ प्राईवेट कर्जा था जिसकापाच टका ब्याज हर महिने चढ रहा था। बैक की नोटीस की गाँव में चर्चा, बदनामी के कारण उनको चिंता खा गयी थी। बाळासाहेब ने कहा 100 रुपये पर पांच रुपया हर महिने सूद यहां तक 100 रुपए पर 25 तक ब्याज लिया जाता है। अरुणगिरी की पत्नी संगीता पैंतीस से चालीस के बीच की उम्र में कह रही थी, ''सब कुछ अचानक हुआ। वैसे जब तक रहे रात दिन दौडते-खटते ही रहे। फिर भी पूरा नहीं पडता था तो कर्जा लेना पड गया। वह कर्जा ही गले का फंदा बन गया।'' बैंक की नोटीस आने से घबरा गए। घर से कुछ नहीं कहा। सुबह जाकर ही आत्महत्या कर ली सरकार से सिर्फ तहसीलदार से मिलकर बैंक कर्जा माफ कर दिया। लेखिका कहती है, किसान के लिए कर्ज मतलब उसके माथे पर लिखी 'एक्सपायरी डेट' है। आगे कहती है मेरे बेटे के पास कार लोन या होम लोन के लिए बार-बार बैंक से फोन आते है वह भी सिर्फ 8% ब्याज वही भी सालाना। यहाँ महिने के लिए 5 से 25 प्रतिशत से कर्जा लेना पडता है। दिलीप कालेकर जैसे किसान मेथा बँक लिमिटेड से कर्जा लिया था, 13% सूट पर, वह भी बडी मुश्किल से जितना माँगा उसे एक चौथाई मिला था। किसी ने एक जगह लिखा भी है, मोटारसाईकिल के लिए तुरंत कर्जा मिलता है लेकिन खेती के लिए नहीं मिलता। लेखिका ने कहाँ जितना आदमी गरीब उतनी ब्याज की मात्रा अधिक होती है।

शहर में वही बात उल्टी है। मुंबई से सबसे पॉश इलाके में बैंक तीन एकड जमीन सिर्फ एक रुपये से भी कम प्रति वर्ग फीट की दर पर मिलती है। मुंबई में एक मिनिट के लिए बिजली नहीं जाती है, यहाँ आठ-नऊ घंटे गायब होती है। इसके बाद वे काशी विश्वेश्वर राव के परिवार की ओर गए जिनकी आत्महत्या से पूरे जिले को हिलाकर रख दिया था। बाळासाहेब ने बता दिया था कि उनको 'प्रोग्रेसिव फार्मर ऑफ दि इयर' का ॲवॉर्ड मिला था। लेखिका ने बाळासाहेब से कहा कि, क्या उन्होंने सुसाइड नोट छोडा था। तब उसने कहा, ''दलदल में धँसा किसान क्या एक दिन मरता है? हर दिन वह थोडा-थोडा मरता है। उसकी जमीन उसका कवच-कुंडल होती है, जिस दिन वह निकल जाती है हाथ से, समझो उलटी गिनती शुरू हो जाती है।'' जिस काशी विश्वेश्वर राव ने लोगों को हिंमत दी

थी वही जिंदगी से उठ गया, जिसके पीछे बैंक लोन और सोसायटी का कर्जा था। डरते हुए बालासाहेब कहता है हर दिन दिल धडकता रहता है। अब आगे कौन मरेगा? इससे लेखिका ने छोटे किसान से बडे किसान की आत्महत्या पर प्रकाश डाला है।

लेखिका को पिछले साल हुई लुधियाना की घटना याद आती है। जिसमें 36 साल के किसान जयवंत मोटर साइकिल पर अपने पाँच साल के बेटे को घुमाने निकले। बेटे को अपनी छाती से बाँधकर कॅनाल में कूद गए जिन पर 6 लाख का कर्जा था। जिनकी फसल खराब हो गयी थी। उन्होंने सुसाइड नोट में लिखा था, ''मै जानता हूँ कि मेरा यह छह लाख का कर्जा मैं तो क्या मेरा बेटा भी जीवन भर उतार नहीं सकता। उसी तरह पंजाब में एक किसान की बेटी ने फाँसी लगा ली थी। उन्होंने सुसाइट नोट में लिखा था। मेरे पापा पर पहले से बहुत कर्जा है। पिछले तीन साल से फसल पर घाटा हुआ है। मेरी शादी के लिए पापा और कर्जा लेने की सोच रहे है। उसी कारण उस लडकी ने आत्महत्या की थी। लेखिका को लगता है कि, यह संकट सिर्फ किसानों पर नहीं है तो पूरी सभ्यतापर संकट छाया हुआ है। लेखिका कहती है कोई यात्रा पूरी नहीं होती। यह भी यात्रा इनकी पूरी न हुई थी। सिर्फ तीन परिवारों से लेखिका मिल पायी। उनके जीवन में न त्योहार है न उत्सव है न आनंद, तो सिर्फ तीनही चीजे है वह कर्ज, कर्ज और कर्ज। किसान जिंदगी भर कपास की पैदास करता है लेकिन पत्नी की कॉटन की साडी तक नहीं खरीद पाता। वह सिर्फ सस्ती और टिकाऊ पोलिएस्टर की साडी खरीद सकता है। सब्सिडी के नाम पर दस साल में एक रिलीफ पॅकेज। कर्जा देती है ट्रॅक्टर को 14% लोन 6% लोन ब्याज दर पर देती है। बालासाहेब के माध्यम आम किसान की व्यथा बताती है। अमरिका ने 2005 में किसानको सब्सिडी दी थी। 4 मिलियन डॉलर और उत्पादन हुआ था 3.9 मिलियन डॉलर। यात्री उत्पादन से ज्यादा हर साल सब्सिडी मिलती है। हमारे भारत देश में 2 लाख किसान मर गए। किसी को परवाह नहीं है। लेखिका मधु कांकरिया ने किसान की व्यथा को पाठक के सामने यथार्थता से प्रकट किया है।

इसीतरह भारतीय किसान सबका पेट भरने और तन ढकनेवाला होते हुए खुद ही भूखा और अर्धनंगा सो जाता है। मधु कांकरिया ने 'किसान के घर से' यात्रा संवाद को जीवंतता के साथ चित्रित किया है। आज किसान की आत्महत्या के नाम पर हत्या हो रही है। भूमंडलीकरण के दौर में किसान इसमें कही भी बैठ नहीं पाता है। यहाँ उनकी उपेक्षा और समस्याएँ बढती जा रही है। इस प्रकार आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों में किसान धँसता जा रहा है। आज यही भारत की ज्वलंत और बुनियादी समस्या है।

12.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'किसान के घर से' यात्रा संवाद में .... का चित्रण किया है।

   अ) सामान्य   ब) किसान   क) स्त्रियों   ड) उच्चवर्ग

2) अगर मुंबई में सडक पर अचानक कोई आपसे मदद मांगे तो उसे भिखारी न समझे, वह .... हो सकता है।

अ) साहुकार　　ब) भिखारी　　क) किसान　　ड) लूटेरा

3) अरुणगिरी ने स्टेट बैंक ऑफ .... से 37 हजार का कर्जा लिया था।

अ) हैदराबाद　　ब) मुंबई　　क) पंजाब　　ड) मराठवाडा

4) अरुणगिरी की पत्नी का नाम .... था।

अ) रजिया　　ब) उमा　　क) मधू　　ड) संगीता

5) .... को 'प्रोगेसिव फार्मर ऑफ दि इयर' का अॅवॉर्ड मिला था।

अ) बालासाहेब　　ब) काशी विश्वेश्वरराव　　क) अरुणगिरी　　ड) मनोज

6) किसान के लिए .... का मतलब उसके माथे पर लिखी 'एक्सपायरी डेट'।

अ) कर्ज　　ब) उत्सव　　क) यात्रा करना　　ड) सब्सिडी

7) .... की सरकार उत्पादन की कीमत से भी ज्यादा सब्सिडी देती है।

अ) भारत　　ब) इंग्लैड　　क) अमरिका　　ड) श्रीलंका

12.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) जज्बा - भावना, जोश

2) ग्लैमर - मोहकता, तडक-भडक

3) हाई-फाई सर्किल - उच्चभ्रू समाज

4) कत्थई - कत्थे या खैरे के रंग का

5) कंटीली झाडियाँ - काटेहार पेड

6) कनस्तर - टीन का पीपा (टीन-लोहे की पतली चद्दर)

7) खपरैल की छत - खपडै से छाई हुई छत

8) पलस्तर उखडी - मिही,चूने से बनी दीवार पर लेप का उखडना

9) फाहे - लच्छा का टुकडा

10) पनघट - पानी भरने का घाट

12.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) किसान
2) किसान
3) हैदराबाद
4) संगीता
5) काशी विश्वेश्वरराव
6) कर्ज
7) अमरिका

12.7 सारांश :

1) 'किसान के घर से' यात्रा संवाद में किसान की आत्महत्या पर प्रकाश डाला है।

2) लेखिका ने मराठवाडा के विशेषत: जालना जिले के किसान की व्यथा को चित्रित करने का प्रयास किया है।

3) लेखिका मधु कांकरिया का बेटा और उनके दो मित्रों में किसानों के लिए कुछ करने का जोश था। कॉर्पोरेट कल्चर के पले बढे युवक एक प्रोजेक्ट लेकर जा रहे थे। जिसमें लेखिका ने लेखन के माध्यम से सत्य को बाहर लाने की बात कही जिसकी आज जरूरत है।

4) लेखिका ने गाँव का वर्णन किया साथ ही वहाँ की व्यवस्था, बाजार, लोगों की मानसिकता, बैंक का कर्जा, साहुकार के 5 टके पर 25 टका का ब्याज आदि समस्याओं से किसान आत्महत्या की तरह पहुँचता है इस पर ध्यान देने का प्रयास किया है।

5) सामान्य किसान अरुणगिरी तथा पुरस्कार प्राप्त काशी विश्वेश्वरराव भी कर्जा लेने से आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो गये हैं जो मराठवाडा में कम अधिक मात्रा में किसान की स्थिति है। उनके किसान को डर लगता है, आगे कौन आत्महत्या करेगा?

6) महाराष्ट्र के मराठवाडा या जालना जिले की यह स्थिति नहीं लुधियाना, पंजाब आदि राज्यों के साथ सभी भारत में 2 लाख से जादा किसानों ने आत्महत्या की है, जो सरकारी आंकडे बता रहे हैं।

7) लेखिका को लगता है यह संकट सिर्फ किसानों पर ही नहीं वरना पूरी सभ्यता पर है। जो किसान सबके लिए अनाज और कपडे का निर्माण करता है वही किसान भूखा और कपडे के बिना जीवन जी रहा है।

8) किसान के लिए लोन मिलना मुश्किल है वही बैंकवाले शहर या नौंकरी वालों को कार लोन या होम लोन 6% या 8% ब्याज दर पर लोन देते है। वही ट्रॅक्टर या खेती के लिए 13-14% ब्याज दर लोन मुश्किल से मिलता है। जितना मांगा उनमें एक चौथई ही मिल सकता है।

9) बाहरी देश में उत्पादन से ज्यादा ही सब्सिडी मिलती है यहा भारत में दस साल में एक बार रिलीफ पॅकेज दिया जाता है। इसी तरह लेखिका ने किसान की ज्वलंत समस्याओं को उजागर कर दिया है।

12.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) अरुणगिरी की आत्महत्या का चित्रण कीजिए।

2) काशी विश्वेश्वर राव की चर्चा कीजिए।

3) किसान की आत्महत्या पर विवेचन कीजिए।

4) लेखिका मधु कांकरिया को यात्रा संवाद का वर्णन कीजिए।

5) बैंक की नीति या कार्य योजना पर चर्चा कीजिए।

आ) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1) ''कुछ प्राइवेट कर्जा था, जिसपर पांच टका ब्याज हर महिने चढ रहा था, पर बैंक की नोटीस ने उनको तोड दिया था।''

2) ''कौन जाने! किसान के लिए कर्ज मतलब उसके माथे पर लिखी 'एक्सपायरी डेट'।''

3) ''मेरे बेटे के पास तो जाने कितनी बार कार लोन, होम लोन के लिए बैंक से मनुहार भरे फोन आते है, ई-मेल आते है, वह भी 8% ब्याज दाम पर।''

12.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) अकाल या बाढ पीडित गावों की यात्रा करके उसका वृत्तांत लेखन करना।

2) मराठवाडा के किसान या आत्महत्याग्रस्त किसान के परिवार में भेट देकर इसका वर्णन कीजिए।

3) आसपास के गाँव में जाकर किसानों के घरों की आर्थिक स्थिति पर प्रोजेक्ट के रूप में काम करना।

12.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) मधु कांकरिया - बादलों मे बारूद (यात्रा वृत्तांत)

2) रांगेय राघव - तुफानों की बीच

3) संजीव - फाँस (उपन्यास)

4) सदानंद देशमुख - बारोमास (मराठी कादंबरी)

◆◆◆